

ते ॥ तद्वाप्रथमं गच्छेत् ॥ नाराय
 स्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं ॥ देवी सरस्वत्यं
 ततो जयमुदीरयेत् ॥ कवित ॥ सनमुष
 गाके विघ्नविमुषहोतनामहीकेलेतस
 मसुधरतहैं ॥ रिद्धिसिद्धिदोऊजाकेरह
 ॥ हेसाधिपरसाहृथ्यारहाथदुषकौ
 हैं ॥ गवरिकेनंदसदाआनंदकेकंदसु
 वनकेदेवयहअरजकरतहैं ॥ दीजिये
 येसुधिलीजियेसुमुषमेरीकरुणानिधां
 नआपकौधरतहै ॥ १ ॥ दोऊ ॥ गणपति
 ॥ सरोजकौध्यानहिमेसंधिधारि ॥ बरनो
 ॥ सारकीभाषामतिअनुसारि ॥ २ ॥ अ
 तपत्नी ॥ दोऊ ॥ रघुकुलसूरजवंसमैंगो
 तविष्पात ॥ एकएकतैसबअधिकसर
 परसात ॥ ३ ॥ दोऊ ॥ कंतलनयोहमीरतां
 ननाहरजानो ॥ इंगरसीहोराजलनय
 निकमयोमतिब ॥ नौपांचौजांनितासुगो
 षलनवि ॥ वनतैअ ॥ सरिसंघसुवनजाकौ
 नगदि ॥ वनतैअ ॥ संघताकौतनयजिहि
 धहकरेतो

5 दिक्षीपति रावकिय रणधीरवीरसंभुसु
 दुजनदानहरिमक्तिलियपथासवैया सोम
 हिसेसधरेनिसिदोसप्रथीप्रयुनेनिजना
 सकीकीती सोहरिनाचहरीहरिरूपवराह
 है मारिततचनहीती सोयुनिवानहैचलिह
 रपेजायअधीनहैमागिकैहीती सोमहिराच
 श्रीसंभुसुजानगुनीदुजदीननदानकैहीती
 दपटपवनपूतजपटषगेसकै
 सीचिततैचलाकीमैसरसचलिजातहै केर
 तफुहारेकीफुहीपैधहराइरहैधुरीपधुरीत
 पैकैकरतसरसातहौगुनगहैचंगननक
 तचपलचासमटेजरबाफनसोसबसुनात
 है जैसेबाजीदेतरावगोगावतससंभुनांन
 मधवानदेषिदेषिललचातहै ५ चंद्र
 संघताकौतनयसरवीररणधीरदाता
 ताहैमहाकविकोविदकीभीर ६ ग्रा
 पेजोमजीमैलियैदक्षिणीफिरंगीजंगीसंगी
 सैदसुगलसमूहसरसाकौहै निनैदेषिके
 तेकरकायरकचापिरा ७ रतेवेमहा
 मोदननकायौहै जह ८ कीमारिम
 गनषपायैतहोतुपक ९ नोपतरौक

मां निवेदे है ॥ तातें तो हू कों हो ॥ हांक हेंगे से
त ॥ ह न मां नें गो ॥ तौ कौ एक दुष्य होय गो ॥ जो त
भ लौ चा है तो ह मा रौ बचन मां नियो ॥ तौ कों दु
षा दे धेंगे त ब ह म कं हूं दुष्य होय गो ॥ तातें प ह
लैं ही कहि वे कौ प्राये है एक उत पात होय गो ॥ त
ब र ज्ञा ज न मे ज य बो ल्यो ॥ आप की आ ग्या हो य
गी सो ही करों गो ॥ परंतु क हा उ त पा त होय गो ॥
अरु कै सें वा की सां ति होय गी सो ॥ आप कहि
ये ॥ ज ब वे द व्या स बो ले ॥ हे पु त्र ज न मे ज य न
ब न व्य कर ते रौ स री र वि ग डि जा य गो ॥ हू ह म
ही ना के नी तर य ह वृ तां त हो य गो ॥ तातें नैं सा
व धां न करों हों परंतु तू न मां नें गो ॥ उ त्तर दि ल
तें एक अश्व आ वें गो ॥ ता कौ तू ष री द म ति क
रियो ॥ अरु जो ष री द नी करै तौ वा के ऊ पर स वा
री म ति क रियो ॥ जो स वा री हू करै तौ ब न में सि
का र कौ म ति जा र्यो ॥ अरु सि का र हू कों जा य
तौ वा ब न में एक सुं द र ना री न ज र आ वें तौ कौ
अंगी का र म ति क रियो ॥ क द चि त अंगी का र हू क
रै तौ वा कौ क धो म ति क रियो ॥ अरु जो क ह्यो हू क
रै तौ वा के ब च न तें अश्व मे ध ज न तौ म ति क रियो
जो अश्व मे ध हू करै तौ बाल क न की ब र णी तौ म

तिकरियो अरु बासकनकी बरणी हुकरै
क्रोधतै कदचितहीनतिकरियो परतुहे
जनयेइतनी बातमै कही है सोसबही सोप्र
असत्करै गोतापी छै तौको घोरदुष्य होयो
यह जैसेही तबतब्यहै तातैहसे रो बचतव
मातेगो पीछैहू सोको यादिकरै गो तबमैतौ
सकरमिदाऊगो जैसे कहिकरि वेदव्यासआ
पकेआश्रमकोगये तब राजाजननेजया
वेदव्यासको बचननामितनमेबिचारी जैसे
नकरयो यह कितनेकदिनतौ बातराजाया
दिरायी तापीछै बिसरएहोइगयो जैसेर
हतैकोइएकसनेनै छोडानकोब्योपारीआये
सोसुणाराजायोडानकेदेबिबेकोगयो तिन
मैदोषरहितसर्वगुणसहितएकअश्वदेव्यो
ताकोराजाघरीयो अरुअश्वसालामैआये
सनुषबधाये वाकोदेविदेविबहोतप्रसन्न
होय जैसेरहतै कितेकदिनपीछैवाकीगति
बैगदेबिबेको धनुषबाण धारिसवारहोइ
नकोचलो तहोएकबैराहकोदेविवाकेउपर
वाणप्रहारकल्यो ताकेलगसहीवाकेउदरतै
एकसुंदरीनिकसी तासोराजापूछतअयोहै

सुंदरी तूको एहो ॥ देवांगना है के अपत्तरा है अ
थवा कि नरी है के रिष कन्या है तेरो सौरूप में
ने और को देख्यो नही ॥ तब कन्या बोली ॥ हे राजे
इमे राज रिषी की पुत्री हौ ॥ पिता की आग्या ते प
ति की बाछा करि मैं ते रे दे स में आई हौ ॥ तब
राजा बो ल्यो ॥ तिहारे पिता की कहा ॥ आग्या है क
हो ॥ जब कुमारी बोली ॥ जब दीपके मध्य हस्त
नापुर को राजा जनमे जयते रौ पति हो इगो ॥ ता
ते तो सौ पूछो हौ ॥ वह जनमे जयत ही है कहा ॥ त
ब राजा बो ल्यो ॥ जनमे जय में ही हौ ॥ तू ते रौ पिता
की आग्या ते मेरी नार्थी हो ॥ कन्या बोली ॥ हे ज
राजन दो इ ब द न कि दिये में तुम्हे बरू ॥ जब राजा
बो ल्यो ॥ कोन से दो इ ब र है सो कहो मे निश्च द रा गे
तब कुमारी बोली ॥ मो को पट राणी करो अरु मे
सहित अश्व मे ध ज स करौ ॥ जब राजा अंगी का
र करि गांधर्व विवाह करि अश्व पे चटापपुर
को अश्व महल न मे प्र बे सक स्यो ॥ फेरि और
राणी न को त्याग करि वाही को पट राणी या पि
वाके संग विहार करन नयो ॥ तब कितने कचि
न पीछे वह महाराणी बोली ॥ मे पट राणी तो
भई पै ॥ अश्व अश्व मे ध भी करौ ॥ तब राजा वाके ब

चनते अश्वमेधको आरंभ करत नये ॥ सबही
 वेद पाठी ब्राह्मण नको देसांतरतै बुलाइ वर
 णी करी ॥ आचार्यादिक सबही अपने कर्म कर
 त नये ॥ जैसे कर्म होतै राणी अश्वको उपै स्थै हा
 थमें लेस्यस करत नई ॥ जब उपस्थको फूलतौ
 बधतौ देषि वरणी के बालक ब्राह्मण हं से ॥
 तब उनके दंतनिकसे देषिराजा क्रोध करिष
 डले अठारह ब्राह्मणनके मूढकाटि अग्नि कुड
 में डारि दियो ॥ जब अग्नि को धसो प्रजुलित हो
 यमंडप जारि हस्तनापुरको दग्ध कत्यो ॥ त
 बराजा पछितायो मैं जाणतै हनू लिकरि कहा
 कर्म कत्यो पुन्य तो गयो ब्रह्महत्या लगी ॥ या
 को न जाणिये कहा कल होइ गे ॥ जैसे चिता
 कांतरतै ही राजाके गज चर्म होइ गलित को
 ट नये ॥ होठनासा कांन भोह हाथ पावनष
 केस सबही अंग गलिबे लगे ॥ सरिरमें दुर्गंध
 होइ गर्ई ॥ तबराजा अति व्याकुल होइ बेदव्या
 सकौ सुमरण कियो ॥ जब बेदव्यास आये रा
 जा की दसा देषि बोले ॥ तै प्री नारयणारचि
 काया आदि वर्णनि प्रथमो ध्याय ॥ ॥ व्यासो
 उवाच ॥ हे जनमेजय तं पापि रहै दुराचा

रहै। तैरो मुख देखै यो मनह॥ मै तो सो पह
 ले ही कह्यो हो सो तै मेरो बचन मान्यो नही। त
 बरा जा बो ल्यो॥ हे व्यास देव मै दुर्बुद्धी पापिष्ट
 हो गुरन को बचन मान्यो नही॥ और क्रोध क
 रि ब्राह्मण हमारो॥ मेरे अपराधन कौ तो कहा
 ताई कहौ॥ परंतु अब आप मेरो उद्धार करौ॥ ज
 ब व्यास बोले। नील करंगे अठारह बस्त्रन कौ
 अंतर पट करि महाभारथ सुणि॥ अठारह प
 र्वन के सुणै सो अठारह हत्या जायगी॥ जो स
 त्य मानै गो तो जो मेरी कही सत्य न मानै गो तो
 न जाइगी॥ एक एक पर्व सुणै सो एक एक ब
 स्त्र निर्मल होइ॥ गो यह ही प्रज्ञा जाणियो॥ जे
 सै मानिबेद व्यास के मुख सो राजा भारथ सुण
 त भयो॥ तब कथा को प्रारंभ करिबेद व्यास नै य
 ह कह्यो॥ हे जनमेजय महाराज कुरु क्षेत्र के जु
 इ मैनीमसेन नै हाथी॥ जो फैके सो आकास मै
 अद्रापन्न मै है॥ यह सुणि राजा जनमेजय सीस
 धुन्यो मन मै आई नही॥ जब बेद व्यास आकास
 मै अन कौ रोकी॥ तब वेकी तने कहाथी गिरेति
 न सो हस्तनापूर चूर्ण हवो॥ सो देखि राजा बेद व्या
 स के धार्वन मै गिस्तो अरु कही मै अपराधी हो

सो मेरो अपराध क्षमा करो जब व्यास कह
जो तेरी और हत्या तो नास होइगी ॥ अर एव
हत्या नास जब होइगी तब मेरी संग बडिका
श्रम कौ चलेगो ॥ सो राजा भारथ सुणे पीठु
द व्यास के संग बडिका श्रम कौ गयो ॥ वहा ब्रा
ह्मणन के आगे व्यास राजा सहित बैठि निवेद
न कस्यो ॥ हे ब्राह्मण हो मेरी बीनती सुणे ॥ यह
सो म बंसी परीक्षत कौ पुत्र राजा जनमेजय हे
सो या की एक हत्या वा का रही हे ताहि तुम नि
वारण करौ ॥ अैसे व्यास के वचन सुणि ॥ उन ब्रा
ह्मण नने वह हत्या तिलि भर अंगीकार करि
त प्रबल सोता ॥ अापे मै सो नास करी ॥ तो ह्य
क बल मे कौ ककुली लचि क्रुमि द्यो नही ॥ ते
व वेद व्यास फेरि राजा कौ हत्या नापुर त्याप स्प
घासन पै बैठा पराजा वसेष कस्यो ॥ अरु कही
तेरो हाथी घोडारत्न इव्य धन धान्य पूर्व संचि
त हे जो हे सो दान करि ॥ और नारथ कौ पाठ क
रि नो जन करैगो जब यह अवसे सार
गी ॥ अैसे कहि वेद व्यास तौ गये ॥ सो सुणि
जनमेजय दसदिने में पाठ होइत वनो ज
रतनयो या प्रकार राजा कौ कष्ट जाणि
दुकरवे

दव्यासमुनिभारथकोसारकाठिसमुच्चयकरि
बेशंपायनमुनिसिस्पहेतिनकौंदेकेराजायास
भेजेतबबेशंपायनकोराजाआवतदेषिउठिहा
थजोडिअर्घपाएनसौंसतकारकरिआसणपे
बेठायफेरिपूकृतभये।मैंआजधन्यभयोऋतऋ
त्यभयो॥आपकेआगमनकोकारणकहियो॥
तबबेशंपायनबोले॥तेरेनित्यपाठकरिबेके
निमित्तभारथसारसंग्रहबेदव्यासनैपठायोहे
सोयाकौंसुणिनित्यपाठकरोतुम्हारेसर्वपापमि
टैगेयहनिहचैजाणो॥तबराजाबोव्यो॥मैंएका
ग्रचिन्नहोइसुणोंगो॥आदिमध्यअंतपर्यंतभार
थसारकेअठारहपर्वहैंसोकहो॥जबबेशंपा
नबोले॥भारथकेश्लोककेएकचरणअचणतैं
नंददाकेदरसणतैं॥बिष्णुकेसुमरणतैं॥सर्व
पातकनष्टहोतहैं॥तबराजाबोव्यो॥हमारेपुर्व
पुरषापांडवकेसंजतपन्यभयो॥अरुपांचनके
शेषदीएकहीभार्याभईयाकोकारणकहियो॥
तिश्रीभारथसारचंद्रिकाकाअंश॥एवंपरिदुता
कोसुता॥२॥दे॥जायनउवाच॥कोईएकसमैं
मैंश्रीमहादेवपार्वतीकैलाससिधरमेंरत्नस्यंघा
सनपैबैठिबिनोदकरतभयो॥तासमेंपांचब्र

मनसहितकामधेन आर्ष ॥ तबवाकौदेविपा
र्वतीहंसिकेशिवसोबोली ॥ अहोदेवयाकौदे
प्रो सबदेवजाकौडंडौतकरै ॥ ऐसीयहकामधे
नुयांचब्रह्मजनकोंसंगलियेफिरतीलजावे
नहीहे ॥ जैसेहस्यसुणिकेकामधेनुपार्वतीकों
सांपदियो ॥ हेपार्वतीतुंमेरोहास्यकरैहेसोमनु
स्पदेहधारितरहूयांचनतीनकेसंगबिचरेगी ॥ य
हमेरोबचनसत्यहीहोइगो ॥ तबपार्वतीसाप
सुदुष्यतहोइमहादेवसोबोली ॥ हेनाथयासाप
सोसुइहोइबेकौउपायकरौ ॥ जबमहादेवम
नमेंबिचारकरिनदीगणसहितब्रह्मायासगये
ब्रह्मामहादेवकोंआयेदेविसतकारकरिआ
रोमुषकरिकैस्तुतिकरी ॥ औरएकमुषमेंसोष
रकैसीअवाजनिकसी ॥ जबमहादेवब्रह्माकों
दुष्टजाणिवाकोंपंचमसिरकाटो ॥ सोवहसिर
हस्तमेंलग्योगिस्यो ॥ तबमहादेवकाब्रह्मह
त्याकेनयकरिकैकैलोसकोंआये ॥ पार्वतीहर
हीतैपतिकेहस्तमेंब्रह्माकेसिरकोंरुधिरबुच
वतौदेधिकहीइहामतिआवो ॥ तबपार्वतीहूअ
नादरकह्योजाणिमहादेवतीर्थजात्राकरतम
ये ॥ जैसेफिरतैएकब्राह्मणीघरमेंगायदुहवै

आर्हीतहांब्राह्मणब्रह्मकोचूंषतबीचहीमेंधै
चिबाधिदियो॥जबवाबछुडानैसीगकीदेवाकै
परकदियो॥तबब्रह्मकोब्रह्महत्यालगी॥जबब
छुब्राह्मणीसौबोले॥ब्रह्महत्याकोदोसकहिबे
मैआवेनहीं॥बालकहत्याएकजुगदहै॥स्त्रीह
त्यातीनजुगदहै॥गायहत्यापांचजुगताईदहै॥ब्र
ह्महत्याकल्यातपर्यंतदहै पीछे रोरानर्ककोपहुं
चावै सोयहदरुण ब्रह्महत्यामैकोलगी॥तातैसु
दरक्षेत्रमेंजाययाकेधोबेकोजलकरोंगो॥त्रै
सैउनकोसंवादमहादेवसुणतभये॥जबब्रह्म
हत्याब्राह्मणसौनिकसिवछुकेसनमुषदोडीतां
कोदेषिवछुभग्यो॥वाकेपीछुहत्याभगी॥सोबछु
दोडिबासावसीकौंगये॥वहामनकर्णिकामेंपरि
प्राणकोडिरुइलोककौंगये॥महादेवनीवाब
छुकेपीछुपीछुगये॥तहांसिरहाथसौछुटिगंगा
मेंगिह्यो॥तबमहादेवहूकासीमेंप्रवेशकेल्यो॥ह
त्याबाहररही॥फेरिमहादेवजबकासीसौवा
हरनिकसैजबहीहत्यासाथप्रावतदेषैतासौफे
रिनेमकरिकासीहीमेंबासकरतभये॥त्रैसैरहते
कितेकदिनपीछे त्रिपुरनामादैत्यप्रगटहोइत
न्यालोकपीडतकियो॥जबसबदेवता

वासगये जब ब्रह्मा कही यह असुर महा देव ही
सो मरे गो सो सुणि देवता महा देव कौ त लासक
रिवे कौ पार्वती पास जाय पूछो महा देव कहा गये
पार्वती बोली मनुष्य लोक मैं तीर्थ जात्रा करिवे कौ
गये है सो तुम हू त लासकरो जब विष्णु सहित स
ब देव का सी मैं आय शिव कौ देधि प्रणाम करि चा
रो तरफ ठा डे रहे तब शिव बोले हे देवता हौ तुम
कौ एक जको आय सो सुणि देव बोले त्रिपुरा सु
रती नौ लोक जीते तातै तुमके लास चलो अरु
वा कौ मारो अैसे सुणि शिव सब समां चार विष्णु
सो कहि कही मेरी ब्रह्म हत्या मिटै तो चलो वैशंपा
यन बोले शिव कौ मुझ करिवे कौ विष्णु हत्या के प
स जाय बोले हे हत्या तू शिव के सरीर कौ छेदि अ
रु जो बर मागै सो हो दोगै तब हत्या बोली अठ
रु असो हणी सेना कौ रुधिर पान करावौ तो त्रिपु
रमार बेताई महा देव के सरीर कौ पीडा करौ नही
विष्णु बोले क्षपुर जुग के अंत में चंद्रवंस में अवत
रले तैरो मन बाहित रुधिर पान कराऊगो अैसे
छुके बचन तै हत्या शिव कौ डे तब शिव देव मंड
सहित के लास मैं आय सामग्री बणाय त्रिपुर के
विधुं सकस्यो

विष्णुको नाम ॥ ३ ॥ देवतावत्तया ॥ तापाकैदे
वता आप आपके स्थान गये विष्णु हूँ कुंठ गये
ब्रह्मा महादेव से बोले ॥ हे रुद्र तुम हत्या नाश
को उपाय करो तब कल्याण होय गो ॥ तब ब्रह्मा
महादेव विष्णुके पास गये महादेव बोले हे नारा
यण देव मैं मूटता तै दारुण कर्म करे ॥ प्रवया
पाप तै शुद्ध होय वे कं प्रायश्चित्त वता वो तब न
गवान बोले ॥ हे महादेव तुम संन्यासी को रूप धा
रि वार ह वर्ष पर्यंत पृथिवी में तीर्थ यात्रा करे
ब्रह्मा के शिर क हाथ में राषो निजा भोजन करे
जैसे करतै गोतमी गंगा पड़ुं च गे तब शुद्ध होवो
गे जहां शान्ति विराजे है वहां पवित्र तु तु ॥ महो
गे ॥ वाहत्या क चांक्षित रुधिर पान क्षापर मैं मैं क
राऊ गो ॥ विष्णुकी आग्या तै रुद्र तै सै ही करत भ
यो ॥ गोदावरी में स्नान करा तै ही ब्रह्मा को शिर हस्त
तै छूटि पडो शिव शुद्ध होय कपालेशना मण्डि वलि
ग स्थापन करत नये ॥ कुंजरा शिमें शानै श्वर सि
हरा शिमें वृहस्पति जै से योग में ज्यो गोदावरी स्ना
न करे सो सर्व पापन सौ मुक्त होया ॥ ऐं सै गोदाव
री स्नान तै शिव कं शुद्ध देषि विष्णु बोले हे महादे
व तुम पांच देह धरि कै पृथ्वी में च त्रिपवंश में

अवतारलेहयवासकरो पार्वतीभीद्रुपदराजा
कीकन्याहोवो। ऐसैविष्णुकोबचनअंगीकार
करिमहादेवहुनिजस्थानआये। जितनेमहा
देवकेलिसआचेतापहलेब्रह्मागंगाकगौरीके
भीयहकथाकहिकहमहादेवगोदावरीकोसे
वनकरेहैतुहमारोअनादरकरिदियोतोहूतु
मह्यमाकरोहोपरंतुऐसैपतिसूक्ष्माकरणोयो
ग्ननही। ऐसैउपदेशकरिउनदोऊनकेहृदयमें
रोषकरवायदियोमहादेवमदिरमेंआचेतेही
गंगागौरीशिवसंकलहकरतनयी। तबमहादे
वहूरोषकरपूर्णहोतनये। धतकीआहुतिनक
रिजैसैअग्निप्रज्वलितहोयतैसेप्रचंडहोयकरि
गंगासूतैयहबोलेतुमतोदृष्टीमेंशतनुराजा
कीभार्याहोवोगी। पार्वतीसूकहीतुमद्रुपदके
कन्याहोवोगी। ऐसैसुएक्रोधछोडियावेतीमहा
देवतैचीनतीकरतभई। जहातुमवसोतहाही
मैंवसंताहीमैंमोकसुषहोयतातेमनुष्यलोक
मेंतुमहूअवतारधारोयहभीयोग्यहैमहादेवबो
लेहमहूपंचमूर्तिधारिकैतुआरेनज्ञोहोयम
नुष्यलोकमेंविहारकरैगेगंगासूकहोतुम
हूमेरोअशतनुराजाहैजहामानुषीरूपधारिह

स्तितापुरमें जायवाकीसेवाकरे ॥ शिवके चच
नतें गंगादिव्यमानुषीरूपधारिगंगातीर आइता
समयमें चंद्रवंशीशंतनुराजाहुविहारके निमित्त आ
येताहासुंदरीनारीकंठेधिताकेरूपकरिमोहित
शंतनुराजापूक्तभयेतुमकौणहोकेणकारणते
यहांआइहोसोकहोगंगावोली ॥ मैं गंगाहूं शिवके
शापतें पृथ्वीमें आइहूं उत्तमवरकीबांछोहो ॥ शं
तनुवोलेमैंसकलराजानकरिपूजितशंतनु
नामराजाहूं मोहीकतुमवरो ॥ गंगावोली ॥ म
हाराजतुमकूंवरुंगीपरंतुमैंमेरीइच्छातेंजो
करूसोहीकरूं ॥ ताकार्यकरतेंजवरोकोगे
तवहीनरुंगी ॥ शंतनुराजाकहेमाफककरार
करिनिजमंदिरलेगयोविवाहकरतभयोताके
संगविहारकरतेंकरतेंसातपुत्रभयेपरंतुजो
पुत्रभयोताहोकंगगाप्रवाहमेंवहायदियो ॥
सैंसातपुत्रवहायो ॥ तहांताईतोशंतनत्तमारा
षीअष्टमपुत्रकवहातेंमैंनेकरीतवहीगंगाअ
तझीनहोयकेलासगईपुत्रकशंतनुपालनक
र्यो ॥ गंगेपनामकस्योवहहीनीमनामकरि
विष्णुतभये ॥ शंतनुवहोतवर्षपर्यंतभार्ग्यर
हितरहे ॥ पाछेहरिदासकेवर्तकीकन्याम

ल्या दरा सौं मैं व्याहन करूं जैसे भी भक्त
 रिवाज प्रसन्न करि पिता को विवाह करग
 जैसे सुणि जनमे जय पूकृत भये ॥ हरि
 कै वर्तकी पुत्री सतन राजा होइ के सैं व्याह
 हमरो संदेह निवारण करौ ॥ वैशंपायन व
 सुधन्वाना मराजा देसांतर गयो ॥ वाकी भाय
 सुसीला घर में रजसुला भई ॥ तब निज दास
 को स्वामी के पास पठाई ॥ सो सिकरा को रूप
 धारी राजा के पास गई ॥ जब राजा हुना मैं व
 र्जघाल वाकौ दियो ॥ सो ले कै वह आवै ही त
 हां मार्ग में एक और सिकरा आई ॥ जहां दोऊन
 कै जुड़ भयो ॥ तब वह दोनाय सुना मैं कृषि
 ल्या ॥ ताहि मास के लम सौ मछी निगल गई ॥
 सो वह अइ काना म अण्ड कर ही ॥ परंतु ब्रह्मा
 कै शायतें मछी भई ही सो वीर्य निगल गई ॥ ता
 कै प्रसूति भई सो अति रूपवती कन्या भई ता
 पीछे वह मछी तो अपनै लौ क गई ॥ वा कन्या
 को धीवर पालत भयो ॥ दोइ वाके नाम धरेग
 ध्वकाली ॥ सत्यवती ॥ २ ॥ ता पीछे वह हरि द
 सधीवर वा कन्या को पाल बडी करि एक नव
 ता बणाइ रई ॥ सो धर्म के अर्थ आये गयेन को

पारउतारतरहै॥ जैसेकोईकसमेंमेंसिष्यन
 सहितपरासरमुनिआया॥वाकन्यासोकहीह
 मकौंपारउतारा॥तबवहमुनिकौंनावमेंवैठाइ
 पारउतारतनई॥तहामध्यानसमेंजमुनाकेबा
 चिवातरुणीकौंनावमेंइकलीदेविमुनिबोले
 तोमैंसंतानउपजावैंगे॥जबवहलोसबजन
 चारोतर्फसोदेवैहै॥अरुमेंकन्याहोतबमुनि
 बोलेकोऊहूनुदेवैगौ॥अरुतूप्रसूतिभयैहं
 कन्याहीरहैगौ॥जैसेकहिचारोतर्फअंधका
 रकरिअगसंगसोमछुगंधाहीताकौंजोजनगं
 धाकरिगर्वधारणकरायमुनिगये॥तबवहहूज
 मुनाकेदीपमेंबेदबेदांगपारंगतऐसोपुत्रजन
 तभई॥दीपमेंजनमेतातैहैपाइनकहाये॥सो
 वैइपाइनबोलेजबविपदामेंतूमोकौंचादिक
 रेगीतबहीमेंआऊंगौ॥जैसेकहिबनमेंतप
 करिवेकौंगये॥मुनिकेप्रतापतैवहपुत्रजन
 मेपीछूहूयहलैहीतैसीहीकन्याहोइगई॥इ
 जदप्रकारैचिद्विज्ञाना॥विषयैपुनसुप्रोदयवा
 वैशामनउदय॥पुत्रप्रसूतभयोंपीछूहूकन्या
 हीरही॥ऐसीजोजनगंधाताहिराजासोतन
 निजनिजयजैत्रसो जाचनाकरी॥त

बहरिदासबोले पामेंपुत्रहोइसोहीराजक
रे॥ यहकरकरकरोतोकन्यादो॥ जबसंतन
नीष्मकौजेष्टपुत्रजांनिवाकौवचनसुणिपुर
कौआये॥ पैसत्यवतीकेरूपकौसुमरणक
रतरतकौनीदनआई॥ प्रातहीमंत्रीनसौस
बब्रतांतजाणिनीष्महरिदासपासजावपिता
केनिमित्तकन्याजाचतभये॥ तबहरिदासबो
ल्योकन्यातोकौतौदो॥ तुम्हारेपिताकौन
दो॥ तुमजेष्टपुत्रहोसोतुम्हारेपुत्रतौरा
ज्यपावैअरुराजाकेअबपुत्रहोइसोराज्य
पवैनहीथाकारणते॥ तबनीष्मकहीमैराज्य
हूकरोंतहीअरव्याहहूकरोंतहीअैसीप्रत्या
ग्गोकरिपिताकौबिवाहकरायो॥ अबपिताहू
प्रसन्नहोइनीष्मकौसुइत्तामृत्यकौचरदा
नहियो॥ तापीछेवाजोजनगंधामेंदोइपुत्र
प्रगटभये॥ एककौनामचित्र॥ दूसरोविचित्र
नाम॥ अैसेपुत्रभये॥ पीछूसंतनपरलोकग
ये॥ तबनीष्मसत्यवतीकौमोक्षनक्तिकरिसे
वतभये॥ चित्रविचित्रकौतरुणदेविकासी
केराजाकीतीनकन्या॥ अंबा॥ अंबिका॥ अंबालिका॥ अैसेतीनकन्याहीतिनकोस्व

यं वरतै बलक रिलै आये। सो उन दो ऊ भ्रातां
नसौ व्याह करत भये॥ तब अंबा बोली। मेरो म
नसा लुराजामें आसक्त है। जब वाकों साधु
पासने जिअं बिक अंबालिकाको व्याह चित्रवि
चित्रसौं कियो॥ अंबा साधु पास गई। ताहि दे
षिसाधु कही भीष्म तोहि जीतिले गयो सो तू
वाही की भार्या है मैं तो व्याह करौ नही। तब वह
भीष्म पास आई। कही मेरो चित्रविचित्रसौं व्या
करो कै तुम करौ। जब भीष्म कही तैरो चित्त अ
रमै आसक्त है सो हमारे काम की नही। तब व
ह कन्या देऊत फसौ भ्रष्ट भई जाणि मुनि नके पा
स जाय सन्यास धारण की जा चूता करी तहां मु
नि मंडली में हो अंबा इन नाम राजरिपिया कौना ना
है सो पाको दुष्पदेषि बोल्यो। हे पुत्री नहे डपवत
मैं परसुराम है सो वनीष्मके गुर है तिन पास
जा उनको बचन भीष्म मानितोहि अंगीकार
करैंगे॥ जैसें वार्ता है तै परसुरामके सिष्य
अक्रत ब्रह्म बोलै। प्रभो तपासुरानयां दीक्षा
वंगे सो उनसौं सबही मिलि प्रताप कहैंगे। अ
सैं कहि वाकों वहां हीरिषी॥ जब प्रभो तदी पर
सुरामें आये। तब उनसौं सब मिलि ब्रह्म

हो सो मुनि पर सुराम कही भीष्म मेरो सिध
है सो मेरो वचन मानेंगो ॥ तेरो मनोरथ सिद्ध
करिबे कौ कुरक्षेत्र चलेंगो ॥ जैसे कहि अंबा कौ
संग ले कुरक्षेत्र गये ॥ वहां भीष्म गुरु कौ आय दे
धि विधि वत पूजन किया ॥ तब पर सुराम क
हीया अंबा सो बिवाह करौ ॥ जब भीष्म नट गये
तब पर सुराम को ध करि जुद्ध कौ तयार भये
जब आत ताई गुर सो जुद्ध कर बो धर्म है जाणि
भीष्म हसन मुख आये ॥ तहां दीऊत कौ अति घो
र जुद्ध नयो ॥ पर सुराम के अस्त्र प्रहार करि नी
अजब जब मूर्च्छित होइ तब ही गंगा गुप्त आई
आपके जल सो अभिषेक करि सचेत करै तब
भीष्म फेरि जुद्ध कौ सनद्ध होइ होइ जुद्ध करत म
॥ जैसे तेई सदिन लौ जुद्ध नयो ॥ तापी के दीऊ
सास्त्र जुद्ध करिबे कौ तयार भये सो देवि देव
आइ दोऊन की स्तुति करि जुद्ध निवारण क
गो ॥ जैसे आप कौ मनोरथ सिद्ध न भयो ॥
अंबा भीष्म के मारिबे कौ तप करत भई
मुना तीरवा कौ उग्रतप देधि महा देव
बोले बर मांगि ॥ जब अंबा बोली मैं भीष्म
मेरो तब महा देव कहा तेरी इच्छा जन मां ॥

तरमें सफल होइगी॥ अत्रैसै कहि अंतर ध्यान भे
ये सो सुणि॥ अंबाहू अग्निमें प्रवेश कियो॥ दुपद
राजाहू पुत्रके निमित्त तप करत होताहू कौ
महादेव बरदान दियो जो तेरै प्रथम पुत्री हो
ईक छुक दिनमें वह ही पुत्र कै जाइगो॥ ताब
रदानतै अंबाहू दुपदराजाके पुत्री भई॥ सो दु
पदहू पुत्र पुत्र नयो कहि पुत्रको सो सब उ
त्सव कस्यो॥ ताकौ दसान्य देसके राजा हिरन्य
वर्माकी पुत्रीसौं ब्याह करायो॥ तब या कुल
कौं राजा जाणि सेना लेइ दुपदकौ नगर घेल्यो
तब वह कन्या भागिबनमें जाय रुदन करत
भई॥ सो ब्रह्मस्थूणा कर्णनाम जत्त सब ब्रता
तजाणि॥ जुहनिवारण पर्यंत आपकौ पुसार्थ
देत भयो॥ तब यह कन्या पुरध होय मातापि
तासौं मिलि हिरन्यवर्माकौ पुरसार्थ जताइ
यइ वसांत कस्यो॥ तापी छै वह जत्त स्त्री होइ अ
पके भवनमें रहै हो॥ वहां कुबेर आयै सो स
मीपहू आयै जाणि दानै सत कारन कस्यो॥ त
ब कुबेरहू ब्रजांत जाणि वाकौ प्राप दियो जब
नार्थ नही जैगो तब ताई वह परसही रहै

गो तूखी ही रहेंगे ॥ जैसे कहि कुबेर आपके
धाम गये ॥ वह जज्ञ फेरि आपके पुर सार्थ ले
सको नही ॥ वह कन्या भीष्म के मारि बेनिमि
त्य सिधं डी भयो ॥ तापी छै चित्र विचित्र तरुण भ
ये सो खीन के भोग बिला समै रहै ॥ भीष्म धि
तामह माता की सेवा में रहै ॥ सो उनको सेवामें
रहत देखि चित्र विचित्र मनमें विचारत भये ॥
जो यह भीष्म रात्र कौ सत्यवती पास रहै ॥
सो पापाप कौ बध करै ॥ जैसे मनमें धारि
षड्गुण की चेष्टा देखि कौ रात्र कौ गुण रहै
तहां उनकी सब चेष्टा देखी सो भीष्म कौ तोषु
त्रवत सेवा करत देख्यो ॥ सत्यवती कौ माता व
तरहत देखि प्रभात भयें लजित होइ प्राये ॥
कौ धिक्कारत भये ॥ भीष्म सौ बोले जो माता
कौ वाजेष्ट भ्राता कौ निरापराध बध विचारैता
कौ कहा प्रायश्चित्त ॥ तब भीष्म बोले जो माता
कौ वाजेष्ट भ्राता कौ बध विचारैता कौ ह
जार ब्रह्महत्या कौ पाप लगे ॥ सो वह समीचि
सवापी पल योलेमें प्रवेश करि दाह करे ॥
बसुध होइ ॥ जैसे सुणिवनमें जाय हो ऊचा

ही विधि सौ मरो॥ तब नीम लुपि दसोत दुभ्र
रत मये॥ जब सत्यवती वा तन्नी तने नीम सों
बहुत कही पै प्रतग्या मंग के तप सों बिबाह
राजन करत मये॥ तब सत्यवती पूछ्या बंस
कैसे रहै॥ जब नीम बोले वं धरत के चाप्रा
सपान के दीप्य क ए सु द हौ शैल वं ह्वे का
हो हौ॥ शैल दुषिल सवती बिदव्या सवतु
मरण करत मरी॥ तहो बिदव्या सवती विदतौ
सत्यवती मरी॥ इति श्री शिव जी मती चरिते
शिवि चरिते नाम तन्तु सतं त प्रथमो
तब बिदव्या सवती का क ए विदवती का
तहो दुलाई तहो व सौ इति श्री शिव जी
के जब मरी तहो इति श्री शिव जी
करि मरी॥ इति श्री शिव जी
शिव जी का क इति श्री शिव जी
तहो जब मरी इति श्री शिव जी
इति श्री शिव जी का क इति श्री शिव जी
इति श्री शिव जी का क इति श्री शिव जी
इति श्री शिव जी का क इति श्री शिव जी
इति श्री शिव जी का क इति श्री शिव जी

कैवेद्यासतोगये पीकू उततीन्यानकेपुत्र
भये॥ अंबिकाकेप्रथमबडोपुत्रभयोताको
नामअतराष्ट्र॥ ह्यो अंबालिकाकेभयोताको
नामयादु॥ इसीकेभयोताकोनामविदुर॥ इन
तीन्योतकोंभीअबहुतसनेहकरियाले॥ फेर
बडेनये जबउनकोब्याहकरिवेकोविचासी
ताहीसमेंसुणीगांधारदेसकोराजासुबल
ताकीपुत्रीगांधारीसेमहादेवकोपूजनक
रिसौपुत्रहोबेकोवरदानपायोहो॥ तबभीअ
जायदाकोदेसअनरत्नदेगांधारीकोत्याय
अतराष्ट्रकोब्याहकस्यो॥ श्रीकृष्णकोपिताम
हशरवाकीपुत्रीप्रयाताकोकुंतभोजराजा
कोधर्मपुत्रीकरिवेकोहीनी॥ जानैहवाकोबु
तीनामकरियालनकत्ये॥ अरुदुर्वासासु
कीसेवामेंराघी॥ तासौदुर्वासप्रसन्नहोइ
मंत्रदेकेकहीयामंत्रकोपटिजादेवताको
रणकरैगीसोहीआवेगो॥ अरुतोमें
करैगो॥ अंसैकहिदुर्वासतो गयेकुंत
नमेंआयमंत्रपटिसूर्यदेवकोसुमर
तहांसूर्यआयेतितैदेपिकंतीसयभी

कहीहेमहाराजआपपधारोमोकन्याकोअ
 पराधत्तमाकरोमैतौमंत्रकीपरत्तत्नेवेको
 यहपदोहो॥तवसूर्यबोलेहमारोआपबो
 ब्रथाहोइनही॥तोमैएकपुत्रप्रगटकरैगेअरु
 तेरोकन्यापणहनमितैगो॥असैकरिवाकैगर्ब
 राधिगये॥तापीछेकवचकुंडलसहितसूर्यसम
 जाकोतेजाअसैएकपुत्रभयो॥ताकौकुंतीअप
 वादनयतैस्यंदूषमेंधरिगंगामेंबहाइदिथोआ
 पकन्याहीरही॥सोराधासहितअधिरथसत्तअ
 पुत्रगंगामेंस्नानकरतहोतहांवानैस्यंदूकको
 देषीजबलैकैबाकौषोलीतामैपुत्रदेष्योतबवा
 कौकर्णनामधरिपुत्रकरिराष्योवाकौंतीसौर
 जापंडुकौबिवाहनये॥इसरिमइदेसकेराजा
 कीकन्यामाइताकोब्याही॥देवकराजाकीरा
 सीकापुत्रीपारसवीकन्याविहूरकोब्याही॥ता
 मेंसनपुत्रनये॥इतिअभीभारतरारजसिखायांन्यादि
 त्पिपंडुसोअज॥ ॥लैशंपाजनउत्तम॥तापीछेध्र
 तराष्टतौअंधविदुरदासीपुत्रअसैबिचारभीष
 पितामहपांडुकौराज्यदेतभये॥तबपांडुधनुष
 विद्रामैनिपुनभये॥सोयोधानसहितवनमैसि

कारकौंगये॥ राजावहाजायअनेकजीवनकौंमां
रिबडोइर्षयावतभये॥ असेंसिकारकरतेंवहदि
नएकहूनभयोतामैपापसंचयनहोग्य॥ सोएक
दिनाकिंमदनामामुनिदिनमेंबिहारकस्योचा
सोसोस्त्रीसहितअग्ररूपधारिवनमेंबिहारकर
तरहे॥ वाकैंपांडुनेंबाणमास्यो॥ तबवानैशापदि
योजबतहूस्त्रीसंगकरैगो॥ तबहीमरैगो॥ पारी
तिकेशापसोपांडुइबहुतसंतोषपायो॥ तपीछैरा
जनीअकौंसोपियोडुइअस्त्रीसहितगंधमाद
नपर्वतकौंगयो॥ वहरिषिनकीसंगतितैसंतो
षपायसतअंगपर्वतमेंतपकरतभये॥ तहांकुं
तीसोंकहीतुमदेवतासोंवारिषिसोंसंतानपे
दाकरै॥ तबकुंतीदुर्वासाकेदियेअत्रसोंधर्म
कौंबुलाइपुत्रउत्पन्नकस्यो॥ तासमैमैआका
सबाणीभईजोयहयुधिष्ठिरनामामूर्तिवोनधर्म
हीहै॥ यहव्रतातनुणिकैगर्ववतीगांधारीपेटकौ
कटिकैतवाएकजनतभई॥ सोवेदव्यासकीअ
गासोंवातुंबमैतैसत्तरूपसतपुत्रएककन्या
निकसे॥ तिनकौंजुदेजुदेअतकुंभनमेंराषिपा
लनकरै॥ सोदुर्वाधनआदिसतपुत्रभये॥ दुस्सला ४

नामकन्याभई। जासमेदुर्योधनभयोवाहीसमें
फेरकुंतीपवनतैभीमकौउतपन्नकस्ये। ताके
जन्मसमेंदेवबाणीभई। यहभाताकौभक्तदसह
जारहाथीनकोबलधारैगौ। वानीमपुत्रकौगो
दमेंलियैकुंतीब्याघ्रभयौतैउठीतबवहगोदमें
तेगिस्योसोकितनेकपर्वतचूर्णभयेतातैसत्यही
भीमनामभयौ। तापीकैकुंतीइंइकौबुलाइअनु
ननामापुत्रकौप्रगटकस्ये। वाकेजन्मसमेंइंइ
दिकदेवताआइपुष्पनकीब्रष्टिकरी। अरुदेवबा
णीभईजोयहबालकबैरीनकेनांसकरिबेवालौइं
इसमहोइगौ। अैसेतीनपुत्रदेषिपांडुकुंतीसौबो
लातेरेअनुग्रहतैमांसीहपुत्रवतीहोइ। तबकुंतीव
हमंत्रजपिमांसीसौकस्येकोईदेवकौसुमरणक
रौ। जबमांसीअश्वनीकुमारनकौसुमरणकस्ये
ताकरिदोइपुत्रउतपन्नभये। तासमेंदेवबाणी
भईयेनकुलसहदेवनामाअतिसुंदरबैरीनको
नासकर्ताहोहिगे। अैसेपांचपुत्रनकीबाललीला
देषिपांडुकैबडौआनंदभये। तबकोइकसैमैमै।
वसंतरितकरिवनकीसोनादेषिपांडुकामातुरहो

पायौ पतिकौ पंचतत्प्रापति देषिमात्री कुंतीसौ बो
ली ॥ इनपुत्रनको तौ पालन तुम करो मो मे स्वामी
को प्रेम अधिक हो सो मो बिना परलोक हूँ मैं सुषन
पावैंगे तातैं सहगमन करौंगी ॥ त्रैसैं कहि पतिके सं
ग अग्नि प्रवेश कियो ॥ तापीकै सतश्रंगवासी मुनि
पांचौ पुत्रन सहित तै रवैं दिन कुंतीकौ भीष्मके पा
सल्याप पांडुको सब ब्रत तांत कस्यो सो सुणि अंतः
पुर सहित भीष्म रुदन कस्यो पीकै उनकौ प्रेतकार्य
सर्व करायौ ॥ तापीकै भीष्म धरत राष्टके तौ सतपु
त्र पांडुके पांच त्रैसैं एक सौ पांच पुत्रन कौ समा
न जाणि पालन करत भये ॥

तापीकै तहां पूर्वतप करतैं सर दान मुनिको वी
र्य उर्वसी कौ देषि सवनके गुहू में गिस्यो ॥ ताके
दो इवि भाग भये ॥ सो एक तो कन्या ॥ इसरो कुमार
सो प्रांत नुराजा शिकार कौ बल में गये हे ॥ तहां उ
नकौ देषि क्रपा करिकै लै आये ॥ तातैं कन्या कौ
नाम तौ कृपी ॥ अस पुत्रको नाम कृप धर्यो ॥ वे कृ
प सरदान मुनितैं बाण बिद्वामें पारंगत भये जा
णि भीष्मकौ रव पांडवनकौ उनपै बाण बिद्वापदाय

बेकौ अर्पण करै तिन पास सब प्रकार की धनुष
बिद्या सीधे अरु बाल क्रीडा करै ॥ तामें सबही में
समान प्रातिर है नक्षत्र जो ज्य सामिल ही करै ॥ चौपड
रूषे लै मन्त्र बिद्या रू सीधे बन क्रीडा करै तामें भी
मन्त्र तनपें चटें बाल कतिन कौ ब्रह्म हलाय हला
पपटके तहा कितने कें मूट फूटि जाय काहू को हा
थ पाउ टटि जाय ताको बडौ को लाहल होत नयौ ॥ अ
सैं देषि दुर्योधन दुष पाय भी मके मारि बेकौ उपाव
कह्योगं गात ततामैं प्रमाण को टीना म एक क्री
डा स्थान बणायो ॥ तहां सबही क्रीडा करै भोजन क
रै ॥ असें करतौ एक दिन भी मकौ विषके मोदक
मवाये ॥ तहां भी मकौ घोर निद्रा आई जाणि दुर्योध
न आपके सारथी पास तानसौ बधाइ गंगामें
पटकाय दियो ॥ पडतैं ही प्रस्थि बिदीर्ण भई सो बह
नाग लोक कों गयो ॥ तहां अनेक नागरु धिरयान
करि बेकौ वाक्ये डसत नये ॥ तिनके डसवै तैयाको
सरीर निर्विस होय ॥ चेतन नयौ ॥ तहां अर्पक ना
म नागराज याके नाना कौ मित्र हो सो दोहि त्रजं
णि अमृत पान कराय वहा राष्यो ॥ इहां कौरव
भी मकौ मत्स्यो जाणि हरित नये ॥ भीष्म

सधनुवेदपदतमयोः तहांही शौण्डिपदमित्र
नये। जबहुः पदयह प्रतगपाकरी। मैरा जाहोहुं
गो तब तुम कौआ धौरा ज्यदो गो। शौणा चा
र्यकितने कदिन पीकें डुपद कौरा जा नयो सुणि
हूतप करतर हो। विचास्यो कैरा जा सत्य प्रन
गा वां न हो। जा सौं जाइंगे जबह मारो जा धौरा
ज्यलें लेंगे। नहा ज्यस्य स्याता बाल कहो सोण
कदिन ज्यधिन के जग्य में जा यइ धपियौ तारी
कै माता सौं आय ज्यविहठ करिइ धमांगो
तब नाता जवति जौइ न सुलिइ धने सो जल
करि पायो। जबइ न कही पइतौ इध नही ज्य
रु बहूत रुदन कस्यो सो सुणै शौणा चोयें व
चार कियो जो आजता ईक्यो तत्रय करिदि
वाइ करत हो। पिये जव बाल कने लें इधवा कने
रुदन कस्यो सो इधगा पबिना दोइ नही ताने
डुपद पस ज्यप जा धौरा ज्यदो गो। जैसों व
चार कौ डुपद या सगयो। इरय लवों कही
राजसों कहौ दुन्दारो ज्यचो वनित्र चायोइ
जव सारपाल जाय नतानै जासे दिवेइ कने
कने नोका जरेइ शरया

लकही चीर पहरें मग छाला धारें दंडाले वैनि
चुकसो है ॥ जैसे सुणिराजाको क्रोध तो आपो
परंतु ब्राह्मण जाणि क्रोध कौरो किकें बुलाइ अ
र्घ पाद करि आसन पै बैठाय पूजन करि भोज
न की प्रार्थना करी ॥ सो सुणि शैण चार्य कहि मैं
तैरो प्राचीन मित्र हौ सो आधोराज्य देणो कस्यो
हो सो देगो जब भोजन करेंगे ॥ तब राजा क्रोध
करि भ्रुकुटी चटाय कस्यो ॥ तैसी बालक पणो
की बात न मैं कहा है ॥ तसो भोजन करि ककु क
दिन काटणे होई तो रहो ॥ नही तो नमस्कार है
प्रधारो ॥ जब शैण चार्य बोले राजा तू तो भूलि
गयो ॥ परंतु जो मैं साचो शैण हो तो तो कौ मित्र
ताको फल दियाऊंगो ॥ जैसे कहि वहां तें चले सो
हस्तनापुर के बन मैं आये ॥ उहां कौरव पांडव
बाल क्रीडा करत हे सो उनकी गेंद कूप में गिरी
ताहि निकासन सके ॥ तब शैण चार्य इसी का
खरके इसी कनसो वेधिवाको निकासि बालक
नको दीनी ॥ तब बालक प्रसन्न होइ यह व्रता
तभी भसो जाय निवेदन कस्यो ॥ सो सुणि भी
ष्म उनको सर्व सुख जाणि उनके पास आइक

ही आपपधारो महा राज्य आपही को हे इनबा
 लकनकों अस्त्रसस्त्रविद्रापटावै ॥ त्रैसैक
 हि सतकार करि पुरमै ले जाइ सर्वसामग्री क
 हि सहित सुंदर भवनमै राये ॥ तापी कू सुभमह
 र्तमै बालकनकों पटाइवै कौ प्रारंभ कस्यो ॥ इोणा
 चार्य धनुर्विद्रापटावत सुणिसर्व दे सदेसनके
 राजपुत्रहृपटिवै कौ आयो ॥ तिनमै कर्णहू आयो
 और धरतराष्ट्रकै बैस्पकी विवाहतकन्यामै
 यो युयुत्सनामां पुत्रसोहा ॥ अ
 यो ॥ उनसर्वा बालकनमौ कर्ण ॥ त्रैसैसो
 भयो जैसै नक्षत्रनमै चंद्रमा ॥ और अर्जुनउन
 मै तेज करि सूर्यवतसौ नित भयो ॥ तहां
 सबदिनहीमै अभ्यासकरै ॥ अर्जुन रात्रसमै
 अंधाकारहमै अभ्यासकरै जासौ सबवेधी
 भयो तासौंगुर अतिप्रसन्न होत भयो ॥ अरु
 आपकी सर्वविद्राकौ भारधरबेलाइक अर्जु
 नके अश्वस्थामां ही कौ मानत भयो ॥ नीमदुयो
 धनयै दोग दायुइमै नियुन भयो ॥ पङ्कजुइ
 मै नकुला ॥ अश्वजुइमै युधिष्ठिर सहदेवा ॥ ओ
 रहनाना प्रकारकै जुइनमै नियुन भयो ॥

छे एक लव्य नामा भील श्रेण चार्य के पास ब
 ण विद्या सीध बे कौं आयो ताहि भील जंणि
 श्रेण नटि गये तब वह बन में जाय भूत्प का
 य श्रेण चार्य की प्रतिमा बनाय बाण विद्या से
 ष बे लग्यो सो अभ्यास करन करन बाण विद्या में
 पारंगत भयो एक समै श्रेण चार्य के सिष्य बन
 में गये तिन कौं देखि खान भुस्यो तब भील नै
 वा कौं मुख बाण न सो तरक सके सी तरै भरि दियो
 जब यह सुकाई लाघव ता देखि वे सब आश्चर्य
 मानि वा सो पूछ्यो यह बाण विद्या कौं ए पास
 सीधो त कौं ए है जब वह बो ल्यो भील न कौ
 राजा हिरण्य धन्वामे रोपि ताहे एक लव्य मेरो
 नाम है श्रेण चार्य पास यह धनुष विद्या सीधो
 हौ यह सब सुणि श्रेण चार्य पास आय ब्रजांत
 निवेदन कियो तब श्रेण चार्य अर्जुन कौ उदा
 स देखि वा भील पास जाय गुरदक्षणामें दक्षिण
 अंग ठालियो जब अर्जुन श्रेण चार्य की से
 वा में बहुत रहत भयो एक दिन ब्रह्मपै क्रत्य
 मभास पंछी बनाय सर्व ही बाके गले कौ नी
 साणा बनाय बाण मारे सो कोई सो विध्यो

नहीं॥ तब वाकौं अर्जुन बेधिस बसौं शधि
कता पाई॥ तापौं कौं ईदिन शौं एा चामर
गास्तान करे हे॥ तहा ग्राह चरण पकडि
धीचे॥ जब अर्जुन बाण न करि ग्राहके स
रीर कौं तिल तिल प्रमाण किन्तु निल करि
कुट्टाये सो देधि गुर प्रसन्न होइ बोले हे अ
र्जुन तेरी बरो बर और धनु धर नहीं॥ जैसे
कहि ब्रह्मास्त्र हू दिये॥ या प्रकार सौं अर्जुन
सब सिप्यन मै क्रेपा पात्र अधिक नयो॥ शति
श्री भारत सार चंद्रिका यां आदि पवीण अष्टमोऽध्या
य॥ जाबेशं पाथन उवाच जैसे सर्व बालकन
कौं सब विद्यान मै पारंगत जां फि उनकी प
री कुलिवे कौं विदुर पुरके बाहर रंगभूमि र
चना करत नये॥ तहां चारो तरफ ऊंचे ऊंचे
मंच धरे॥ तिनयें धृत राष्ट्रभीष्म पितमहति
दुरकौं आदि सर्व राजा यथा योग्य बेंठो॥ ब्रा
ह्मण वैश्य हू अपने योग्य स्थान मै बेंठो॥ क्षा
त्रिकुं पुत्र सहित शौं एाचार्य उन्नत बेंसभा
रें आय देव नमि पूजन सहित बलिनिधान
करत नये॥ तहा वीणा मृदंग आदि कपट आदि

सर्वबाजावजतभये॥ त्रैसैसो नितरंगभूमि
मेंसर्वहीराजकुमारशस्त्रशस्त्रकवचधार
णकरिआयधरतीसौहाथलगायशोणाचा
र्यकोप्रणामकरिसबहीपुधिष्टिरादिकआ
पआपकीबिद्यादिषावतभये॥ नीमदुर्योध
नदोऊगदाजुइदिषावतदिषावतअंतःकर्ण
कोबैरसुमरणकरिमहाघोरजुइकरतभये
तवशोणाचार्यउनकोबैरजुइजाणिअश्व
स्थामाकोभैज्योसोपिताकीआग्पातैपर्वत
वतजापदोऊनकेबीचठोटोभयो॥ उनकोयु
इनिवारणकस्यो॥ तापीके शोणाचार्यकी
आग्पातैअर्जुनआपकीअस्त्रबिद्यादिषा
वतभयो॥ सोकभूकतौपर्वताकारहीसो क
भूकतेजमई॥ कभूकआकासमेंकभूकपा
तालमेंत्रैसैकरतभयो॥ ताहिदेविसर्वरा
जाअप्रतिअद्भुततामानिचित्रलियेसेहोइ
रहे॥ त्रैसैअर्जुनकीबिद्यादेविसर्वहीस
राहिस्तुतिकरतहो॥ ताहीसमेंरंगभूमिके
बाहरएकसब्भयो॥ वाकोसुणिसर्वहीरा
जादिकचकितहोइविचारकरतभये॥ वह

वज्रपातहीहैवाभकंपहेवाअंतरित्तहीग
 र्जनाकरेहै॥अथवाप्रलेकरनकोसमुद्रही
 गर्जनाकरेहै॥अैसेविचारकरतहीपर्वतसंम
 नजाकोदेहसरीरमईकवचकुंडलधारिकंन
 ठोकतकर्नआयो॥वाकोसूर्यसमानतेजदे
 धिसर्वहीमारगदियो॥तबवहकनरंगभूमि
 मेंआइशोणाचार्यऋषाचार्यकोप्रणामकति
 जैसेअर्जुनविद्यादिषाईहीतैसेहीवहहूदि
 यावतभयो॥जबवाकोअर्जुनकेतुल्यजाणि
 दुर्योधनमित्रताकरिचंपापुरीकोराज्यदियो
 तबअर्जुनबोलेअरेयासूतपुत्रकोचंपापुर
 कोराज्यकोदियो॥अैसेकहिनीमअर्जुन
 धनुषबाणधारतभये॥तबदुर्योधनकर्णइ
 धनुषबाणधारेइतनेहीमेंसूर्यअस्तभयो॥
 जबसबहीराजाकोरवपांडवउठिउठिअप
 नेस्थानकोगयेकोरवनमेंदुर्योधनमुख्यभ
 यो॥पांडवनमेंयुधिष्ठिरमुख्यभयो॥

चार्यसबहीकोसामिलकरिकहीतुमहमको
 गुरदक्षणादो॥जबसबहीबोलेआ
 हीदे॥तबशोणाचार्यबोलेपांचालराजाइपद

सर्वबाजावजतभये ॥ अैसें सो नितरंग भूमि
में सर्वही राजकुमारशास्त्र अस्त्रकवचधार
णकरि आयधरतीसों हाथतगायशोणाचा
र्यको प्रणामकरि सबही युधिष्ठिरादिक आ
पआपकी बिद्यादिषावतभये ॥ भीमदुर्योध
नदोऊगदा जुद्धदिषावतदिषावतअंतः कर्ण
को बैरसुमरणकरि महाघोर जुद्ध करतभये
तबशोणाचार्य उनको बैर जुद्धजाणि अश्व
स्थामाको नेज्यो सोपिताकी आगपातै पर्वत
वत जायदोऊनके बीचठोटो भयो ॥ उनको यु
द्धनिवारणकस्यो ॥ तायीकै शोणाचार्यकी
आगपातै अर्जुनआपकी अस्त्रबिद्यादिषा
वतभयो ॥ सोक भूकतौ पर्वताकारदी सोक
भूकतेजमई ॥ कभंक आकासमें कभूकपा
तालमें अैसें करतभयो ॥ ताहि देखिसर्वरा
जाअप्रतिअद्भुततामानिचित्रलियेसेहोइ
रहे ॥ अैसें अर्जुनकी बिद्यादेधिसर्वही स
राहिस्तुतिकरतहे ॥ ताहीसमें रंगभूमिके
बाहर एकसब भयो ॥ वाको सुणि सबहीरा
जादिकचकितहोइ विचार करतभये वह

जनाकरे है ॥ अथवा प्रलेकरन कौं समुद्र ही
गर्जना करे है ॥ जैसे विचार करत ही पर्वत सम
नजा को देह सरीर मई कवच कुंडल धारे कं
ठो कत कर्न आयो ॥ वाकौ सूर्य समान ते जदे
धिसर्व ही मार गदियो ॥ तब वह कर्न रंग भूमि
मै आइ शोणाचार्य कृपाचार्य कौं प्रणाम करि
जैसे अर्जुन विद्वान् दिषाई ही तैसे ही वह हृदि
षावत भयो ॥ जब वाकौ अर्जुन के तुल्य जाणि
दुर्योधन मित्रता करि चंपापुरी कौ राज्य दियो
तब अर्जुन बोले अरे यासूत पुत्र कौ चंपापुरी
कौ राज्य क्यों दियो ॥ जैसे कहि नीम अर्जुन
धनुष बाण धारत भये ॥ तब दुर्योधन कर्ण हू
धनुष बाण धारे इतने ही मै सूर्य अस्त भयो ॥
जब सब ही राजा कौरव पांडव उठि उठि अप
ने स्थान कौ गये ॥ कौरवन मै दुर्योधन मुख्य भ
यो ॥ पांडवन मै युधिष्ठिर मुख्य भयो ॥ तब शोणा
चार्य सब ही कौं सामिल करि कही तुम हम कौं
गुरदत्त एादो ॥ जब सब ही बोले आपक हो सो
ही है ॥ तब शोणाचार्य बोले पांचाल राजा दुपद

कों कों पकड़ि गले में धनुषा घालि इहां ले आवो
 जब सब ही जाय पुरघे स्यो ॥ तहां कौर पहले
 गये हे तिन कों तो मारि चलाइ दिये ॥ तापी छै
 अर्जुन बाणन सौं मारिवा की सब सेना भजा
 यगले में धनुष डारि पकड़ि ल्या पशेणा चार्य
 के हवाले कियो ॥ तब शोणा चार्य हुवालंकन
 को साह तदे पिह सि कैं दुपद सों विरोध को
 डिबचन बोले ॥ हे दुपद तू हमारे बालपणे
 कों मित्र हे सो अधोराज्य देवे कों कहिराज्य
 मरकरि उनम हौ ॥ इबचन न मान्यो ताको यह
 फल पायो ॥ सो अब तू मेरो मित्र हे अरु मेरे पि
 ताके मित्रको पुत्र हे तातें पहले बचन कह
 तिनको पालन करि ॥ अधोराज्य मेरो हौ ॥ अधो
 तौको द्यो हौ सो तू पालन करि ॥ त्रैसैं कहि दुप
 दराजाको सीष दीनी ॥ तापी छै शोणा चार्य कें तो
 फेरि बैरकी वासनारही नही ॥ अरु दुपद गुप्त
 बैरको यादिराषि अर्धराज्य करत भयो ॥ दुप
 दके जुझमैं नीम अर्जुनको अधिक देवे अरु
 प्रजाको हित दूइन सौं जाणि दुर्योधन धतरा
 ष्टसौं बो ल्यो ॥ हे महाराज तुम्हारे कुलकी तो

कथाहू नही रहत दीसै हो ॥ एक तो पांडव प्रब
लूसरै प्रजाहू इनको चाहै तातै बाणावत
पुरको राज्य दे इनको कुलतै हरनिकासै ॥ अ
सै पुत्रक हो सो धतराष्ट्र अंगीकार करत न
यो ॥ तब दुर्योधन पुरोचनसो बोले तुम जाय बा
णावत मै महल वणावो सो मूजराल लाष बा
सकास सण प्रत इन सामग्रीको वणावो ऊप
र गुप्त करिबेको सुंदर चित्र बित्ति करि मोको
जरूर षबरिकरो ॥ तब पुरोचनवाही माफिक
तयार करि षबरिकरी ॥ जब दुर्योधन धतरा
ष्ट्रसो कहाई पांडवनको बाणावत पुरको रा
ज्य करिबेको पठायो ॥ सो पांडवहू धतराष्ट्रसो
चार्य भीष्मपितामह कृपाचार्य इनको प्रणाम
करि अस्थान करत भयो ॥ तहां मार्गमें विदुरमि
लेसो मले कुभाषा करि पुरोचनको कपट युधि
ष्ठिरसो सब जे ताइ दियो सुरंग घोदिवेको ए
क बेलदार संग दियो ॥ तापीके पांडवहू कुंती
सहित दस वैदिन बाणावत पुर पहुँचै ॥ तहां
पुरोचनसनमुआइसनमान करि लाषाग्रह
में प्रवेश करायो ॥ तब पांडवहू पुरोचनको ॥

तो अजाणता दिखाई अरु आपसा बधान होइ वहां
 बसे बेलदार पास सुरग घुदा बतरहे तब पुरो
 चनह अग्निलगाइ बैकौ उनके पास ही बास कर
 त भयो तहां पांडव अनेक निचुकन कौ अन्न दान
 करत रहे अैसे एक बार सबिती त भयो पुरोच
 न कौ अग्निलगाबै कौ अवकास पायो नी एक दि
 ना पांच पुत्र सहित निसादी निचुकी अर्ध वा
 कौ पांडव अन्न दान दियो सो मन बांछित भोज
 न करि पुत्रन सहित ब्रह्म होइ वहां सोइ रही ता
 रात्र में भीमसेन पुरोचन के चारो तरफ ला
 ष्या ग्रह के अग्निलगाइ आपकुंती भाईन सहि
 त सुरंग होइ निकसि गये अग्निला ष्या ग्रह कौ द
 ग्ध करत मन मै बडौ आनंद मात्स्यो जो धर्मी त्वा पा
 डव तो बचै अरु अधर्मी पुरोचन कौ जलाऊं
 हूँ अैसे विचारि चट चटा त सब करत संपूर्ण
 ला ष्या ग्रह कौ भस्म करत भयो तास में पुरवासी
 आयपंच पुत्र नी लनी कंजली देषिकुंती पांड
 व जले जानि हाहाकार करत भये दुर्योधन कौ
 मित्र पुरोचन ता कौ पांडवन कौ दग्ध करता
 जानि जलेहूके मस्तक कौ लातन करि करत भ

ये पांडवनकेनिकसिगयेपीछवापनिकने
सुरंगकेधरकौरजभस्मकरिकैराबिदियो
पांडवजलगयेसुणिधतराष्टदुर्योधनकोउ
पालभदेकरिरुदनकरतभयो॥ हेदुर्योधन
तोकोनिकंठकराजकरणोहोसोअबहुवो
ओइतोसबहीकेदुष्भयोएकदुर्योधनबि
दुरयेअपानपानकरिकैहर्षितभये॥ तापी
केधतराष्टउनकोअतकार्यसबहीकरावत
भयो॥ वेपांडवहलाष्याग्रहतैनिकसिदत्ति
एदिसाकोरात्रदिनसावधानहोइकेगवनक
रतभयो॥ अैसेचलतचलतगंगाजीकोउतरि
गहनवनमेंरात्रिकोबटकेनीचूबासकियो॥
तहारात्रमेंसबकोअर्षलगीतबभीमसोकही
जलबिनातोहमारेप्राणजातहो॥ जबभीमसा
सनकोसबसुणिउहाजायसरोवरमेंस्नान
करिजलपानकरिअंजुलीभरिजलकील्याव
तभयो॥ सोउनसबकोनिशकेबससोवतदे
षिरुदनकियोजोयेसुषसप्यानपेसोवतहेसो
प्रथवामेंअैसेसोवैसे॥ तासोदेवकोहृदि
कारहै॥ अरुमेरेपराक्रमहकोधिकारसोइ
केअंजुलीभरिजलकील्यावतभयोहोसोइनको

मासल्यायबेकौहिडंबाबहनकौभेजी॥सोवह्ना
यभीमकौसरूपदेपिमोहितहोइगंधर्वबिंबा
हकरिवासौंआयबेकौसबब्रतांतकहिभीम
होकेपासरहीउहंहिडिंबाकौनआईजाणिहि
डिंबहक्रोधकरिआयोतबभीमवासौंजुडक
रिमासौ॥तापीकुमाताभ्राताकाआग्पापाई
वाहिडिंबाकौभार्योकरिनदीपर्वतवनवादिब्य
स्थाननमेंदिनदिनमेंबिहारकरिरात्रकौंभा
ईनकेपासआवे॥असैंबिहारकरतैकरतैभी
मकेवाभार्योमेंदोइपुत्रघटोतकचबबरीक
नामांभये॥तापीहैहिडिंबाराससीवनकौग
ई॥बेपुत्रहभीमसौवालेकोमयडैयादिक
रोगेतबहीआवैंगेअसैंकहिभार्तकेसंग
वनकौगये॥इतीश्रीभारतसाचौईकायांआदि
पर्वणिनवमोध्यायः॥बैशंपायवतुवाच॥ता
पीकुंवेपांडवजटाबलकलधारब्रह्मचारी
कौसरूपकरिमातासहितवनमेंबिचरत
भये॥असैंफिरतैकोईकसमेंवनमेंरात्रकौं
सबयकिगये॥जबभीसेनमाताकौंतोपाठि
पैधरीदोइनाईनकौंदोऊकंधानपैधरे॥न
कुलसहदेवकौगोदीनमेंलेकेचलतभयो॥त

बमार्गमैवेद व्यासपाकौ पर्वतसमान आव
तदेषिबोले॥ तुमसर्वही एकचक्रापुरीमेंजा
यवासकरो॥ तबव्यासजीकी आग्यातैचक्रा
पुरीमें एक ब्राह्मणके घर जायसबहीबसे जे
सेबलवानहूवहां दिनदिनमें भिचाकरि
नलपावैतामै सो देव अतिथ्य आग्यातकौ
दिये पीछेबचेतामै सो आधौ तो भीमकौ दे
आधोरहै सो सबघाया॥ वानगरीके बाहरए
कबकूदेत्यवनमेरहै॥ ताके भयतैवे पुरबासी
एक आदमी और भक्षभोज्य सामग्री नित्यघ
रघरतैपहुंचावै॥ जैसे होतै होतै येरहै हे जा
ब्राह्मणके घरकौ बोसरा आयो सो वह ब्राह्म
ण स्त्री पुत्रयेती नही हे सो आपुसमें महारुद
नकरतभयो॥ उनकौरुदनसुणिकुंती गई उन
कौ सब ब्रतांत सुणिकरुणाकरिकही तुम्हा
रे एकही पुत्रहै मेरे पांचपुत्रहै सोमै एककौ
भेजौगी तुम भक्षभोज्यतयारकरो॥ जबवाब्रा
ह्मणने भक्षभोज्यसमग्री ल्यायधरी तबभीम
वहसामग्रीलेके बकासुरके संकेतपर्वतकी
सिलापे जाय भक्षभोज्यसामग्री धरिवाकौ बु
लाय॥ आपवासामग्रीकौ भोजनकरतभयो॥

जबबकासुरआपवाकौंभोजनकरतदोष
 पहलीतौभूकीनसोमास्योपीकृब्रत्तनसिला
 नकरिमास्योतोहमीमकितेकदिनकोभूयो
 होसोभोजनहीकरिबोकियोअरुवाकेप्रसा
 रनकोगिणेनही॥जबआपभोजनकरिचुको
 तापीकृउठिषंभठोकिमद्वजुहकरिवाकोए
 रकिमोरि॥नगरामेंआपब्राह्मणसौंबोले
 मेरेइहदेवनेबकासुरकोमास्योअसैंतुम
 पुरबासीनसोकहो॥तापीकृआपआइभा
 इनसोकहीएकस्थानरहवैजोगपनहीइहा
 रहेसोप्रगटहोजाइगे॥असैंकहियंचालदे
 सकौगयेतहामार्गमेंकेरिवेदव्यासमितेउ
 नकोदर्शनकरिपांडवआनंदपायप्रणामकर
 तभये॥तबव्यासहूआसीर्वादेकरबोअब
 तुमइपदराजाकेपुरमेंजावो॥वाकौहयह
 पणहैजोमकृमेदैताकौंकन्यादो॥सोतुम
 जायतकौपणपूर्णकरिवाकीकन्याब्याहा
 असैंब्यासवाकसुणिआनंदितहोइइपदकेपु
 रकौचले॥सोचलतैंचलतैंअर्धरात्रसमेंगंगा
 तीरपहुंचेतहाअर्धकारकरिमार्गदीस्यान
 हीतबअर्जुनजलतौउल्लुकलेमार्गदिषावत

चल्या तहा गगामे अंगार पण गंधर्व राज विहार
 करे हो सो क्रोध कर रथ पे सवार होइ अर्जुन सौं
 जुइ करिबे कों मार्ग रो किठाटो भयो ॥ अब अर्जुन
 आग्नेय अस्त्र करि वाके रथ कों भस्म करि दियो
 तब वाकी स्त्री कुंती नसी कुंती युधिष्ठिर के स
 रण आई अब युधिष्ठिर के कहे सौं अर्जुन बा
 कों अभय दान दे गंधर्व राज सौं मित्रता करी ॥ अ
 रुवा कों आग्नेय अस्त्र दियो ॥ तब वाहनै अर्जुन
 को विश्वदर्सनी विदरा और पांच सैं सयाम में
 अने दर असवार सहित अश्व दिये सोयादिक
 रे जब ही आणि हाजिर होइ ॥ उहां तें चले सो उ
 तको चक्र तीर्थ में आई स्नान करित पकरते हु
 वे धौम्य मुनिकों प्रोहित करे ॥ जाके होम आहु
 ति बल करि सत्रुन कों त्रणवत ही मानत भये ॥
 से मार्ग चलतैं सो लवै दिन ड्रुपद के पुर में पहुंचे
 वहा जाय सामा सहित माता कों कुलाल के घर
 में धरि सुयंबर कों गये ॥ तहा जाय मंत्र मय मकु
 देष्यारंग भूमिके मध्यमंडप देष्यो और चारो त
 र्फ राजा मंचन पे हेति न कों देष्यु युधिष्ठिर नाई
 न सौं बो ल्यो ड्रुपद राजा पुसीर्थ करि सुर्ग ही
 भूमि में उता स्या है कहा ॥ और देवैं तों धजाप

ताकासो नित है सर्व बाजा बजे है देस देसनके
राजा ब्राह्मण आ वै है तासमें ये ह ब्रह्मचारी कौ
रूप धारि ब्रह्ममंडलीमें मंच पर जाय बैठे जा
मंच पर ये बैठे सो मंच अति तसो नित भयो ॥ जे
सै पंचसंघन करि सुमेर कौ सिधिर सो है ॥ अ
रुधुपदरा जाह अर्जुन कौ ही कन्या देबो विचारि
मकु भोदिबे कौ पण लियो हो ॥ सोयत्र मई आका
समें मकु बणायो ॥ अरु ते सै ही इट धनुष बाण
ह रंग भूमिका बेदी पर धरे ॥ तहां जो पदी ह बस्त्र
अलकार धारण करि बरमाला हाथ में ले बेदी
पर आई ॥ सर्व राजा बा कौ दोष देषितो हर्षित हो
इ अरु धनुष कौ देषि निखा समरै ॥ अरु जो पदी
धनुष कौ देषि बार बार अर्जुन के नुज दंडन के
चितवन करै ॥ तासमें में ध्रष्ट दुग्ध धनुष कौ
पूजन करि नुज दंड उठाय सभा के मध्य बचन
बो ल्यो ॥ जो राजा जो पदी की बांछु करै हे सो या
धनुष में बाण धरि मकु कौ भेदो ॥ अैसे वचन सु
णिकितने क राजा तो मौन गही ॥ कितने क ध
नुष उठाइ चटायन सके ॥ कितने क चटाइ के षे
चिन सके ॥ कितने क षेचि के बाण सांघिन सके ॥
कितने क बाण सांघिन सिकौ निश्चयन करि स

के॥ कितनेक पूर्वजसके नासकौ भयमानि उठे
हीनही॥ त्रैसी दसा देधि ब्रह्मचारी भेसतै भीमस
हित अर्जुन मंचतै उठि धनुषपासचले॥ इनके
सुरूपते जलीला गति देधि कितनेकरा जाको ह
देद बिगयो॥ श्रीकृष्णनी कद्रोण इनको देधि के
बिचार कियो एभीम अर्जुनही है॥ औररा जाह
बिचार करत भयो॥ ए सूर्यचंद्रमाही है सो प्र
थमिं विचरै है॥ अथवा और अचतार धारिण
कृष्णवत्स देव है॥ अथवा गणेश श्वाभवन नि
कहै॥ अथवा रघुवंश मंगल समागरी है॥ श्री
राजातको विचार करनही अर्जुन द्रोणार्थ
के प्रणयन करि धनुष साध्या॥ तब द्रुपदो ज
नकरे॥ इति मया प्राणान्तर्यं वचनं धार्य॥ अ
रुणो ज्येष्ठो नरोत्तमोऽयं मया वदानी नदी शि
तानु चक्रवर्तुः कुरुक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे वि॥ १३॥
जेतुपदवृक्षोऽनेनोत्तमोऽयं वि॥ १४॥
गैरजन्तुः प्राणान्तर्यं कुरुक्षेत्रे वि॥ १५॥
किं नोत्तमोऽयं कुरुक्षेत्रे वि॥ १६॥
रुज्ज्वलन्तुऽयं कुरुक्षेत्रे वि॥ १७॥
तद्वि॥ कुरुक्षेत्रे वि॥ १८॥
चक्रवर्तुऽयं कुरुक्षेत्रे वि॥ १९॥

धनुषकेदेषतैहीमदजातरलोकहा॥ अरुहे
कर्णतुकुंडलनकोंब्रथाहलावैहै॥ यहधनु
कुंडलितकीनकियो॥ यहब्राह्मणधनुषधैचिम
कुनेदेसवनकीकीर्तिलदेहैसोतुमदेपौहो॥ अ
सैभीमकेबचनसुणिसंपूर्णराजानकोसिरनीचे
नये॥ तबवाहीसमेंअर्जुनलीलाहीकरिमकुको
नेदिप्रथवीमेंपटकेयो॥ जबसर्वजनआनंदित
होइतालीबजाई॥ देवदुधभीबजाई॥ अरुद्वीप
दीमहाराजदुपदकेकहेसौअर्जुनकोआइब
रमालापहराई॥ तबअैसेदोषिअोरराजाको
धकरिसस्त्रलेकहीदुपदराजाकन्यातौब्रस
चारीकोदईअरहमेंबुलाईअनादरकस्यो
नातैयाकोमारंगे॥ तबभीमअर्जुनदुपदकीर
कोतयारनये॥ सोअर्जुनतोधनुषकोचित्र
दायो॥ भीमब्रह्मकोउपाडिराजानकोमारत
यो॥ तबकितनेकेसिरहाथपाउछिननिज
गयेसोरुधिरचुचावतभागिगये॥ अैसेरा
नकोभजाइमधुकरिशाल्यकोजीत्योअ
धनुषकेटकारकरिकर्णकोमुषमलिनक
अोरकितनेकराजापुष्करिबैकोतयारन

ये॥ तब उनको श्री कृष्ण कह ही इहा युद्ध करिबो न्य
पनही॥ जैसे श्री कृष्णको वचन सुणिराजा अर्प
ने अर्पने स्थान कौंगये॥ पांडव हू शोपदी सहित
कुलालके नवन आये॥ तब उनको आये जांणि
माता बोली जो तुझे प्राप्त भई सो पाचों सम भागत
भोगो॥ अब येह माताको वचन मानिबेसेही विव
ह करिबो विचारत नये॥ तापीछे कुंती राजपुत्री
कौंदिषिविचार कियो जो मै यह कहाकस्यो॥ अब
पांडव मातासो सब समाचार कहैहो॥ अबही
श्री कृष्ण बलदेव आई कुंती कौं समाधान करि
गये॥ पीछे पांडव गावमें जाय भिक्षा करि आये
सो भिक्षासेवही माता पास धरी यह रचना देषि
शोपदी मनमें संतापन पायो॥ सो सतीनके मनक
बात विचित्रहीहो॥ तापीछे कुंतीके वचनसो॥
शोपदी वह निश्चाल्याये हेतामैं सो पुरोहित नाम
निकासि पीछे भिक्षुकनको भाग्निकास्यो वाकीर
सोतामैंसो आधो भीम कौं दियो॥ आधेके छह ना
गकरे भोजन करि दन शय्यामें दक्षिण दिसा कौं
सिर करिसोये॥ उनके सिरकी तरफ कुंती सोई
पावनकी तरफ शोपदी सोई चरये पाचों नाना
सोवतह संस्र अख पुह ही की बातें करत रहे

सो ध्रष्टा नरात्रके समै कुलालके भवनके पीछे
 छिपिके सब चरित्र इनको देखिसुणि प्रभातही
 जाइराजा दुपदसो सब ब्रजांतकहि कस्योयेत्
 त्रीराजपुत्रही है सो सुणाइ राजाकी चिंता हरि
 करी। जब दुपद इनको रथपठाय बुलाइ नोजन
 कराय पूछ्यो जो तुमको एहो तब युधिष्ठिर
 सब कथा आदि सो कहो। सो सुणि दुपद बोले
 यह कन्या मैं अर्जुनको देनागो। युधिष्ठिर कही
 हम पाचनही की भार्याहोइगी। यह सुणि दुपद
 संदेहसमुझमें बूझो। तब याको संदेह हरकर
 बैकौत्रकाल गपदसी वेदव्यस आये। वृद्धि श्री
भारतकारचरित्रकाया आदि प्रवृद्धिदशमोऽध्यायः
 वेपथाय नमः ॥ तहां वेदव्यास आय दुपद
 सो पूजासत्कार पापवाकी भूदता हरकर बै
 कौ पूर्वकथा कहत नये। हे राजन सुणो एकस
 मे पार्वती शिवसहित कामधेनके संग पांच
 षभदेविहंसी तब कामधेनु शापदियो तूह
 पांचकी भार्याहोइगी। तब पार्वती कही या
 शापको निवारणकेसै होइ। जब शिव ब्रह्मलो
 क गये ब्रह्मास्तुतिकरीता मे पांचवै मुखसो ष
 रकी सीधुनि नई। तब वासिरको काट्यो जब ब्रह्म

हृत्पालगीवहसिरशिवकेहाथमेंआयो। तबपि
वहत्यासोंकहीकेसैछूटैवानैकहीअठारहअ
सोहणीकौरुधिरपांनकरावोसोसुणिबिष्णु
अंगीकारकरिकहीतुमतोपांचौपांडवबणो
पार्वतीशेपदीहोहु। सोयेशिवहैयहपार्वती
है॥ अैसेकहिद्विब्यइष्टिदेकेसोहीसरूपइन
कोदिषायसंदेहहरकियो॥ औरसुणइंणचा
र्यतेरोअपमानकस्यो। जबतैयाजउपयाज
रोऊब्राह्मणकौलेगंगातीरयग्यकस्योइंण
चार्यकौबधकरैअैसीसंतानहोहु। तबवावेद
मेंसोकन्यातौयहशेपदीभईकुंडमेंसोपुत्रभ्रष्ट
सुम्नभयोअश्रिकोअवतार। तातैएकेकदि
नकेक्रमसोइनकोबिबाहकरिवो। जोग्यहै
अैसेकहिवेदव्यासगयेपीकुराजापांडवन
कौपथाक्रमसोपांचचकौपांचेदिनमेंशेपदी
ब्याहइई। दुर्योधनभ्रतराष्ट्रसोंआयशेपदीवि
बाहकौब्रतंतनिवेदनकरीकहीसेनासहि
तजायपांडवनकौमारोअैसेमैरोमनोर्थहै
यहपुत्रकोबचनसुणिभ्रतराष्ट्रभीअइंण
सोमंत्रकरततयो। जबभीअबोलेइपदक्रम
तौसहाइअरुआपहपांडवपरारुमी

नके। बसकेहै। तातैउनकोइहाबुलाइआधो
राज्यदेअपजसहरकरो। जैसेउनकोबचन
मानिध्रतराष्ट्रपांडवनकेबुलाइवेकोविदुर
को। भेजे। जबविदुरउहाजाय। पुपदकोसमा
धानकरिकुंतीशोषदीसहितपांडवनको। त्याइ
ध्रतराष्ट्रकेचरणारुं। तै। मकरायो।
तबध्रतराष्ट्रहयुधिष्ठिरको। आसीबाददेकही
पुत्रआपुसमै। विरोधनहोइ। तातैतुमषांडव
प्रस्थमै। वासकरो। जैसेध्रतराष्ट्रकी। आग्या
मानियुधिष्ठिरहृषांडवप्रस्थमै। जायइं। प्र
स्थनामानगरवसायवासकरतभये। वहांश्री
ऋषहआपपांडवनको। तेजप्रतापसहित।
देविप्रसेनहोइ। कछुकादिनवासकरि। द्वारका
को। गये। जबद्वारकामें। नारदमुनिऋषयो। आ
इमिले। तबऋषसतकारकरि। नारदमुनि
सैं। बोले। पांडवतौ। पांडव। अरुशोषदीएकहै
सो। इनके। स्त्रीनिमित्तकलेसनहोइ। तातैतुम
जाय। आपुसमै। पणकरावो। सो। सुणि। नारदमु
नि। आपपांडवनसैं। मिलिकथाकही। आगे। सुद
उपसुदना। मादो। इरातसवनमैं। महातपक
स्यो। जब। ब्रह्मा। आपकही। वरमांगै। तबउन

बरसाणो जे हमदोऊ भ्राता आपुसही मैम
रे औरके मारे मरे नही जैसे बरपाइ देवता
नको पीडा बहोत करी ॥ जब देवता ब्रंसाया
सजाय उनको ब्रतांतक सो ॥ तब ब्रंसा उरव
सी को उनके पास भेजी सो वाको रूप देखि ब
ओ भ्राता तो कहै यह मेरी भार्या है तेरी माता
है ॥ छोटी भाई कहै मेरी भार्या तेरी पुत्रवधू है
जैसे कहते क्रोध बस होइ दोऊ युद्ध करि म
रे ॥ ताँतै तुम पांच भ्राता नमें शेष दी एक भार्या
है सो पण करौ ॥ जा एकके पास यह होइ तब
दुसरो जाय नही ॥ अरु जाइतौ बारह वर्ष ती
र्थयात्रा करौ ॥ जैसे कहि नारद मुनि गये तब
पांडववाही माफिक एक एक दिन रात्रकी प्रत
प्या करि शेष दी सो बिहार करत भये ॥ जैसे रहतै
कोई समें मैं ब्राह्मणकी गाइ चोरी ॥ जब वह ब्रा
ह्मण पुकारत आयो हे कुंती पुत्र हो मेरी गाइ कु
डावो ॥ दासमें युधिष्ठिर सहित शेष दी नाम हल
में ही ताही मैं अर्जुनके सस्त्र अस्त्र हे ॥ वातरफ
तौ ब्राह्मणकी पुकार वात फण करी सो जाइ
पातै कैसे करौ तब विचार करत करत अर्जुन जा
यसत्र

तापीके युधिष्ठिर ब हुत निवारण किये तो
ह अर्जुन ब्राह्मण नकों संग ले तीर्थ यात्रा क
रत नयो ॥ सो प्रथम ही तो गंगा द्वार जाय स्ना
न करि बके प्रवेश कस्यो वहा को रब्य नाग की
पुत्री उलपी या कौं देखि का मातुर होइ नाग
लोक में ले गई ॥ वहा जाय क ही मैं तुम्हारी
भार्या होइंगी ॥ तब अर्जुन विचार किये अति
अनुराग वती नारी को सेवन किये ब्रह्म चर्य
भंग होइ नही ॥ अरु जो मैं अंगीकार न करों
तो यह प्राण न राषेगी ॥ यह विचार वा सो वि
हार करत नयो ॥ सो एक रात्र ही बास में वाको
गर्भवती जाणि मुनि न सो मिलि सब ब्रतात
कहत नयो ॥ उहां तैं पूर्व दिसा के तीर्थ यात्रा
करत करत समुद्र के किनारे किनारे होइ
मणि पूरपुर कौं गयो ॥ वापुर कौं राजा चित्रता
की कन्या चित्रा गदा वाको रूप देखि अर्जुन का
समोहित नयो ॥ तब चित्र नय सो मिलि कन्या
मागी ॥ जब राजा बो ल्यो हमारे आदिराजा
प्रनं कर हो सो महा देव की आराधन करी ॥ ज
ब महा देव प्रसन्न होइ चर दियो तिहारें बंस
में एक के एक सतान होइगी ॥ तातैं मेरी क

न्यावसकरिवेवारीहै सोयाकेसंतानहोइगोसे
 मेरोहै ॥ ऐसेकहिराजाअर्जुनकोदर्द ॥ तवअर्जु
 नतीनवर्षलौउहारस्यौ ॥ जबवामेंबभ्रुबाहन
 नामापुत्रभयो ॥ उहांतैंदक्षिणदिसाकीतीर्थया
 त्राकौगयो ॥ तहांसोभइतीर्थमेंमुनिननेमने
 कियोतौहस्नानकौप्रवेशकियोतवग्राहीनेपां
 वपकइो ॥ तववाकौपकडिआकासमेंफैकी ॥
 सोदिव्यनारीहोइबोली ॥ हमपांचअक्षरही ॥
 सो ॥ एकतो धर्म ॥ २ ॥ सौरभेई ॥ ३ ॥ सामीरका ॥ ४ ॥
 दबुदिका ॥ ५ ॥ लता ॥ ६ ॥ ऐसेनामनकरियावस
 षीहीसोएकरिषिकेतपभंगकरिवेकौपांचो
 जाइआसिंगनकियो ॥ तववानैथापदियोतुम
 ग्राहीहो ॥ जबहमवासौपूछ्योथापसौमुक्तक
 वहोइगी ॥ तवउनकहीएकनरआइतुमकौ
 आकासमेंफैकैगो ॥ जबछूटोगी ॥ तासौजैसे
 मोकौफैकिथापसौमुक्तकरितैसैही ॥ उनचारि
 नकौभीकरो ॥ ऐसेसुणिअर्जुनपंचतीर्थनमेंपं
 चग्राहीनकौउधारकस्यो ॥ तादिनसौअद्रापि
 वेपंचनारीतीर्थहीकहावैहै ॥ उहांतैंगोकर्ण
 आदितीर्थकरतकरतपश्चिमदिसाप्रभासती
 र्थमेंआसो ॥ जबश्रीकृष्णसुणिजाइवनसहित

मिलिवेकौं आयै सतकार करि द्वारकामें लेगये
उहां चातुर्मास्य वास कस्यो ॥ जब कोई समैमें
ऋषकी भगनी सुभश्या कौं मन मोहित कस्यो
तब अर्जुन एकान्तमें श्री ऋषस्यो बिनती करी
असैं सुणि ऋष कही सुयंवरमें वाबलात्का
रसो विवाह होइ सो जसको कर्ता है ता तै तकरि
असैं ऋष कही जब सुभश्या द्वारकामें बाहरनि
कसी तब अर्जुन हृतीर्थ यात्रा करतौ ही वाकौं
रथमें चढायइइ प्रस्तकौं चल्यो ॥ सो सुणि बल
देवनै क्रोध कस्यो तब श्री ऋष कही आपक्यो
क्रोध करेतु म्हा रो मनोर्थ भीष्मपौ त्रदुर्योध
नकौं देवेकौं हो सो यह हू भीष्मपौ त्रही है ता तै
काहेकौं क्रोध करौ दाइ ज देणों होइ सो दी जै
असैं कहि बलदेवकौं प्रसन्न करि दाइ जलेश
ऋष आइ अर्जुनके सामिल भये ॥ तब अर्जुन
श्री ऋष सुभश्या सहित इइ प्रस्तमें आयो ॥ भा
ई नसो जया जोग्पमिलि प्रीति सहित कुंती
सो दंडोत करी ॥ तापी हू विधिवत सुभश्यासो
विवाह कस्यो ॥ सुभश्या हू प्रथम कुंतीकौं दंडो
त करी पी हू शेषदीकौं कहि मैं तेरी दासी हौं ॥
तब शेषदीकही तू श्री ऋषकी भगनी है सो

मेरी हूँ भगनी है ॥ वासुभद्रा में अर्जुन के अति
मन्यनां मापुत्र भयो ॥ ताको अर्जुन श्री कृष्ण
दोऊ मिलि आपमें बिद्याही सो सर्व पढ़ाई तब
अति मन्य दोऊनकी समानइ कलौ भयो ॥ ३ ॥
पदी में पांचनतै पांचपुत्र भयो ॥ युधिष्ठिर तै प्र
तिबिंध्य ॥ १ ॥ भीम तै श्रुतसोमा ॥ २ ॥ अर्जुन तै श्रु
तिकीर्त्ता ॥ ३ ॥ सहदेव तै श्रुतकर्मा ॥ ४ ॥ नकुल तै
शतानीक ॥ ५ ॥ इन पांचो नको संसकारधो म्प
प्रोहित कस्यो ॥ अर्जुन बिद्या पढ़ाई ॥ युधिष्ठि
र शिवि देसको राजा गोबाहनताकी कन्या
सुयंबरमें ब्याही वाके योधेयनां मापुत्र भयो
भीमका सिराजकी कन्या काली ब्याहो वामें स
बीगनां मापुत्र भयो ॥ नकुलचेदिराजकी कन्या
करेणुवती ब्याहो तामें निरमित्रनां मापुत्र भ
यो ॥ सहदेवमद्रपतिदुमंतराजाकी कविज
यानामपुत्री सुयंबरमें ल्यायो तामें सुहोत्रना
मापुत्र भयो सो चारोंके पुत्र चारोही अपने
अपने नानाको राज्य करत भयो ॥ अैं सैं पांड
वइंद्र प्रस्थकी प्रजांनको पालन करत श्री कृ
ष्णसहित बहुत आनंदसहित बसंत भयो ॥ ६ ॥

१०॥ वैशंपायन उवाच ॥ असे रहते वसंतरितु
आयोतवश्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिर सो आग्य
पाइया उववनमें बिहार करवें कों गये ॥ उहां प
मुना प्रवाह के तीर वन की सोभा देखि बहुत
प्रसन्न भये ॥ सो कोइक समैं सिकार हूकरत भ
ये ॥ असे रहते रात्र की सोभा देखि ॥ वहां ही नि
शकरी ॥ पीछू ब्राह्मण हतमें उठि दंत धावन
स्नानादिक करि प्रातसंध्या करि ब्राह्मण कों
हांन देत भये ॥ असे अनेक ब्राह्मण आवै हें दं
न पावै हें ॥ असे समैं हरतें आवत एक ब्राह्म
ण कों देख्यो ॥ सूर्य समान कांति है जा की अति वि
साल सरी रहै स्याम चरि धारै हें ॥ नेत्र विसा
ल हें ॥ उठी मूर्ध पीत हें जटा अग्नि वर्ण हें ॥ असे
वो कों रूप देखि श्रीकृष्ण अर्जुन संदेह कर्त भये
कृष्ण बस्त्र पीत कांति धारै यह मेघ की घटा स
हित सुमेर ही आवै हें कहा ॥ अथवा निज क
न्या कों धारै सूर्य ही आवै हें कहा ॥ अथवा धूम
पटल सहित अग्नि ही आवै हें कहा ॥ असे बिच
रि उठि सन्मुख आय चरण नभै प्रणाम करि हा
थ जोड़ि ठाडै रहै तब वह ब्राह्मण बोल्यो ॥ आगे रु
द्र समान तेज जा कों असे श्वेत की नाम राजा

पो॥ जाके यग्न में ब्राह्मण न नै दृष्टा इत
 नी पाई सो लेतै लेतै लेवे की बांछार ही नहीं
 ताके तपतै प्रसन्न होइ शिव आग्या करी अ
 ग्निकों बारह वर्ष लो अषंड घृता धारा करि
 पूजो॥ अैसे शिव की आग्या प्रमाणरा जाकत
 भयो॥ तापी कै शिव कों प्रणाम करि बो ल्यो अब
 कहा आग्या है॥ तब शिव कही दुर्वासा शिष्य
 कों प्रोहित करि सत वर्ष और यग्न ही करे
 जब राजा वैसै ही करत भयो॥ सो वाके सत
 वर्ष हव्य भोजन तै बारह वर्ष की घृत धारा तै
 अग्नि अजीर्ण तै तेजरहित होइ ब्रह्मा सो प्रा
 र्थना करी॥ मेरो अजीर्ण कैसै मिटे॥ तब ब्रह्मा
 कही षांडु वन भक्षण किये मिटे॥ सो वह अ
 ग्नि सात बेर वा वन में लपो जब ही वाके रत्न
 कन नै भुजाइ दियो॥ सो अब वह अग्नि या वन
 कों संपूर्ण अंतुन सहित भक्षण करे तब तेज पा
 वो और इंद्र को मित्र तक्षिक हूया की रक्षा करे
 है॥ दानव मानव राक्षस हूया की रक्षा करे है
 और इंद्र हूया पै नित्य वर्षा करे है॥ ता सो वह अ
 ग्नि में तुम्हारे पास आयो हो तुम्हारी सहाइता पा
 कों भस्म करि द्यो मेरो मि

२०
ब्रह्म महाबलवान है पै या सहाइता में तो वह
निर्वल ही है। जैसे सुणि अर्जुन बो ल्यो। मेरो
भुजबल सहिबेलाइक धनुष नहीं या काम
लायक बेग वंतरण नहीं। तेसे ही बाण हन
ही। श्रीकृष्णके बाहू बल लायक अस्त्र हन ही
ताते इतनी बलु होइत वतु मारो कार्य सिद्ध
होइ। जैसे सुणि अग्नि चार श्वेत घोडा कपिध
ज सहित दिग्बरथ अक्षय वाणन कौ दिवे त
र्कस अने कवच गाडी वधनुष ये तो अ
र्जुन कौ दिये। श्रीकृष्ण कौ सुदर्शन चक्र अग्रे
य अस्त्र कौ मोदकी गदा दई। तब अर्जुन अग्नि
कौ प्रणाम करिक बचप हरि धनुष वाण धा
रि रथी भयो। चक्र गदा धारि श्रीकृष्ण सार
थी भये। इनकी सहायता पाय अग्निह प्रचंड
जाल मालान करि विकराल होइ ताउव
न त्यकर तही पाउव न भक्षण कौ कीडा ही
मानत भयो। इति श्रीमहाभारत सार चंडिकाया
अदिपर्वणि द्वादसो ध्याय ॥१॥ वैशंपायन उवाच।
ता उपरांत अग्नि वाको भक्षण करिबे कौ धूम
मिससिषाषो लिज्वा लामय प्रवेश करत भयो
जब वाकी ज्वाला प्रलयानल समान होइके २१

ली॥ तब वा बन के वासी रक्षिक पसुपत्नी दानव
मानव राक्षस सर्पादिक सब ही हाहाकार करत
भये॥ तथा कितने कतौ दग्ध भये कितने कनि
कसि भजत हे तिन कौ अर्जुन कौ रथ चक्राका
र फिरत होता तै अर्जुन बाण नसौ मारिवाही
मैं पटक दियो॥ तै सै ही क्रुष्ण हृगदा चक्र न करि
मारिवाही मैं गिरावत भये॥ वह चक्राकार फिर
तौ हु वोरथ वामैं के निकसत हु वे जीवन कौ के
रवत दीसत भयो॥ कितने क जत्तराक्षस पात्र
भरि भरि अग्नि में भुजावे कौ जल डारत हे सो जै
सैं मध्य में भोजन करि बेवाले कौ जल पान करा
वै तै सै वह मानत भयो॥ वा अग्नि की आताप के
मारे स्पंघ हाथी नकी छाया कौ आस रौ लेत भ
यो॥ सो वे हाथी जलि जलि गिरे जब वे स्पंघ ह
जलि गये॥ अै सैं हाथी स्पंघ जत्तराक्षस दानव
सर्प मनुष्य इन कौ हाहाकार सब सुणि देवता
प्रलय कौ भय मानत भये॥ तब इंद्र पांडुवन की
रक्षा करि बे कौ घटान सहित आय वर्षा करी॥ जब
अर्जुन सरपंजर करि घटान कौ निवारण करी॥ त
ब बन कौ दाह देषि तक्षिक नामां सर्प भजि उत्तर दि
सा कर घंट कौ गयो॥ वा कौ पुत्र अश्वसेन नामां स

माताके गर्भमें मुषहो इधुसिगयो वापुत्र
के वचायवेकोमाता आकासको उठी तब अ
र्जुनवापुत्रकी पूरु सहित बाणसौवाकोसि
कायो पूरु कहेसो अश्वसेन उदरमेंसौनिक
स्यो जबयवन उडायलेगई फेरि अर्जुनवा
णनसौतीनटक करिवाकी माताको अग्निमें
गिरा इइ इइको आयो देषिय मवरुण कुवे
रह सहाइ करिबेको आये ॥ जब अर्जुनके उ
नके युद्ध भयोसो अर्जुन उनके अस्त्र षंडन
करि बिजे पायो ॥ तब सब देवता इइके सरण
आये इइह अर्जुनपे सिलानकी ब्रष्टिकरी सो
अर्जुनबाणनसौ षंडन करी तब देवबाणी भ
ईये कस अर्जुन अजेय है सो सुणि इइ अपने
धामको गये सब अग्नि निर्भयतासौ षंडव
वनको भस्म करत भयो ॥ तहां मयना मोहन
व अग्नि सौ पीडत होइ मै सरणागतहो ॥ अ
सैं कहत निकस्यो ॥ जब श्रीकृष्णके कहेसो अ
र्जुनवाको बचायो ॥ एक मंदपाल ब्राह्मण बाल
ब्रह्मचारी सुर्ग गयोहो सो देवतावासो बोले
संतान बिना सुर्गको अधिकार नही ॥ तासौ सं
तान करि सुर्ग आवो ॥ तब वह षंडववनमें अ

षष्ठाङ्गकापत्नीणामैचारपुत्रपैदाकरे सोऽन
 न्नकौ ह वादाहमैः प्रायेदेषि ब्राह्मणस्तुति
 जबः श्रियेवाके पुत्रनकोऽहोऽः ॥ अत्रैः श्रिये
 र्ङ्गपुत्रचारमयदानवः अश्वसेनसर्पः इन
 औरसर्वषाडववनकोऽहृदिनमैः भस्मक
 केयसमानरूपधारिः श्रीः क्लेशः अर्जुनकोः आ
 रिप्रसन्नहोऽनिजलोककौगयोः ॥ दो
 हा ॥ रावबहादरचादस्पधुहकमकियो सुषदाय
 भाषाभारथसारकी करीचिनचिनचाय ॥ १ ॥ इ
 श्रीभारतलारचंद्रिकायां आदिपर्वणित्रयो
 ध्याय ॥ १३ ॥ आदिपर्वलसमाप्त ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशंकराय नमः ॥ ॥ ॥
 सभापर्वतो जाव चनिका लिखते ॥ नारायणं न
 मस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं ॥ देवीं सरस्वत्य्या
 संततो जयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण अर्जुन
 मयदानवती न्यौ आपुसमै प्रियवचन बोधि
 करियमुनातीर आये ॥ घांडवदाहकोषेदमि
 टाबैको निमित्तं ॥ यथा जोग्यविश्रामकरतन
 ये ॥ तहांमयदानवश्रीकृष्ण अर्जुन नै उपका
 रकस्यो ॥ अग्नितै प्राणवचाये ॥ तातै पुनर्ज
 न्मभयो ॥ अस्मै सोमां निप्रसन्नचित्तहोइ ॥ श्रीकृ
 ष्णके प्रतिह अर्जुनसो वचन बोल्या ॥ इव्यदां
 तं परोपकारी तो बहोत प्रसिद्धहैं ॥ परंतु भ
 यभीतको अभयदान देबे वाले बिरलेहैं पि
 ताविद्यादाता अभयदाना माता इनको प्रसु
 पकारहै हीनहीं ॥ तातै विवेकी इनके चरण
 रविंदनकी भक्तिही करि पापुनको हरिकरे
 है ॥ तुमनें मेरे प्राणवचाये ॥ तातै तुमारी क
 र्णपूजाकस्यो चाहतहों सो तुम अंगीकारक
 रोगे ॥ तब श्रीकृष्णकही तो कौ जोग्यहो ॥ अस्मै
 सुणिकरि मयदानव अंतरधानभयो ॥ तब
 श्रीकृष्ण अर्जुन इइ प्रसन्नपुरमें आये ॥ राजा

युधिष्ठिरसौ सब ब्रतों तक हि सीष मांगि श्री
कृष्ण द्वारिका को गये ॥ और कै स पर्वत के उ
त्तर भाग में मैनांक पर्वत ॥ ताके ईसां नदि सा
में ॥ सुवर्ण रत्न मय बिंद सरना मा सरोवर है
वहां आगे तीन चीज धरी ही तिनके लेबे को
मयदान वग्यौ ॥ वहां तै एक तौ संष एक गदा
एक सभारचना की सामग्री ॥ ये तीनों लेक
रि मयदान वद्द प्रस्त में आयौ ॥ जाकी अवाज
सो देव गज हू मुर्छित होइ ॥ सो देव दत्त नामा
संष अर्जुन को दियो ॥ वह संष आगे वरुण को
हो ॥ और जाके भ्रमा बेसो देवदान प्रलय को
भ्रम पावै सो गदा भीमसेण को दीनी ॥ युधि
ष्ठिर महा राज के निमित्त सभारचना करी ॥ सो
एक बरस दोय महीना में तयार करी ॥ वह स
भा आगे ब्रस परबादान वके बैठिबेकी ही व
ह सभा फटि करत्न मई करी ॥ ताकी रष वाली
के निमित्त मयदान वकी ॥ आग्यासों आठ ह
जार रात्त सरहो ॥ जासभामें देवलोक पाताल
लोक ॥ मनुष्य लोक सब ही रचना दीसे ॥ जाके
फटि कमणि नको कोट है ॥ जिनके रत्न मई
पाज जैसे वावड़ी सरोवर है ॥ तिनमें अनेक जा

तिके सुवर्णमर्षी आदिदेकमलप्रफु ल्यतरहै
सुवर्णवर्णमर्षकत्तमत्तविचरतरहतहै।
हरितनकेफलपुष्पनकरिकेसोभायमान
ऐसेअनेकल्पव्रत्तनकेबागसमानबागहोर
त्तमर्षकरसबंधीहै। फटिकमर्षधननकरि
मंडित। दिव्यसभासंडपहै। मोतीनकीजा
लरीसहितनानाप्रकारकेचंदोवाहै। जहां
स्थानस्थानमेंतुंबरकौंआदिलेकरिगंधर्व
घृताक्षीकौंआदिलेकरिअपसरासमयस
मयमेंगाननृत्यबादकरतहै। ऐसीसभामें
सुभमहर्षीविचरिधौम्यपुरोहितकोवावेदव्या
सादिकेमुनिसहितवास्तुधूजनकरिमहारा
जयुधिष्ठिरप्रवेशकर्यो। ताउत्सवमेंदेसदे
सांतरकेसर्वहीराजामुनिहितजनआदि
सबहीआये। तिनकौराजायुधिष्ठिरभक्तभो
जसुगंधबस्त्रअलंकारधनरत्नादिकदेकरि
बहुतसनमानजयाजोग्यकर्यो। तासमयमें
आकासतेबीणावजावतनारदमुनिआव
तभये। तिनकौंमहाराजयुधिष्ठिरबहुत
सनमानकरिसिंघासनपैविराजमानकरे।
तबनारदमुनिबोले। महाराजसभातोअति

० ॐ श्रीनारदमुनिको वचनमुणिसवपांडवन
विचारकल्यो ॥ कार्यबहुतनारीहेसोकौण
कौणकहाकहाकार्यकेरोगेसोकहोतव
अर्जुनबोली ॥ मैलंकापुरीजायकेसुवर्ण
ल्याऊंगे नकुलकहीमंडपमैल्याऊंगे ॥ स
हदेवकहीश्रीऋक्षकौमैल्याऊंगे ॥ भीमक
हीअरासंधकौमारिअजांनकोमैंकुडाप
ल्याऊंगे ॥ तवमहाराजयुधिष्ठिरकहीमै
सत्यधर्मसुमर्णकरिकामधेनकौबुलाऊ
ंगे ॥ परंतुहसहदेवतुमपहलेश्रीऋक्षके
ल्यादोतवयगपकोआरंभहोइंगे ॥ तवसु
भमुहूर्तमैसहदेवपश्चिमकौद्वारिकाके
सनमुषयात्राकीनी ॥ जबमार्गमैयोगनी
सनमुखआई ॥ साममुखलालनेत्रत्रिस
वधारौ ॥ त्रैसेभयंकररूपसौआइसहदे
वसौबोली ॥ हेसहदेवकहाजायहेसोक
हो ॥ तवसहदेवकहीराजसत्ययगपकोबडे
भारकामहो ॥ सोताकीसहाइकरिवेकोऋ
चंद्रकौद्वारिकातैलेबेकौजाह ॥ जबयोग
नीबोली ॥ मैयदिसामैवसहसोतजाइहेतै
मोसौयुद्धकरि ॥ तवसहदेवकही ॥ मैपुरसो
र ॥ अबलाहेतातैयुद्धकेसहोइ ॥ जबयोग

नीकही॥जैसेभवांनीनिसुभतेंमहायुद्धक
ल्या॥तैसेमेरोतेरोनीयुद्धहोगोयामेंसंदे
हनहीं॥जैसेकहिकेंदोऊयुद्धकरतभयोप
रस्परविजेकीइत्ताकरिके॥तववीरसहदेव
अर्धचंद्रवाणकरिवाकेबस्त्रनकोत्तिनभि
न्नकरिडारे॥जैसेयोगनीकोबस्त्रहीनक
रिसहदेवमुषफेरिलियो॥जबयोगनीबो
लीहेवीरतमासोमुषफेसोसोयुद्धकरिवेको
समर्थनही॥तवसहदेवकहीनग्रश्रीको
जोदेवेंवेनकजाइहो॥तापापसोडरिमुषफे
सोहेकाइबतासोनों॥अवनवीनबस्त्र
पहरिआचफेरियुद्धकरोंगो॥तवदोऊफे
रियुद्धकरतभयो॥वायुद्धमेंयोगनीकेसरा
रतेंजितनेरुधिरबुंदभूमिमेंगिरोतितनी
हीयोगनीहोतभई॥जैसेहीजिनकोरूपअ
रुतेसोहीपराक्रम॥जबयोगनीबोलीहे
सहदेवमेरेअसंघातरूपदेषि॥बस्त्रहीन
बस्त्रसहितएजितनेरूपहैसोसबमेरे
हीहो॥पणतेरोमनपरनारीतेंविमुषहेता
तैतोसोप्रसन्नभईसोबरमांगि॥तवसहदे
वकहीजोदेवीतुमप्रसन्नभईतो॥जैसेही

हही बर मांगें हों ॥ योग नी जैसे ही हो कहि
अपने स्थान गई ॥ सहदेव द्वारिका को गयो
तहा जाय श्री कृष्ण के द्वारपाल सो बचन
बोले हे जसवंत द्वारपाल मैं हस्त नागर
सों आयो हों सहदेव हों सो मालि मकरो ॥ अ
से सुनि द्वारपाल जाय श्री कृष्ण सों कही त
ब श्री कृष्ण कही कहा कार्य आयो है ॥ तब द्वा
रपाल जाय पूछ्यो हे वीर कहो कहा कार्य हे
जसों तुम इहां आयो ॥ तब सहदेव कही जो
मैं युद्ध करिबे कौ इहां आयो हों ॥ यह सुणिके
कृष्ण कोटि जादव युद्ध कौ आयो ॥ सहदेव
ह योगनी केवल तैं उतने ही रूप धारि उन
सों युद्ध कस्यो ॥ तहां जादवन के अरु सह
देव के घोर संग्राम भयो ॥ जहां जादव कित
ने कहिन निहत होइ लागे ॥ तब श्री कृष्ण आइ
सहदेव सों बोले ॥ मैं तेरे पराक्रम तैं प्रसन्न
भयो सो बर मांगि ॥ जब सहदेव बोले मैं ह
प्रसन्न भयो तुम ह बर मांगो ॥ ऐसे सहदेव को
बचन सुणि श्री कृष्ण बोले ॥ तुम यह प्रतप्ता
करो सो मैं जादवन सों युद्ध करों नही ॥ जो त
स सास्त्र कौ पूछे बिना जानी नही करूं ॥ तब
सहदेव बोले हे वासुदेव जो तुम प्रसन्न भयो

लंका कौंधेरि जुह कस्यो श्री रामचंद्रशबिजेपाई
सोसेतु बाधो जासो सरपंजरही बाधवानरपा
रकोनगये। तबहनुमान बोले। बानरबडेपरा
क्रमीहेसोउनके कदिबैतेसरपंजरतिननि
नहोइजायरहेनही। जब अर्जुन बोले जोमैस
रपंजरबाधो ताकौ कौनकेदनकरो तबहनुम
तकही तुम बाधोमैही केदनकरौगो। जबअर्जु
नसरपंजरबाधो। हनुमंतउकुलिकेपरसो
सिततिलछिन्नमिन्नकरिडास्यो। तबअर्जुनउ
हासतयो। जबश्रीकृष्णबोलेफेरिसरपंजरबा
धि। तबअर्जुनफेरिसरपंजरबाधतभयो। श्री
कृष्णबाकेनीचे जायकर्मरूपहोयठाडानयो।
अर्जुनकही अबयहतोदियो। तबहनुमंतवा
पेकहो। सोबहुतेरेप्रहारकियेपरतुनैकनी
चलितभयो नही। तबहनुमंतअर्जुनसोबोले
मैप्रसन्नभयोबरमागि। जबअर्जुनबोले जुह
समैमेरीधुजा मैतुमआवबिराजो सोहनुमंत
तथास्तुकसो। फेरिश्रीकृष्णबोलेहमकौलंका
पुरीमैलेचलो। सोहनुमंतश्रीकृष्णअर्जुनको
लेगयेवहाविभीषणबहुतसनमानकरिपूज
नकस्यो फेरिकहीआग्यकरो। तबश्रीकृष्ण
बोलेयुधिष्ठिरसहाराजकेराजस्यजग्यहोथ

नचाहियेहै सोदो॥ तबबिभीषणअसंषा
तसुवर्णनिबेदकस्यो॥ फेरिआपकेकिंकरन
सोकहीजहायेआग्याकरो॥ तहापहुं चाइदो
सोश्रीकृष्णअर्जुनसुवर्णलेकरि इइप्रस्त
आये युधिष्ठिरमहाराजकोअनेकसुवर्णन
केपर्वतनिबेदनकरो॥ युधिष्ठिरहुबहुतप्रस
न्तहोइश्रीकृष्णकीसुतिकरी॥ अर्जुनकहीमैं
सरयंजरबांधोसोहनुमेंतसोनिदोअही त
बश्रीकृष्णचइबोलेत्तमाकरोमेरोसिरदेधो॥
कुलसोहनुमेंतकोबसकरितुम्हारेकार्यकले
हे॥ तबराजायुधिष्ठिरकहीसबपराक्रमश्री
कृष्णहीकोहै औरहजोकार्यहोहैगेसोइ
नहीसोहोहैगे अैसेमनमेंबिचारि॥ श्रीकृ
ष्णकोएकांतमेंलेगये॥ तहाफेरिविनतीकरी
हेश्रीकृष्णमेंराजसूयजगपकरिवेकोबिचा
र्याहै॥ सोकेसेवणिआवैआपमंत्रदीजे॥ त
बश्रीकृष्णबोले॥ सबराजानकोजीतिकरिप्र
श्रीकोबसकरिसर्वसामग्रीसंचयकरि॥ महा
जगकोआरंभकरो॥ अैसेश्रीकृष्णकोबचन
सुणिप्रसन्नभयो॥ श्रीकृष्णकेअनुग्रहकरि
बलवंत अैसेभ्रातानकोदिगविजयकोबि
रतिने परदेबकोदत्तणदिसाकोसजयव

० सी राजनको साथ देकरिनेजे ॥ नकुलको प
श्चिमदिसाकोनेज्यो ॥ उत्तरको अर्जुनको
नेज्यो ॥ पूर्वदिसाको भीमसेनको मरुकेक
यमदेसके राजा साथ देकरिनेज्यो ॥ भग
वान् श्रीकृष्ण सबनको सनेह दृष्टि करि देषि
आसीबाददियो ॥ सो चारोही चारोदिसानके
राजानको जीतिबहुत धन ल्याये ॥ युधिष्ठिर
महाराजको निबेदनकस्यो ॥ एकजरासंध
जीतिबेमें नग्रायो ॥ तब राजाको बडी चिंता
भई ॥ जब श्रीकृष्ण द्वारिकामें उधवसौज्यो मं
त्रकस्योहोसोकस्यो ॥ तब युधिष्ठिरकहीआ
पही यह उपायकरो ॥ जब श्रीकृष्ण भीमसेण
अर्जुन एती मोही ब्राह्मणको रूपधारि ॥ जरा
संधकी राजधानी गिरि ब्रजनामापुरको ग
ये ॥ वहा पहले ब्रह्मभासुरको मारि ॥ वाकेपाल
करि मठीवाके हाडनकी ॥ ऐसीतीनटा कब
णई जरासंध दरवाजेपै धरी ॥ जोकोईकप
टकरिवाके नीचे आबैतबवै आपही सो बा
जे ॥ सो यह व्रता त श्रीकृष्ण जाणि भीमसेणके
हाथपीछकी बुरजफुडवापबिनाहरहीपुर
में प्रवेशकरिके ॥ जरासंधराजाजामहलमें
नित्यदानकरैहो ॥ तहां और ब्राह्मणनके संग

येभीतीन्योकपटरूपीब्राह्मणहोइगये। सोरा
जाअतिथ्यश्रवैतिनकोचरणपूजनकरिकरि
दक्षणादानहाश्रीरतोब्राह्मणदक्षणालेलेक
रिगये। श्रीएतीन्योबैठेहीरहे। जबइनकोजरा
स्यंधपृच्छोसोतुमकोणहो॥ दीषोतोब्राह्मण॥
होयेअमार्गहोइकेसेंआये॥ तबतीन्योहीबो
ले॥ हमहरतैंआयेअतिथ्यहैंसोजाणों॥ हमजो
कामनाकरैहैंसोदीजेजासोंतुम्हारोकल्याण
हो॥ राजाहरिचंद्ररतिदेवशिव॥ बलिप्रस्थीमें
गिर्याकणचुगो॥ अश्रीसोउकब्राह्मणब्याधिकपो
तइनकोआदिदेकरिअनेकअतिथ्यसतकार
करतेकरतेहीयहअनित्यसरीरताकरिपरमप
दकोगये॥ इतनोकहिकेचुपहोइरहे॥ तबराजा
जरास्यंधइनकीआकृतवाणीपरसंचानके
चानपहुंचेनेमेंदेधिषेअधमसत्रीहैंअसेंजाण
केबिचारतनयो॥ येयेहैंतौकोईसत्रीही॥ परंतु
आपदाकेमारब्राह्मणकोरूपबणायआयेहों। जा
सोंबिघारीकोंप्राणपर्यंतनीमांगेतौदेणोही॥ अश्री
सेउदारताबिचारिराजाजरासंधुश्रीकृष्णनीम
अर्जुनइनतीन्योसोंबोलेहेब्राह्मणहोतुम्हारी
बांछाहोइसोहीमांगोमेंतौतुम्हेंमस्तकंपर्यंतदे
वैकोतयारहो॥ तबश्रीकृष्णबोलेहेराजेइह

मकौंदुद जुद्धदो ॥ हम सत्री जुद्धके जाचिकहे ॥
नके जाचक ब्रासएनही ॥ जब जरा स्पधु कही
कोण से सत्री हो ॥ तब श्री ऋषि बोले दानवन
में सिरोमणि जैसे कंसको मारि बेवारो तो मैं क
सहो ॥ हि ॥ डंबको सिर धंडन करि बेवारो
यह भी महे ॥ श्री रषांड ववनको दाह करि इंद्र
को जीतनवारो यह अर्जुन है सो इन तीनों
में सौं तेरी इच्छा होइ ताही सो दुद जुद्ध करि ॥ श्री
से सुणि जरा स्पधु अर्द्ध ॥ हास करि बोली
इतनो कल करि जुद्ध मांग्यो सो जैसे मैं कहा
नही देतो ॥ तासो अर्जुन तो बालक है सो जु
द्ध लायक नही ॥ तू मेरे आगे मांग्यो सो भगोर
सो कहा जुद्ध करौ ॥ तासो भी ममेरे जुद्ध लाय
क है सो यासो जुद्ध करोगो ॥ जैसे कहि करि
एक गदा आयलीनी एक गदा भीमको क
रि पुरके बाहर रंग भूमि हेत हा जुद्ध करि बेको
गये ॥ दोऊ ही सन्नध होइ जुद्ध करत भये ॥ ब
ज्र तुल्य गदानके प्रहार करत भये ॥ पर्सपर
बाम दक्षण मंडल करे ॥ तिनकी गदानको
सर्व बज्र पात समान होत है ॥ जैसे जुद्ध करते
हो ॥ तेसै गदा होत भई ॥ तब फेरि मज्ज नैद

करत भये॥ पाप्रकारसों सत्ताई सदिन लौ
जुद्ध करत भये॥ सो दिन मैं तो जुद्ध करै रात
के समै मित्र जैसे मिलै तैसे नोजन सयन
करौ॥ तब सत्ताई सवी राति भीमश्री कृष्ण
सों बोले॥ अरास्यंधु कौ बल अधिक दीसे
हे सो मैं जीति नही सकूं॥ जब श्री कृष्ण भी
मको समाधान कस्यो॥ फेरि अरास्यंधु कौ
पट कि एक पावें तो दो ऊपावन सों रावि ए
क पावें दो ऊहाथन सो ले करि चीर डारौ॥
तब अहाई सवै दिन भीम जुद्ध में व्याकु
ल भयो॥ रातिकी बातयादि रहौ नही॥ तब
श्री कृष्ण वाके सनमुष एक ब्रह्मकी साधाले
चीरके दिधाई॥ जब भीम कौ वह ब्रह्मता तथा
द आयो सो वैसैं ही रावि चीरके फेक देत
भयो॥ एक पाव एक जाघ एक दृषण एक
कटि एक स्तन एक हाथ एक कान एक आ
षि एक भौह॥ जैसे जुद्धे जुद्धे दो इट्टक सब देख
त भयो॥ पाप्रकार अरास्यंधु मस्यो देषि सब प्र
जाहाहाकार करत भई॥ तब श्री कृष्ण अर्जु
न भीम सों मिलिके सराहत भयो॥ ता उपरांत
नगरमें आय अरास्यंधु कौ पुत्र सहदेवता॥

काराजस्यंघासनपैवैषामराज्याभिसिष
स्यो॥ कैटमैराजाहेतिनकौकुडायगुफामे
सौनिकसायचुलाये॥ वीसहजारआठ
सेराजाआयेसरीरमेंमैलजमिरसोहै॥ जी
एँमलिनबख्रहै॥ जैसेसबहीश्रीकृष्णकौ
हरसणकरिप्रणामकरी॥ स्तुतिकरी॥ तबश्री
कृष्णउनकौखानादिककरवायबस्त्रभूष
णपहरावतभयो॥ जबवेराजाबरषाकेअ
तमेंजैसेतारामंडलसोहै॥ तैसेसोमितभये
एकरथइंबसुराजाकौदियोहो॥ वहरथब्र
ह्मनिदीपबतनसौंअटकैनही॥ सस्त्रपातन
करिकटैनही॥ अषंडनाकीकांति॥ सर्वरथ
नतैअतिऊँचो॥ जाकीधुजाजयस्यंभसीदी
सैवहरथवसुराजाब्रह्मइथकौदियो॥ ब्रह्म
यजरासंधुकौदियो॥ सोवहअदुतरथकौ
श्रीकृष्णदेविभामअर्जुनकौसवारकरिआप
सारथामये॥ गरुडकौसुमरणकरतहीआये
गबउनकौधुजामेंस्थापितकिये॥ जरासंधु
पुत्रकीनभ्रतादेविकौभीरथपेंचटायलि
राजाकुडायेहेतिनसबनकौसगलेकरि
प्रस्तपुरआये॥ जहांश्रीकृष्णभीमअर्जुनम

हाराजयुधिष्ठिरसौमित्रिसबरराजानकोभीप्र
 णामकरावतभये॥ फिरिवहांकोसंब्रतांतक
 हतभये॥ जबवेराजासर्वहीप्रणामकरिबीनती
 करतभये॥ जरासंधरूपीसमुद्रमेंबूडेहेतिन
 हमसर्वहीकोतुमउधारकस्यो॥ सोअबहम
 किंकरनकोकहाआग्याहो॥ तबश्रीकृष्णबो
 ले॥ एकबेरअपनेअपनेस्थाननमेंजायस्त्रीपु
 त्रमंत्रीनकोसमाधानकरौ॥ तापीकैसीघ्रही
 महाराजयुधिष्ठिरकीराजसूयजग्यकीसेवा
 मेंसहायतामेंरहो॥ जैसेकहिसर्वहीराजान
 कोविदाकिये॥ तापीकैयुधिष्ठिरमहाराजम
 गधराजकीविजयकोसारजोरथसोश्रीकृ
 ष्णकीनेटकस्यो॥ इतिश्रीभारथसारचंद्रका
 पंतभाष्येणिरुताधिक्याय॥ ॥ ताकेउपरा
 तवेसंपादनबोले॥ श्रीकृष्णनकुलवारथमेंअ
 सवारहोइनागलोककोगये॥ तहानागलो
 कमेंनागरथकीधुजामेंगरुडकोरथमेंनकु
 लकोदेविभयनीतहोइश्रीकृष्णकेसरण
 कहीआग्याकरोतामैंहाजिरहो॥ तबश्रीकृष्ण
 कहीमहाराजयुधिष्ठिरकेजग्यनिमित्तदिव्य
 मंडपहो॥ जबसर्वनागननैल्यापसुवर्णमई

मंडपइंद्रप्रस्तपहुंचायदियो साधिश्रीकृत
नकुलश्रायमंडपकीसोभादिषायकही अब
आपकामधेनकोंबुलावों जबराजायुधिष्ठिर
एकाग्रमनल्यायकामधेनकोंध्यानकस्ये त
वहीकामधेनश्री सोराजाकामधेनकोंदे
धिहायजोडिप्रार्थनाकरी जबताईमैजगप
करो तबताईतुमइहारहोमेरीकामनापर
पूर्णकरो कामधेनदूतेसैहीश्रंगीकारकरि
वहांबासकस्ये तबराजायुधिष्ठिरजगप
कोप्रारंभकरतभये तहांश्रयासीहजार
तोरिषिश्राये सोउनकीसुभमुदूर्तमैश्रीकृ
ष्णकीश्रायासोंबरणीकरी उनमैमुष्पमुष्प
शिषितोइतनेतिनकीप्रथमबरणीभई वेद
व्यास भरद्वाज सुमंत गौतम असित व
सिष्ट अवन कन्हू मैत्रेय कस्यप द्वित्रि
त्रि एकत्र विश्वामित्र वामदेव समति जप
मनी कत पेल परासर गार्गी बैशांपायन
नारद अथर्व धौम्य परसुराम बीति
होत्र ब्रह्मकुंदा रामशिस्य शैलो अकृतब्रण
शौरह बुलायेश्राये शोणाचार्य नीष्प कृपा
चार्य इनकोंश्रादिलेकेश्रौरह पुत्रनसहित

धृतराष्ट्र॥ बिदुराश्रुतः सर्वराजादेसदेसां
तरुतैस्त्रीपुत्रमन्त्रीसेनासहितआये॥ और
प्रथवीमैब्राह्मणक्षत्रीवैश्यसूद्रजोग्गदरस
णकीबांछाकरिआयेतिनसबहीकोंमहारा
जयुधिष्ठिरजथाजोग्गबसाये॥ तबवैब्राह्म
णसुवर्णकेहलनकरिप्रथवीसोधि॥ कुंडमं
उपवेदिकारचतभये॥ सुवर्णमइसर्वसामग्री
करी॥ सर्वब्राह्मणराजस्यसभमेंअपणे
अपनेआसनपरबैठे॥ तबमहाराजहजग्ग
दीक्षालेकरिआरंभकस्ये॥ विहांसभामेंनार
दादिकमुनिश्रीकृष्णादिकक्षत्रीनकरिसभा
बहुतसोभाइमानभई॥ तहांवेदव्यासब्रह्मा
कौकर्मकरतभये॥ धौम्यआचार्यकर्मकर
तभये॥ औरमुनिअधैर्यउजाताकौकर्मक
रतभये॥ औरहोमपाठजपपूजनादिकक
र्मकरतभये॥ फेरिअविशेषकरिहोमकौक
रतभये॥ तासमैमैअर्जुनयांडुबबनचरण
प्रतिकौनेरोग्गकस्येहो॥ सोअग्निप्रतादि
सामग्रीनकौपुष्टताकेनिमित्तअग्निनिंसा
जनकरतभये॥ अग्निहोनेहोनेइत्यादि
लोकपालब्रह्मा॥ महादेवपिशाचदंड

द्याधरनागमुनिपत्तिसंपत्तीकिंनर
 चारण औरइनसहिततेतीसकोटिदेव
 सर्वहीपूजनआहुतिनकरिकैजथाजो
 पत्रसभये। अग्निमुषआहुतिनकरिदेव
 तान्नसभये। परंतुचैतिसैत्रसभये। तातै
 अनेकप्रकारकेभक्तनोज्यसामग्रीकोदे
 वताभदेवहोइहोइकरिनोजनकरिकैत्र
 सभये। जाचिकनकेमनोरथनहूतैअधि
 कभूमिरत्तहाथीघोडारथसुवर्णआ
 दिदेतभये। अिसैउत्सवहोतैहोतै सोमा
 मिश्रवकोदिनआयो। तादिनासर्वहीके
 पूजनमेंप्रथमपूजनकोणकोकरणै। अे
 सैविचारकरतभये। तहायुधिष्ठिरमहारा
 एजनैभीष्मपितामहसहदेवइनकोपूछ्यो
 जोप्रथमपूजनकोनकोकरणै। राजसुर
 मुनिआदिबडेबडेमहानमाबहे। परंतुजा
 केपूजेतैकोईइशहनमानै। अेसोबतावेअ
 रुजाकेपूजेतैसर्वहीकोपूजनहोइ। अेसो
 पात्रबतावो। तबभीष्मबोलेइशादिकदेव
 पूजेसर्वलोकनकेगुरुअेसैश्राकृसतिजन
 कोतुमजानौहो। परंतुबडेनकोबडपतरा

शिवकौतुमपूछो हो॥ सो जाके चरणोदक
 को शिवसीसपे धरै ता पुराण पुर सो तमही को
 पूजन करे॥ जब सहदेव हूय हही कही॥ तब
 राजा युधिष्ठिर श्री कृष्णको बुलाय रत्नमय
 ऊचौ सिंघासण पर बैठा य मंडपके बीचि पा
 दर अर्घमधुपर्क बस्त्र भूषणादिक सामिग्री
 न करि पूजन करत भये॥ तहां सर्व ही देखि
 देखिन मोन मो जय जय सब करत भये॥ ऐसे
 श्री कृष्णकी महिमाणुणानुवाद सुण कर क्रो
 ध करि जलत क्रांतै शिशुपाल उठ चल्यो॥ तब
 युधिष्ठिर महाराज निवारण कस्यो॥ तब शि
 सुपाल हाथ ऊंचौ करि बोल्यो॥ इपदा अगस्त
 नारदा परासरादिक मुनिरहितौ॥ याही गो
 पालको पूजन करेणो हो तो इनको बुलाइ अ
 नारको कस्यो॥ परंतु पुत्रहीनकी गति न
 ही॥ तातै गंगापुत्र भीष्म गतिहीनही हो॥ जा
 तै हे युधिष्ठिर तौ कौनी जैसे ही बुद्धिदीनी
 जो कृष्णको पूजन करि॥ तेरी हसद गति को
 नासकस्यो॥ जानै बालकपणै ही मैं तौ पूतना
 कौ मारी॥ जैसे ही पुन्यात्मा पीछुसकत तो
 डिवेल बक्रा हाथी घोडा साप गधेन कौ मारि

वेचालो। जैसेको जैसेउत्सवमें पूजो प
पहाक लो। परंतु होण हारकी महिमासे
रास्य धुतोसुर्गगयो अरु बालक सहदेवक
दि सौं बडे बडे नकी बुद्धि नष्ट भई। जैसे प्र
सकी निदा सुणि भो मजु इ को उघ्रो। तब न
प्र पिता मह निवारण करि बोले। आगे पाव
ती ननेत्र चारि भुजा जन्म लेतै ही भई। अरु रा
सन कैसी धुनिकरी। तब माता पिता ब्राह्मण
न को बुलाय पूछो। याको कारण कहा। जब
ब्राह्मण बोले। जाकी गोदमें बैठे याको एक ने
त्र हो इ भुजा गिरै गिताके हाथ याकी मृत्यु हो
इगी। तब याकी माता सब राजानकी गोदमें
धरयो पाक। जब श्री कृष्णकी गोदमें धरयो त
ब गिरे सो दैषि याकी माता श्रुसवाही सो भती
जे श्री कृष्ण सौं बोली। हे कृष्ण मेरे पुत्र को तु
म कैसै मारोगे। तातै याको अ भेदान द्यो ज
ब श्री कृष्ण कही सो अपराध लो तो प्राफ करोगे
तातै अब अपराध होबे लगे है सो सत अप
राध लो आब लहे। तुम का है कौं षेद करौ हो
जैसे सुणि शिशुपाल बोले। अपात्रकी पूजा
मता बैचाले करबेचाले अरु करे इवेचाले

तबानती करि ल्याये ॥ ताके देखि राजा
कपाइ आसं जेरे ॥ तबतापस पूछोया
कारण कहा राजकही अबतौ ब्राह्मण बु
ये सो नीनही आवै हे ॥ कलिजुगमै बिना बु
येही आगेवेग ॥ तादुषसो मेरे आसु आये ॥
सै कहि वाको पूजन कस्यो ॥ तापी छै जगप
समाप्त करि श्री भ्रत स्नान कस्यो ॥ सबको
विदा करे ॥ सो सबही देव राजा मुनि आदि
जगपकी महिमा करत आय आपके स्थान
गये ॥ श्री कृष्ण दुर्योधनदि कनको फेरि ह आ
पके पास किते क दिन राषे ॥ जैसे श्री कृष्ण
के अनुग्रह सो राजा जगप करि बहुत शान
दको प्राप्त भये ॥ इति श्री

श्रीसैपुधिष्टिरके राजस्यकोदे
विजो जो आहै वै सो सबही आनंदको
पावत भये ॥ एकदुर्योधन बिना वाको बहुत
सताप भये ॥ जनमेजय पूछोया वाको कारण क
हा ॥ तब वैशंपायन बोले ॥ युधिष्ठिरके राज
सूयमें सबही बाधव प्रेम करि जुही जुदी ॥
सवा मे रहे ॥ भीमसे एतोर सो

रमें रहे। आमद पर चकोमालिकदुर्योधनभये
सहदेवपूजाको अधिकारी भयो। नकुलपू
जनसामग्रीको अधिकारी भयो। श्रवैजिन
कोसमाधानकरिवेमें अर्जुनरहो। श्रीकृष्ण
पावेंधोवेमें रहे। कर्णदानदेवेमें रह्यो पु
रोसबेमें शोपदीरही। औरसात्वकीभरीस
वाहारदक्षविदुरबिकर्नसतर्दनको। आदि
दे औरहूअनेक कामन। कोकरतभये। यादि
धिजग्नभयो। तहइव्यकी श्रवैददेषिदुर्यो
धनकेदुष्यभयोहीहो। इजें श्रोत्रतस्नानकी
सोभादेषिमहाश्रातापभयो। सोअंतःपुरमें
जायदेषैतौशोपदीकीनजरश्रीकृष्णकीमहा
राणीसबहीकरैहै औरबिनतीकरैहै। श्रै
सैंसोभादेषिश्रातापतैंब्याकुलहोइबाहर
आयो। फेरिमयकीबणाईहुईसभामेंमहा
राज्युधिष्ठिरविराजेहै। तिनकेपाससत्रही
भायनसहितचल्यो सोद्वारहीतैंद्वारपालन
धेकोपकरतप्रवेसकस्यो। आगेफटिकसि
लानकीफरसफैजलजानिबस्त्रउठाये। आ
गे। रत्नमई बापिकाकोफरसजागिबस्त्र
सहितगिरकेभाज्यो। सोदेषिदासदासीस

बही हंसे। फेरि उहां तें आगे चले सो एक नीति
कों द्वार जाणि धसि बेल गे सो लिलार हू मैल।
गी। तब तो भीम सेण अर्जुन सह देवन कुल
आदि तालीरि के हंसे कही यह अधे को अधो
ही हो। इत उत देखे तो भीति न में उन के प्रति बि
बहंसे हंसे सो मानो चित्र हू है से है। ता सो इयो
धन लजाय मान होइ। महाराज युधिष्ठिर
सो बिना मिले ही क्रोध सो संतप्त भयो। सो दे
धि महाराज युधिष्ठिर सब ही को बहुत नि
वारण करयो परंतु श्री कृष्ण की मरजी पा
य बाल बृद्ध आदि दे सब ही हंसत भये रुके न
ही। अरे से अनादर करि वहां तें बाहर आइ
सवारी करि हस्तनापुर गयो। यह व्रतांत देखि
युधिष्ठिर उदास भयो। अरु श्री कृष्ण प्रसन्न
होइ बिचारत भयो। भूमि भार हूर होवे को यह
ही बीज बस्यो। अरे से युधिष्ठिर को जगप समाप्त
करि श्री कृष्ण द्वार काको गयो। महाराज युधि
ष्ठिर हू जगप समाप्त करि सभामें बैठे हेत हां ना
रद मुनि आये। राजा सतकार करि आसन प
बैठाये। तब नारद मुनि कही जगप के प्रभाव क
रि तुमारे पिता नक ते सुर्ग गयो। आगे हरिस्स

वत है ॥ वस्त्र भूषण पहरे हैं ॥ तो ह सुस्क हो ॥
है जैसे वर्षा काल में समुद्र सुस्क हो ॥ जैसे
राजा सुख के दुर्योधन को बुलाइ बोले ॥ हे पुत्र
सकल संपत्ति कर सहित है तो ह चंद्रमा की सा
तरह क्षीण क्यों होते है ॥ तेरे सन्तुपांडव तो हर है
बाप दादा की संपत्ति जो है सो नित्य बधत है ॥ ता
सै अब तू क्यों चिंता कर हत है ॥ तब दुर्योधन
बोले ॥ सत्नी तो वे ही है ॥ जो आपणा मुं जान
के बल करि संपदा जीतै पांडवन की सीतरे उ
न ही की स्तुति होत है ॥ और बाप दादा न की सं
पदा को बधाइ बधाइ हर्य पावे यह कर्म बैस्प
न को है सत्नी न को नही ॥ ताते सत्नी तो पांडव ही
जिन नै इ इ प्रस्त में यह संपदा ल्या य प्रा
कार को जग्य क ल्यो ॥ जाके चतुर्भु श्री क्रम
चारौ नु जान सौ चारौ दिशा न को जीतिया
कार की संपदा नेट कर वाई ॥ सो वे मेरे सन्तुति
होया प्रकार को अ सु र्य या दि करि मो को दहा
त है ॥ प्रध्वी में उद या चल अस्ता चल पर्यंत च
है ॥ तान में अ सौ राजा को ईर हो नही ॥ जिन
न की नेट करी नही ॥ और नेट जो जो वस्तु ४६

आइसोसबमेंहीलीनीपरंतुतिनमेंकितनी
कवस्तुआजताईनदेधीनसुणीनपहचाणी
सोइतनीआइजिनकेलेतलेतमेंथकिगयोम
णिरत्नमोतीहाथीघोडाचंदनयेइतनेआये।
सोइनहंकीजातिपहचानेंनहीं।राजापुधिष्टिर
केअवसेषकोंनारदादिकसबतीर्थनकोज
ललाये।औरवासमेंमेंसर्वहीराजादाससेव
कदीसे।बाल्हीकराजातोंघोडानकोलियेठा
डोहोकांबोजराजरथजोयो।सुनीथराजा
धुजाधारेहो।वसुदांनराजाहाथीलियेहा
जर।मगधराजमुकटमालालियो।एकल
बभ्रीलराजाउपानलियेठाडो।कास्यराजाध
नुषलियो।पांडुराजकवचलियो।चेकतान
राजातरकसलियो।सत्यराजाषडुधारेसा
त्वीकीजादवकुत्रलियो।भीमअर्जुनदोऊत
र्कचैवरकरै।वासमयमेंसमुद्रआयबरु।
णकोसंघनजरकस्यो।वासषकोंअर्जुनने
धारणकस्यो।श्रीकृष्णधौम्पर्वसादिकमु
निमंत्रपठतेवसेषकरतभयो।सर्वहीवीर
ननेमंगलीकसंघनकीधुनिकरी।सोसु
णि कितनेकराजामूर्च्छितभयो।तहामोह

कामर्की आर्दी जब श्री कृष्ण पांडव सात्व
धृष्टद्युम्न आदिसबही हसत भये सो वह
तमो सो भली कैसे जाय श्री कृष्णकी पूजन
समे सुमन ब्रह्मि नई सि सुपा लमा स्याग
यो सो ये हु कैसे भूलों फेरवा वडी में गि स्या
तव प्रोपदा स्त्री सहित भीमादिक सर्वही ह
सो सो इन बातनके संताप करि मेरो मन कहे
भी लगे नहीं तातैं अब तो मैं मरण ही कौ उपा
प जीवनची चि उचित मानौ हों और सो पुत्रको
बचन सुनि भलराइ बोले पुत्र पराई संपदा
देधि संताप करेगो वह का धरनको धर्म हो त
हु पराक्रम करि इब ल्या और कृपा चार्यक
ए प्रोपदा असुस्थामा इन चारों सहित चारों
दिसा जीति और सोही जगप करि पुधि छिरते
रो बडो भाई है सो चाकी कीर्ति है सो तो तेरी
ही है तब दुर्योधन क्रोध करि केरी बो ल्यो
हे सांनको धन पांडव ले जाये और दिग
जयतैं धनके सैं आवैं धन बिना राज
यके सैं होइ एकरा जस्य कौ कर्ता जी
नै हसरो राजस्यके सैं होइ तातैं सब
न सहित जाय पांडवनको जीति

पदासभासहितसबहालल्योयहमेरेमन
हो॥यहसुणिधतराष्ट्रदुर्मन्त्रहेऐसैबोल
तहो॥वाहीसमेसकुनीबोल्पो॥श्रीऋषभी
मञ्जुनसहदेवनकुलजाकेरहकहेऔर
क्रोधसोंसबजगतकौदग्धकरिबेवालोरा
जायधिष्टिरसोकैसैजीतबेमैआबो॥तासों
एकउपायहेराजाकौचोपडिकोषेलआवे
नही॥औरबुलायकहबेसोवहनटेइनही
तासोंछलकरिवाकीसंपूर्णसंपदाजीतिलीजि
तुमसभावणावो॥पुधिष्टिरकोबुलामैजोतु
हारीसभासमानहमहंसभारचीहेसोदे
षो॥जबवेआवेगेतबमैसर्वकामकरोगो
ऐसैसुणिधतराष्ट्रबोले॥यामंत्रकोधिका
रहे॥धर्मात्माकौछलकरिजीतिबोजोप
नही॥ऐसेकामकरिबेसोंधर्मजसप्रता
पसर्वहीनष्टहोतहो॥अपजसपापयेबध
तहो॥तबक्रोधकरिदुर्योधनबोल्पो॥बैर
कोधर्मअधर्मदेविबोहीनहीबलतैबस
नहोइतौछलसौजीतनोआगेबलिहो

क कहसोतुमनहीमानो गतौमैमरौगो
संपुत्रकोहठदेदेविषाकादुर्बुद्धिसौकुल
कौनाससमजिलोनोतौहधतराष्ट्रमाह
करिअसैहीकरोयहकहतभवौतवदुर्यो
धनसभारची॥इतिभारथसारचंद्रिकाया
सभापरिपंचमोऽध्यायः॥वैशंपायनउवाच
तवविचारीपुधिष्टिरकीसभासमानमेरे
भीसभामहिमापावैयांवांछाकरिअनेक
शिल्पकारतकेबुलापदुर्योधनराजासुध
र्मासभावरावरसभावणचाईजवसभा
तपारहुइदेविषासभामेघूतक्रीडाकरिपां
डवनकोसर्वस्वहरणकरेणोयहविचार
विदुरकंपुधिष्टिरल्यावेकेताईइइप्रस्थपु
रपगपोतहांविदुरपुधिष्टिरससन्मानपू
र्वकमिलकरबोलेराजादुर्योधनसभान
ीनवणवाइहेतुमसंघूतक्रीडाकरवेकं
बुलायेहैलारकहाइच्छाहैतवपुधिष्टिर
सिकारिबोलेशकुनिपाशानकेछलकंजा
हैसोकपटकेपाशानकरिमोकंजीत्योचा
हैवैरीपुइसंनजीत्योजायतौछलकरि
जीतणोयहहबुद्धिवानेविचारीहैसोही ५८

कही है परंतु मैं बुलायो हूँ और एतें वाघू
 तें तें निवृत्त नही होवूँ होयातें अपहण लि
 यो है होणहार होयसो होवो मैं हूँ चलूँ गोत्र
 सो निष्प्रयकर शैपदी भीमादिक च्याहूँ भाई
 करके सहित रथनमें सवार होय हूँ सिनापु
 र आयो ॥ तहां भीष्मपितामह शैणाचार्य ध
 तरा घुड़नसो मिलिकें युधिष्ठिर बहुत स
 नमान पायो ॥ दुर्योधन हूँ अश्वमेदके अ
 श्वकी सीनाही पूजन कस्यो ॥ वरान्न सब
 ही सुषपूर्वक वा भवनमें वास कस्यो ॥ प्र
 भात दुर्योधन द्यूतसभाकी सो जाब एव
 ई ॥ चौरों तरफ गजै इनके मुंडगाजै है स
 र्वबाजाब डै है ॥ गीतन त्य बाहर होत है
 न्येसी सभामें भीष्मादिक वीरनसहित
 प्राप हूँ प्रवेश कस्यो ॥ वहां और हूँ राजा ज
 ण्प्रणाम करि करि बैठे भीष्मादि
 है ॥ तहां सकुनी दृस्सासन कर्ण
 वार्ताबिनोद करि करि दुर्योधन ह
 नमें ताली दे देकै हूँ सत है ॥ भीष्म शै
 जयद्रथ कर्ण अश्वस्थामा क्रुपा चार्ज
 त्यादिक वीर मंडली सहिता इन करि

सभासोन्नितवाभयंकरदेषि पांडवनहं
 कौंतहांबुलायेसोअपेतिनकोदुर्योधननि
 कटअपेदेषिअनादकरिकछुकसनमां
 नसोहकस्यो॥ तबपांडवसिरनीचेकरिनी
 षससोपबैठे जबदुर्योधनसभामेंसुवर्ण
 मईबेदीतापरबैठि पांडवनकौनिकटबुल
 यद्यूतकोप्रारंभकस्यो॥ सोयुधिष्ठिरदुर्यो
 धनतौद्यूतषेलेंतिनकोसकुनमध्यस्थ
 भयो॥ सोराजायुधिष्ठिरजोअपणकियो
 तबतबसकुनकुलकरिकहेयहहजीत्यो
 याप्रकारसर्वराजसामिग्रीयुधिष्ठिरहारि
 गये॥ तापीछेभीमादिकभाईनकौंहारिआ
 पाहकौंहारिगये॥ तबयुधिष्ठिरचारोत्रर
 फदेषतभये सोपणकरिबेकौंकछुभीदे
 ष्योनही॥ जबदुर्योधनबोल्यो॥ हालतौद्रो
 पदीहैसोअबकैद्रोपदीकौंपणकरिवा
 जीषेलो॥ जैसेसुणिबिदुरक्रोधकरिबोले
 एरेअंधकेपुत्रअंधपहतेरीबुद्धिकुलनां
 सकरेगी॥ ततेरीमत्यवास्तेसूतस्यंघनके
 लातमारिक्याजगावैहे॥ जैसेकहतैकह
 तैहायुधिष्ठिरपणकस्यो॥ तबसकुनद्रोपद

हुकौं जी ती यह कहत भयो ॥ तब दुर्योधन प्राति
 कामी सूत कौ बो ल्यो ॥ श्रेयदी रासी कौ इहां
 ल्यावो ॥ जब वह श्रेयदी पास गयो ॥ सर्व व्रतं
 त श्रेयदी सों कहि कह्यो माता तुमह कौ सकुन
 कर्ण सहित दुर्योधन सभामें बुलावै हौ ॥ मैं तो
 सेवक हौं मो सों कह्यो सो कहत हौं यामें मेरो
 दास नही ॥ श्रेयदी न्रै सैं सुणि विचार करि बोल
 दुपद की बेटी पांडु महाराज की पुत्रवधूसो
 मैं राजसभामें कै सैं आऊं ॥ वासनामैं भीष्म
 श्रेण विदुरा ॥ अरु मेरे पांचों पति हैं किनही सो
 कहौ ॥ अरु जो है तो यह पूछौ जो राजा मो कौ
 चापो हारे पहलै हारी ॥ अथवा पीछौ ॥ याको ध
 र्म निर्णय कहाहौ ॥ तब वह बो ल्यो हे राजपुत्री
 सर्व ही हे परंतु चित्रकेलि से हौं ॥ कोई में ध
 र्म नही हौ ॥ जहां राजा तो अंधा ॥ सकुनी मंत्री
 कर्ण बीरत हौ धर्म की चर्चा ही कहा ॥ जब श्रे
 यदी फेरि बोली तो हू भीष्म सों जाय कहौ ॥ ज
 तुम पर सराम कौं जी तबे बाले जासनामैं हौ
 इतहां श्रेयदी की लज्जा जाइगी तौ गंगा कौ ल
 अरु कदाचित रामप

मैं स्नान किये पातक न जाय एन हो बेकी तो हो
इ परंतु शेषदी तो सभामें आवे नही तब जैसे
सुणि तब प्रातिकामी आय सभामें यह कहि
शेषदी जैसे कहै है ॥ जब दुर्योधन प्रातिका
मी सौ बोल्यो ॥ वाको बलात्कार करि के ल्याघो
जब फेरि प्रातकामी बोल्यो ॥ हे महाराज कु
मार तुम तो जाके देवर ॥ भीष्म सुसर पांडव
पतिता सौ बलात्कार करि बेकी मेरी तो सा
मर्थ नही ॥ यह सुनि दुर्योधन क्रोध करि प्रा
तकामी को सभातें बाहर निकसा इदियो ॥
अरु दुस्सासन सौ बोल्यो ॥ वादासी सौ जाय
कहौ जो सभामें चलि के तू ही धर्म पूकिली
ज्यो ॥ अरु नही आवे तो बलात्कार करि ल्या
वो ॥ तब दुस्सासन गयो ॥ जहां शेषदी वाको
आवत देखि भय करि संकुचित भई ॥ अरु क
ही मैं एक बरार जसुला हो सो माको पर
समतिकरो ॥ तब दुस्सासन वाको हे दासी
हे दासी जैसे कहि पकर बेकी दोस्यो ॥ जब
वह भयभीत होइ ॥ अंतहपुरमें भाजि गई
तब वाके केसय कडि बलात्कार करि स
भामें ले आयो ॥ जब शेषदी को देखि सबही

जलोककंपायमाननैयो॥भीष्मशैल
चार्यकेतोकुलनासभयंकरिप्रखेद
प्रो॥ओरसबहीसभजनहाहाकारसब
रतभयो॥कर्णादिकनकेहर्षभयो॥त्रिसीद
साशेपदीकीदेविभीमसेनबोल्यो॥हेयुधि
ष्ठिरतुम्हारेजुवाषेलबेकेदोसकरिइनहा
यनकोजलाइइसोगो॥तातेंहेसहदेवसी
ग्रहीअग्निल्यावातवअर्जुनबोल्यो॥हेभी
मतेरीबुद्धिकहागई॥यहाराजसत्रधर्मरा
षिकेआपनकोहादेहे॥तातेंअपनोतोज
सहहेतासोतुमहूचमाहीकरो॥असैअ
र्जुनकेबचनसुणिभीमसेनकोचमायुत
देविदुस्सासनशेपदीकोसभामेंल्यायो॥ए
कबस्त्राकचुकीरहितरजसुलाअसैवह
शेपदीसभाबीचिपतिनहीकोरुषीशुषि
करिदेषतभई॥तवयुधिष्ठिरादिकलज
वांनहोइनीचेमुषकरिलीनो॥वासमेंमें
स्सासनफेरिबोल्यो॥हेइसीतोकोजी
लीनहि॥सोअबइनकोकहादेवेहेइ
धनकोदेवि॥असै
आदिकगुरजननको

मैश्रा क्रम की सभा पांडु महाराज का
धुइपदकीबेटी ताकौं यह दु बुंड़ी दा
है सो तुम या कौं रौ को क्यो नही धर्म
के तौ बोलिबो जो गप है तब नो भबोले
श्रीतेरे अनादर तै यह कुलना सहोबेक
ताकरि हम कौ क कुं भा दसे नही जब दु
धन सभा के न कौ पूछत भयो यह जीती
किनही तब भय करि सभा के को ई न बो
एक धतरा इ पुत्र बिकर्य बो ल्या हे सभा
सद हो तुम कौ कहा डर है धर्म की बात हो
इसो कहो राजा पहले आपो हारी पीछ
या कौं हासो तातै यह जीतिवे मैश्रा ई नही
याके वचन कौ सर्व ही सभा सद सराहत भ
ये तब दुयो धन बो ल्या बिकर्य तू जाणो नही
यह तौ सर्व स्य परा मे यह लै ही जीती अब
पांडवन के सख बख सर्व ही ले ल्यो पापां
चन का प्यारी असती ताको विचित्र बख
हूजे ल्यो जैसे कहत ही पांडव तौ बख्रादि
कउतारि धर दीने तो ह बकी काल में बादल
सोनिक सि सूर्य सो है तै से सो नित भये ना
ममै सभा मे दुसासन सो कारा है

इसापतिब्रताकेसें अर अबतू मना
तोकुरराजकोपतिकरिसनाथकोनहीह
असेंकर्णकेबोलतहीदुर्योधनशोपदीके
मजंघादिषायबोले ॥ इहांवैठि ॥ यह सुनत
भीमक्रोधकरिबोले ॥ अरेदुर्योधनतेरा
हीजंघाकौंगदाप्रहारकरिभंजनकरुगो
अरतेरेसकलभ्रातानकौंहोहीमारोगो ॥
सें कहते भीमकोकोपसहितदेवि विदुरधृत
राष्ट्रसौं कही ॥ तेरे सब दुलैकौनासहोतहे
साकियोचाहेतौशोपदीकोसमाधानकरि
तबधतराष्ट्रदुर्योधनसौंबोले ॥ बडेभ्राता
कीभार्यामातासमानहे ॥ जैपतिब्रताहोता
कौरेदुर्बुद्धीक्यादुष्यदेतहे ॥ असेंदुर्योधन
बोकहिशोपदीसौंबोले ॥ हेपुत्रीतुनिजते
जकरिअभिलजगतमस्मकरिबेकौंसम
थहे ॥ तौहूक्रोधकरतहे ॥ तानैमेंप्रसन्न
भयोतूबरमागि ॥ शोपदीबोली ॥ राजस्य
यज्ञमेंजाकेसकलराजाकिंकरभयो ॥ सोरा
जाकिंकरनहोय ॥ यहधतराष्ट्रअंगीकृत
करिकही ॥ औरबरमागि ॥ फेरिशोपदीकयो
एसकेपाडवसत्त्वअस्त्रबलनसहितरणा ॥ ५३

रूढ होय निज स्थान जाय। यह हृद्य तराष्ट्र
 अंगी कृत कियो। तब सनासद बोले। आपति
 समुद्र में डूबत पांडवन कौं शोपदी नौका नई।
 यह सुनत सकोप भीम गदागहिके उठि बो ल्यो
 हमारे स्त्री नौका कह। या बिपत्य सागर कौं भु
 जब लकरितरें है सो तुम देखो। त्रैसे कहि द
 तपी सत सबन के मारिबे कौं गदागहि सत मु
 षदो डो। या कौं श्रावत देषि दुर्योधन कर्ण दु
 स्सासन सकुनादिकं पित भयो। युधिष्ठिर भी
 मकी बांहाहि निवारण कियो। प्रवधतरा
 ष्ट्र युधिष्ठिर सौं बोले। हे पुत्र दुर्योधन तेरो
 कनिष्ठ भ्रात पुत्र समान हो। या कौं अपराध ह
 मा करे। तुम तुम्हारे अस्त्र सस्त्र धारिपुरी में
 जा पराज्य करे। अतब राजा प्रमाण युधि
 ष्टिर भ्रातान सहित स्थंडन सवार होय नि
 जपुर कौं चले। जब दुर्योधन धतराष्ट्र सो
 कही। पांडव क्रोध करि मलिन होय जात है
 सो अपने कुल कौं नास करे गो। मैं इन सौं पु
 ष्ट्र में तौं जीतौं नही। तातैं एक बाजी फेरि बलि
 प्रतज्ञा करे। जो हारे सो जटा बल्कल धा
 ष्ट्र सब रस लौ बनवास करे। एक वर्ष

शांति रहो वा वर्ष में प्रगट होय तो फेरि वै
 बन बास करै ॥ जैसे उनको बन बास क
 दाद सब वर्ष लों में समर्थ होइंगो ॥ याते अ
 ही जे लोभ तैं धतरा पु आत्ती ईई ॥ तब क
 जाय ॥ मार्ग ही में युधिष्ठिर सो कही तु मेरा
 बुलावै हो ॥ युधिष्ठिर प्रतज्ञा के बसतैं फो
 आये ॥ धतरा पु सो पहली मंत्र कियो हो सो
 ही पन करि सकुन को मध्य स्थ करि वह प
 न जीत्यो ॥ तब राज बै भव दुयो धन को ह्य
 धर्म पु नम्रग ॥ चर्म धारि बन को चलत शि
 व समान सो भित भये ॥ तिन के संग शो प
 ही कौ जाती देखि दुस्सासन बो ल्यो ॥ अब तो
 इन दरशन कौ तजि कौर वै इ कौ भजि बो
 योग्य हो ॥ तब भी म कही ॥ या बचन को फल
 चौदह वर्ष पावैंगो ॥ जब फेरि दुस्सासन
 बो ल्यो ॥ याग ऊ कौ देखो ॥ जैसे सुणि कर्ण स
 कुन्यारि अने कर राजा ह से ॥ तब अर्जुन कर्ण
 मारि बै की प्रतज्ञा करी ॥ नकुल सकुनी के
 मारि बै की प्रतज्ञा करी ॥ सहदे व अ पररा
 जान के मारि बै की प्रतज्ञा करी ॥ कुती को पा
 डवन के संग बन गवन करत हो विदर

हठ करि निज भवन में राषी ॥ वन कों चलत
युधिष्ठिर विचार कियो ॥ जो कौरव मेरा
को पशु चितें दग्ध होय तो ॥ इन के नास को
कारण मैं ही हों ॥ या तें मुख कों टांकि निक
से ॥ भीम भुजा पसारि के यह जनाई जो
इन भुजा न सों सब न कों नांस करौंगो ॥ अ
र्जुन मारग में रज उठावत चलित यह ज
नाई जो बाण न की बृष्टि करि इन कों निया
त करौंगो ॥ सहदेव मुख स्पाम करि यह वि
चारि चलो ॥ सकुन कों मारें मुख उजल
होय ॥ नकुल रजलिप्त सरीर करि यह विच
रि चलो ॥ जो इन सकल राजन कों मारें ज
बनिर्मल होऊ ॥ शेष दी के सषो लि अश्रु पा
त करती यह विचारि चली ॥ जो जैसे ही
सकल कौरवन की भार्या पुर प्रवेश करे
गी ॥ अरु नैरित्य दिसा की वोर धो भ्य मुनि
दर्भ सहित कर उच्च करि यम सूत्र गान क
रत यह विचारि चले ॥ जो कि ते क दिन पी
छे कौरवन की भार्या में गान करौं हो तो से
रदन करौ ॥ जैसे शाप देत निकसे ॥ तब अने
क उत पात नये ॥ जब नारद आय ^{भनार} कौरव

कोनविषयनाससुणायो॥ तात्रैत्रसित्तदुर्य
धनादिशोणाचार्यकेसरणगये॥ तवशोण
हसर्वकोश्रभयदेयकेमंगलसमाधानक
रतभये॥ दोनभाषाभारथसारथहसभाप
र्वसुषदायो॥ राववाद्स्यंघकेहुकमकि
योचेनचितचाया॥ इतिश्रीभारतसारसं
श्रिताभासनापर्वणिषट्मोऽध्यायः॥ ६॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नारायण नमस्कृत्य नरं
 चैव नरोत्तमः ॥ देवीशरस्वत्पद्म्यासंततो जय
 मुरीरयेत् ॥ अथ जन्मपूर्वकी कथा लिख्यते ॥ जग
 जगन्मन्त्रोच्चार ॥ तापीके पांडवगंगातीरगये
 तहां इंडसेनकौ आदिलेके चौरहसेवकर
 थसहितसेवामे आये ॥ अरुध्रतरा पुरथ
 आदिदेसरंजामभेज्याताकौ बचनहीसौ
 सतकारकरिकेरिदियो ॥ अरुपुरवासीसा
 थचलेतिनदकौ पाके फेरिउत्तरदिसाकौ
 गये ॥ उहां ब्राह्मणसंगधगये सोराजाके
 पाससंपत्तिनही अरुब्राह्मणमंडलीबहुत
 यह देधिधोम्पराजाके सूर्यमोत्रदियो ॥ ताक
 रिधुधिष्टिरसूर्यकी स्तुतिकरी जवंसूर्य
 प्रसन्नहोइप्रदरस अक्षयसामग्रीदेववा
 लीअैसीचरीदई ॥ अरुयहकही जहाना
 ईशोपदीभोजननूकरेगी ॥ तहांनाईवांकि
 तसामग्रीदेगी ॥ शोपदीभोजनेकियेपाइइ
 सरदिनफेहिदेगी ॥ उहांनेयारस्वनीमीर
 वासकरिकुरचेनजायकान्मुकवन्आ
 ये ॥ उहांवकासुनकोनाईकिमीरनामा ॥
 अमुरमार्गरोकि युद्धकोमाये ॥ अन्दि

मन्मथि मल्लो कपहं चायौ तापी कृ भतरा
दृसो विदुर कस्यो पादुर्बुद्धी पुत्रको निका
सो नही तो ब्रथा बंसको ना सहो इगो अ
से सुणि दुर्योधन विदुर को अना दर करि
निका से ॥ जब विदुर ह पांडव न पास ग
ये ॥ सो सुणि विदुर के वियोग सो भतरा इ
दुषित होइ संजय को ने अ ॥ जब संजय
जाय विदुर को ल्याये ॥ तापी कृ इ क ले पांड
व हो तिन को मारि बो विचारि दुर्योधन क
र्ण को सेना सहित भेजि वे को तयार कियो
जब वेद व्यास श्राप कही अनीति रूपी
की चमै को ड बो हो ॥ ऐसे कहि निवारण
कियो ॥ तापी कृ मे त्रेय मुनि श्राप दुर्योध
न सो भीम सेन कि मीर को मास्यो सो ब्र
तांत कस्यो ॥ अर दुर्योधन सो कही तुम हउ
न सो विरोध मत करो ॥ तब दुर्योधन मे त्रे
य मुनि की जंघा पै हाथ परा किके बरजे
जब मे त्रेय श्राप दियो तेरी जंघा भीम की
गदा करि घडित होइगी ॥ ऐसे श्राप देय
गये ॥ अरु पांडव न कोइ तब न श्राये सु
णि ॥ उन के समंधी मित्रादि कर राजा मिलि

वे कौशये। युधिष्ठिर कौसवही ले समा
 धान क ल्यो। वन बास में क ले स अधिक
 जाणि डो पदी के पांचों पुत्रन कौले य ध्रष्ट
 हु म्भ न्नापके पुर कौंगयो॥ अरु श्री क्रुष्ण
 ह्नु अतिमन्य सहित सुभक्ष कौले य धरि
 कौ कौंगयो॥ तव अर्जुन युधिष्ठिर सौ बो
 ल्यो॥ हे महा राज मो कौ आया करो तो वै
 रिन के जीति वे कौ तप करि वे कौ जाऊ अ
 से सुणि युधिष्ठिर वेद व्यास कौ सुमरण
 कियो सो मुनि आय अर्जुन कौ प्रति
 श्रुतनाम विद्वान्दई॥ अरु कही ईइ की
 लपर्वत में जाययो जप करौ ईइ कौ आ
 राधन करो तासो सब अस्त्र जात होइ
 गो॥ उहां अस्त्र सस्त्र क वच धारि ब्रह्म
 चर्य सौ तप करौ तहां तप करतै कोइ
 दुष्ट जीव आवै ता कौ मार्ग मति दी ज्यो
 असे कहि वेद व्यास तौ अंत ध्यान न
 ये॥ अर्जुन ईइ की लमें जाय वे सैं ही तप
 करत नयो॥ तहां याकी तप स्या देखि
 वाके वासी ईइ सैं जाय कही कोऊ तुहा
 रै पद तमें तप करे हे सो न जा

पही को स्थान लेवे कौं तपे हे कहा ॥ असे इ
इ सुणि गंधर्व अथवा वसंत काम देव इनके
वा कौ तप भंग करिबे कौ पठाये सो उहां जाय
सवही वा कौ तप भंग करिबे कौ यत्न कस्यो
ये एक हू कौ पराक्रम सफल न भयो तब
इइ पास आय इइ सौं ब्रह्मांत निवेदन कस्यो
सो सुणि इइ प्रसन्न हो इ ब्राह्मण कौ रूप
धारि अर्जुन के पास आयो ॥ तहां इइ बोले
हे वीर कवच धनुष धारित पकरत है ता
तें को इ कामना है सो काम भोग मिलै तब
तो सुष है पाछे अंत में दुष देत है ॥ तासों
कामनां को डि मोक्ष के निमित्त तप करो
जब अर्जुन बो ल्यो बिना समझें बोलै तो वृ
हस्पति हू कौ बचन निस्कल जाय ॥ मैं तो
अपज सरूपी की चको सत्रु स्त्री न के नेत्र
न के जल सो धोयो चाहत हो ॥ सो दुर्योध
न नै हमारो सरव स्वहरण कियो है ता
सो वा कौ मारि युधिष्ठिर कौ राज्य दोगो
अथवा पर्वत ही में देह त्याग करोगो ॥ अ
सौ बचन सुणि इइ निजरूप धारण करि
पुत्र अर्जुन सौं मिलि शिव की आराधना ॥ ५५

बतार्इ तव अर्जुन शिवकी आराधन करी
 सोती नदिन उपरंत एक दिन फलाहार क
 रणों ॥ असे एक मास बितती तक स्या ॥ अरु कुरु
 दिन पीछ फलाहार करणों ॥ असे हसरो मास
 बितती तक स्या ॥ तीसरे महीना में पंद्रह दिन पी
 छ शुभ्रकपत्र आहार करि बितती तक स्या ॥ चतु
 र्थे मास में समाधि लगाइ एक पांचसौ ठाटो
 रह्यो ॥ याके तपके प्रभाव सों सुभावही सौ बेरी
 जीवहे सो सब निर्बेर होत भये ॥ यह प्रभाव
 देखि दिक्पाल व्याकुल होइ शिव सों निवे
 दन करत भये ॥ तब याके तप सों प्रसन्न हो
 इ शिव परिवार सहित किरातरूप धारि
 आये अरु मंकदान देवको सुकररूप करि
 वाके सनमुख भयो ॥ तब वाको आवतही
 अर्जुन बाण करि मास्यो ॥ अरु वाहीके
 शिवके तर्क समें प्रवेश कस्यो ॥ अर्जुनको
 बाण प्रथमी मै पड्यो ॥ ताके लेबेको गयो ॥
 जब उतसों एक किरात बडो धनुष धारे
 आइ कही पह बाण हमारे धरणीको है ॥ अर्जु
 न कही मैरो हो ॥ असे आंपुसमें विवाद भयो
 जब वानै जाये शिवसों कही

पक गण। करान रूप धारै हे तिन कों भजे
सो आइ अर्जुन सों युद्ध कियो ॥ जब अर्जुन
हू बाण नखों महाघोर संग्राम करि सेना कों
भजाइ दीनी ॥ सो सेना जाइ शिव सों पुकार
करी ॥ तब शिव युद्ध करि बे कों आयो ॥ तहां दो
ऊन कैं अनैक सख अखन करि युद्ध भयो ॥
जब अर्जुन के अखन युद्ध तें गणन कों व्याकु
ल देखि शिव सब अखन सखन कों भक्षण क
रि गयो ॥ तब यानै के बल धनुष को प्रहार
कियो ॥ जब शिव धनुष तर्क सह कों अंतर
धान कस्यो ॥ तापी छु यानै यद्ध कों प्रहार क
स्यो बाह कों अंत ध्यान कस्यो ॥ के छुत्पा
माणन सों युद्ध कस्यो सोहन छ भयो ॥ जब अ
र्जुन मछ युद्ध करि बे कों तयार भयो ॥ तब की
तनेक काल मछ युद्ध करि के अर्जुन पावें प्र
कटि सख प्रसा मों पढ़ कि बे की तयारी करी ॥
जब शिव प्रसन्न होय पाशुपतास्त्र दियो पी
छ अंत ध्यान भये सो देखि देवतान कें नगारे
बजे सुभन प्रथि मई ॥ सर्व देवता आय आसी
बाई दियो ॥ कुबेर संमोहनास्त्र दियो ॥ बरु
ण पाशास्त्र दियो ॥ समदंडास्त्र दियो ॥ कुबे

इंद्रमातलिसारथी कुरथमें वैठाय विद्या
पठाय वेकौ निज लोक लेगयो ॥ उहां अरु
विद्वारा पठाय अर्धस्यंघासणपे वैठाय सर्व
सुषइं इ लोक के दिषावत पांचवरसलौ
राष्यो ॥ जैसे सुषभोगत एकसमें इंड सब
अपरा कौ नस्य अर्जुन कौ दिषावत नयो ॥
जब अर्जुन उर्वसी के रूप कौ एकग्रचित क
रि देखत भयो ॥ तहां नस्य हुवेपी कौ अप्सरा
अपने स्यात गई ॥ अर्जुन अपने स्यात ग
यो ॥ तब इंड उर्वसी कौ बुलाया ॥ आग्या करी
तुम जाय अर्जुन कौ रमावा ॥ जैसे सुणिउ
र्वसी अंगार करि अर्जुन पास गई ॥ जब अ
र्जुन वा कौ आई देविसंभु य जाय चरण
में प्रणाम कल्या ॥ तब वाने कही तुम तस्य
समै मैं मो कैं लहइ इ करि देविताने वि
हार करि वे कौ भेजी ही सो प्रणाम करी करी
जब अर्जुन कही मैं तो तो कौ पुरुवसकी
आदि जननी जांनि मात्र भाव करि देषी ही
तासो अब जैसे आई होतैं सै ही जावो उ
र्वसी कहि हम सुग लोक की अग्रगहो
जो आवे जाही सो ॥ कर ॥ ॥

करो तब अर्जुन फेरिक ही पहलें जननी भाव
करि पीके कामिनी भाव के सैं करो अैसे क
हि प्रमाण फेरिकियो जब उर्वसी वा कों क
ही तून पुंस कहो अैसे शाप दो अपने स्थान
गई तब अर्जुन इंद्र के पास आइ वह ब्रतांत
सर्व निवेदन कस्यो ॥ जब इंद्र कही हेतौ य
ह शाप परंतु तुम अग्ना त वास वर्ष एक के
रोगे तहा यह गुण होइगो ॥ अैसे अर्जुन को
समाधान करि आत्मा स करवत भये
इति श्री महाभारत वृद्धि काथ्य अष्टमोऽध्यायः
अर्जुनको ध्याय ॥ १ ॥ अर्जुनदुर्वासा उक्त्युक्त
लोपायानकथ्य ॥ १ ॥ अर्जुन उक्त्वा ॥ अर्जु
न कों तप करवे गये धी कृपांडव देत बन
में बसत भये ॥ उहा दुर्योधने दुर्वासा की बहु
त सेवा करी जब दुर्वासा प्रसन्न होइ कही
तुम वर मागो ॥ तब दुर्योधन कही शोपदी ने
जन करि चुके तापा कृष्ण पद से सहजोर
शिष्यन सहित पुधिष्टिर के नो जन करि वे
कों जावो ॥ या बात कों अंगीकार करि द्वाद
सी के दिन सब पारणा करी चुके जब पु
ष्टिर के दुर्वासा शिष्यन सहित जाय अ

यभये॥ तब बुधिष्टिर अर्घ पाद्मान सो पूज
 न करि भोजन कौ प्रार्थना करी॥ जब मुनि
 कही हम मध्यांन संध्या करि आवत हो अ
 संकहि गयो॥ तब बुधिष्टिर शोपदी सो कही
 सामग्री कहा हो॥ दुर्वासा दस हजार शिष्य
 न सहित संध्या करि भोजन कौ आवेंगे॥ त
 ब शोपदी कही मैं भोजन करि चुकी टोकणी
 घाली है॥ असे सुणि पांडुवन विचारी मुनि
 आय भोजन किये बिना शाप दे दग्ध करेगो
 ता सो आप नही काष्ट में बैठि दग्ध होइ असे
 विचारि काष्ट मगायो॥ तब शोपदी पर्न कुटी
 में जाय सुमरण करि ध्यान कियो॥ जब
 श्री कृष्ण पीतांबर पहरे चतुर्भुज सुरूप में
 आय बोले॥ मंदार काके चलो आयो भयो
 हो सो मो कौ भोजन दे॥ शोपदी कही हे प्रभु
 मेरे भोजन किये पहली तो यह टोकणी अ
 न्य सामग्री देत हो॥ सो मैं भोजन करि चुकी
 अब घाली हो॥ जब कृष्ण बोले देपे वाको
 सावो सो टोकणी मगाय वाके किनारे
 कसा कपत्र निकस्यो ताहि हाथ में लेवो
 पा करि विस्वात्मान धर गवाने

सैं कहि ननु एादि यो ॥ तबतीन लोक तसभये
मुनिनके उदर आकर गये ॥ रु उहा पुधिष्टि
रकाष्ट प्रबेसकी तपारी करे हे ॥ तिनसौक
ही सामग्री तपार हे भोजन करे बकौ मुनि
कौ बुलावौ ॥ तब राजाकी आग्यासो भीमबु
लाबे कौ गयो ॥ तहा भीमको सष्ट सुणि मुनि
न ॥ अउ म्भैय भयो जो भोजनकी रुचि नही
पाक ब्रथा जायगो तासो राजा नजाणियेके
सेशापदे ॥ आगे अंबरीषके अपराध करि
दुषयायो हे ॥ असे विचारि उहांते भजि गये
जब श्री कृसह पुधिष्टिरको समाधान करि
हारिका गये ॥ श्री कृसको गये पीछे राजा
पुधिष्टिर आपतिको विचार करि घेद पुक्त
भयो ॥ तब वासमें ब्रह्मदृष्टि निआये
राजा उनको अर्थ पादन सो पूजन करि बें
ठाय हाथ जोडि बीनती करी ॥ आपदर्सन
दे मोको कृतार्थ कस्यो ॥ परंतु एक मोको
संदेह हे ॥ मोबरावर दुष्यत अर राजा तो
न भयो न होइगो ॥ जु बाभे धनराज्य मेरो
गयो में पासानकी विद्या जाणो नही उन
कपटके पासान करि मोको जीति घोर ब

नवा सदियौ ॥ सभामें मेरी राणी को ल्यायके
सग्रहण करि दुर्बचन सुणायो ॥ अब हमारों प्रा
ण अर्जुन गयो है बाके बिरह करि रात्र कौ नि
शान ही आवै है ॥ तासौ यह विचार में ही सै है जो
मोसो दुषी और पुर्शन होइगो ॥ असें सुणित्रह
दृश्व बोले ॥ हे राजा एक अचिन्त होइ सर्व भ्रा
ता सुणो ॥ तुम तैं हं महा दुषी एक प्रथ्वीपति
राजा भयो ॥ ताको आध्यान कहौ होसो सुणो ॥
निषध देसन को राजा बीरसेन भयो वाको पु
त्र नल भयो ॥ वाको पुस्कर नाम राजा जीत्यो
सो भार्या सहित बन में दुषित भयो ॥ वाके संग
अश्वरथ बाध ब्रभ्राता कोई नही रह्यो ॥ तुम्हा
र संग भ्रात भार्या अश्वरथ हजारों मुनि है ता
तैं सोच करि बेकौ योग्य नही ॥ अब युधिष्ठिर
बोले ॥ वानल को चरित्र मो कौ विस्तार करिक
हो ॥ तब ब्रह्मदृश्व मुनि बोले ॥ वहनल राजा स
कल गुण सपन्न रूपमें अश्वनी कुमार सम
द्वन में इंद्र जैसे राजा नमें वहनयो ॥ तेज करि
सूर्य समान ॥ असत्य बेद बेज्ञा सर अज्ञ अश्या
समें रुचि वान अनेक अज्ञो हणी पति ॥ सत्य वा
दी नारी नको मनोहर जितें दिख ॥

मैमनुतुल्य असे सौ भयो ॥ तैसे ही बिद भई देस
मै भी मरा जा भयो ॥ वाकै संतान न भई जब सं
न कै वासै जत करत भयो ॥ कोई समै मै दमन
नाम ब्रह्मरिषि ग्राये ॥ उन कों सेवा करि प्रसन्न
करे तब मुनि एक कन्या तीन पुत्र दियो ॥ कन्या
को नाम दमयंती पुत्रन के नाम दम ॥ हांतर
मन ॥ दमयंती रूप ते जगुण इन करि कै विष्या
त भई ॥ वाकौ शत दश सी शत सषी सेवत भई
उन सबन के मध्य इंशणी ज्यो सो नित भई जा
के रूप समान देव लोक नाग लोक जल लो
क नर लोक में ॥ सरी स्त्री पैदान ही ॥ नल हर
प करि काम तुल्य हो सो दमयंती के गुण सु
णि वामें ग्रास क्त भयो ॥ तैसे ही दमयंती हवा
के गुण सुणि ग्रास क्त भई ॥ नल कों काम बेग
ब होत भयो ॥ जब मन के आनंद करि वे कों वा
ग मै गयो ॥ उहास से वर में सुवर्ण पत्त हंस दे
गो ॥ तन में सो एक कों पकट्यो ॥ वह बो ल्यो मो
ठो मारे मति में तेरो कल्याण करों गो ॥ दम
ती के पास तेरी असे ही महि मां कहो जो तो
वाइ और कौ बरे ही नही ॥ जब नल वा कों
दि दियो ॥ तब जूथ सहित हंस नाश

नपुरदमयंतीकेबागमेंउतरो॥ दमयंती
हंसनकोअद्भुतरूपदेखियकडिबेकौदौडा
बवेहंसबिबरिगयेतबएकएकसषीएक
कहसकौदौडी॥ जाहंसकौदमयंतीदौडीसे
कोतमेंमनुष्यभाषासोंबोल्पो॥ हेदमयंती॥
पथदेसनमेंनलनामराजारूपकरिअश्वर्न
कुमारतुल्यहैतवाकीभार्याहोइतौ॥ तेरोजन्म
रूपयोबनसफलहै॥ हमदेवदानवजहनाग
मनुष्यसबदेषेपरंतुवाकेरूपतुल्यऔर
हैनही॥ तैसेहीतूहनारीनमेंउत्तमहोला
सोउत्तमतेउत्तमकौयोगहीउत्तमहो॥ जैसे
सुणिदमयंतीहंसिकरिहंससोकसोमैतौ
अंगीकारकर्योपेनलहकोतूजैसेकहि॥
जबहंसअंगीकारकरितैसेहीनलकेपा
सआयकहे॥ इतिश्रीभारतसारचंद्रिका
बनधर्णिनलोपाष्यानवर्ननदुलियोध्या
य॥ २॥ अहदश्वउवाच॥ दमयंतीहंसबच
नसुणिनलकेसैमिलेयाचिंताकरिक्रसहो
गई॥ स्वासनायतहैऊर्ध्वदृष्टिकरिदेखत
ईउन्मत्तकैसीदसोभई॥ कामकरिपीड
होइमहत्तभोग्यनिशकरैनही॥ दिनरात्र

हा हाकार करि रुदन करे औ सी दसा देखि स
षी राजा सो कही ॥ जब राजा सुणि दमयंती प
स आय देषा जीवन में काम रोग ही हे यह
विचार चारो दिसान के राजा न कौ सुयंबर के
निमित्त बुलाये तब दमयंती को स्वयंबर सु
णि सर्व ही राजा अस्त्र सस्त्र बस्त्र भूषण धा
रि सेना सहित हर्ष सो आये ॥ जे राजा आये
तिन कौ भी भरा जाइ सनमान करि रावे ॥
तास में नारद पर्वत मुनि इ इ लोक गये इ
इ सनमान कुसल प्रसन्न करि बोले आगे
सत्री युद्ध में देह त्यागन करि मेरे लोक आ
वते तिन को सनमान करि मैं सपत्तिको स
फल मानत हौ ॥ सो अब कहा भयो ये कह
सत्री अतिथ आवै नही सो सत्री वीर नही
अथवा युद्ध ही करै नही ॥ या को कारण क
ही दमयंती सर्व गुण संपन्न है ॥ वामें सब न
हो नही ॥ सो अब वाको स्वयंबर हे तहा स
ही जो है ॥ अरु हम हउ हा ही जाइगे ॥
सै कहत ही इ इ कै पास यम अग्नि बरु
आये सो नारद को बचन सुनि

पंतीकी चाह करि स्वयंवरको आवत भयो न
लरा जाहू यो ग्य सामग्री करि कुंदनपुरको
आवत है ॥ ताको लोकपाल देषि विमानन
को आकासमें राषि प्रथीमें आयन लसो बो
लत भयो ॥ हे नल त सत्यवादी हो ॥ हम तेरे ज
च कहै सो हमारी मनसा पूर्ण करि जाच
कनाम सुणत ही नल हरी मां चित होइ क
ही तुमको एहो कहा जाचत है ॥ इइ बो ल्यो ॥
इइ बो ल्यो ॥ में इइ हों यह पमहो यह अग्नि हे य
ह बरुण हे सो सब ही हम पंतीको बरिबेकी क
मना करि जात है सो तुम हमारी वांके पास ह
तता करो ॥ नल बो ल्यो ॥ मैं जाको बरबेको जा
ऊं तासो इतता कैसे करौ, यह तो माफ करौ
जब देवता बोलि पहलैं अंगीकार करि अब
नटै हो, या मे तेरो धर्म जाइगो ॥ तब नल बो
ल्यो राजकुमारीके पास राजभवनमें मेरो प्र
बेस कैसे होइगो ॥ इइ बो ल्यो ॥ अइ स्पसिधि
तो को देत हो, तासो राजभवनमें प्रबेस करौ
पीकै जहां हम पंती होइ तहां इतता करौ,
असै उनको बचन सुणि इतता अंगीकार
करि कुंदनपुर गयो ॥ तहां रथ बाहर राषि

हाहाकार करि रुदन करै औ सीदसा देखिस
 षीराजा सो कही ॥ जबराजा मुण्डिमयंतीप
 स आय देषी जोवनमें कामरोग ही है यह
 विचार चारो दिसानके राजानकों सुयेवरके
 ॥ निमित्त बुलाये तब दमयंतीको स्वयंवर
 णि सर्वही राजा ॥ अस्त्रसस्त्रबस्त्रभूषणधा
 रिसेनासहित हर्षसो आये ॥ जेराजा आये
 तिनको भीमराजा इसनमान करि राषे
 तासमें नारदपर्वत मुनि इंद्रलोक गये इं
 द्रसनमानकुसलप्रसन्न करि बोले ॥ आगे
 सत्री युद्धमें देहत्यागन करि मेरे लोक आ
 चते तिनको सनमान करि मैं संपत्तिको स
 फलमानत हो ॥ सो अब कहा भयो ये कह

अतिय आवै नही सो सत्री वीर नही
 अथवा युद्ध ही करै नही याको नारद
 हो ॥ तब नारद बोले ॥ विदभराज भीमकी पु
 त्री दमयंती सर्वगुण संपन्न है ॥ वामें सबन
 को मन अनुकूल है तातेको ऊही राजा युद्ध
 करैत हो ॥ सो अब वाको स्वयंवर है तहास
 वही जाइ है ॥ अरु हम हंड हां ही जाइगे ॥
 जैसे कहत ही इंद्रके पास यम अग्निवरु
 ण आये सो नारदको न

पंतीकी चाह करि स्वयंवर कौ आवत भयो न
लरा जाह्योग्य सामग्री करि कुंदनपुर कौ
आवत है ॥ ताको लोकपाल देषि विमान न
कौ आकास में राषि प्रथ्वी में आवन लसों ब
लत भये ॥ हे नलत सत्यवादी हो ॥ हम तेरे जा
च कहै सो हमारी मनसा पूर्ण कै रिजाच
क नाम सुणत ही नलहरी मांचित होइ क
ही तुमको एहो कहा जाचत हो ॥ इइ बो ल्यो
इइ बो ल्यो मेइइ हों यह पमहो ॥ यह अग्नि हे य
ह बरुण हे सो सब ही दमयंती को बरिबेकी का
मना करि जात है सो तुम हमारी वाके पास इ
तता करो ॥ नल बो ल्यो मे जाको बरबेको जा
ऊं तासो इतता कैसै करो ॥ यह तो माफ करो
जब देवता बोले पहलें अंगीकार करि अब
नटै हो ॥ या मे तेरो धर्म जाइगो ॥ तब नल बो
ल्यो राजकुमारी के पास राजनवन में मेरो प्र
बेस कैसै होइगो ॥ इइ बो ल्यो ॥ अइस्य सिध
तो को दत हो ॥ तासो राजनवन में प्रबेस करो
पीकै जहां दमयंती होइ तहां इतता करो ॥
असै उनको बचन सुणि इतता अंगीकार
करि कुंदनपुर गयो ॥ तहारथ बाहर राषि

अइत्यहोइनगरसोभादेवितरुमयंतीपास
गयो॥ उहांइमयंतीकोसषानकीमंडलीमें
प्रकासमानदेखी॥ याकोरूपदेखतेहीयाके
कामोदीपनभयोतोहधर्मराषिवेकोकाम
केबेगकोइविदर्शनदियो जबयाकोरूपदे
खिसषीमंडलीसहितइमयंतीउठी॥ अरुआ
पुसमेंयाकीस्तुतिकरतभई॥ अैसेरूपका
तिधीर्जकहूइच्छोनही॥ तासोयहदेवहैकि
जज्ञहैकिगंधर्वहै॥ अैसेविचारकरतेही
इमयंतीहंसिकरिबोली॥ हेमनाहरदर्शन
तेहीकामबधावतअैसेतुमइहांकेसेअवे
द्वारपालननेलयेनही॥ अरुमेरेपिताकोभ
यमान्योनहीयाकोकारणकहा॥ जबनलबो
ल्योहैकल्याणीमोकोदेवइतनलजाणि॥ उन
कीकृपातेराजमवनमें आवतकाहनेलभ
नही॥ अरुइइवरुण अग्निप्रमयेआरोदेवते
कोबस्योचाहैहै सोएककोबरिअथवास
हीकोबरि॥ अैसेसुणिइमयंतीबोली
तोहंसनकोबचनसुणि यहदेहतुम्हारे
र्पणकरिहै॥ सोतुमअंगीकारनकेरोग
विषकरिअथवाअग्निकरिफासीकरि

यवाजलकरि देहत्याग करौंगी ॥ तब नलको
 ल्यो लोकपाल मिलतै नरकी बांछा को करेहै
 जिनकी चरणरजतुल्य हूमें नही ॥ तासो उनमें
 प्रेम करि ॥ उनको शोहतै मल्य होइ तासो उनही
 को बशि ॥ प्रहमेरी उनसो रक्षा करि ॥ जिनके दि
 व्यबस्त्र भूषन विचित्र निर्मलमाला जरास्वे
 दरहित उनके संग दिव्यभोग भोगि ॥ जो सक
 लप्रथवीको दग्ध करे ॥ ऐसे अग्निको को
 णन बरे ॥ जाके दंड भयतै सर्व जीव धर्मम
 चलै ॥ ऐसे यमको कोणन बरे ॥ जो सकल
 देत्यदानवनको मर्दन करे ॥ बज्र जाके हस्त
 जैसे इंद्रको कोणन बरे ॥ जो सर्व रत्नांकरन
 कायति जैसे वरुणको कोणन बरे ॥ प्रह
 इनसो शोह करिको नबचे ॥ जैसे नलवच
 नमुणि दमयंती नेत्रनसो अश्रुपात करि वा
 ली भैंतो सब देवनको नमस्कार करितुम
 ही को दरोंगी यह सत्य जाणो ॥ जब नलके दि
 वा ल्यो ॥ भैं देवतां नसो इत वा अंगी कर करि
 तो को कैसे बरो ॥ या भैं धर्म जाया ॥ तब जैसे
 मुणि दमयंती बोली भैं एक उपाय विचारो
 है जा भैं तुम्हारे दोष नही ॥ उनसो कपा

प्रइत्यहोइनगरसोभादेवितरमयतीपास
गयो॥ उहांइमयंतीकोसधीनकीमंडलीमें
प्रकासमानदेशीयाकोरूपदेयतैहीयाके
कामोदीपनभयोतोहधर्मराषिबेकोकाम
केबेगकोइबिदर्सनदियो जबयाकोरूपदे
षिसधीमंडलीयहितइमयंतीउठी॥ अरुआ
पुसमेंयाकास्तुतिकरतभई॥ अैसेरूपका
तिधीजकहुइध्यानही॥ तासोयहदेवहैकि
जइहैकिगंधर्वहैअैसेविचारकरतैही
इमयंतीहंसिकरिबोली॥ हेमनाहरदर्सन
तैहीकामबधावतअैसेतुमइहांकेसैंअवे
द्वारपालननेलयेनही॥ अरुमेरेपिताकोम
यमान्योवहीयाकेकारणकहा॥ जबनलबो
ल्यो॥ हेकल्याणीमोकोदेवइतनलजाणि॥ उन
कीकृपातैराजमवनमेंआवतकाहनेल
नही॥ अरुइइवरुणअग्निपमयेचारोंदेवत
कोबस्योचाहैहैसोएककोबरिअथवास
हीकोबरि॥ अैसेसुणिइमयंतीबोली
तोहंसनकोबचनसुणिपहइहंतुम्हा
र्पणकरीहै॥ सोतुमअंगीकारनकेरोग
विषकरिअथवाअग्निकरिफासीकरि

यवाञ्जलकरि दहत्यागकराग॥ तबनलबो
 ल्यालोकपालमिलतैनरकीबांछाकोकरैहै
 जिनकीचरणरजतुल्यरुमेंनही॥ तासोउनमें
 प्रेमकरि। उनकोइहतेमल्यहोइतासोउनही
 कोबशिअरुमेरीउनसौरहाकरि। जिनकोदि
 व्यबस्त्रभूषनविचित्रतिर्मलमालाजरास्व
 इरहितउनकेसंगदिव्यभोगभोगि॥ जोसक
 लप्रथवीकोइग्धकरे॥ जैसेअग्निकोंको
 एणनबरे॥ जाकेदंडभयतेसर्वजीवधर्ममें
 चलै॥ जैसेयमकोकोणनबरे॥ जोसकल
 देत्यदानवनकोमर्दनकरेबज्रजाकेहस्त
 जैसेइंइकोकोणनबरे॥ जोसर्वरत्नाकरन
 कोपतिजैसेवरुणकोकोणनबरे॥ अरु
 इनसोइहकरिकोनबचै॥ जैसेनलबच
 नसुणिदमयतीनेत्रनसोअश्वपातकरिबो
 लीमेंतोसबदेवनकोनमस्कारकरितुम
 हीकोबरोंगीयहसत्यजाणो॥ जबनलफेरि
 बाल्या॥ मेंदेवतांसोइतताअंगीकरकरि
 तोकोकैसेबरोयामेंधर्मजाया॥ तबजैसे
 सुणिदमयतीबोलीमेंएकउपायविचास्यो
 हैजामेंतुम्हारोदोसनही॥ उनलोकपाल

वनसहित तुम स्वयं बरमें आवो तहां में
नकों प्रसेन करितुमकों बरोगी ॥ जैसे सुणि
लोकपालके पास जाय सब ब्रतांत कसो ॥
ति श्री भारत वार चंद्रिका यां वन पूर्वणि नू
लीयो ध्याय ॥ २ ॥ ब्रह्मसु उवाच ॥ ता उपरां
तरा जानी मसु भू हत में सब राजा नकों बु
लाये ॥ सो रंग भूमि में सब ही राजा मंचन पै वे
ठे ॥ तहां लोकपाल नसहित नलह एक मंच
ये बैठे ॥ जब लोकपाल न विचारी जान लके
भ्रम सो दमयंती हमे माता परा बैता सो नल
को सो रूप बेह धारत भये ॥ तब भी मराजाके
ध्यान करि बे सो सरस्वती बहां आय सा तो धी
पन के राजा नकों बंस करत भई ॥ सो सुणि
दययंती सब ही को प्रणाम करि जहां नलहो
तहां आई ॥ तहां सरस्वती एक एक को बर्नन
जैसे कस्यो जो पांचों ही को बर्नन होत गयो ॥
बदमयती संदेहा करि मन में विचारत भई ॥
देवनके चिह्न ब्रह्मके मुख सो नरन तो निन्तस
एहे सो एक ही ही से नही ॥ ताते यह विचारि दे
तानके शण आय उनका बिनती करत भई
में हंसनके वचन सु करि जाकों प्रतिनिश्र

कस्योहे यहसत्यहेतौहे देवताहोमोकोवह
हीबतावो॥जोमेंनलसेवनकोइष्टब्रतधा
स्योहेतौतुमहनिजरूपधारो॥जासोमेंपुन
श्लोकराजाकोजाणो॥असैदमयंत्रीकेहीन
बचनसुणिलोकपालनेजरूपधारतमये॥
जबदमयंत्रीउनकेअंगनमेंपसीनानदेष्या
नेत्रनमेंपलकनदेषे॥पुष्पमालानकोमलि
ननदेषी॥वस्त्रनमेंरजनदेषी॥चरणानको
प्रथिवीकोपरसकरतनदेषे॥सरीरकीक्या
यानदेषी॥इनचिह्निनतौ॥विपरीतचिह्नने
लमेंदेषिबरमालापहराई॥सोदेषिअोररा
जाननैतौहाहाकारसबकस्यो॥अरुदेववि
धिननेसाधुसाधुकस्यो॥जबनलहृदमयती
सोबोल्पो॥तैनैलोकपालनकेसमीपमोको
बस्यो॥तासोमेंहंजीऊगोतबताईतेरोबस
बतीहीरहुगो॥भापीकेंदोऊनहीलोकपा
लनकोस्तुतिकरी॥सोसुणिप्रसन्नहोइलो
कपालनहंआठबरदिये॥यग्गमेंतौतौको
प्रतसदरसणअरुमेरेलोकमेंप्रसंडगति
येदोइबरतौइंद्रदिये॥अरुअग्निक्कीजहं
तेरीबांछाहोइतहांहीअगरहोहुअरुन

हमरे लोक को आवें जैसे दो इबरदिये ॥ अह
तरे ॥ अहरे अन्नमधुर होइ धर्ममें नेशा हो
इये दो इबर यमदिये ॥ बरुण कहै मरु देसह
में जो तू चाहे तो जल को समुद्र होइ और तेरी
पुष्पमाला सुगंध सहित सदा प्रफुल्लित रहे
जैसे दो इबर बरुणदिये ॥ जैसे चारो आठ बर
देय अपने स्थान गये ॥ तापी कुंभी मरा जाह
और राजा को सीधे देवि धि वत नल को बि
बाह कस्यो ॥ जब नलह आपकी इच्छा माफि
कउहारहि तापी कुं अपने नगर को आयो
दमयंती करण लह ॥ जैसे बिहार कस्यो
जैसे निज लोक में इंद्र इंद्राणी बिहार करै ध
र्म करि प्रजापालन कस्यो ॥ अश्वमेधादिक य
ग्य करे ॥ जैसे अनेक बिहारन को करत राम
भोग भोगत भये ॥ इती श्री भारत सार चंद्रि
काया बन पर्वणि नलोपाख्यान चतुर्थोऽध्या
यः ॥ अहरे अन्नमधुर होइ धर्ममें नेशा हो
इये दो इबर यमदिये ॥ बरुण कहै मरु देसह
में जो तू चाहे तो जल को समुद्र होइ और तेरी
पुष्पमाला सुगंध सहित सदा प्रफुल्लित रहे
जैसे दो इबर बरुणदिये ॥ जैसे चारो आठ बर
देय अपने स्थान गये ॥ तापी कुंभी मरा जाह
और राजा को सीधे देवि धि वत नल को बि
बाह कस्यो ॥ जब नलह आपकी इच्छा माफि
कउहारहि तापी कुं अपने नगर को आयो
दमयंती करण लह ॥ जैसे बिहार कस्यो
जैसे निज लोक में इंद्र इंद्राणी बिहार करै ध
र्म करि प्रजापालन कस्यो ॥ अश्वमेधादिक य
ग्य करे ॥ जैसे अनेक बिहारन को करत राम
भोग भोगत भये ॥ इती श्री भारत सार चंद्रि
काया बन पर्वणि नलोपाख्यान चतुर्थोऽध्या
यः ॥ अहरे अन्नमधुर होइ धर्ममें नेशा हो
इये दो इबर यमदिये ॥ बरुण कहै मरु देसह
में जो तू चाहे तो जल को समुद्र होइ और तेरी
पुष्पमाला सुगंध सहित सदा प्रफुल्लित रहे
जैसे दो इबर बरुणदिये ॥ जैसे चारो आठ बर
देय अपने स्थान गये ॥ तापी कुंभी मरा जाह
और राजा को सीधे देवि धि वत नल को बि
बाह कस्यो ॥ जब नलह आपकी इच्छा माफि
कउहारहि तापी कुं अपने नगर को आयो
दमयंती करण लह ॥ जैसे बिहार कस्यो
जैसे निज लोक में इंद्र इंद्राणी बिहार करै ध
र्म करि प्रजापालन कस्यो ॥ अश्वमेधादिक य
ग्य करे ॥ जैसे अनेक बिहारन को करत राम
भोग भोगत भये ॥ इती श्री भारत सार चंद्रि
काया बन पर्वणि नलोपाख्यान चतुर्थोऽध्या
यः ॥

श्रीमराजाके स्वयंवर है सो उहां जाय दमयं
 ती कौ बरौंगो मेरो मन वांमै बसे है ॥ तब इन्हें
 सि करि बोले ॥ वह स्वयंवर तो होइ गये ॥ हमारे
 देश तनल कौ दमयंती बस्यो ॥ जैसे सुणिक लिजे
 ध करि बो ल्यो ॥ देवन कौ तजिन रतल कौ बस्यो त
 तें वा कौ इंड देवो जो ग्ये ॥ जैसे कलि कौ बचन
 सुणि देव बोले ॥ हमारी आग्या सो नल कौ दम
 यंती बस्यो है ॥ सर्वगुण सपुक्त जैसे नल सो
 कौ न प्रसन्न न होइ ॥ जो सकल धर्म जाणो ॥ स
 र्वव्रतन कौ करता ॥ आस्यो वेद इतिहास स
 हित पटो ॥ जाके यग्न सो देवता नित्य पर है
 अहिंसा निरत ॥ सत्यवादी ॥ इटव्रत ॥ सत्य प्रति
 दान ॥ तप शौच दम सम इतने गुण जा में निर
 बस्यो ॥ जानल कौ जो शाप दे सो आत्मा कौ शा
 प दे ॥ जो मारे सो आत्मा कौ मारे ॥ जैसे नल सो
 जो शेर करे सो नरक नमें डूबे ॥ जैसे कहि दे
 वता आपके लोक कौ गये ॥ जब कलि हाय
 र सो बो ल्यो ॥ कोप कौ हा बि नस कौ हो सो न
 लमें बलि राज्य सो ब्रह्म करि वा कौ दमयंती
 सो निधोग करौंगो ॥

रिसहाइता करि ॥ इति श्री भारत सार चंद्रि

हमरे लोक को आवै जैसे दो इबरदिये। अरु
ते सपरसते अन्नमधुर होइ धर्ममें नेशा हो
इये दो इबर यमदिये। बरुण कही मरु ये सह
में जो त् चाहे तो जल को समुद्र होइ और तेरी
पुष्पमाला सुगंध सहित सदा प्रफुल्लित रहे
ऐसे दो इबर बरुणदिये। जैसे चारो आठबर
दिये अपने स्थान गये। तापी कुंभी मरु जाइ
और राजान को सीधे देवि धि वतन लको बि
बाह कस्यो। जब नलह आपकी इत्ना माफि
कउहारहि तापी कुं अपने नगर जो आयो
दमयंती कां छल लेह। जैसे विहार कस्यो
जैसे निज लोकमें इइ इइराणी विहार करे ध
र्म करि प्रजापालन कस्यो। अश्वमेधादिक य
ग्य करो। जैसे अनेक बिहास को करत राज
भोग भोगत भयो। इती श्री भारत सार चंद्रि
कायां बल पर्वणि नलो पाष्यात चतुर्थो भा
य ३४॥ अह रश्च उवाच॥ राजान लदमयंती
को व्याह भये पाके लोकपाल आपके लाकन
को चले जात मरुगमें क्षर सहित कलियु
गको देष्यो। तब इइ बोस्यो हे कलियुग त् क्षा
पर सहित कहा जात है। जब कलियुग कही

नसुणिनलहमहासाचमैमग्नभयो॥इदयवि
दीर्णसोभयो॥ककुबोल्यानही॥पुष्करकोस
वश्वकोस्वामीदेविउदासहोयभूषणवस्त्र
कोटिएकबस्त्रहीसोंपुरकेबाहरनिकस्ये
असैस्वामीकोदेविदमयंतीहेएकबस्त्राप
कूसौनिकसी॥जबनलदमयंतीसहितनग
रकेबाहरबागमेंतीनदिनरहोतबपुष्क
रनगरमेंयहदुहाईफेरीजोकोईनलकोस
तकारकरेगोसौराजसोंमृत्युदंडपावैगो
असैपुष्करकोबचनसुणिनलराजास
त्कारयोग्यहोतोभीकाहनैसतकारकियो
नही॥तबबागमेंनलराजातीनराजजल
पानहीकियोतासोंतुधातुरहोइफलच
एतहोगवनकियो॥बाकेपीछुदमयंती
हचली॥असैवहुतदिनकोभूषो नलएक
दिनसुवर्णपंथकेपत्तीदियोतबबिचार
कियोइनकोमासतौषाङ्गअरुपंपनसों
धनहोइगो॥यहजाणिउनकोबस्त्रसोंदकि
दियो॥जबवेपत्तीबस्त्रलेआकासकोंगये
तबनलकोदिगंवरभूमिमेंअधोमुखदोष
वेपत्तीबोलेहेदुर्बुडीहैमपासाहैतरै

बसकीबातनही॥अैसेकहिगये॥रमयंती
फेरिधाइसोंकहीबाक्षेयसारथीकोबु
लावोतव वहअएतासोंदमयंतीबोली
हेवाक्षेयमहाराजकीतोसोंसदाप्रतिहेपै
अबइनकीदुबुद्धिइहेसोतुमसहायताक
रो॥ज्योंज्योंहारेंहेत्योंत्योंप्रेमधेहेकाह
कोंकसोमानेनहीतासोंमेंकहोंजैसेके
रि॥नलकेप्यारेघोडाहेतिनकोरथमेंजो
इइइसेनपुत्रअरुइइसेनाकन्याइनरो
ऊनकोंचराइबिदभंदसनमेंजाइनीमरा
जायासपहुंचावो॥जबसारथीदमयंती
कोबचनसुणिमंत्रीनसोंमसलतिकरि
वैसेहीकरतभयो॥भीमराजाकोपुत्रक
न्यारथघोडानिवेदनकरिसीधमांगिअजो
धामेंआवरितुपर्णराजाकेसारथीहैरहे
तभयो॥इतीश्रीभारथसारचंद्रिकायांवन
पर्वणिननोपाष्यानवस्रोध्याय॥१॥अहइइव
उवाच॥बाक्षेयगयेपीछेंनलराजाकोराज
धनहाथीघोडासर्वश्वजीतिपुष्करकही
अवतुम्हारेओरलोकछूहेनही॥तासोंए
कबाजीदमयंतीकीओरखेजो॥जैसेबच

वही कह्यो ॥ में ह तो कौं नही छोडो चाहत
हों सरीर को त्याग करों परंतु तुमारे त्या
ग करों नही ॥ तातें तुम संदेह क्यों करों हो ॥ इ
मयंती बोली ॥ हे महाराज तुम छोडो नही
चाहो तो बिद न दे सकौ मार्ग क्यों बतावो हो
में यह जानत हो जो तुम मो कौं छोडो न
हो परंतु दुष्पत न र कहान करो ॥ बिद बिद
न दे सकौ मार्ग बतावत हो ॥ तातें संदेह अ
वत हो ॥ जो तुमारे यह ही मनो र्थ हो इ यह
माता पिता पास जाया तो आप ह चलो तो मै
ह चलो ॥ उहां बिद न राज आप को सत्कार करे
गो ॥ तातें वाके सत्कार करि आप न सुष
सो बि संगे ॥ इती श्री भारत सार चंद्रिका यां
वन पर्वणि न लोपा व्यान सप्त मो ध्याय ॥ ७ ॥
॥ न लो उवाच ॥ जैसे राजतेरे पिता कौ तैस
मे रो उ है ॥ परंतु आप त्य सहित उहां नही
जाऊं ॥ जहां समुद्र सहित जाय ह र्व बधाव
त हो आप त्य सहित जाय सो क के सं ब
धावो ॥ जैसे कहि मयंती कौं श्री अनेक
तापी के

बस्त्रदेविदुषी होइ बस्त्रलेबेकों आयेहो जे
सैसुणि उनको पासाजाणि आयको नम
दपिनलदमयंतीसों बो लो हे सुंदरीजि
नकेकोपसोंमें राजभृभयो प्रजासत
कारकस्यान्ही ॥ आहारमिलेनही चुधातु
रहों सोबेयासापही होइ मेरो एक बस्त्रहो
सोहू रें है यह तेरे स्वामीकी दसाहे सोदे
षि ॥ अरु यह मार्ग दत्त एरिसाकोहो ॥ यह
उज्जानकोहो ॥ यह रिक्त वंत पर्वतकोहो ॥ ये
हसमुद्रगामिनी पयोक्षी नदीकोहो ॥ यह रि
षिनके आश्रन बहल ॥ यह बस्त्र पुक्तहो ॥ ये
हमार्ग बिदम देसकोहो ॥ यह मार्ग अजोधा
कोहो ॥ जैसे नल कहि दुष्प करि व्याकुल भ
यो जे बस्वामीके दुष्पते दुषित होइ दमयं
ती बोली मेरो इहयकापेहे राजभृ ब
स्त्रहो न चुधातुर जे से स्वामीको निर्जन ब
नमेतजिकहां जाऊं मैं चुधातसापी डि
तहो इतु म्हारी सेवा करौगी ॥ सर्व दुष्पनकी
श्रेष्ठिभार्यासमां अश्ररहे नही ॥ जैसे सुणि
नल बोले हे सुंदरी दुष्पतनरके दुष्प हर कर
बेकों भार्यासमांन अर मित्र नही यह तैस

त्यही कह्यो ॥ में ह तो कौ नही छोड़ो चाहत
 हों सरीर को त्याग करों परंतु तुमारे त्या
 ग करों नही ॥ तातें तुम संदेह क्यों करों हो ॥ इ
 मयंती बोली ॥ हे महाराज तुम छोड़ो नही
 चाहो तो बिद्वर्न देस को मार्ग क्यों बतावो हो
 में ह यह जानत हों जो तुम मो को छोड़ो न
 ही परंतु दुष्पत नर कहान करों ॥ बिद्वर बिद्व
 र्न देस को मार्ग बतावत है ॥ तातें संदेह अ
 वत है ॥ जो तुमारे यह ही मनोर्थ होइ यह
 माता पिता पास जाया तो आप ह चलो तो मैं
 ह चलो ॥ उहां बिद्वर्न राज आप को सत्कार करे
 जो ॥ तातें वाके सत्कार करि आप न सुष
 सो बैसेंगे ॥ इती श्रीभारत सार चंद्रिका या
 बन पर्वणि नलो पाष्या नख प्रमो ध्याय ॥ ७ ॥
 ॥ नलो उवाच ॥ जैसे राजतेरे पिता को तैसे
 मेरो उ है ॥ परंतु आप त्यसहित उहां नही
 जाऊं ॥ जहां सम हिसहित जाय हर्ष वधावै
 तहो आप त्यसहित जाय सो क के से व
 धावौ ॥ जैसे कहि रमयंती कौ और अनेक
 बात न करि समाधान कस्यो ॥ तापी कुरो
 ऊ एक बस्त्र होता ही सो अंगन कौ दूषि भवे

तुधातुरहोइतउतविचरएकदुन्यस
कोदेघतभये॥वासनामैदमयतीसहि
नलजमीमैबेठो॥तापीकेएकबस्रहोवा
हीकोबाहिदोऊधरतीमैसोइगये॥दमयती
तोनिशबसहोइसोई॥०॥रुनलकोव्याकु
लताकरिनिशआईनही॥जबराजानल
राज्यभंसमिन्नवियोगबनवासइनकोवि
चारतचिंताकरतभयो॥अबकहाकियेमे
रोभलोहोइसोकछूनीकरतब्यदीसेनही
तातेकेतोमैरोमरणतैकल्याणहोइअ
थवादमयतीकेत्यागकरिकल्याणहोइ
यहप्रेमकरिजबलोसंगरहेगी॥तबले
दुष्पहीपावेगी॥मोबिनामातापितापास
जायतोकराचितसुषुहपावे॥यहपति
ब्रतातेजकरियुक्तहै॥तासोमार्गमैपा
कोकोऊकछूकहिहसकेगोनही॥अ
सैकलियुगनैयोकीमतिकेरीतातेदमय
तीकोत्यागवोनिहचेकियो॥तबआपतो
बस्रहीनहो॥अरुवाकेएकबस्रतासंसो
आधोलेबेकोकारिबेकोविचारकियो॥
सोकेसैबस्रकारोयहतोजागेनही॥अरुब

स्रकटि जाय ॥ असें विचारि सभामें इत उत वि
चरत एक षड् विना म्यां न को देख्यो ॥ वायड्ड
करि आधो बस्रकाटि स्वासना धिसूती ही
रमयंती को कोडि भाज्यो ॥ जब आगे जायद
मयंती यादि आई ॥ तब फेरि उलटो आयद
मयंती को देखि रुदन करत भयो ॥ जामेरी
प्यारी को सूर्य पवन रूप हलें देखी नहीं ॥ सो स
जाके मध्य अनाथ लो धरता मैं सोचत हो ॥ ए
क बस्र सो हूक दो वोटें सूती है सो जागेगी
जब तो यह देसा देखि उन्मत्त के सी तरें या
की होइगी ॥ यह पतिव्रता मो विनां सूर्य व्या
घ्नन सहिता जैसे घोर बन में के सैं विचरेगी
हे प्यारी धर्म तो तेरी रक्षा करे ही हो ॥ अब अ
दित्य बारहा ॥ शब सु आटाटा रुड ग्यारहा ॥
अश्वनी कुमार रोया ॥ गुणं चा समरुतये
तेरी रक्षा करो ॥ असें कहि कलि युग नै हरी है
मति जाकी सो न लफेरि उहां तें चल्या ॥ असें
बेर बेर आवे है जाय है ॥ सो कलि युग तो म
तिकों फेरि ले जात है ॥ अरु रमयंती को
मधें चित्पावत है ॥ ताते राजा को चित्त हि
ला समान होइ मूलत है ॥ परंतु बलवान

लिकोंपैचोनलसन्पवनमेंसूतीहुईनार्क
कौतजिदुष्यतहोइकरुणाकरतजातभयै
॥इतिश्रीभारतसारवैशिकायावनपर्वणितलो
याभानअष्टमोऽध्याय॥जाजहदश्वडवाज्ञान
लगयेपीछैदमयंतीकोषेरमिट्योजबजाग
निर्जनवनमेंनार्तरकौनदेष्योजबहामहा
राजतुमकहागये॥असैंपुकारिरुदनकरत
भई॥फिरिहामहाराजहास्वामीहानांपतु
ममोंकोवनमेंइकलीछांडिकहागये॥मैंइ
कलीनिर्जनवनमेंडरोहो॥तुमसत्पवादी
धर्मात्माहोइमोकोइकलीवनमेंकैसेको
डिगये॥तुहारीजजीहुईमेंमहर्तमात्रहजी
वतहो॥सोअकालमेंमनुष्यनकीमत्पनही
यहसत्यहीहो॥तातैअबहास्यपूरोभयो
सोहस्वामीमेंदुषीहोबिदयनकीबोटको
डिरसणरो॥मेंमेरेआपाकोसोचनही
करतहोपरंतुतुमइकलेकैसेरहोगेयहसो
चनहो॥भूष्यासेब्रह्मनकेनीचेमोषिना
कैसेरहोगे॥असैंसोचकरिदुष्यकेनार
सांवारंवारगिरेहो॥उठहैस्वासभरेहैन
अष्टितहोइहैरुदनकरतबोली॥जाकेपा

लिकोंवैचो नलस्यवनमैसूतीहुईनार्क
कौतजिदुष्यतहोइकरुणाकरतजातभयो
॥इतिश्रीभारतकारचण्डिकायांवनपर्वणिनलो
पाप्यानश्रष्टमोऽध्यायः॥७॥ब्रह्मदृष्टुडवाचान
लगयेपाकैदमयंतीकौषेरमिश्रोत्रवजाग
निर्जननमैभार्तारकौनदेष्योजबहामहा
राजतुमकहागये॥असैंपुकारिरुदनकरत
भई॥फिरिहामहाराजहास्वामीहानांयतु
ममोंकौवनमैइकलीछांडिकहागये॥मैइ
कलीनिर्जनवनमैडरोहो॥तुमसत्यवादी
धर्मात्माहोइमोकौइकलीवनमैकैसैको
डिगये॥तुहारीजजीहुईमैमहर्तमात्रहजी
वतहो॥सोअकालमैमनुष्यनकीमत्यनही
यहसत्यहीहो॥तातैअबहास्यपूरोभयों
सोहेस्वामीमैदुषीहोबिरयनकीबोटको
डिरसराहो॥मैमेरेआपाकोसोचनही
करतहोपरंतुतुमइकलेकैसैरहोगेयहसो
चनहो॥भयैपासेब्रह्मनकेनीचैमोखिना
कैसैरहोगे॥असैंसोचकरिदुष्यकेभार
सोंबारंबारगिरैहो॥उठहैस्वासभरैहैन
अश्रितहोइहैरुदनकरतबोली॥जाकेपा

पतैमहाराजनलदुष्यवपावैहै॥तापापीको
 हमारेदुष्यसोभीअधिकदुष्यहो॥अैसेंबि
 लापकरतीदमयंतीभर्तारकोहेरतभई॥तहांबि
 नमेंभ्रमतीकोमहाअज्ञगरअसतभयो॥अज्ञा
 रकीगिलीदमयंतीनलकोसुमरणकरतीबिवा
 पकरंतभईहेमहाराजतुमसेनाथपापअ
 नाथलो॥अज्ञगरकेमुखमेंगिरिहोसोम
 रोतोसोचनहीधेमोबिनादुष्यमेंतुम्हारा
 सेवाकौनकरेंगो॥अैसेंबिलापसुणिएक
 सिकारीबनमेंफिरैहोतानेंअज्ञगरकोस
 स्त्रसोमुखचीरिदमयंतीकौनिकासी॥रा
 नकरायभोजनदेयाकोब्रंतांतपूछ्याया
 नेंसबब्रंतांतकह्योसोसुणिरूपदेविका
 मातुरभयो॥तबतदमयंतीबोलीमैमन
 तेंनलकोतजिअन्यकोचिंतवननहीकि
 रोयहसत्यहोइतोब्याधिमरौ॥अैसेंकह
 तहीबहव्याधिमुवो॥इतिश्रीभारतसार
 वनपर्वणिनलोषाध्यानलवसोअ्याय॥६॥
 चहदप्रबुडवाच॥अैसेंसिकारीकोमारि
 दमयंतीमहावनमेंगई॥तहानानापकर
 रकेवनचरंतयकरजीविजंतुब्रह्मतिन
 कोदेधतदारुणवनमेंविचरंतभर्तारको

चिंतवनकरतसिलापर बैठि बिलापक
रतभई हेनिशाददेसनके राजामोकोयाव
नमें कौडितुमकहो जावोगे अश्वमेधादि
कयगपनमेंमोकोसाथराषी अबयावन
मेंमोबिनाकेसंजावोगे अगसहितवेद
नकोपटिवेत्तो एकतरफ अरुसत्यएकत
रफ सोतुममोकोकहीमेंतेरोत्यागनक
रोसो अबत्यागकरिकौनगतिको जावो
गे ऐसेकहतप्रलापउनमादकेबसहोइ
लताब्रह्मनसोपूकृतफिरतहे जोकहमहा
राजनलकोतुमदेघेहोइ तोमोकोबेता
वो याप्रकारतीनिदिनलो अमतअमतच
तुर्थदिवसमुनिनके आश्रममेंगई बहां
मुनिनकेदरसणकरेसोकि तनेकउपवास
करेहे कितेकपवनासनकरेहे कितेक
श्वस्कंपत्रासनकरेहे कितेकमांसोप
वासकरेहे कोईप चाग्रितपेहे कोई
लवासकरेहे ऐसेअनेकतपस्वीनव
युक्तआश्रमदोषिदमयंतीबहोतप्रसन्न
तहांजाइ उनकोप्रणामकरी जबमुन
आसीवादेकरिपूकृतभये हेसुदरी
मोचनमेंसीतउस

न वर्षा के सैं कहेंगे ॥ तू या वन की दिवत है
 अथवा देवां ग्राहो के पर्वत देवता है ॥ यो
 पूछो तब दमयंती बोली ॥ जो तुम कही सो
 तो मैं नही मानुषी हों ॥ विदर्न देसन को
 राजा भी मेरो पिता है ॥ निषद देसन को
 राजा नल सर्वगुण संयुक्त मेरो पति है
 वाको कोई दुष्ट ननै कपट के पासान करि
 जीति सर्व सुहस्यो ॥ जब मैं वामहारा जस
 हित वन में आई ही ॥ सो कोई देव संयोग क
 रि मेरो उन सों वियोग नयो ॥ तातैं उनको हे
 रत हे रत इहां आई हों सो तुम नै वाको दे
 ष्यो होइ तो बतावो ॥ अर जो वह नमित्यो
 तो मैं हू देह त्यागन करि पा दुष्यते छूटौंगी
 असें योको बचन सुणि करुणा सहित मु
 नि बोले हमहमार तयो बल करि जाण
 तहों ॥ तू वासो मिलेगी ॥ सर्वराज्य भोगन
 करि संयुक्त स्पधासन पर बैठै वाको

॥ असें कहि आश्रम सहित तप
 अंतर्धान भयो ॥ तब दमयंती हू विच
 नई ॥ यह मैं प्रतप्त देष्यो अथवा
 असें विचार करि बिला

तनदीपर्वतमेंहरतहरतएकबडोसाथ
दृष्यो॥ हाथीघोडारथनकरिसहित॥ सोन
रीकोउतरेहोतामैयहहू मिलिकरिजलमें
प्रवेशकरतनई॥ जबपाकोसाथकेमनु
ष्यननैदृषीउन्मत्रकेसौरूपआधेबस्र
कोलपेटेमलिनहोइरही॥ रजकरीकेसह
मलिनहोइरहे॥ जैसीकोदेधिकितेकनपती
तहोइजगो॥ कितेकचिताकरैतभये॥ किते
कहंसतभये॥ कितेकपुकारतभये॥ कि
कितेकरयाकरतभये॥ कितेकरयाकर
तभये॥ कितकपूछतभयेहेकल्याणीतये
एहे॥ कौणकीहेकौणकोहेरहे॥ देवा
हेकेवनदेवताहेकेपर्वतदेवताहे॥ जा
साहमसबतरैसरणहे॥ जैसीक्रपाक
तातैयहसाथकुसलकुमसाधारउत
जबदमयंतीबोलीमेंविदर्भराजकीपु
होनलकीभार्याहोसोवाकोहरतहै
मकहूदृष्योहोइतोबतावो॥ तबसु
मावासाथकोसिरारबोल्पोमैया
हाथीचीताव्याघरीकुमगतो॥ अने
समानधमात्रदृष्योनही॥ एकतही

वर्षिषहि ॥ नलकों देख्यो नही सो अब यह
हा घोर बन हे तामें मरिा भेइ नामाय नह
मसो प्रसन्न होइ जैसे कृपा करिा जब फेरि
इमयंती बोली ॥ यह साथ कहो जाइगो ॥ त
ब साथ को नायक बो ल्यो ॥ चैतिराज सु
बाहु की नगरी को जाइगो ॥ इति श्री भार
त सार चंद्रिकायां वनपर्वणि नलोपाख्या
नदसप्तो ध्याया ॥ २० ॥ ब्रह्मदृष्ट उवाच ॥ इम
यंती वा साथ के नायक को बचन सुणि सा
थ के संग आय ह चलत भई ॥ जैसे चल
तै कितने कदिने पीछे घोर बन में एक त
लावक मलन करि सहित देख्यो ॥ उहां वा
साथ के नाथ की आग्या तें पश्चिम तीर सब
ही साथ मुकाम करत नयो ॥ तहां परश्र
म करि सब ही सोई गये ॥ जब अर्ध रात्र के
समै हाथी नको समूह आयो ॥ सो वासरो
वर के मार्ग में साथ सो वै हो अरु वे हाथी
सरो वर को जात हे ता करि उन को धूदत
नये तब वे हाथी नके भय के सारे पुका
रत पर्वत पैं ब्रह्म नमें जात भये ॥ कौक
हे मेरो रथ दूयो ॥ कूकू कहै धनुष

या प्रकार भयभीत होइ हाहाकार करत भये
तव दमयंती जागि यह कौलाहल देखि भ
यनीत होइ जागी सो कोई ऊचै स्या न पै सो र
चना देखत भई ॥ सोके तक तौ भरि गये अ
रुके तेक बचे सो सामिल होइ बोले यह
कौण पापको फल आयो ॥ मणि भद्र गणको
पूजन न कस्यो ॥ अथवा पत्तराज कुवेर अ
थवा गणपतिको पूजे नही ॥ अथवा विपरी
तिस कुननको फल नयो ॥ अथवा ग्रह ही वि
परीति नयो ॥ और कितने क दुषी बोले वह
नारी जो साथ आई ही तानै यह कस्यो ताते
वह रात सीके पिसाची ॥ केइ हणी ही जाते
अब वाको देखै तौ त्रण काष्ट पाषाण करि
मारे ॥ केरज मे पूरि दे ॥ या साथ की मारण
वाली हो ॥ जैसे उनकी बातें सुणि दमयंती
भाजत भई ॥ सो सुन्य बन में जाय बिलाप क
रत भई ॥ दे प्रो मेरे ऊपर कौण निधाताको
कोप है जो सुषको तौ ले सह मिले नही है
दुष्पनकी परंपरा ॥ आवते है ॥ भक्तके
राज्य न संस ॥ अतएव राजपति पुत्र
कन्या तै बियोग ॥ अनाथता बनवास सो

बनहु जन रहिता ॥ तातैं त्रैसोया जन्ममें के
 पूर्वजन्ममें कौण पापकस्यो हे जो साए
 निल्यो सो हुहायीनके समूह करि मस्या ॥
 सो देवकृत्य बिना मनुष्यनको सुषुदुष्या
 होनही ॥ में स्वयंवरमें इंद्रादिक लोकपाल
 नको अनादर कियो ताही कौफल आयो
 हे कहा ॥ त्रैसै बिसापकरत सायमें तैं बचे
 जे ब्राह्मणतिनके संग होइ चलत चलत कि
 तनेक दिनमें चेदिराज सुवाहुके नगरको
 पहुची सो संध्यासमें प्रवेश कियो ॥ तहां याके
 आधे बस्त्रसों लिपटी महारूपवान देखि
 लहिमीही जाणिपुरवासीसंग चलो ॥ जब
 उपनपुरवासीनके समूह वीचि आवत
 अरापे वैही राजमातायाको देखत भई ॥ ज
 व धाइसों आगपाकरीयाकौं नीतरल्यावे
 तब धाइ आइनीतरले गई ॥ जबराजमा
 तायासो पूछ्यो ॥ तहुसीह दिव्यरूपको धा
 रै हे बस्त्र आनसण बिनाहतेरी अहुत
 सो जाहो ॥ सहायबिनाहै तोह निर्भयहै ॥
 तातैं तू कौणकीहै कौणहै सो ॥ त्रै
 सै सुणि दमयंती बोली ॥

दमलपल आहार करों हों ॥ जहां सांरु होइ
तहां बास करों हों ॥ मेरो जर्ता असंघ्य गुणव
नहै ताकी साथ क्वाया ज्योर हो हों ॥ सो देव
बस तें द्रुत में सर्व सुहारि बंन में गगे ॥ वा
के समाधान कों में हवन में गई वहां पंकी
वाको एक बस्त्र हो सो हल गये ॥ जब में वा
को दुष देषिरात्र में सोई नही ॥ जैसे रहतें को
इस में में सो गई तब वे मेरो आधो बस्त्र
का दिले गये ॥ सो में उन कों हरत हेरत इहां आ
ई वाके ॥ योग है में दुषी हों यों कहत ही पा
के नेत्र नमें अश्व आये ॥ सो देषिरात्र माता
याको दुषित जाणि समाधान करत बोली हे
कल्याणी अबत सुष पूर्वक इहां ही रहि
तेरो दुषी हर होइगो ॥ अरु मेरे चा करहे सो
तेरे जर्तार कों इहे रेंगे ॥ अथ वा वह ही फिर
त फिरत इहां आ जायगो ॥ जैसे सुणि दम
यंती बोली ॥ इहां में क तरका बसोंगी
जूठणि घाऊंगी नही पावदा बोंगी नही ॥ आ
रपुर ससों बों लोंगी नही ॥ कदाचित कोई
जोर करै तो वा कों प्राणां क दंड सोगी ॥ भ
र्ता के तलास निमित्त ब्राह्मण न कों देषो

गी॥ जैसें करे तैमें बसंगी॥ जब राजमाता
बोली जैसें तै कह्यो तैसे ही करोगी तू धन
हो॥ जैसें यासों कहि सुनंदा नाम आपकी
पुत्री ही तासों बोली॥ हे पुत्री यह देव रूप ए
सै रं ध्री हो॥ तेरी अवस्था समान हे ता तै त
याकों तेरी सषी करि संग राषि॥ तब सुनंदा
वाकों संग ले आपके महल में आया॥ वाकों
स्नान कराय बस्त्र भूषण पहराय पास राष
त भई॥ दमयंती हे सुषसों उहां बास कर
त भई॥ इति श्री भारत सार चंद्रिका पां दन पत्नी
एन लोपा ध्यान एकादश बोध पाथः ११॥ ब्रह्म
एत उवाच॥ नल राजा हे दमयंती कौं कौ
डिवन बन में फिरतै एक ठोर दावानल ब
न कौं मस्म करत देख्यो॥ वा अग्नि के मध्य
कोई कौ बारं बार यह सब सुण्यो॥ सो हे न
ल राजा इहां आवतू डरै मति जैसें वासों
रुही॥ तब नल अग्नि में प्रवेश करत भयो
हा कुडला कार सूतौ नागराजों कौं देख्यो
हनाग हाथ जोडिने लसों बोल्यो॥ हे रा
गमों कौं कर्कोटक नामा गजाणि में
गरद मुनि कौं अपराध कस्यो हो॥ सो उ

नशापदियो जो तस्यावरहाइ रह जावत
नराजा तो को और ठोर ले जाय गो तब
शापसो मुक्त होइ गो ताते एक पैड हूच
लिस को नही हो सो तुम मेरी रक्षा करो
मेह तेरो कल्याण कारी मित्र होऊं गो मो
समोन और हरे कसर्प को मति जाणें मेह
अब लघु होइ जाऊ गो सो तू मो को लेके
अग्निरहित ठोर में चलि जैसे कहि वह
नागें इ अंगुष्ठ प्रमाण नयो जब नलरा
जावांको उहाय अग्निरहित रे समे जाय
धरि बेल गो तब वह बो ल्यो हेराजा अ
बत तेरे पैड गिणत गिणत चलि मे तेरो
कल्याण करू गो जब पैड गिणत चलते
नलको रस वे पैड पेड स्यो सोड सतही
राजा को रूप हो सो बिरूप होइ गयो त
बराजा आयको बिरूप देखि नागको
निजरूप धारी देखि उदास नयो जब
नाग समाधान करत ही बो ल्यो मे त
को जगत न जाणो या वास्तै बिरूप व
स्यो हे अरु जो मे तो को राज भूषक
ने सरीर मे बसे हे सो मेरी विषज

लाकरिजलतहीरहेगो॥जबतोकौंको
 डेगो तबसुषपावैगो॥यहउस्योहैसोवा
 तेरीरक्षाकरेहैमेरीविष
 लाहूतोकौपीडाकरैगीनही॥अबमेरे
 प्रनुग्रहतैतोकौंसखुवारंड़ीवाब्रसरि
 इनतैभयनहोइगो॥संग्राममेंजयपावे
 ॥अबतुमंबाहुकनामांसतहो॥अैसे
 रितुपर्णनामांराजापासअजोध्या
 जावो॥वहतीसोअश्वविद्यालेकेअत
 विशादेकैतेरोमित्रहोइगो॥जबतुअत
 जाएंगो तबहीतेरोकल्याणहोइ
 ॥इस्त्रीपुत्रकन्यारोज्यइनकोंप्राप्तहोइ
 सोजबतुनिजरूपचाहो॥तबमेरो
 वस्त्रदेतहोताकौंवादे
 तबहीनिजरूपपावैगो॥अैसेकहिदि
 इवस्त्रनलराजाकौंदेकेनागराज
 प्रतर्धानभयो॥इतिश्रीभारतसारचंद्रि
 काषावनपर्वणिनलोपाध्यायनक्षत्रसमाध
 य॥इतिअहर्षज्जवापनागराजकोअतर्धा
 नभयोपीकेनलराजदसवैदिनरूप
 नगरीमेंप्रवेशकियो॥वहांज

नशापदियो जो तस्थावर होइ रहो ॥ जब
नराजा तो को ॥ और ठोर ले जायगो ॥ तब
शापसो मुक्त होइगो ॥ ताते एक पै डहच
लिसको नही हो सो तुम मेरी रत्ता करो ॥
मैं हं तेरो कल्याणकारि मित्र होऊंगो ॥ मो
समोन और हरे कसर्पको मति जाणें ॥ मैं
अब लघु होइ जाऊंगो सो तू मोको लेके
अगिरहित ठोरमें चलि ॥ जैसे कहि वह
नागेंद्र अगुष्ट प्रमाण नयो ॥ जब नलरा
जावाके उठाय अगिरहितरे समजाय
धरि बेलगो ॥ तब वह बो ल्यो ॥ हे राजा
बत तेरे पेंड गिणत गिणत चलि मैं तेरो
कल्याण करूंगो ॥ जब पेंड गिणत चलते
नलको दसवें पेंड पेडस्यो ॥ सोउ सतह
राजाको रूप हो सो बिरूप होइ गयो ॥
बराजा आयको बिरूप देखि नागके
निजरूप धारी देखि उदासनयो ॥ ज
नाग समाधान करत ही बो ल्यो ॥
को जगत न जाणें या वास्तै बिरूप
स्यो हे ॥ अरु जो मैं तो को राजपुत्र
तव सरीरमें बसे हे सो मेरी विष

समनित्यहोययहश्लोककहतभयो
नुसाचुत्पिपासातीश्रांताशुतेतपस्वि
स्मरंतीतस्यमंदस्यकंवासादोपतिष्ठति
अर्थवहभूषणकरिदुषितश्रमितहो
पवामंदकौसुमरतकहावसतहो। कौण
कीसेवाकरतहो। जैसेकहतबाहुकसां
जीवनबोले। हेबाहुकतकौणनारी
कौसोचतहो। अरवहनारीकौणकीभा
र्याहै। जवनलराजाबोले। कौणएक
मंदभागीकौनारीबहुतप्यारीभई। अरु
वहहवाकौणरोभयो। सोकौणदेववस
करिउनकेवियोगभयो। तातैवाकेवियो
गसोदुषितहोइरात्रमेंवाकौंसुस्मरणक
रतएकश्लोकगावैहै। वहनारीवाकेसं
गनिर्जनवनमेंभाईतकोवामंदभागिनि
छोडीसोवाकेजीवनकहिनहै। एक
तौअबलाहूसरैमार्गजाएनीभूषण
सकरिपाडित। सोमहादारुणनिर्जनव
नमेंछोडीजैसेनलराजाइमपतीकोसु
भारतऋतुपर्णराजाकीनगरमेंअर्यात
वासकरतभयो।

राजासोमिलिकेबोल्या॥ हेराजनमेंबा
हुकनामांसूतहो॥ सोअश्वनकेचलावेमें
परीसमानऔरएथीमेंहैनही॥ नीतिसा
स्त्रनकेकदिन॥ हस्पनकोंमेंजाएंगे॥ औ
रकोऊनजाएंगे॥ औसोअन्नसंसकारहजा
एंगे॥ जितनेसंसारमेंसित्यहैसोहजा
एंगे॥ औरओकार्जकाहसोअनहोइसोह
करोगे॥ तातेंआपमेरोभरणपोसणक
रो॥ जबऋतुपर्णबोले॥ हेबाहुकतरहा
बसितैरोकल्याणहोइगोजोतमेरेसर्वका
र्जकरेगोतो॥ मोकोअश्वसीघ्रचलिब
मेंबहुतरुचिहै॥ तातेंतूअसोकामकरि
जोमेरेघोडासीघ्रचलेतोकोसबअश्वन
कोमालिककियो॥ औरसोमहोरकोतेरो
रोजीनाहैसोयाहतेकरुकरिवायरो
गो॥ अरबाक्षेयवोजीवनयेदोऊतेरआ
गेकामकरिबेकोरहेंगे॥ इनसहितहेब
हुकसुषपूर्वकबसो॥ असैऋतपर्णराजा
कीआप्यातेंबाहुकनामधारिबार्सफ
वनसहितनलराजाबसतनयो॥ बहारा
जाबारबारदमयंतीकोसुमरणकरतसं

समानित्यहोपयहश्लोककहतभयो॥
नुसाचुत्पिपासातीश्रांताशेतेतपस्विनी
स्मरंतीतस्यमंदस्यकवासांद्रोपतिष्ठति॥
अथवहभूषण्यसकरिदुषितश्रमितहो॥
पवामंदकौसुमरतकहावसतहो॥ कौण
कीसेवाकरतहो॥ अथैकहतबाहुकसो
जीवनबोल्पो॥ हेबाहुकतकौणनारी
कौसोचतहो॥ अथैहनारीकौणकीमा
याहो॥ जवननराजाबोल्पो॥ कौऊएक
मंदभागीकौनारीबहुतप्यारीभईअरु
वहहवाकौप्यरोभयो॥ सोकौऊदेववस
करिउनकेवियोगभयो॥ तातैवाकेवियो
गसोदुषितहोइरात्रमेंवाकौसुमरणक
तएकश्लोकगावैहो॥ वहनारीवाकेस
निर्जनवनमेंभाईताकौवामंदभागिनी
गडीसोवाकौजीवनकठिनहो॥ एक
अबलाहूसरेमार्गजाएनीभूषण्य
रिपाडित॥ सोमहादरुणनिर्जनव
कोडीअथैतलराजाइमयतीकौसु
अतुपर्णराजाकीनगरमेंअग्यात
करतभयो॥ अथैअथैअथैअथैअथै
वनपर्यटितनीमाअथैअथैअथैअथै

नलराजराज
रिदमयंती सहितवनमेंगयो पहलु
गभीमराजाउनकेहेरिबेकोंब्राह्मण
कोंबुलापयहकही तुमनलदमयंती
होहरोजोकोईनलदमयंतीदोऊमेंसों
एकहकोहेरिल्याबैगोताकोंभूषणब
स्रगंवेशोगो हजारनगऊहदोंगो अ
रुजोउनकोकहीनिहचेहकरिआबैगो
ताकोहसैकडानगऊदोंगो असैकहि
ब्राह्मणकोषरचिदिचारोदिसानको
विहाकिये तिनमेंसुदेवनामांब्राह्मण
वेदराजाकेपुरभकोंगयो वहांपुन्याह
वाचनसमेंसुबाहु राजायाहकोंबुला
यो सोअंतःपुरमेंजायउहांदमयंतीको
देषीजबअनेकचिन्हनकरिवाकेंप
हचानिसुनिदापासबेठीदमयंतीसोबो
लाहेदमयंतीमेंसुदेवनामांब्राह्मणतेरे
जाताकोमिन्होभीमराजाकेइकमतेते
कौहेरिबेकोंइहांआयोहो अरुतेरोपि
तामाताजातापुत्रकन्यायेसबहीनीकैह
एकतेराचिंतातेसबहीउदासहै अरु
नोकौहेरिबेकोंसैकउनब्राह्मणप्रथ

मेविचरैहै॥ असेसुणिसुदेवकोपहचां
दमयंतीअरहसमाचारपूके॥ जबसुदेव
सबसमंचारकेहेसोसुणिदमयंतीरुद
नकरतभईतबसुनिदावाकोरुदनकर
तीद्विएकसषीकोराजमातायासपटाई
सषीजाइबोलीसरंध्रीएकब्राह्मणमांचान
करतेरुदनकरैहैसोआपबलोअसंमुणि
राजमाताआपब्राह्मणसोपछोयहकोण
हैकोणकीहैयहदसाकेसैभईअसंमुणि
सुदेवसबहीव्रतान्तकहतनया
रिजनीमताकीपुत्रीदमयंतीहै
केपुत्रनलताकीभायाहै
याहदसैराअहारिवनकेसाके
एयइन्द्रोसोदमनलएयको
एयवसिचिचरेगहै
पुत्रहैघरमेंपाईयाकी
एयममालपिपाई
एयइन्द्रोसोवारासम
एयइन्द्रोसोवारासम

एकस्यो तव वाकोपि ह्युचि ह्यस्यै दीप्य
 जसंबा लहर मये चंद्रमा दीसो वाचि ह्य
 कौंदेविराजमाता अरु सुनिदा दमयंती
 मिलिरुदन करत भई फेरिराजमाता बोली
 हे दमयंती तू मेरी बहण की बेटी हो सो या
 चिह्न करि निहचे जाणि अर तेरी माता
 अरु मंये दोऊ दसार्ण देस के राजा सुदामा
 की बेटी हो तेरी माता कौं तो भी मरा जाया सो
 हो सो कौं बीर बाहू कर राजा व्याही ही तेरो
 जन्म मेरो पिता के घर में भयो रौं उहाँ देषी
 ही तासो अब जैसो तेरे पिता कौ घर तैसो
 ही यह हे मेरी संपदा हे सो सब तेरी ही
 जाणि जब दमयंती प्रणाम करि बोली
 मैं तो इहा बिना जाणे हूं सुख सो रही परं
 तु अब तो मो कौ पिता के पास जावे की
 आगाही दीजे मेरे पुत्र कन्या हउहा ब
 सत है उन के देष वेकी लाल सो हे ताते
 सवारी दीजे तव राजमाता ह पुत्र सो
 सलाह करि सुंदर सवारी देर सावासे
 सेना संग देत भई जब दमयंती विदा
 होय सी घर ही विद न देसन कौं गई तहां

याकों अर्द्धसुणि बंधुजनसर्वही सनमुख
आयमहलमेंलेगयो॥ तबदमयंती हेमाता
पितापुत्रकन्याबांधवसयीजनसर्वसो
मिलिहर्षितभई॥ देव ब्राह्मणनको पूज
नकरतभई॥ पाँकुराजासुदेव ब्राह्मणको
गावइव्यहजारनगेऊदेकरि प्रसन्नकियो
दमयंतीहेपिताकेघरमेंसुषपूर्वकवा
सकरिमातासोबोली॥ इतिश्रीभारतसार
चंद्रिकायांबनपूर्वणिनलोपाव्यानपंचद
शोध्यायः॥ १५॥ दमयंतीउवाच॥ हेमातामा
कोजिवायोचाहोतौमहाराजनलकेल्या
इबेकोउपायकरौअसैसुणिमाताअश्रु
धाराछोडतउत्तरदियोनहीं॥ जबदमयं
तीकीअरुवाकीमाताकीयहदसादोषि
सबअंतःपुरहाहाकारकरिरुदनकर
तभयो॥ तबभीमराजसोमहाराणीबोली
हेमहाराजदमयंतीलज्याकोडिमोसोक
हो॥ नलकौल्याबेकेनिमित्त्यहेतनकौभेजो
योसुणिराजाबसवतीब्राह्मणनकोअ
ग्पाकरीजोतुमनलकेल्यायबेकेयलक
रोअसैकहिषरचीदेयविदाकियोजब

ब्राह्मणदमयंतीसोंबोलेहमनलकेहेरि
बेकोंजातहो॥तबदमयंतीउनसोंबोली
सबदेसनमेंराजसभानमेंयहश्लोकप
टो॥कनुत्वंकितवक्तित्वाबस्त्रार्धप्रस्थितो
मम॥उत्सज्यविपनेसुप्तामनुरक्ताप्रियाप्रि
य॥अर्थहेजुवारीवनमेंमेरोआधीबस्त्र
काटिसूतीकौछोडितकहागयो॥तेरेविर
हतेवहबालापैहो॥तासोंवापरकरुणा
करिप्रत्युत्तरकहो॥भर्ताकोपत्नीकोभर्ण
रक्षणकरेणो॥तेरेदोऊहीकेसंगयेदया
परमधर्महेयहतोहीतिसुण्योहो॥सोते
केसेकोडो॥अैसेबालतेतुमकोंजोउत्तरदे
सोसुणोइहांआवो॥वहसयातिवानहोअ
थवारिइहीहावाकीचेष्टादेवियो॥सबनगर
गांवपुरहेरतेहेरतेवाश्लोककोउत्तरकाहो
नैदियोनही॥तबआइदमयंतीसोंकहतभ
यो॥इतिश्रीभारतसारचंद्रिकायांबनपर्वणान
लोपाष्यानयोडसोध्याया॥१६॥ब्रह्मदृश्यउवा
च॥अैसेबहुतकालतेपनीदनामाब्राह्म
णआयदमयंतीसोंबोली॥हेदमयंतीनल
कोंहे॥१६॥अयोध्यानगरीमेंराजाऋतु

परलोकपासगयो॥ जहावाकौं प्रलोक सु
यो॥ जबवह ऊनबो ल्यो॥ औरसभाके ऊन
बोले॥ तब वाराजासो बिदाहोइ अश्वशाल
मेंगयो॥ उहाकौं अधिकारी राजाको सतव
हुक देख्यो॥ सोरूप करि महाकुरूप भुजाहूँ
टी॥ घोडानको सी घ्रचलावेमें महाचतुर
भोजनसामग्री करिवेमें कुसला॥ वाकौं
ह प्रलोक सुणायो॥ जबह सुणि स्वासतां
धिरुदन करि मो कौं कुसल पूछि बो ल्यो॥
पतिव्रताहोइ सो आपदाहमें आपाकी र
हाकरे॥ नतीत्यागकरे तोही क्रोधकरे नही
राज्यनष्टलत्नीहीन दुषीपत्नी ननै जाके व
खहरो॥ असीहपति आदरकरे वा अनादर
करे तोहपतिव्रता क्रोधकरे नही॥ असेवा
के मुषतै सुणिमें इहां आयो॥ अबतुमहारी
इच्छा आवै सोकरो॥ असे सुणिदमयंतीए
कांतमें मातासो बोली॥ यहपर्यादब्राल
ए समाचार ल्यायोहो॥ तासो अबतोमें तु
मसू कहो सोकरो॥ ये समाचार महाराज
सो कहो मति याहीमें मेरो कल्याणहो॥ अ
रु सुदेव ब्राह्मणमें कौतुमसो मिलाई जै
सेही मंगल महर्तमें नलराजाके लेते

वो पर्णादब्राह्मणघेदपायोहै सो विश्राम
करे परुदमयंतीको वचनमाता अंगिका
रकस्यो तवदमयंती प्रसन्नहोइ पर्णादको
धनदेबोली हे ब्राह्मण महाराजन लज्जावे
गे जबतीको और बहुत धनदे प्रसन्नक
रोंगी तेमै रोंगी तेमैरो बड़ो उपकारकस्यो
प्राणराषि जैसे सुणि पर्णाद ब्राह्मण आसी
बाददे आपके घरगयो ॥ तापीके दमयंती
सुदेव ब्राह्मणको बुलाय माताके पासही बो
ली हे सुदेव अयोध्यानगरीको राजा कृ
तुपर्णताके पास राहगी रसो होइ जापके
जैसे कहो दमयंतीको फेरि स्वयंवर हो
इगे उहो सबही देसके राजा वाराजपुर
जाइगे सो सुपंवर कालि सूर्योदय समे हो
इगे दमयंती दुतिय भर्ता बरेगी नल
राजाकी बबल ह। जीवत हे वानही जी
वत हे तासो ॥ जव जैसे सुदेव ब्राह्मण द
मयंतीके कहे सो अयोध्यानगरीमें कृतु
पर्ण राजा पास जाय सर्ववार्ता सुपंवरकी
कही ॥ इति श्री भारत सार चंद्रिका यावत्
वर्तमान लोकाध्याय सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥
॥ इति श्री महाभारत ॥ कृतपर्ण राजा सुदेवके

वचन सुनिवाहु कसौ बो ल्यो कुंदिनपुर
दमयंती कौ सुयवर है सो उहां तै ले चलै तो
कदिन में गयो चाहत हौ ॥ जैसे सुन ही न लव
रुदय दुष्यतै विदीर्ण भयो ॥ फेरि विचार करि बे
लग्यो ॥ दमयंती जैसे हुं करौ ॥ अथवा दुष्यक
व्याकुल कहान करे ॥ अथवा मेरे मिलिबेके
उपाय ही है ॥ तातै पति ब्रता दमयंती अन्य
भर्ता चाहै यहतौ ॥ असंभव ही है ॥ मैं खुश्या
पीक पटक रिवाको अनारक स्यो ॥ स्त्री सु
भाव चंचल है मेरो दोसह दारुण है जातै क
दाचित जैसे हुं करे ॥ मेरे साकतै सनेह छो
डि पुत्रवती है ॥ सो जैसे करे तो नही ॥ तातै
सत्य है वा मिथ्या है ॥ यहतौ निश्चै उहां गये
नही होयगो ॥ ऋतुपर्णको काम मेरे अर्थक
रागो ॥ जैसे बाहुक निश्चै करि हाथ जोडि
रुतुपर्णराजासौ बो ल्यो ॥ हे नरिंद एकदिन
मीं कुंदिनपुर ले चलौगो ॥ यह सत्य ही जा
॥ जैसे कहि ऋतुपर्णकी आग्यातै अश्रु
लामें जाय घोडांनकी परिष्का करि बेल
॥ सो सरीर करि कसचलिवेमें समर्थतेज
॥ सीलकुल पुक्त ही न लक्षण करि रहि
॥ पुष्टपोथरा लंबी ठोटी ॥ इस आवर्तनके

रिसुद्ध सिंधुदेसकेपवनसमानवेग जैसे
चारिघोडानकौनिश्वेकरे ॥ राजाऋतुपर्ण
उनकौदेखिबोल्पो ॥ अरेबाहक यह हमहारी
हंसीकरिबेहीकौपेमरेसे ॥ अश्वनिकासैहं
येअश्वइतनौदीर्घमारगकेसंचलेंगे ॥ जबबा
हकबोल्पो ॥ येअश्वनिश्वेकरिकुदिनपुर
एकदिनहीमैपहुंचेंगे ॥ आपआरअश्वनकी
आग्याकरोतौउनकौजोतौ ॥ तबऋतुपर्ण
बोल्पो ॥ तूहीअश्वनकीपरिक्काजाणिबेवा
लौहै ॥ जातैजोसीघ्रपहुंचेंसोहीजोवो ॥ जब
उनहीचारोघोडानकौरथमैजैये ॥ तबऋ
तुपर्णहसीघ्रहीसवारनयो ॥ जबघोडागोडी
देकिप्रथेवामैबैठिगये ॥ तबनलराजाउनपै
हाथफेरितेजधरिचारक्षेयआपकौसारथी
होबाहकौधरिरासिपचहतनयो ॥ तापीछे
बाहकआपकीअश्वविहाराकेप्रभावकरि
रथकौचलायोसोअबआकासमार्गहोइ
घोडाराजाकौमोहितकरतहीचले ॥ अथो
ध्यानाथहघोडानकौपवनवेगसमचलतेरे
षिचकितेनयो ॥ चारक्षेयहरथकौघोषसु
णिबाहककौरासिपंकडिसारथीकर्मकौ
देखिबिचारतनयो ॥ यहमातलिनामाइइकौ

सारथी है ॥ अथवा ॥ अथाश्वसास्त्रकर्ता
सालिहोत्रही है ॥ अथवा वह नलही यह है
बाहुक कौश्यांनलसमान देवतहो ॥ उमरह
नलके तुल्यही है ॥ परंतु नल तो नहीं ॥ अरु वि
द्यातौ नलके सी है ॥ ऐसे वार्धय विचार भयो
अरु रूतुपर्णह विचास्यो जो मनुष्यकी विद्या
को पारवारनही ॥ धारीतिसें विचारत जात
है सो पर्वत नदी ऊपर होइ पवन गति ज्यो
थ जातराजाको दुपदागि स्यो ॥ जबराजाक
ही रथथांनि दुपदागि स्यो है ॥ तब नल कह
दुपदातौ एक जो जनपी कर स्यो ॥ सो सुणि
राजामो नगही ॥ तहांतें आगे चलतें फलस
हित एक बहेडाको रूंध देख्यो ॥ जबराजाबो
ल्यो ॥ या ब्रह्म मै जितने फल पत्रहै सो सबकी
संध्यामें जानतहो ॥ अरु अज्ञ विद्याह जानत
हो ॥ तब नल बो ल्यो ॥ कितने पत्र फलही ॥ जब
रूतुपर्ण बो ल्यो ॥ एक लायद सह जारतौ पत्रह
अरुद सह जार फलहो ॥ नल रथको थांनि
कही है महाराज मंगिणतहो ॥ घोडांनकी रा
सिवा र्शय पकडेगो ॥ जबराजा कही बिल
बको समे नही ॥ तब बाहुक कही में सं
रिही के चलौंगो ॥ अरु आपकौरी लहली लहली

में सीधे ही किंदिन पुरपह चाइ दोगो जैसे कहि
वा ब्रह्मके पत्रपुष्पकृतुपर्णके कहे माफिक
गिणिरथपे चटि बाहुक बो ल्यो हे महाराज
यह तुम्हारी अति अद्भुत विद्या देषी जब
कृतुपर्ण बो ल्यो मैं जैसे गणित विद्या जाणो हो
तैसे ही अक्ष विद्या जाणो हो तब बाहुक बो
ल्यो यह अक्षर द्रुदय विद्या तो मो कौ द्यो अरु
अश्वरुदय विद्या मो पे है सो आप ल्यो जब
कृतुपर्ण अश्व विद्या के लो भते बो ल्यो यह
अक्ष विद्या मेरे पास सो ल्यो अश्वरुदय मेरी
धरो हरतो मैं रहो जैसे कहि कृतुपर्ण नलके
अक्ष विद्या दीनी अक्ष विद्या नलके रुदय मे
आवत ही कलि बाके सरीर तै निकस्यो सो
ककोटक के विष करि कलिको मुख जरत न
यो जब कलि नलके सरीर मे तै बाहर आ
यो तब कलिके सरीर तै ककोटक के विष
अरु इमपंती को शापाग्नि पे बाहर निकसत
नये जब कलि निजरूप सो नलको दी स्यो
तब नलको धकरि शाप दे बेल ग्यो जब क
लि हाथ जोडि पावन में पडि बो ल्यो मैं इम
पती के शापाग्नि करि ककोटक के विषाग्नि
रितेरे सरीर में जल तही रह्यो सो अब नारा

निकसितेरे सरण आयो हों ॥ जो
 शा गौतो में तो कौ बरदो
 कीर्तन करे जो तिन को
 कदा चित न होइ गो ॥ ऐसे सु
 को क्रोध सांत्प नयो ॥ कलि
 तहोइ बहेडे में धसि गयो ॥ नल
 लिके संवाद कोइ सरै नै लष्या नही ॥
 तापी के नल तापरहित होइ रथ पै
 इ बिद न देसन को गयो क
 बतै बहेडे को ब्रह्म अमंग
 त भयो ॥ नल हर गयो ज

लिहू ॥ गयो ॥
 तो सब तापर नई ॥ एक
 ता ही रही ॥ इति श्री भारत सार चं
 बन धर्षणि नलोपाष्यान अष्टादशो ध्या
 धा १८ ॥ ब्रह्म उवाच ॥ जब क्रतुप
 राजा आयो यह षवर नी मरुजकी
 दानगी तें क्रतुपर्ण कुं दिनपुर में
 स्यो ॥ प्रवेस समै मरुथको
 नलके घोडा ननै सुणयो ॥ सो सुणि
 भयो ॥ दमयंती हनलके सो
 घोष सुणि अचर्य मी नत नई ॥

हलनकेमोरहाथीघोडाएसबहीवारण
कोघोषमेघगर्जनासमानसुणिहर्षित
होइबोलेतनये॥ जबदमयंतीबोली यह
रथघोषमेरेमनकोहर्षितकरेहै ताते
जानतहोनलराजाशयो॥ आजनलको
नदेषोतौमेरोप्राणनरहैगो॥ जैसे
बिचरिराजानलकेरेषिवेकोमहलको
ऊचोएकफरोषाहोतामैतगई॥ वामैतै
बीचकीझोटीमैरगएवै॥ बार्सप
बाहुकसहितराजाऋतुपर्णकोदेषो
बार्सपबाहुकदोऊरथतेउतरिघोरा
नकोछोटिरथकोउहाथापितकियो
जबराजाऋतुपर्णरथतेउतरिभीम
राजयासगयोभीमराजाइइउर
षआपभीतदलेजाय॥ डौसतका
रकस्योदमयंतीकोस्वयंबरसुणि
आयोहैसातोजाएयानही॥ अरवासो
पूछ्योआपकोआवनकैसेहवो॥ तब
ऋतुपर्णहउहाओरकोऊराजावाराज
पुत्रवास्वयंबरकीरचनाब्राह्मणन
कीधुनिककईदेषीसुणीनही॥ जब
मनमेंबिचारकरितोयोतमकोप्र

एणमकरिवेहीकोंआयो॥ तबराजानीमह
 हसिकरिमनमेंविचारतभयो॥ जोसोजी
 जनतैंहंसिबाइकेवलप्रणामहीकरिवे
 कोंआवैयहतोअसंभवहै॥ ततैंकछअ
 रहीकारणहैसोपीछुषबरीपडैगी॥ अ
 सेविचारिभीमराजाबौल्यो॥ आपकोंसाग
 काश्रमहवोहोइगोतीतैंविश्रामकीजे॥
 सेउनकोंकरिसेवकनकोंभेजिदिव्यन
 वनबताई॥ भेत्तभोज्यसामग्रीभेजत
 भयो॥ जहाराजाऋतुपर्णहवार्ष्ययस
 हितबासकरतभयो॥ बाहुकरथपैस
 वारहोइअश्वसालामेंगयो॥ उहासास्त्रे
 क्तिसौघोडानकीपरचर्याकरिरेथपैब
 ठतभयो॥ ऊरोषामेंसौदमपंतीऋतुप
 णवार्ष्यबाहुककोंदेधिविचारतभई॥
 यहरथकीधुनिकोंएनैकी॥ धुनितोम
 हाराजनलकीसीहैपरंतुनजरआवै
 नही॥ असेविचारिनलकेहरिवेकोंह
 तीभेजतभई॥ तासौदमपंतीबोली॥ हेक
 सनीतजायक रूपओछ
 नुजानकोरथहां वा एहै
 कोंदेधिमरेमनकोंआनंदहोत

जान लही तो न होइ तातें जो श्लोक वार्ता
पनाद कह हे सोही तू ह जाइ के कहि वह
जो कह सो सुणि आउ ॥ १ ॥ यती करी
ही सोई जाइ के सनी बाहुक सो कहत
नई दमयती ह उहाते बेठी देषत नई
के सनी कही हे नरेइ तुम कहा सो कबके
चलेइ हांके बन्नाये तब बाहुक बोली
दमयती कोइ सरै स्वयंवर ॥ २ ॥ णि क्रतुप
र्ण अयोध्यानाथ सत जो जन अश्वसहि
तरथ पेचदि एक दिन मेइ हां आये हे मे
इनको सारथी हौ जबके सनी बोली तुम
तो सारथी अरु वे रथी यहती सरोकोण
हे तब बाहुक बोली नलको बाल्य
नामा सारथी हे नलगयो तपी के सो
यह अयोध्यानाथ पास रहे हे मेइ अ
श्व विद्या मे निपुन हौ तातें राजा सार
थिकर्म मे अरु नो जन कर्म मे राष्यो हे अ
सो सुणिके सनी बोली बाल्य जाणे हे
जान लराजा कहा गयो जब बाहुक
ही बापा पिष्टके पुत्र कन्या नकोइ हो
धरि क्रतुपर्णके जायर हो तापी के या
को पवरि नही वह कुरूप भयो गुप्त वि

चरहे तासों नलकों को ऊपर सजा गोनहीं
ताते वह आपही आपको जाणें हो प्रथवा व
की प्रतिबध्नना है सो को ऊचि कन करि
पर चाणें है ॥ नल आपके चिह्न का हुसों
कहे हैं नहीं ॥ जब के सनी बोली ॥ जो वह
ब्राह्मण पहली प्रयो ध्यागयो हो सो स्त्री के
बचन बेरे बेरे पटोता कौ तै उतर कहा
दियो ॥ वह इमयंती सुणो चाहे है ॥ जब वृ
हर श्व बोली ॥ जैसे के सनी कौ बचन सु
णि नल के अशुचले तब ॥ अशुन कौ
रो कि धी ज ॥ धरि बोली ॥ कलस्त्री
विपदा हु मैं आया की रक्षा करे हे प
ति विपदा में त्याग करे तो हरौ सकरे न
हो ॥ आर जीव का कौ उपाय करतै पंछ
नने बल हरण कियो ता इ बुद्धो परो
करेणो योग्य नही ॥ तब के सनी इम
ती के पास जाय सब समचार कहे ॥
श्रीभारतसा चडिकायां बनपुर्वणि
जाष्या न एकोन विसतमसगो ॥ ११ ॥
दृष्ट उबीच ॥ जैसे के सनी के
सुणि इमयंती बोली ॥ हे के स
यबाहक की परक्षा करि ॥

मतिपासरहि केवाके चरित्रदेधि औरत्
पाकसामग्रीतोसपूर्णलेजाय वाकौदेएक
अग्निजलमतिपहंचेवै जबवहपाकक
रेसोसंपूर्णचेष्टादेधिमोसोकहियो जैसे
सुणिकेसनीवाकेपासजायपाकचेष्टादे
दमयंतीसोआपकहतमई हेदमयंती
आचारवाकौअसौदेधो जो औरमनुष्य
मनही नीचेद्वारमप्रवे करतमस्तकन
वावैनही संकीर्णमार्गमेंजाय जबमार्ग
आपहीचोडोहोइ जाय रितुपूर्णराजाक
भोजनसामग्रीअनेकप्रकारकीकरीतामें
मासधोइबेकोरीतोघटमेंधरिदीनोसो
वाकीतरफवाहुकदेध्यातबहीबहजल
सोभरिगयो वासांसकौधोइचलेपेच
टापोअग्निदेधीनही जबघासकौमूठी
लेसूर्यसनमुषकरतहीजलिउद्यो और
हआश्रयदेधो जोअग्निसो जलेनीअ
जलवाकीइसामाफिकबहनहे वाके
हाथकेमर्दितपुष्पमेंअतिसुगंधहोइ
जैसेआश्रयरूपचेष्टादेधितुम्हा पास
आई जबदम तीकेसनीकेपासजैसी
चेष्टासुणिनलहीमानतमई तवफेरि

दमयंती बोली हे केसनी बाहुक को रांध्यो
 मांसवाके बिना जाणें तूले आव ॥ जब वह
 जाय बाहुक और काम करबे लग्यो तब ग
 रमही मांस ले दमयंती पास आई ॥ वाकें
 न चण करि दमयंती नल को ही रांध्यो मां
 स है और से स्वाद सो पह चाणि वाको नल
 निश्चै मानत नई ॥ तापी छे हाथ मुष धोइ
 इइ से न पुत्र इइ से ना पुत्री कों केसनी के
 साथ वाके पास ने जत नई ॥ जब बाहुक
 ह उनको इर सो देखि के दौड़ि छाती सोल
 गोइ आनंद के अश्रुतापते भयो ॥ फेरि धी
 र्ज धरि केसनी सो बाल्यो ॥ ये दोऊ बालक
 मेरे पुत्र कन्या समान है सो इनको तूले
 जा ॥ अरु खेर खेर तू आवे हे जा सो और
 न कैस का होत है ता सो हम अभागत
 है तुम सुइत्ता माफि कजावो ॥ इति प्र
 भारत सार चंद्रिका जंवन पर्वणि नलो
 पाष्यान वर्नन विं सो ध्याय ॥ २० ॥ बृहद्
 श्व उवाच ॥ या प्रकार सो केसनी नल
 की
 सो कहा ॥ जब दमयंती केसनी को मा

इजो बाहू कौ नल संका करि परत्ता करी
सो और तो नल की संपूर्ण बात मिली एक
रूप ही की आसंका है। सो मैं साक्षात् जा
णों चाहत हों। ता सो महाराज या बात कौ
जाणै है नही सो आप कहि कै परवानगी दि
बावो। जैसे दमयंती सो सुणि के सनी म
हाराणी सो मालूम करी। जब महाराणी
हमी मसो सब ब्रतांत कहि परवानगी
लीनी। तब माता पिता की आगा सो दमयं
ती आपके पास बाहू कौ बुलायो उहां
जाय नल हसो कदुष्यन करि नेत्रन सो।
आसंको डते भयो। जब दमयंती हनल की
हसादि दुष्यत नई। अरु मलिन बस्त्र धा
रे केसन का जरा होइ रही अंगन में मैल
लगिर होहै जैसे तू। रूप सो नल सो।
बोली। हे बाहू क तुम जैसे धरम धि
नर हू को ई देष्यो। जो निर्जन बन में परश्रम
करि सती निर्यराध भार्या कों इक लीको दि
जाय। जैसे महाराज नल बिना तो और
नहोइगो। मैं देवता न कौ तजि वा कौ ब
र्या के रिपति ब्रता पुत्रवती ता
होडी। पाणिग्रहण समै अग्नि आ

हमहाराजमामेंदोससंकाकरिबोपोपन
हीमें वतानकोंछोटितुमकोबरहैं। तु
म्हारेहेरिवेकोब्राह्मणचारोदिसानमे
गये। सोसबठोरमेरेकहेबचनपदतन
ये। तिनमेंपरणादनामोंब्राह्मणअपो
ध्यानगरीमेंतुमकोसुणाये। तबतुम
उत्तरदियोसोमोसोंआपकस्यो। जब
मेंतुम्हारेबुलायवेकोअसैउपायक
स्यो। तुमबिनाएकदिनमेंअपोध्यासे
इहाअवेयहबिस्वाओरमेंहेनही। प
तेस्वयंवरकेछलकरितुमकोइहा
बुलाये। अबमेंतुसारेचरणको
प्रणामकरतहो। अपराधकेछमन
हतेनहीकस्योहै। यहपवनसर्वस
हीबिंचरेहैसर्वचंद्रमाहतेसह
है। जोममनहसोपायकस्योहोइतो
योदेवताहीमेरोप्राणनासकरो। अ
कहतहीपवनअतरिहमेंबोस्योहै
लयानैकछूइअपराधकस्यानही
नबरसलोहमयाकीरक्षाकरे।
स्वयंवरकोउपायतरेमिलिवेह
कहो। अबयहदमपतीनिद

हे तासौं निस्संक विहार करौं ॥ जैसे पवन
नके कहतै ही आकाससों पृष्पनकी ब्रह्म
ई देवता नके नगारे वजे त्रिबिधि पवन
चल्यो ॥ यह अद्भुत ता देषिन लहमयंती
में संका कौ डत भयो ॥ तो पीकैं नलनाग
राज कौ सुमरण करि वह दिव्य बस्त्र धा
रि निजरूप कौ प्राप्त भयो ॥ दमयंती हृदिय
रूप भर्ता कौं देषि हर्षतैं उच्चल करि आ
ल्यंगन करत भई ॥ नलह पुत्र कन्या हेति
नको आसी बीद दियो कैरि मलीन अंगन
करि सहित जैसे दमयंती सों मिलि सो क
कौं कौ डत भयो ॥ तब दमयंती की माता य
ह ब्रता तभी मराजा कौ कह्यो ॥ जब भीम
हू बो ल्यो ॥ स्नान अलंकार कराय प्रभात
राजानल कौं देषो गो ॥ नल दमयंती ही ऊ
रात्र कौ उहाव से परस्प पर आपके स
व ब्रतांत कहै ॥ जैसे दो ऊचतुर्थ वर्ष में
मिलि आनंद पावत भयो ॥ इति श्री गार
तार चंद्रिका या वनपति नलो प्राप्ता
नदा विस्तृत मो ध्याव ॥ २२ ॥ हृदय उद
व ॥ तारात्र नल सुष पूर्व कवास करि

प्रभातहास्नानकरिबस्त्रअलंकारधारण
करिदमयंतीसहितसुसर्पासजायप्र
णामकरतभयो तवभीमराजाहपुत्रव
तसनमानकरतभयो अरुनगरमेंन
लकौआयौसुणिबडोहर्षभयो मार्गक
सुगंधजलकरिछिडकतभये नगरको
धुजायताकानकरिसोमितकियो देव
मदिरनमेंद्वारद्वारमेंअतिउत्सवकरतभ
ये यहव्रतातसुणोबाहुकनलहोसोस्म
यंतीसोमित्यो जबरितुपर्णहप्रसनभयो
तापीछैनलहरितुपर्णकोबुलोयबहोतस
माधानकस्यो जबरितुपर्णबोल्यो हेन
लमहाराजआपस्त्रीपुत्रनसोमितेयह
बडोआनंदभयो औरमोहसोतुम्हारो
कथुअपराधतोनहीबण्यो तुमअग्पा
तबासरहे तासमेंमेंअग्पानसोजोक
कअपराधहभयोहोइतौताहितमाकरो
गे तवनलबोल्यो हेमहाराजतुममेरो
सुल्पहअपराधकस्योनही औरजोकोई
अजाणतासोहोइतौतमाहीहे तुम्हारे
घरमेंआपनेघरसमानसुषसोबासक

स्यो है ॥ यह अश्वविद्यातुमहारी धरोरहै सो
लजि ॥ जैसे कहिरितुपणिको अश्वविद्यारी
नी ॥ जबरितुपणहनलको अरु रुदय वि
द्यादिके और सारे पीले आपके पुरको ग
यो ॥ तो पीके नलह कितने कदिन कुं दिन पुर
में बास करत भयो ॥ इति श्री भारतसार चंद्रि
यावनपर्वणि नलोपाख्यानत्रविंशतसोऽध्या
य ॥ २३ ॥ ब्रह्मदश्व उवाच ॥ जापी कुं नल
राजाह एक मास बास करि भीमसोर
आपामो गिसू कुं मपरवार सहित पुर
को आवत नयो ॥ एक दिव्य रथसो लह
हाथी पचास घोडा कुं हसै पया दइतनी
ही सू कुं मसेना सो पथी को कपावत पु
रमें प्रवेश करि पुकर पास अचाण च
क जाय राजानल कही हे पुकर मेरे पा
सबहत इव्य ल्यायो हो ॥ अरु मयती है ॥
सो मेरो इव्य मयती तिरोरा ज जैसे रा
क बाजी फेरि हयै लैगे ॥ अरु जो यह इ
त नरु चै है तो प्राण ॥ सूतयै लै ॥ जैसे न
लको बचन सुणि पुकर यइली जी ल्या
हो सोही जाणि बो ल्या ॥ हे नल तुम दमा
यती सहित जीये अरु इव्य पैदा कस्यो सो

बड़ी घुसी भई अब दमयंती को पाप नष्ट
भयो जासो अब पाधन सहित दमयंती
मेरी सेवा करेगी जैसे इंडको अपहराहे
याही वास्तु में रह तो कौ नित्य पादि करे हो
इत सो त्रप्रभ यो नही सो अब दमयं
ती को जीति कृति कृत्य हेऊ गो जैसे ब
चन सुणि न लषडु सो वा कौ सिर काटि वे
की इच्छा करि बो ल्यो इत करे पीके बि
जे पाय बो लै गो सो दे वेगे जैसे कहि
कहिन लपुकर सो सर बश्व की एक
बाजी करि जीते तापी के हो सि करि बो
ले यह सर्व राज्य मेरो है ता सो अरे अध
मत दमयंती को देखि बेलाय कह नही
अब त पर बार सहित दमयंती को दास
है पहलै जीत्यो सो यह कापतै करेगी
नही केवल कलिको कृत्य है पेत्त जा
एँ नही जा सो परायो दोस तो कौ नही
लगावत हो ता सो त जीव है तो कौ प्रो
ण हरेत हो अरु तेरे अस को राज्य हतो
को दत हो अरु तेरे मेरे प्राति ह घटे गी न
ही ते मेरो भ्राता है ता सो जैसे न लस
माधान करि पुकर कौ निजन गरजावे ८८

कौंसीषदीनी ॥ तबपुष्करनलकेपावनमें
 प्रणामकरिहाथजोडिबोले ॥ हेपुन्यश्ले
 कतेरीअक्षयकीर्तिहो ॥ सेकडनबर्सनता
 ईजीवो ॥ मेरेअपराधतोगिणेनही ॥ अरु
 प्राणसहितराज्यदियो ॥ ऐसेनलकीइत्तु
 तिकरिपुष्करएकमासउहारहिपीछेअ
 पकेपुरकोगयो ॥ तापीछूनलहआपके
 राज्यस्यघासणपैबैहिपुरवासीनकोस
 माधानकस्यो ॥ जबपुरवासीसबबोलेहे
 महाराजअजहमसबकोअनंदभयोह
 जैसेदेवताइंडकीसेवाकरैतैसेतुम्हा
 रीसेवाकरैगे ॥ इतिश्रीभारतसारखंडिका
 यांबनचर्वाणिनलोयाष्यानचत्वाविंश
 तिमोऽध्याय ॥ २४ ॥ ब्रह्मदृश्वउवाच ॥ नल
 राजाचापुरमेंउत्सवकरिसेनाभोजिदम
 यंतीकोबुलाई ॥ जबभीमराजाहसतक
 रकरिदमयंतीकोभेजीपुत्रपुत्रीसहित
 दमयंतीआईताहिनलराजादषिजैसेइ
 इनंदनवनमेंइंशणीसहितविहारकरैत
 सेकरतभयो ॥ जबूदीपकेसबराजानमें
 प्रसिद्धतयो ॥ अनेकयग्नियूर्नद स

हितकरे ॥ यातेहे महाराज युधिष्ठिर तुमह
 तेसंही थोडेही दिने पीके पत्रिकरोगे तले
 दूतकरि भार्यासहित एकाकी दुष्पपापे
 करि असुप्रसूयायौदुसंतौ शोपदी राणी
 भीमादिक भोता इनकरिके तथा वेदवे
 दांग पारंगत ब्राह्मणनसि तबनमैध
 महसेवन करौहो ॥ तासो तुमको कहा
 दुर्लभहो ॥ यह कलिनासन इतिहास
 सुणिधीर्जधरोपुसार्थ अस्थिर जाणि
 देवके दोसते विवेकी विपत्ति संपत्ति
 मैदुषसुषनही प्रावतहो ॥ यह नलचरि
 त्रजा कहेंगे वा सुणेंगे तिनको अलक्ष
 मी सपसन करेगी ॥ अर्थ सिध्यहोइगे पु
 ज्यताको प्राप्तहोइगे ॥ पुत्रपोत्रपसुब्र
 हिहोइगी ॥ मनुष्यनमेश्चनेरोगपसु
 बीहोइगे ॥ अरहे महा ॥ जयुधिष्ठिर तु
 मको यह भयहो जो दुर्घाधन करि दूत
 को बुलावैगी ॥ सो तो भयको मेंनासे
 करतहो ॥ मै अक्ष दूदयजा एतहो सो
 तुमको दोगी ॥ वैशंपायन उवाच ॥ असे
 सुणिरा जा युधिष्ठिर ब्रह्मदृश्य सो बो

होयह नृह रुदयमोकौरुपाकरिके
जो॥ जब ब्रह्म रुदयमोकौरुपाकरिके
थस्मानकोगयो॥ तब राजा हर्षचंद्रकेत
पस्याकेसमाचारसुणिभ्राताकेबियो
गकरिचिंताकरतभयो॥ इति श्रीभारत
रचंद्रिकापांवनपर्वणिनलोपाष्यानसंपू
र्णवर्णननामलं चबिसतमोऽध्यायः ॥ २५ ॥
श्लोक॥ कर्केटकस्पनागस्पदमयंत्यान
लस्यच॥ रूतुपर्णस्फराजर्षेःकीर्तनेका
लिनासनं॥ बेशंपापनज्जाच॥ युधिष्ठि
रकोचिंतायुतजाणिबेदव्यासत्राये
जबमाहाराजसतकारकस्यो॥ तबवे
दव्यासराजासंसतकारपापत्रासन
पेबेठिबोले॥ हेमहाज॥ तुम्हारेदुष्पके
अंतहोइगो॥ चिंतामतिकरोगेसंतुमदु
षाहो॥ तैसेंआगेहरिश्चंद्रदुष्पाया
होसोसुयो॥ त्रेतायुगमेंश्रीमोक्षामे
सूर्यवंसीहरिश्चंद्रराजा राजकरतहो
ताकोदानधर्मदेपिइइनयजीतहोइ
विष्णुकेपासजायबिनतीकरतभयो
हेनारायणप्रभुकरतपंडमेहरिश्चं

मदीषिमैरोइदपकापतहै अैसेसुणिवि
 सुबोले तूरेलोककोजामेवाकोभ्रष्ट
 करोगे अैसेइसोकहिविश्वामित्रको
 सुमरणकसा जबआयेजोविश्वामित्र
 तिनसोबोले तुमहरिश्चंद्रकराज्यते
 भ्रष्टकरौ निर्धरधकौपीडाकरतमेरे
 वचनतेतुमकोदोसलगेगोनही अैसे
 नारायणकीआग्नापायविश्वामित्रहरि
 चंद्रपासआये तबराजसोसनमानपा
 पआसनपैबैठे जबराजाबोल्पो मोको
 आग्नाकीजेजोआपआग्नाकरोगेसो
 हीकरोगे तबविश्वामित्रबोले जोरा
 जातसत्यबादीहै तौमोकोसर्वराज्यदे
 अैसेसुणिहरिश्चंद्रसर्वराज्यरियो त
 बराज्यकोदानलेकेविश्वामित्रबोले
 दर्नाहीनसंध्यातिलहीनतर्यण इक्षिण
 हीनदानयेनिस्फलहोतहै तातेदक्षिण
 हरीजे जबराजातीनभारसुवर्णसंकल्प
 करिजलमुनिकेहाथमेंदियो तबमुनि
 बोले यहसप्तागराज्यतौमेरोहैजासोअ
 रधनल्पायकेदे जबराजावचनब
 डबोल्पो बाराणसीमेंमोकोपत्रखीस।

तलेचलौउहावेचिकैइत्यग्नावैसोव्योत
बविष्णामित्रकासीमेंलेजायतीन्फोनकोजु
देजुरेबेचेरोहितपुत्रकोतोएकब्राह्मण
केबेचोराणीकोएकब्राह्मणकोदली
रागदियोराजाकोचंडालकेबेचोजब
चंडालमुरदानकेबस्त्रलेबेकोराष्योतब
कोईसममेंराजाकोपुत्ररोहितब्राह्मणन
केबालकनसहितपुष्पलेबेकोवनमें
गयोतहावारोहितकोसर्पनेकाद्योता
सोवहमस्याजबबालकननेब्राह्मण
सोकसोतबब्राह्मणदुषितहोइवनमें
गयोराणीहउहाग्राहलोमरेदुत्रको
आपकीआधीसाडीसोदंकिसमसान
मेंदग्धकरिबेकोव्याईजबउहांचंडाल
कोराष्योहरजारहैहोतानेग्राइकहीपा
कोबस्त्रमोकेंदेयोदग्धकीज्यातब
राणीवहबस्त्रवाकोदेइहागदियोता
पीछेफेरिराणीब्राह्मणकेघरलेवाक
रतरहीतहारहतकोईसमेंनलनरि
बेकोगंगागईवहकासिराजकराणी
हस्मानकरिबेकोगईहीसोवानैलान

लमेमे कठाभरणपोलिधस्याहो ताकोएकका
 गनहकेभ्रमसोवकोलेउजो सोयादे
 बदासीजलभरिवेकोगईहीताकेमस्तकपै
 धर्यो बहराणीस्नानकरिजाइराजसो
 कसोमेरोकठाभरणचास्योगयो जबराजा
 डोंडोपिताईजानेराणीकोकठाचोस्योहसो
 मास्योजाइगो यहसुणियुरबासीराजा
 लोकरहतभये एककठाभरणदेवदासीकि
 सिरपैदेव्योहो तबराजाकहीस्त्रीहोपु
 रसहोदानपुस्कहो ताकोबिनावजम
 रिबेमेबिलबमतिकरो जैसेराजाकी
 आग्यासुणिचाकरवादेवदासीकोगंगा
 तीरलेजायचाडालकोमारिवेकीआग्या
 दीनी नवचाडालवाआपकेराषेचाकर
 सोकहीलमारि तबराजाहरिश्चंद्र
 जलमेडकादिवेकोउये तहराणीराजा
 कोदेपिविलापकस्यो हेराजातमेरो
 जायप्रथीपतिहरिश्चंद्रहेसोमोहीको
 केसेमरेगो ओरेनातोनमानेतोअबला
 जातिअबथाहेयाकोतोदेयो जबरा
 जाबोल्यामेतोचाडालकोदासहोवाकी

असाहे इ सो करौ ॥ असे कहि कै नारायण देव
को लुन राण करि बो ल्यो ॥ हे नारायण जन्म
न्म मे सो को विश्वामित्र मुनि गुर मिलो ॥ श्री
रतु नारी मक्ति सो ॥ यो कहि कै यज्ञ को प्रह
र करे जितने ही मैं विष्णु ने कुंठता थ चतुर्भु
ज रूप धारि राजा को हाथ आइ पकड्यो ॥ अर
बोले ॥ हे राजा साहस मति करे ॥ मैं तेरे सत्वत
संतुष्ट भयो ॥ सह तेरो पुत्र ह आयो हो ॥ श्रीर
विश्वामित्र ह आयो हो ॥ श्रीरतु जो बरचा
हे सो ही मांगि ॥ जब हरि श्रु बोले ॥ जो
स्वामी तुम प्रसन्न हो तो यह बर द्यो ॥ जो मैं न
गर पुत्र स्त्री सहित वे कुंठ वास पावो ॥ जहां
सो फेरि ससार बंधन को पावे नही ॥ असे
कहत ही विश्वामित्र बोले ॥ हे राजन मैं दक्ष
णा सहित सर्व सुदान पायो ताते तह पु
त्र बांधव सहित राजा नोगे पीछे भगरी
सहित वे कुंठ वास करेगो ॥ असे के
ये नारायण देव अंतर ध्यान भयो ॥
हरि श्रु अयो प्यामि आ परा न्यु करि
गरी सहित वे कुंठ को गयो ॥ ता सो
पुधि अरतु मई सो जसति

पीछे तुम ह वै सैं ही सुप भोगे जै सैं का
इव्या सह आपके आश्रम को गये
तापी के कोशक समै मेरा जायुधि
। धृष्टिर के पास माके देव मुनि आये जब
उनको पूजन करि बुधि धृष्टिर बोले तुम
को सप्त कल्याण जीवी सुने है सो प्रलेको
ए तरै भयो आप देव्या लोक हो तव मा
के डे बोले एक समै मे आपके आश्रम में
सिध्द न को पडा बत हो ता समै प्रचंड पव
न चल्यो ता करि सा मक्षम न्न हउ डि गये
तापी के विक शाल मे घ घटा आप मत्स
ल धार करि करी ता सो चारो समुद्रो
क हो इ गये जब सर्व पृथ्वी जल में डुबि
गई तव मे हे जल मे गो ता पात पाते
एक टी वापर बट को ब्रह्म देव्या दाके
प्रातन के जोर मे एक बालक को देव्यो
जै बवा के पास बूज वै को गयो तव वा
के चास के सग उदर मे गयो जहा सप्
न विष्णु रचना देयी फेर मेरी पाणिनी

देषी॥ तबवामें प्रवेश करिबेकी मनसा करि
 रीजवही स्वास करी बाहिर आयो॥ तबमें
 उनको विष्णु जाणिस्तुतिकरत भयो॥ श्लो
 क॥ करारविंदे नपदारविंदमुषारविंदे न
 निवेशयने॥ पटस्पपत्रस्पपुटेशायाने॥ ब
 लंमुकंदमनसास्मरामि॥ १॥ कंठेसुमालं
 तिलकाद्यभालंसौंदर्यकात्याजितमेघ
 जालं॥ रियोः करालंजलजामरालंबाल
 मुकंदमनसास्मरामि॥ २॥ गोपालबालं
 भुवनैकपालं संसारमायामतिमोहजा
 लं॥ यशोविसालं शिष्यपालकालं॥ शिष्य
 लं॥ कलंबालं मुकंदमनसास्मरामि॥ ३॥
 जैसेमें स्तुतिकरीजववेही नारायण
 होइनामिकमलते ब्रह्माको प्रगटकस्यो
 तबवह ब्रह्मानाना प्रकारकी सृष्टिये
 दाकरत भयो॥ जैसे हरिकी कृपाते अने
 कबेर सृष्टिकी प्रलै उतपति देषी॥ तासोतु
 मनी हरिको भजो॥ जैसे कहिरामचरि
 त्रश्रवणकराय अंतरधान भये॥ इति श्री
 भारतसारचंद्रिकायां ब्रह्मपर्वणि सप्तविं
 सतिमोऽध्यायः॥ २७॥ वैशंपायन उवाच॥
 तापीक्षेको इकसमै लोमसमुनि इइके

३
सोमिले जब अर्जुन समंचार कहि प्राण
नाकरी आप पृथ्वी में जाय राजा युधिष्ठि
र लोक होइ हा अस्त्राभ्यास करे हो स
पाच वर्ष रहि फेरि के लोस यात्रा में तुम्हा
रे पास आऊंगे जो लो तुम और तीर्थ
यात्रा करे मे समंचार ले लोम समुनि
अर्जुन के बिरह करि ब्याकुल युधिष्ठिर
ताके पास कांम्य कवन में आये वा
सोसत्कार पाया अर्जुन जो समंचार क
हे हे सोइ इकील में तप कत्या ताको
आदिले सर्व समंचार कहि युधिष्ठिर सो
फेरि कही अब तुम तीर्थ यात्रा कौ चलो
नब लोम समुनिकी आग्या सो ब्रह्म जन
होते नको उलटे फेरि धोम्य नारद पर्वत
लोमश सहित पूर्व दिसा कौ तीर्थ यात्रा
करिबे कौ चले तहां नैमघार न्यप्रयाग
गंगा ही होइ गया कौ गये चातुर्मास्य
गामें बास करि गया महातम श्रवण क
ग उहाते गंगा सागर जाय रहि ए
चले उहां अरुत ब्रह्म के आश्रम
आप उनकी आग्या पाया

मैं परसुरामुके दरसण करे। उनको आ
शीर्वाद पाय गोदावरी स्नान करि इवड
देसमें जाय अगस्त्य तीर्थमें स्नान करि
री तीर्थ जाये। उहां अर्जुनको प्रभाव
सुणि पश्चिम दिशामें प्रभास तीर्थ जाये
तहां क्लदेव श्री कृष्ण जाय युधिष्ठिरको
सत्कार कस्यो॥ जब द्वादस दिन उहां वा
सकस्यो॥ उहां तें विदग्ध देसमें जाय पयोक्षी
स्नान करि ब्राह्मणनको पूजन करि दान
देत देत उत्तर दिशाके तीर्थ करत करत सु
बाहुपुरको जाये॥ इति श्री भारत सार चंदि
कायां वन पर्वणि तीर्थयात्र वर्णनं नाम अ
ष्टविंशतमो अध्यायः॥ **वेश्यापामन उवाच**
तापीकं अर्जुनकी तपस्या इंदुलोकग
वनको सब ब्रतान्त वेद व्याससो सुणि
अतराष्टदुष्यतभयो॥ तापीकू पांडव
सुबाहुपुरमें रथादिक सब सीम ग्रीध
रि पावन नहीं हिमालयपे चरे॥ पत्य
रनको पावनसो चूर्ण करत मार्ग सु
धारत आगभीम च ल्यो॥ तापीकू युधि
ष्ठिरादिक सर्व चरत भयो॥ जैसे चल
त गंधमादिन पर्वतको गये॥ तहां पर्वत

की चटाई में ब्राह्मण व्याकुल भये। शो
पदी मुन्ना करि गिरा। ताको न कुल उप
शीतल भीम के सुमरण करि घटोत्कच
परवार सहित आयो। तब परवार ग्रा
ह्य सनपै तो ब्राह्मण चटो शोपदी सहित
याइवन कौ धटोत्कच चटावत भयो। ये
संचलते लोम समुनि मार्ग वला वनव
दिका श्रम को ले गये। उहा गंगा स्नान
कियो। तापी घू बिदुसरो रके कमल
नको श्रगर करि शोपदी अतिसोमित
होइ कैलासकी सिलानपै सब बैठत
भये। उहाइ शालकौ एतै बहत आयो।
येक कमल ताको देखि शोपदी भीमसो
बोली। जैसे कमल मोको और हल्याप
सो। तब भीमपानके सनमुषचेल्यो सो
गध्यादनपे चढत सयके नाद सौंग
धर्बके नरगु सकन कौ मोहित कल
ही चल्या। अरु पाकी गजनातै पसुपंकी
व्याकुल होइ नजत भये। तहा सुबणक
दलीवनमे बसत हनुमंत हू गजना
को सध सुणि विचारत भये। येहको ए
हो। जब उहि देखोयो। आपको आनाज

णियाको उपकार करिबेकौं संकीर्ण मा
 र्गमें सोइ रहे। तहां भी महषेद मिटायवे
 कौं सुर्वण कदली बनके सरोवरमें स्ना
 न पांत करत भयो॥ तापीके उनमत्त ग
 जरा ज्यो चलत मार्गमें सोये हुनु मं
 त कौं देखिबो ल्या॥ हेवानर मेरे मार्गसे
 सर कि जा॥ नही तो तेरे सरीरके इकट्ट
 रौंगो॥ तबवेहू आंषिषोलिकरु
 न उठाय मंदनर बाणी सोबोले
 आकार तो उत्तम कौंसो है अरु
 प्राचरण नीच कौंसो है। जो ब्रथा गज
 करि जीवन कौं विथा करे है। मेरो
 की विथा कौं निश करि छीन करिबे
 यो है॥ सो तैं ब्रथा जगो इकहा सु
 तकियो॥ यह देव भूमि है तमनुष्य
 तातें जा॥ तैरो कहा काम हे मैं सुषप
 कनिश करौंगो॥ ये सब जीव सुषसे
 ग॥ जब नीम निज नाम कुलमो कौं
 धिके जावो॥ अैसे सुण भीमक
 ही॥ जो सर्व देह धारी॥ नमं परमात्मा वि
 राज जै है सो जीवत कौं उला

बउनकही जो उ^लधेनही तो पूंछ कौं उग
यमार्ग करिके जावो ॥ जबनीमकमर
बाधि पूछ उठायवे कौं अनेक जत्क
रपे तिलमात्रसरकी नही ॥ तब लजित
होइ चौस्योदिसांन कौं दिष्टिकरी जो मो
को कोऊ देष्या तो नही ॥ अैसे या कौं ल
जित देषि हनुमंत कही ॥ मैं तेरो बडो
भ्राता हो ॥ श्रीरामचंद्रको किंकरहोते
रे देषिबेकी उत्कंठा करि आयोहोता
तेहे भीमलजामतिकरे ॥ अैसे सुणिप
र्म आनंदित होइहाय जो डिभीमबोले
मै माया करि तुम्हारो लघुरूप देषि प्र
सन्न भयो ॥ परंतु जारूप करि समुद्र उ
ध्रंघन कस्यो ताके देषिबेकी लालसा
हो ॥ अैसे सुणि हनुमंत वह सिंहालरु
पे दिषायो ॥ जब भीम भयभीत होइ च
र्णनमें प्रणाम करि स्तुतिकरी ॥ तब हनु
मंत भीम कौं भयजुक्त स्तुतिकरत जा
णि वैसो ही लघुरूप करि सिरसंधिमिल
त भयो ॥ जब फेर भीम बोले हे कपिबीर
रामचंद्रकी सेनामें तमहं तैकोऊ अ

र अधिक दीर्घ रूप हो ॥ तब हनुमंत कही
राम चंद्र की सेना में हो ॥ अरु रावण की
हू सेना में हो ॥ अैसे सुणि भामि संदेह कस्यो
सो जाणि कै हनुमंत कही तेरै संदेह हे ताते
मेरी साथ चलौ में बताऊ जब संग चलते
चलते एक सरोवर देखि भीम कही ॥ आग्या
करो तौ में स्नान करौ ॥ तब हनुमंत कही
करो ॥ सो भीम स्नान करत ही डूबत हाहा
कार कस्यो ॥ ताहि देखि हनुमंत पूछ वाकी
क मरे सो लपेटि निकास्यो ॥ जब भीम कही
में तौ अैसे सरोवर देख्यो नही ॥ तब हनु
मंत कही रावण को भ्रात कुंभ कर्ण होता
को ॥ राम चंद्र वाणते कायो जाको टुक
हे ॥ सो वर्षा के जल सो भस्यो हो ॥ सो तो हि
दिषावत हो ॥ अैसे कहि पां वैके अंगुठा
सो पकडि टूटी करि दीनी ॥ सो देखि नीम
सिरकै पाप चकित भयो ॥ तब हनुमंत क
ही वास में के पराक्रम को पारावार नही
अब के समै तू इ पराक्रमी है जो धीर्ज
को डो नही ॥ अरु तब तू सजुन सो जुष्क
ते गर्जना करै गो जब तेरी गर्जना में मे

रीहृगर्जनामिलेगी। अरु अर्जुननुहक
रेंगौ जबवाकीधुजामेंबैठिवैरीनकौ।
निस्तेजकरोंगौ। त्रैसैकहिअंतरध्यान
मये। तापीकेभामहहनुप्रतलेमिलनकौ
हर्षअरुवियोगकौदुष्पतासहितअगो
जाइलौगंधिकवनकेदेष्पा। तहंसुव
र्णपप्रनीदेयीउहाकेकमललेबेलगपो
तबजज्ञराज्ञसयोकेरोकिबेकौसिला
नकीबर्षाकरौ। सोगदाप्रहारकरिसि
लानकौषंडः ६६। रिउनकौभगायदिये
फेरिशेषबजायगर्जनाकरीताकरिगं
धर्वनकौहभजाये। तबवावनकौपाल
कमणिमंतगंधर्वआयो। ताहिजीतिसौ
गधिकसुवर्णकमलल्यायडोपदी।
कौदियो। उनपुष्पनकरिडोपदीअगा
एकरिवहुतप्रसन्नभई। फेरियुधिष्ठि
रपरवारसहितघटोत्कचपेचटिनर
नारायणआश्रममेंजायआरिचर्ष
पूर्णकरे। उहांतैत्रैषपवाकेआश्रममें
जायगंधमादनकौआये। उहाएक
जटासुरराज्ञसब्रह्मचारीकौरूपधारि ६

इनके साथ बसत भयो ॥ जब घटोत्कच स
 हित भीमसिकार कौंगयो ॥ तब माया क
 रि इनके सस्त्र हरण करि तीनों भ्रातान
 कौ हरि ले गयो ॥ तहां मार्ग में राजा युधि
 श्ठिर तो वाकी गति रोकी ॥ नकुल सहदे
 व मूकीनके प्रहार करि व्याकुल कस्यो
 शोपदी को लाहल कस्यो ॥ सो सुगि भीम
 आइ वाकौ प्रमलोक पहुँचायो ॥ जैसे करि
 करि गंभमादन में आय बसे ॥ इति श्री भा
 रतसार चंद्रिकायां आरुण्य पर्वणि एकान्तं
 सतिनो ध्यायः ॥ २७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥
 त्रापी क्वैपंचमवर्ष लग्यो जब कैलास देधि
 वै कौंगयो ॥ उहां मार्ग में दिव्य वननके पुष्प
 ले वै कौभीम गयो ॥ तब यज्ञपुङ्क करि वै
 कौंगायो ॥ तहां सब यज्ञन कौभीम मध्य
 पुङ्क करि पटक पटक जीते ॥ जब उन
 को नायक मणि मांणय ज्ञपुङ्क करि वै कौ
 आयो ॥ तौ कौभीम भुजांन सोपक डिभ्र
 मायकै पटक्यो सो मूर्च्छित भयो ॥ तब क
 बेरा आय लडते और येहे हेति नको नि
 वारण करि इनको सनमान कस्यो ॥ फे
 रि कैलास दिवाय विदा करे ॥

पर्वः तरतैही दिव्यरथको सब सुणिवाकी त
फदेषतही मातली सहित इं इं कोरथमें
जुनको देख्यो ॥ जब सबही ठाडे होइ रहे
वरथ पर्वतमें उतरि युधिष्ठिरके पास
यो ॥ तहां अर्जुन वारथते उतरि महाराज
युधिष्ठिरके चरणमें प्रणाम करी ॥ ता
पीछे सबही अर्जुनसो मिलि आनंदि
तहोइ उहां बैठे ॥ जब युधिष्ठिर बोले ॥
लो मसमुनि आयतैरे समचार कहो ॥ जा
पीछे कहा भयो सो कहो ॥ जब अर्जुन बो
ल्यो ॥ मोको सुरेइ अस्त्रविद्यापटापक
ही गुरदक्षणा हो ॥ तबमें कही आग्नाक
रो सो ही हो ॥ असे सुणिइं बोले ॥ यो लो
मकालके यनि बातक बचये घोरदान
बहिरण्यपुरवासी देवतानके सत्रुहो ॥
सो ब्रह्माके वरतै देवतानसो तो अबेध
है तातै तुम अस्त्रबल करि इनको मा
रो ॥ जबमें उनको प्रणाम करि आग्ना
अग्नीकार करी ॥ तबइं आपको कि
रीटतौ मेरे सिरपै धर्या अरजुजान
मे आपके ही हाथसो भुजबंध बांधो
अस्त्रदिये मातली ॥

व्यकवचरियो देवतांनकौसंगभेजे। ज
बमेंजायउनकेनगरकौघेस्यो॥ तब
उहातपुछकौसाहिहजारदांनवसेना
सहितनिकसे॥ तहांउनसोबहुतदिन
लौपुछभयोतापीछेब्रह्मास्त्रकरिके
दग्धकरे॥ फेरिजायइइकौप्रणामक
स्यो॥ जबउनविजेकौआसीबाददेष
विदाकियो॥ तबउहांतैतुम्हारेपास
आयो॥ जातैअवयामातलीकौआदर
पूर्वकविदाकरो॥ जबयुधिष्ठिरवा
कौसनमानकरिविदाकस्ये॥ फेरियु
धिष्ठिरकीआगतैअर्जुनअस्त्रविदा
दिषायबेकौआरंभकस्यो॥ तबनार
दमुनिआयकहीइनअस्त्रनकोअम
नससनुनबिनांप्रयोगनकरणोअ
संकहिमनैकियो॥ तापीछेपांडवग
धमादनतैउतरतभयो॥ तहांतेउतर
तैगहनवनमेंपर्वतसमानभुजंग
राजनेंभीमकौपकडो॥ वाकेबंधन
तैभीमनैकहहालिसक्यानही॥ अ
नाईब्याकलेभये

स्वतिकरि प्रार्थना करी या कौकै सै छो
गे न हम आगे ही दुषित है ॥ तब नाग बो
ल्यो ॥ मेरे प्रसन्न को उत्तर दे जब छोड़ो
तब राजा कस्यो प्रसन्न कीजे ॥ जब नाग क
ही ब्राह्मण कौण सूइ कौण ॥ मित्र कौण
सत्रु कौण ॥ पंडित कौण ॥ मर्ष कौण ॥ सर
कौण ॥ कायर कौण ॥ सत्य कहा ॥ असत्य
कहा ॥ धर्म कहा ॥ पाप कहा ॥ सुष कहा ॥ दु
क कहा ॥ मुक्ति कहा ॥ संसार कहा ॥ जैसे
नाग कौ दोइ दोइ प्रसन्न सुणत ही राजा पु
धिष्टर हंसत ही उत्तर देत भयो ॥ जा कौ
निस्क पटत यहोइ सो ब्राह्मण ॥ जो श्रेष्ठ
धर्म कौ त्याग करि दुराचारी होइ सो सू
त्र ॥ उत्तम कर्म करि बै कौ जो उरि म कहै
सो मित्र हो ॥ प्रमाद सो ही सत्रु हो ॥ बंधमो
त्त जाणै सो पंडित ॥ इन कौ ग्यान नही सो
मर्ष मन में बसिके या कौ बिना सकरि ब
बासे जे कामादिक सत्रुतिन कौ जीतै सो
सुर हो ॥ स्त्रीन के नेत्र कटासन करि धीज
छोड़ै सो कायर जा मे जीवन कौ न लोहि
त होय सो असत्य ही है ॥ जी में जीवन कौ

बुरो होइ सो सत्य हूँ असत्य हूँ वेद साख के अ
नकल जो आचर्यो सो धर्म और सुपात्रन के
चादरी हीन को दोन और तमा यह उत्तम
धर्म है ॥ उपकारी नसों ईह बिस्वास घात
आपके पूज्य होइति नसों मनमें प्रभुता
राखिबो यह पाप ॥ सर्व बस्तुनमें मध्य
स्परहि बोसो सुख ॥ इच्छा बिस्तार करि
बोसो दुष्प ॥ बित्त अरु आत्मा इनकी ये क
ता करिबो सो मुक्ति है ॥ हे सराग युक्ति जो
बुद्धि सो ससार है ॥ जैसे प्रमन को उत्तव
देत ही राजा भीम को कृद्रो देव्यो ॥ नाग
नजर आयो नही ॥ तापी के विमानमें वे
द्यो को इक देव ॥ जय जय सब करि दुष्प
वर्षा करि राजासों बोल्यो ॥ राजा तू ह
मार बंस को दीपक है ॥ मैं नहु सनामा
तुम्हारे पूर्व पुरषा हूँ तयो बल तैं इंश
सनयायो ॥ उहां सब रिषिनको पालकी
में जो इंश्राणी के भोग लालसा करि च
ल्यो ॥ तहां आगे जुपेजे अंगस्त मुनिति
नको चर्ण सपरस करि
सोसी घृताको ॥ त

करिशापदियो तहीसर्पहो ॥ जबमेशापके
अंतकी प्रार्थना करी ॥ तब मुनिबोले त
भीमको जब पकडिराजा युधिष्ठिर सो प्र
ह्न करेगो ॥ तब प्रहसनको उत्तर एत
ही दिव्य देह पावैगो ॥ सो हे पुत्र मैतरेवच
नन तो देव्ये हपाई ॥ सो अब तुम जा
य बिजे को यत्न करो बिजय होइगो ॥ जैसे
करि सुगलोकको गयो ॥ नहसको उधा
र करे पाछे पांडव और हचरि न करत क
रत फेरिका म्पकवनको प्राये ॥ तहां श्री
कृष्ण नारद मार्कंडेय आपराजाको अने
क कथांन करि समाधान करि जैसे आ
ये हेतैसही गये ॥ इति श्री भारत सार चं
दी का पावन पर्व णि न सप्तमोऽध्याय ॥ ३०
बैशाखाय नउ वाचा ॥ श्लोपदी सहित पा
ंडवनको काम्पकवनमें सो दैत प्राये
सुणि ॥ दुर्योधन कर्णको बुलाय समल
त करी ॥ जो आपत्सहित प्राये पांडव
नको देखयो ॥ और अरु पणी राजलक्ष्मी
दिषावणी ॥ जैसे विचार करि धृतराष्ट्र
सो क्ल करि पूछ्यो ॥ गाहनके ग्वालक

हैं हैं जो गायबेल पुष्ट बहुत भये हैं तासो
आपकी आग्या होइ तौ दिधि आऊ। जब
धतराष्ट्र आग्या दीनी। जैसे आग्या पाय
कर्ण सहित संपूर्ण सेना ले जनाने सहि
तई तवन को गये। तहां पांडवन के समीप
सरोवर की तीर अधिकारी नको डेरा क
रिबे कौ भेजे। जब उहां डेरा होतें ही चित्र
सेन गंधर्व के सेवक निवारण कर लभये
तब यह सुनिदुर्योधन युद्ध करिबे कौ आ
यो। तहां सेना सहित चित्र सेन गंधर्व के
अरु कौरव नके घोर संग्राम भयो। जब
चित्र सेन कर्ण दिक नको विरथ करि
सर्व भाई न सहित दुर्योधन कौ कोप क
डिरथ न सो बांधिले चले। वादि नरा
जायुधिष्ठिर यज्ञ दीलामें हो। सो उहां
अनाथ वत कौरवन की। स्त्री पुकारत
आई। तिन सो सब ब्रतांत सुलिराजा
अरु भाई न सहित भीम सेन कौ दुर्योध
न के सुशायबे की आग्या करी। तब चारो
भाई आकास में जाते गंधर्व नये विपरी
त बाण धारा कौ बसत भये। जब ग

बनकों व्याकुल देखि चित्रसेन पांड
 पै बाणबसा करि मायासो अस्त्रनक
 धकारकस्ये ॥ तब अजुन अज्ञास्त्रक
 वाकों हरकस्ये ॥ तापके दसलाषगंध
 बमारे ॥ जब चित्रसेन गदायुद्धमें चित्र
 चित्रगति ॥ कर्तसनमुष प्रायो ॥ तब अ
 नवाकों मित्र जानिको मूलबाणनक
 रि ॥ व्याकुलकस्ये ॥ जब चित्रसेन बोले
 हे अजुन त स्वार्थमें कैसे मोह पावे हे
 यह दुर्घो धनतुमकों लक्ष्मीहीन जाणो
 तिरस्कार करि बेकों प्रायो होताकों इ
 की प्रागपसो म बांधिले जातहो ॥ जाको
 छुडापबेको त क्यो कस्त करे हे ॥ औरत
 हारे दुष्पदेबको मूलकर्ण भागि बायो
 ताको हेरतहो सापायो नही ॥ ऐसे सु
 णि अजुन बोले ॥ जाको आपजीतिबो
 विचारै तावैरीकों औरमारिबो वि
 चारै यह समर्थ होइतासो सद्यो जाय
 नही ॥ आपुसकी लडाइमें तो हम पांच
 चवै वैरीसो हे ॥ औरपैलेसो लडाई हो
 तामें एकसो पांच है ॥ जासो ज्योति

सेसवार्तामेंकहाहो॥महाराजयुधिष्ठिर
कीआग्नाछुडायवेकीनईसोमेश्रंगीका
रकरा॥अैसेसुणिचित्रसेनदुर्योधनारि
कनाईनकोषोलिषोलियुधिष्ठिरकोयश
भूमिमेंपटकिये॥तापीकेइंइलोकमेंजाय
इंइसोब्रतानकह्यो॥जबइंइहअर्जुनके
मारचीरहेतिनकोअमृतत्रिष्टिकरिजि
वाये॥उहायुधिष्ठिरदुर्योधनकोनीचीइ
ष्टिकियेदेधिकहीहनाईअैसेकुकर्मके
रिमतिकरियो॥यहसुणिदुर्योधनलज्जा
करिहृदयविदीर्णहोइगंगातीरआयबि
चारतभयो॥बेरीननैछुडायोयाजीबे
तैतौमरणहीअेष्टहैमहनिहचैकरि
दभ्रासनबिछायअरेनसनब्रतलेके
बैग्यो॥तहाकोईकसमैछिप्याहुचोजो
कर्णसोदुस्सासनसकुनसहितआय
समरायो॥येदुर्योधनमान्योनेही॥तब
पातालबासीदानवनकल्याहाथइ
भ्रासनयेबैठेकोएकडिमगायबोले
देदुर्योधनतउदासीनतामतिल्यावे

गे ॥ जैसे कहियुद्धमें इटचित हो कर वाइरा
नवननैहस्तनापुरकौ भेज्यो ॥ उहां आइ
सभा करि बैठे भीषबो ॥ हे राजा दुर्पोधन
तेरी कुसलसों बड़ी घुसी हुई ॥ और तैंक
ए अर्जुनको पराक्रमहने त्रनसों देख्यो ता
सों अबह पाडवनको विभाग देके कुलकी
रत्ताजोग्येहै ॥ अन्यथा कियेना सहोइगो
जैसे कह्यो भीषको सुणिअंगीकार किये
बही ॥ जबवे उठि अपने स्थान गये ॥ तापी
छे देखनको बचनयादि करि दुर्पोधन
कर्णसों बो ल्यो ॥ जुवा करि युधिष्ठिरको
जी ल्यो ॥ अब राजसूयके धर्मसों युधिष्ठि
रको जीतणो ॥ जीमे भीम अर्जुनकी सीना
ही दिगविजै करिबे कौ तूसमर्पहो ॥ सो त
राजसूय कराव ॥ जैसे कहि कर्णको दिग
विजै कौ भेज्यो ॥ आपपुरोहितको बुला
इकही राजसूय करावो ॥ जब प्रोहित बो
ल्यो ॥ एक सम्राट रहतै इसरो सम्राटहो
इ नही ॥ ताते राजसूयको तुल्य और यज्ञ
करे ॥ जैसे पुरोहितको बचन सुणिराज
सूयसमानही ॥ और यग्य कियो ॥ तापग्यके स

मैं युधिष्ठिर को मारितो को राजसूय कर राज
 जब मैं आनंद पाऊं ॥ अर्जुन को मारे बिना
 पावै हन ही धुवां कुंगो ॥ अत्रै सैं कर्ण की प्रतप
 सुणि मूट दुयो धन आपकी बिजे ही मानत
 भयो ॥ इति श्री भारत सार चंद्रिका यांबन पर्वणि ए
 कत्रं सतमो ध्याय ॥ ३० ॥ वैशंपायन उवाच ॥
 तापी कै सुभ्रमं मगन नै बिनती करी हे राज
 तसि कारतै महारौ बंस क्षीण भयो ॥ यह सु
 णिदाया लयुधिष्ठिर काम्पक बन तै त्रण बा
 ध सर आयो ॥ तहां त्रण बंध के आश्रम में
 शोपदी को राषि आपसि कार को गयो ॥ उहां
 मार्ग में जयध्रत सेना सहित साहसु देस बि
 बाह को जाय हो ॥ सो शोपदी को एका की
 हे विरथ में धरि चलत भयो ॥ जब शोपदी
 को लाहल किये ॥ सो सुणि पांचौ पांडव
 आये ॥ तिन सो जयध्रत ह सेना सहित जुध
 करि बै कों तयार भयो ॥ तब अर्जुन को
 बाण वर्षा करि कितने कतौ मारे गये ॥ कि
 तने कना गि गये ॥ और भी मगदा
 रि जयध्रत को विरथ करि बा
 रया सल्यायो ॥ जब युधिष्ठिर सो जय

कहामेंतुम्हारेदासहो॥ तबभीमसेमहा
जकहीयहहेतौबधलायकपैडुस्लाके
देषियाकेजीवदानदो॥ जैसेयुधिष्ठिर
कीआगपासुणिभीमछेडो॥ पतिनकीज
यतैहर्षितिपदीतासहितपांडवअप
नेआश्रमकोआये॥ तापीकेजयध्रतह
गंगातीरतपतेमहादेवकोप्रसन्नकरि
सबपांडवनकोजीतोयहब्रमागतभ
यो॥ जबमहादेवकहीचोरिपांडवनको
एकदिनजीतैगो॥ औरश्रीकृष्णकोमि
त्रैअर्जुनजानैमोहीकोजीतोतासो
औरकोनजीतै॥ जैसेशिवबदोनदेअ
तरधानभये॥ जबजयध्रतहब्रपाय
हर्षितपुरकोआयो॥ औरबनमेंरहते
पांडवतेनसोएकब्राह्मणआयबोल्या॥
कभ्रगमेरीअरणीकोसीगमेंअटक
लियैजातहेताहितुमल्यायदो॥ तब
गोडवधनुषबाणलेवाम्रगकेपीके
कोईयुवतकेतटमेंनेकुलजललेवे
गयोसोआयोनही॥ जबसे

तिनसबनकेपीछैराजापुधिष्टिरगयेसो।
 चारौनकौजलकीतीरअचेतगिरेदेखे। त
 बराजाबिचास्योयहकहाजबहीआकास
 बाणीभई॥ हेराजामेंजलहोंसोमेरेप्रक्षक
 दियेंबिनाजलपीवैतोकीमृत्युहोइ।।
 जासोतूउत्तरदियेंपाकैजलपी॥ यहसुनि
 धिष्टिरकहीबांधवनकौमेरेदेखिजलपी
 कहाकामहो। तौभीतुम्हारेप्रक्षनको
 गो॥ अैसेकहतहीप्रक्षबाणीभई॥
 तिनकोउत्तरहराजादेतनयो॥ देवकौंण।। स्व
 केवचनतैजाएयोआत्मासोदेव॥ देवक
 हा॥ प्राचीनकर्मसोदेव॥ ताकोसुरअसुर
 उलंघिसकेनही॥ धन्यकौंण॥ बरोबर
 जाकीसेवाकरेंसोधन्य।। सुचिकौंण
 सत्यवचनरूपीगंगाजलजोन्हायसोसु
 चि।। मोक्षकहा॥ सर्वबासनारहितजोचित
 सोहीमोक्ष।। लक्ष्मीकहा॥ सर्वसंतोषसो
 विपत्तिकहा॥ विपुलरक्षासोही
 ति।। श्लोक॥ कोमोदतेकिमाश्र्वर्यका
 वार्ताकःपथस्मतः॥ ब्रूहित्वंधर्मराजेंइम
 वाचीबन्धिबंधव॥ १॥ दिव

साकपचतिसुग्रहे अनर्णाचाप्रवासीच
सबदिचरमोदते २॥ अहर्निशंचभूतानि
गच्छतिचयमालये ॥ शोषाः स्थावरमिच्छति
किमाश्चर्यमतापरं ॥ ३॥ अस्मिन्महामोह
मयेकदाहसूर्याग्निनारात्रिदिव्यो धनेनमा
सस्पर्षीपरिघटनेनभूतानिकालःप
चनीतिवार्ता ॥ ४॥ श्रुतिर्विभिन्नाः स्मृत
योपिभिन्नाः नैकोमुनिर्यस्यबचप्रमाणं
धर्मस्यतत्त्वंनिहितगुहायामहाजनोपेन
गतःसपथा ॥ ५॥ अर्थ ॥ हेराजायुधिष्ठिरा
नंदकौंकौतपावेहे ॥ आश्चर्यकहा ॥ वार्ता
कौनकौकहिये ॥ मार्गकहा ॥ असेप्रससु
एराजाबोल्पो ॥ जापुरषकेरिणनही ॥ प
रदेसगवननहीकरे ॥ अरुचारिघडोदि
नरहेह ॥ आपकेघरमेंसाकहपचायकेषाप
सोहावतिहे ॥ रातिदिनप्राणानकौयम
केग्रहजातदेवि ॥ आपकौथिरमानेयासि
वाप ॥ आश्चर्यकहा ॥ २॥ यासंसारमेंमहा
मोहहसोहीतोकडाहहै ॥ सूर्यअग्निहै ॥ रा
त्रेदिनईधनहै ॥ महीनाहैसोहीकौचा
॥ ताकरिकालपरषयाणी ॥

होयासिवाइवार्ताकहा॥३॥श्रुतिमेंहमार्ग
 जुदेजुदे॥स्मृतिहमेंजुदे॥मुनिहकेअनेक
 वचन॥अरुधर्मकोतत्वगुफामेंथापित
 कियो॥तासोंबडेजनजामार्गचलेसोहीमा
 र्ग॥४॥५॥फेरिआकासबाणीभई॥राजा
 मेंउत्तबतेप्रसन्नजयोसोमेरेबरतेतेरे
 इनभ्रातानमेंतेएकजीवो॥जवरा
 हीनकुलबहुतप्यारोहेसोजीवो॥सहो
 दरभ्रातानकी॥तेदुमातभ्रातामेंअ
 प्रीतिदेधिधर्मप्रसन्नतासोंसा
 इबोल्पो॥हेराजामेंधर्महोंतुमेरो
 सोतेरेमुखरूपीचंभइमाकेब
 तेमेरोइदयअतिसातलभयो॥
 कौदेखिवेकोहरिणहोइ
 तानमेंप्रीतिदेखिवेकोजलपानकरतौ
 इनकोहरे॥अबतेरीदयाधर्मसत्यतेस
 तुष्टहोइबरदेतहोंतुबिजेकोपावैगो॥
 धर्मब्रंधरहोसर्वभ्राताजीवो॥आरमे
 रीरूपातेअलक्षितहोइएक
 एनगरमेंबासकरो॥असैकहि
 देयधर्मअंतरध्यानभयो॥तापी

ये भ्रातानकौ संगले इयुधिष्ठिर आश्रम
प्रापवा ब्राह्मणकौ प्राणसमानं चरणी दे
विद्या कियो ॥ ता उपरांतरा जावारह वर्ष
पूरे भयो ॥ जाणिधोम्यमुनिकौ अग्निहोत्र
सहित एक वर्ष वास करिबे कौ इयदनग
कौ भ्रैजत भये इइसेन आदि वारन कौ
आदिक परवार सहित द्वारिका कौ भ्रैजे ॥
प्रापगुप्त विहार करिबे कौ तयारनये ॥ इ
तस्मात्तस्मात्सो दोहा ॥ भाषाभारथसार
पहहे वनपर्व सुत्रै न रावचादस्येधकौ
इकमपाय कियो कविचै न ॥ इति श्रीभ
रसार चंद्रिका यां वनपर्वे शिक्षात्रंजना
मोक्षप्रदाय ॥ ३१ ॥ वनपर्व समाप्त ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भारतखारब
 चनिकाविरट ॥ १ ॥ उर्वकी लिख्यते ॥ वैशंपाय
 न उवाच ॥ ता उपरांत पाचों माता शेषदा
 सहित विराट नगर के समीप गये ॥ उह
 प्रजुन बोले ॥ आपां विराट के पास गुप्त
 विधिकरि रहेंगे ॥ तब युधि
 ले ॥ मैं युधिष्ठिर को पडि लिखा ॥ १ ॥
 वेवा लोक कनामां ॥ ब्राह्मण हों जैसे
 ॥ श्रीम बोले ॥ मैं ब्रह्म
 शर होइ रहेंगे ॥ अर्जुन
 ल्या ॥ मैं ब्रह्म नट नाम धरि जपुनी
 को न ल्यां न सिधा ॥ वेवा लो होइ रह
 ॥ सहदेव बोले ॥ मैं तंत्र साधना
 रि गायन बेल लकी यां ल होइ रहो
 ॥ ग्रंथ कनाम करि
 ॥ वा ल्यो होइ रहेंगे ॥
 ली ॥ मा ॥
 तनी पास रहेंगे ॥ जैसे मैं
 के धो म्प प्रोहित राजा को रा
 रि वा कहि अत्रि हो न ले दुप
 र को गयो ॥ और इइ लेना

कल्पपरिवारहारकाकौंगये तापि
 उबसमाश्रितकेविवरमेंआपकेसस्त्र
 कोधरिएकमुरदाउहालटकाय जैसे
 करिपस्परसंकेतनामसबनकेधरे
 प १ जयंत २ विजय ३ जयसेन ४ अ
 दव ५ जैसेगुप्तसंगपाकरियुधिष्ठिर
 ब्राह्मणकोबेसकरिरत्ननकेपासाले
 विराटसभामेंगये ॥ तिन्हेंदेविराजापू
 छे ॥ तुमकौंणहो तबयुधिष्ठिरबोले
 धर्मपुत्रराजाकौंसभाचतुरककना
 नाब्राह्मणहों ॥ वेराजभ्रंसभायेपीछे
 कहाजाणियेकहागये ॥ जासोंतुम्हारे
 पासजीवकानिम्यत्यआयोहो ॥ जब
 विराटबोले राजायुधिष्ठिरमेंगोमि
 त्रहोसोवाकौंचौपडिधिलावैहेतैसे
 मोकौंचौपडिधिलाइआनंदपूर्वकर
 हो जैसेकहिउनकौरहिवैकेस्थान
 जीवकाबतावतभये ॥ तापीकैइसर
 दिनभीमसेनकौंचाकरकीलेरसोई
 शरकौरूपकरिगयोताकौराजापूछो
 त्कौंणहो ॥ तबक...

मराठ
१०६

वोनहा उच्छिष्टकी वोनहा जैसे
सुदेखावाको सुगंधत्राधिकारपे
मालिनीनामधरियो तापीके सह
वतंत्रपालनामधरिगोपालवैसव
रिविराटपासआयो ताकीपरि क
रिराजाब्रषभनको अधिकारदियो
पीकेकेसपासबाधिकंचुकीपहरि
जनवैसअलंकारपहरिकिरीटको
पायअर्जुनसंठवैसकरिखिराटपास
आयो जबराजापूछ्योतुमकोणहो
जबबोलीब्रहनटनामधारीदेवगं
धवसिष्यसंगीतविद्वानिपुनहो जे
सैसुणिविराटउत्तराकोसंगीतसि
खागुरुकरिराष्या तापीकेनकुल
इअधिकनामधरिसालिहोत्रीबलि
आयो ताकोराजाअश्याधिकारदि
यो जैसेसुषपूर्वकवसतसबन
कोचारिमासभये जबब्रसनाम
उत्सवभयोतामैचास्यादिसानके
मध्नआये तिनमैसिष्यनसहित
एकजीमृतनाम

कीमललीलादेविकोईहीयुद्धकरिबैंकों
 समर्थनयोनही।जबविराटपुत्रलज्जित
 होइबह्ववसोकहीयामह्वकीगर्जनाति
 वारणकरै॥तबराजाकीआग्वाआप
 कौकौतुकमुजानकीषाजिकरिप्रेत्यो
 हुवोबह्वववाकेसनमुषजायषंबठों
 को।ताकेसबकरिपर्वतविदीर्णभयेप्र
 थवीकंपायमानभई।जीमूतकोगर्ब
 जातरह्यो।तापीकैवहमह्वगर्जनाक
 रतआवतभयो।ताकौंभीमउठायफि
 रायप्रथामैपटकिमर्दनकस्यो।वा
 कौपिताजीमूतजालमह्वअनकन
 कौंएकहीकालमैउडायषंडयंडकरिदे
 सोजीमूतनाममह्वबह्ववकीबिजे
 सुतिसुणिलज्जितभयो।राजाविरा
 टहप्रसन्नहोइवापैस्ववर्णकीवर्षा
 करी।देवतापुष्पनकीब्रष्टिकरी॥अ
 सेसंधनकौंहाथीनकौंयुद्धमेंजीति
 राजाकौंप्रसन्नकस्यो॥असेनितिप्रति
 राजाकौंहर्षबधावतहसमांस
 तीतभयो॥इतिश्रीभा

रावण का पाँव बिराट पर्वणि प्रथमो ध्याय
बैशंपायन उवाच तापुरीमै सुदे
राणी कौबडो भ्राता की चक नाम ए
क सो कह २६ भ्राता सहित रहे ता
शेषी कौ देषी अति रूपवती सुदेखा
सैरधी जाणितो ह कामातुर भयो जब
भगनी सो नम्र होइ बो ल्यो हे सुदेखा
तेरी मालनी नाम सैरंध्री मो कौ भोग के
निमित्त रात्रौ तब सुदेखा बोली हे भ्रा
ता त्रै संमति बो लो या के पाँच पतिगं
ध बर्है सो गुण र ध्या करे है जो पाप दि
ष्टि देखै ता कौ मारै और धर्म हू देषि प
र स्त्री में चित्त न करणो रावण के दस
सिर करे अरु सीता हायन आई अ
सै सुणि की चक मो न होइ पीछे को
ई क समे सैरधी कौ एक त पाय बो
ल्यो हे सैरंध्री त दासी पणों का डि मे
री भार्या होह तो सो मेरो मन आसक्त
है जैसे सुणि सैरंध्री बोली हे की च
क मो में पाय इष्टि मति करे मेरे पाँच
पतिगंध बर्है सो मारै सो

कबो लो॥ में गंधर्व न तें हं न डरो॥ अरु ज
महते न डरो॥ जैसे सुलिये रंध्रा मो नग
ही तब फेर की चक सुदेखा सो बहो त
प्रार्थना करी॥ जब सुदेखा कही तू कछू
उछु बकरि में यो की मदि रा देय तेरे मो
नने जोगी॥ जैसे सुलिये की चक आप के
घर जाय उछु वर चना करी॥ तब सुदे
खा कूल करि मस्य पात्र दे सै रंध्री बहुत
नदी तो हुने जी॥ जब सै रंध्री संध्या समे
सूर्य देव सो प्रार्थना करि की चक मो
नको गई॥ तब सूर्य हया की रक्षा करि
बको एकरा लस संगे ने ज्यो॥ तहो की च
क हया को आवत दोष सन्मुख आय ह
सि के बो ल्यो हे सुंदरी आवो इहा लज
छो डि मो सो अलिगन करि॥ यह सब
संपति दास दासी तवन सहित अंग
कार करि मो को प्रसन्न करि॥ जैसे
हते की चक को सील लता शोप दी र
नल सममान होत भई॥ तो हु बल
त्कार करि बस्त्र धे चि बेल पो ज
घदी या को पर कि राज मंदिर को

तबकीचकपकाडीसोंजायवाकेकेसपक
डिलातमारी॥जबशोपदीकीदेहतेंसूर्यको
भेज्यागत्सनि कसिकीचककोमूर्च्छितक
रिप्रथवीमेंपटक्यो॥तहाराजसनामेंबेगो
भीमशोपदीकीपहदसादेघिक्रोधकस्या
ताकोपुधिष्टिरसंग्याकरिरोक्यो॥तापीछें
शोपदीउठिरजसोंलिपटीभईराजसभापि
।तेनसहेटहीतहाजाइबोलीहेबिराररा
जतुमहारीनीतिकोंदेषतहो॥तुम्हारेदेष
तमोकौनीचलातमारी॥जबबिरारबोली
हेमालनीतेरेकीचककेकलहएकांतमें
कोनकारणतैभयो॥तबशोपदीबोलीदेव
रूपीयाचगुप्तबध्नभानमेंबडौक्षमावा
ननहोइतौअैसेकौणकरे॥अैसेसुणियु
धिष्टिरबोले॥जोतेरेयांचौपतिगंधर्वन
मेंजयंतकोवलवंतमानैहेसाहीतेरीबा
छूसिद्धिकरैगो॥अबस्वस्थानकोजा॥म
हाराजकोइतकीडामेंविप्रमतिकरे॥अै
सेसुणिशोपदीक्रोधगुप्तकरिसुदेखारा
णीपजायकीचककीदुच्चैषाकही॥अरु
परपुरषस्परसहितवस्त्रहोतिनकोंधो १०

इत्थानकरि। रात्रसमैपाकसाबाभैजाप
श्रीमसौश्रालिंगनकरतभरी। तबभीमह
श्रियासोंइहश्राणलिंगनकरिगके
इहयकोदुष्पूरिकियौ॥ तबशोपदीबो
ली। तुमप्रथमश्रपराधीइत्सासनको
मात्योतह॥ तातैराजाबिराटकैभंदन
केघसिबैतैमेरेहस्तचिन्हयुक्तकठोर
भयहै। अरुकीचकहूकेसगहिपार
प्रहारकियौ॥ तोह तुमयाकौंसीघ्रदंड
द्वानहीसोतुम्हारीइहयकोविदीए
नहीहोतहै॥ यहसुणिबाधवनकोइ
षस्मर्णकरतनिस्वासनापतनिजभु
जानकौंदेषतनीमबोव्यो है। प्रियेहमरा
जाकेसमामंत्रतेबधेहै। तातैसरसंधारि
सिलामयदेवताकीनाहीनिस्पलपरा
रुमीहै। सोअबतुमपुरवाहरनस्यमं
उपहैतामेकीचकसोंबिहारवै। सचेन
करौ। तहांमेंवाकै। मारिपंडकीनाही। क
रिजमकेमुपमेंग्रामधंगगा। जैसेवा
शोपदीकौंसीपदंयज्ञापनस्यमंउपमेंना
पसत्ता। तबशोपदीइनीमया। अमेनज

२० नतेंसंतोषपापसुदेर। केमंदिरगई। नापी
कैकीचक इ सरदिनसुदेखाकेमंदिर
यौ। ताकेंशोपदीसनेह। श्रेषोदेविमधुर
वचनबोली। हेसुंदरतुमजन्मलक्ष्मी
मोकैकामवार्ताकही। तातैकोपकियौ। अ
बतुमरात्रसमैपुरबाहरनत्यमंडपमें
बोतहामेंह। आवोगी। असेवचनसुणि
कीचकहर्षपाये। बोले। आजिमैरोपु
उदेज्यौ। जोतुमप्रसन्नहोय। लतहो
असेशोपदीसोकहिकी। कहथसहित
निजभवनजाइसुंदरनेसधारिसंध्यासम
पनत्यमंडपकेंचलतभयो। तहामार्गमें
अपसकुनहकौन्हीगिणतभयो। नापीके
सरंधीकौरूपधारैनीमसनसो। तहोअ
सेनत्यमंडपकेद्वारतेंसंगकेजन। तिनके
बिदाकरिभीतरजायसुंदरीकहांहैकहि
अधलौभीमकौस्पर्सकरिबोले। मैतौ
तेरेकोमलअंगसंगकेलो। नतैभूषणह
धारनही। अरुतेरोअंगकठोरकैसैहै। अ
सेवाकेवचनसुणि। अरुशोपदीकेअना
दरतेंभीमकोधाग्रिसो। प्रचलितभयोरी

हो ॥ अरु वाकै रूप अहु त देखि अश्रु पर्यजा
णि ॥ आपको पराक्रम प्रगट करि बैकौ ॥
वाके स्कंधन पे हाथ धरि जुइको आरं
भ कियो ॥ परस्पर जुइ करतें चरण प्रहा
रतें प्रस्यी कं पित भई ॥ अरु कर प्रहार तै
गन गर्जत भयो ॥ असें जुइ कौ देखि निसा
चर चकित भयो ॥ तहां भीमसेन जुइ क
रतें वाके इद्रयमें मुष्टि प्रहार करि पटक
वाको रुद बिदीर्ण करि वाके नीतर हा
थ पा ॥ वसिर सबही अंगधसाइ पिंडा
कार करि रंगमंदिर के द्वारै धरि ॥ ताके आ
भूषण बिराटके नवनमें नाघि शे पदी सो क
हि पाक स्थानमें जापसपन करत भयो ॥
तापीके वाके आभूषण देखि राणी सुदे
स्नारुदन करत एक सो पाचा ॥ १०५ ॥ भाई
नसहित नत्पमंडप जाइकी चककौ म
तक देखि वाकी नार्यासहित अति बिला
प करत भई ॥ तहासंपूर्णकी चकके आ
ताथ भकै लगी मालनीको हर्षित देखि
कही ॥ यह निजपति नसो पाको मरु
ग्ध करि बैकौ सैरंधीको वैचत भई ॥

बवानै बिलाप कियो सो सुणि बुद्धिवान भी
मकोटकदि कालोक बलवो हरिजसो अ
धकार करि गजना करत न्न चउपाडिधा
वत नये ॥ ताको जमतुल्य आवत देखि गंध
र्व भयते जीववचायवेको प्रोपदीको छो
इत नये ॥ जब नीमस कलकी चक भ्राता
नको ब्रह्मसो मारि प्रोपदी नो समाधान
करि ॥ जा मार्ग होइ गयो होता ही मार्ग हो
यपाक सालामे आयो ॥ मालनीको आव
वत देखि पुरबासी पुरुष गंधर्व भयते
आषि मूदत नये ॥ अरु सकलकी चक
भ्रातानको गंधर्वहत सुणिराजा ह भय
पाइ मालनीसो कछू कछो नही ॥ वह अंत
पुरमे गई जब राजाकी आपते राणी सु
इलावाको सीषदीनी ॥ सो सुणि माल
नीके ही हे महाराणी आपते रह दिन और
हत्तमा करौ ॥ तापीके मेरे भर्ता आय हर्ष
सहित मोको निज नवनले जाइगे ॥ अरु
विराट महाराज हु उन सहित विजय पा
वैगे ॥ असे सुणि महाराणी ह क्रोधत जि
हत्तमा धारि मोन गई ॥ इति श्री भारतसार

चंद्रिकायां बिराट्पर्वणि इति यो ध्यायः ॥
 वैशंपायन उवाच ॥ तापी छेपांडव कह
 हूं न देखे ॥ ऐसे इतन के मुख सौ सुणि राजा
 दुर्योधन चिंता करि सनामं भीष्मादिक न सो
 बोले ॥ अब पांडव कहा पावें गमो कौ बड़ी
 चिंता है ॥ ऐसे कहत ही मत्स्य दे सतें प्राये
 जे इतते बोले ॥ रात्रि में गंधर्व बने एक सो कह
 ह ॥ १० ॥ की चकन सैं को मारे ॥ सो सुणि डो
 णाचार्य बोले ॥ की चक वधनी मत ही जो
 तसी कहै है ॥ हिंडि ववक वधवाहीते
 कहै है सो भयो हो ॥ ऐसे सुणि सकुनि बो
 ल्यो ॥ शोणादिक नो जनतौ तुम्हारे करै छे
 कथा पांडवन की करत है ॥ रात्रि भए न
 ए पांडवन को पक्ष करि बेटौ ॥ आपके दोष
 कौ नही जाणत है ॥ तब नीम बोले ॥ जहां
 पांडव बहै तहां बिप्र मंडली वेद ध्वनि कर
 तर है ॥ अनेक अग्नि होत्र अघंड रहत है
 समय समय में मेघ अघंड बांछित बहै
 करत रहे ॥ सूर्य सीत गरम समान ही क
 रत है ॥ गाइने कौ अपार दूध होलै ॥ लन
 वृक्ष वनस्पती स्वादिष्ट असंखि फल फल

तहो बापी कपतडागादिकनमें अमृततु
ल्पजलरहतहै प्रजाधर्ममैरत हतहै
राजाहूपुत्रकीसीनाही प्रजाकोपालानक
रतहै अैसेसुणितगर्तनाथसुसर्माना
मराजाकरजोडिकुरराजदुर्योधनसोबो
ल्यो मरेहूतअैसेसमस्तलक्षणयुक्तम
त्स्पदेशकौकहतहै तातैधर्मपुत्रतहाही
निश्चैवसतहै परंतुकोणउपायतैजाणे
जाय अबएकसध्याहै मत्स्यजिनग
रतैगोहरणकरै जोतुम्हारेसत्रुतहा
हायगेतौ गोहरणमैरोसतैप्रगटहैथ
गे औरसबनहीहोयगेतौ अर्जुनतौअ
बलहीप्रगटहोयगे अरुउहा, अ
हननयेतौ अगतमैपांडुवनहीहै या
तैअपारसंपत्सहितमत्स्यदेशकौह
रणकोनकरिये बलवतकीचकही
मत्स्यराजाकोप्रधानसेनापतिहो सो
तौभ्रातानसहितगंधर्वनकीकोपाग्नि
मैपतंगजोभस्मनये तातैमत्स्यनाथ
इकलौहीहै तातैबाधवसहिततासो
युद्धकरिएकतरफतैगोहरणकरोगै

बाके श्रेष्ठ धर्म मत्त बल ही नगर क्यो उद्धार
 तेने मंत्रंगी कार करे ॥ जैसे सुसर्मा के
 बचन सुणिक रणदः सासन शकुनी पा
 प बुद्धि ते दुष्ट गेह स्व विचार सुणि कि
 यो ताहि विचार कों अंगीकार कियो ता
 हि सुणि भीष्मादिक नने निवारण कि
 यो सादुर्यो धन मानी न्हा ॥ सुसर्मा कों बु
 लाइ कही आजि दक्षणा दिसा कों जायतु
 मगोहरण करे ॥ प्रभात कालि मेह सकल
 सेना सहित उत्तर दिसा की गोहरण क
 रोगे ॥ जैसे दुर्योधन की अग्या ते नगर्त
 नाथ विराट नगर ते दक्षिण दिसा की स
 कल गोहरण करि फिस्यो वाही दिन ध
 र्म नंदन कों अग्या तब र्स समा सुभयो ॥
 ता दिन ही सकल वाल को लाहल कर
 तरा जा विराट सों आइ बोले की चक
 न सों पराजय पायो हो सोही अगर्त ना
 थ आइ अपार सेना सहित गोहरण
 करि जात है ॥ जैसे सुनि विराट राज अ
 ष्ट सहस्र रथ ८००० एकलक्ष अश्व
 १००००० दससप्र १००००० सुवर्ण

धरकारमाइतगज असंघ्यातपेदलस
हितराजायुद्धको चलतकंककोधुजप
ताकासहितरथदियो तबकंकबोल्या
हेमहाराजबध्नवहअनेकबारजातेहे
तातेपाहकोयुद्धजोगपरपदीजे जैसे
सुणिवध्नवहकोदिव्यरथदियो अरु
सपसरमदरोश्वपुत्रनकरियुक्तविरा
टराजासेनासहितसुशर्माकोगोहरण
करिजातदेष्या तबसुशर्माहगाइनकी
रक्षाकरिविराटसोपुद्धकरिबेकोफिस्य
जबहोऊसेनासहितयुद्धकरतभये त
हाइजसेनाकोरुधिरलिप्तदेषि संग्रा
ममेंअसंघ्यातअश्वरथगजपयादेनको
षडषडकरिअनेकसधिरनदीप्रगतक
री तहासुशर्माविराटकोविरथकरिम
र्कितकोरथयेंबाधिलेचल्या अरुगोध
नकोआगेकरिविजयकेबाजाबजाये
इतैविराटराजाकासेनाभाजतदेषि
धर्मनदनभीमसोकही हेभ्रातमत्स्य
राजआपनेदेषतसनुनकेबसभयो
सोयहजोगपनही जैसेकहियुधिष्ठिर

बाणनतैसहश्रवीरमारो भीमसातसे
 रथीमारै नकुलसहदेवसहश्ररथीमारै
 अरुभीमहतेरहवरससोंकहदिनसि
 वाइगयेजाणिरथसोंकदि सरलब्रह्म
 उपाडितातेंअसंघ्यातवीरनकोमारै त
 ब्रह्महकौहि नदेधिगजसोंगजरथसे
 रथअश्वनसोंअश्वचूरणकरत सुषा
 र्मापासपहुचि ताकीबाणधारासहिदि
 रथकरिकेसथकडिबाधिलियो अरु
 विराटकौंकुडायन्नगत राजकौयुधिदि
 रपासल्यार्यसिरछेदनकरिवेलग्यो त
 बसुसर्माकहीहेधर्मनंदनमेंतैरोअमो
 ल्यदासहों भीमतैमेरेप्राणबचावो
 असेकहतेसुसर्माकौसिरमुंडितकरि
 युधिष्ठिरकीअभ्यातेंकोश्रो जबसु
 सर्माजीवबचायनगरकौंगयो भीम
 सेनमूर्च्छितविराटराजाकौरथपैच
 दायचैतकराइबो ल्यो हेमहाराजतु
 म्हारोसनुन्नगत राजजीवबचाइनाजि
 तुम्हारोविजयभयो

एषा असे सुविचारात् भूपकं कवचव
कौं सरवश्वदेकरि चरणप्रणामकरि
ननकौं नगरमेंने जि विजयकहा इरात्र
कौं तहां ईबास कियो इति श्रीभारतसार
चंद्रिकायां विराटपर्वणि तृतीयोऽध्यायः
वैसं पायन उवाच तापीछे प्रभातही
गोपालन कौं नायक जननीयास उत्र
रकुरमार कौं देषिगदगद्वाणा सौ बो
ल्यो हे राजकुमार राजा दुर्गोधनसक
सेनासहित आय उत्तरदि सात्रेंगे हरण
कियो महाराज तौरदि सावोरगो
धन बुझायवै कौं गयेहे तातें तुमहीर
ताकरो असे सुणि मुज दंडन कौं निष्प
तहें सिमा ताके समीप बो ल्यो जब लो
नेरे बाण चलत नही तब लो हे गोपालस
बुहर्षितहै जो मेरे जोग्य सारथी होइ
तौ मैं हूँ द्यौं धन कौं अर्जुन लो भयभीत
करो असे सुणि सुदेसा बोली हे पुत्र
उत्तराके पास ब्रह्म नदा है सो षांडव शाह
समै अर्जुन कौ सारथी नयो हो सोते
रो सारथी हो वै जोग्य है जो वरु मेरा क

घो नही मानै तो उत्तरा कौ भेजौ या कौ कस्यो
मानैगौ ॥ अैसे सुणि उत्तरा कौ भेजि ब्रह्म
टा कौ बुलाइ बहुत जतन तें सारथी पणो
कबूल कराय कुमारिकान के हाथ सुवर्ण
मयक वचपहराय उत्तरा बोली हे ब्रह्म
न्तरा उत्तर कुमार कौ सारथी होइ कौरव
न कौ जोति मेरी पूतलिकानि मित्र चित्रदि
चित्र बल्ल्याइयो ॥ अैसे सुणि सारथी हो
इ ब्रह्मन्तरा उत्तर कौ रथ पै चढाय तुरंगन
कौ बेग तें चलाये ॥ अरु सत्रुन की सेना
देखिस मसान समीप समी ब्रह्म निकर जा
य विराट नंदन ब्रह्मन्तरा सौ बोल्यो हे ब्र
ह्मन्तरा अ संघातरथ गज तुरंग पद लन
सहित भयानक भीम शैल कृपाचार्य अ
श्वत्थामा कर्ण दुर्योधन सुकुत दुस्सास
न इन वीरन तें भयंकर सैन्य साग देखि
इद पकंपत है ॥ तौ तें जमपुरी के मार्ग
तै रथ कौ फेरो ॥ अैसे सुणि भयभीत उ
त्तरा कुमार तें ब्रह्मन्तरा बोल्यो हे राजपु
त्र संग्राम में काय रता करि आजन्म प
र्यंत अरु वीरन की सभा में लजाय मान

0 होयगो कीलितौयुगांतपर्यंतस्थिरहै देह
तोज्ञाणभंगुहेयातैधैर्यधरोनिजकुलको
कलकनलगावौ सरीरकौसखप्रहरा
सोजर्जरकरे विनानंदनबभनमैदेवागना
नकोबिहारदुर्लभहै माताभगनीस्त्रीजन
केश्रागैजैसीप्रतिज्ञाकहीमैदुर्योधनको
जीतोगोसोअबभाजिकैलजायमान
होयजीवैकौधिकारहै जैसेसुणिधनु
षकोडिआलुकविशटपुत्रबोल्पो मरेपी
कैकीर्तिकहायुषदेय स्त्रीजननकेनिक
टनिजभुजबलवर्णनकोएनहीकटतहै
अनेकसखप्रहारकरिप्राणहरणवारो
अइकोणकरे शैणभीष्मकृपकर्णअश्व
थामादुर्योधनादिककोवरवाणवर्षाक
एतइइहकोसभयकरे जैसेकहिसुख
मुषहोयनासपायरथतैकदिनज्याता
कौअहअटापकडिबेकौदौग्रा तिनको
देषिकौरवबीर अटाटहासकरतबोले
भाजतेराजकुमारको अरुणवर्णस्त्रीभि
सधरै विषरैकेसदेषिकहीयहनटसो
कौणहै दोसुपिद्रौणकृपभीष्मपरस्य १५

खोले स्त्रीविषयस्त्रिगुप्तमूर्तिगजेन्द्रगतिमहा
 भुजयह अर्जुनही है। बाणवर्षासमयमें वे
 षकोड़ेगो। जैसे ही अन्यवीर हूकोतिकदे
 धिवेकोनिश्चलभये। केसगहै चतीवह
 नटासोउत्तरदीनहोपबोल्पो। मैंतोकारण
 अश्वगजमणिमाणकभूषणइयेछिद्रा
 गो। जैसेजीवतोजननीपैपहुचौतैसेकरि
 मोकोंगोधनसोप्रयोजननही। जैसेसुणि
 वहनटाबोल्पो। हेराजकुमारजोसत्रीस
 त्रुकीहरीगाइनकोंछुडायेंविनाप्राणन
 कीरहाकरैतोवाकोंधिक्कारहै। जीवतअ
 पकीर्तिहोइमरेनर्कमेंपड़े। सत्रुनकोना
 सकरिगायनकोंछुडायजीवैतोताहीको
 जीवोसफलहै। नहीतौरणमेंमरणपाप
 सूर्यमंडलनेदित्रहलोकजाय। जैसेमरण
 श्रेष्ठहै। जैसेसुणिउत्तरकुमारबोल्पो। गी
 तबाइरनत्यमैनिपुणजैसेनपुंसकेसंगतो
 रणमेंप्राणहीजाय। अरुगोधनअवैन
 ही। जैसेनीतिविरुद्धकर्मकोंणकरै। त
 ववहनटाबोल्पो। हेराजपुत्रमैअर्जुन
 हो। जबउत्तरकहीमैअर्जुनकेदसनांस

सुणहसोकहो तववृन्तटाबोसो बीभ
त्स फाल्गुन किरीटी जिह्न ऋक्ष अर्जुन
विजय सबसाची धनंजय स्वितबाजी
असेमेरेदसनामहे तवउत्तरकही इन
दसौनामकोकारणकहो जबअर्जुनक
ही सबदेसनकोजीति धनलायो तातैध
नंजयकहायो संग्राममेंमहावीरनकोजी
तोयातैविजयनामहे अरुमेरेरथकेघो
डाधुपेदहैजासौस्वितबाजी फाल्गुननक्ष
त्रमेंमेरोजन्मनयोतासौफाल्गुनामहे
दानदनतैजुधकरतैइइकिरीटीदियोयाते
किरीटी संग्राममेंनिदितकर्मकरौनहीता
सौबीभत्स इहंहाथनतैबाणचलाऊंया
सौसब्यसाचीकहैहै सबप्रत्थीमेंमेरो
जसउज्जलकर्मकरौजासौअर्जुन इइको
धुततासौजिह्न मेरोद्वामरगदेपिपिह
नानैऋक्षनामधस्यो अरुयुधिष्ठिरकं
कहै बभ्रवभीमहे अश्वपालनकुल
के गोपालसहदेवहै तैरंध्रीद्रोपदीहै
अरुहमारैसबसर्वसमीचुत्तमेंधरैहै
एवइतनामसंयहै अर्जुननाम

सहे गाड़ी बधनुषहे ताते अबतु मेरो सा
रथी होय मेरी बाण बर्षाते के रवन को भाज
ते देवेंगे जैसे सुणि हर्षित उत्तर कुमार
जुन की आग्ना प्रमाण सारणी होय अश्वन
को चलाये अजुन को रथ पे सवार होत ही भू
तन की पंक्ति सहित हण मान अजुन की धु
जामें प्राय प्राप्त भये तिन के दर्शन ते अजु
न हर्षित होइ पर्वतन की गुहान को बिदारत
दिगाजन के कर्ण तालन को निश्चल करत
सर्पन के नेत्रन को मुद्रित करत देव दत्त संघ
को बजावत भयो ताको सुणि भय पाइ को
रवराज सकुन सो बोले स्त्री तो रथी है बा
लक सारथी है संघ की धुनि अति भयंकर के
सै होत है जैसे सुणि सकुन बो ल्यो गोध
न की हानि भयतै विराटराजा संधि करिबे
को कन्या मे जी है ताको अंगीकार करिये
यथे कृ बिहार करिये जैसे वाक्यन सो ह
र्षित भये दुर्योधन सो शोणाचार्य बोले है
दुर्योधन होणहारदारुण युद्ध के कारण
असे असे अपसुक्र होत है
तो ममलिन भये

निर्घात होत है अथ्व न कैं अशुपात हो
इहो वीरन के इदय में कंप अत्तलत
जो बृष्टि होत सूर्य निस्तेज होत है ताते अ
र्जुन बिनाया सेत सागर के सन्मुख को ए
आचौ यह क्रोध रूपी अग्नि में कर सेना को
पतंग करि दारै भो किरातरूपी शिव को
एदेषि बेचारे मद्ये नमत्त निबत कवचन
के मारि बेचारे हिरण्यपुर दासी अघ्रासी
हजार कालिके मदेत्यन को विदीण कर
न चारे अैसे अर्जुन न देवाण युह निमि
त्यन्य करत है अैसे सुणि दुयी धन भी
असौ बोलै है पितामह विराट सो ए इ
करतें आपन सो ए इ करि बेको अर्जुन
कैसे आवैगो अरु आवैतौ आपुने क
हाहानि हे फेरि बब बास करैगे अरु
एके प्रारंभ में परकी लु ति करै अैसे गु
रु शोण को कहा कहै असे सुणि भी अ
बोलै हे दुयी धन प्रतग्या के बस नतें ए
कमास अधिक बितात नयो हे असे सै
बाद होतै ही अर्जुन देव दत्त सेषकी धुनि
किये पीके सारि न न न न न न न न न न

करि दिव्यास्त्रनको ध्यान करि सो सुणि नी
 बोले यह अर्जुन युद्ध निमित्त गांडी वधनु
 को सज्ज करि टंकार कियो है या की धुजा
 में हनुमान विराजे है सो सहाइ कहें तातें
 संधि करि जगत को निर्णय करौ अैसे सुणि
 दुर्योधन बोले या सो संधि तो मैं कदाचि
 त ही नही करौ अैसे वचन सुणि भीष्म दे
 व बलवान मानि बोले हे सुभद्र होतु मला
 वधान हो अर्जुन सो युद्ध करैगे चतुर्थ
 ससेना गोधन ले पुर को पहुँचावो अरु तै
 सें ही दुर्योधन ह चतुर्थ ससेना ले जावो
 सेवकन को जैसे तैसे स्वामी को वा जा
 मित्य जुद्ध होय ताबस्तु को रक्षण हीरण्य
 विजय है अरु शोणादि कबीरन सहित मैं
 अर्जुन को रोको गो यह सुणि दुर्योधन भ
 यभी तहो इतै सें ही करत भयो ताको बेग
 तें जात देषि अर्जुन बो ल्यो हे उत्तर भयपा
 य दुर्योधन गो धन ले हस्तना पुर जात है इ
 नके गये पीछे युद्ध ब्रथा होइगो तातें या

वो अैसे सुणि उत्तर कुमार

प्रचनाय दुर्योधनको मार्गरोको तब अ
र्जुन दुर्योधनको भयभीत देखि बोल्थो हे दु
र्योधन रणको तजि चंद्रवंसको कलिकत
को करे हे प्रथमतो जोहरण कियो अब
जुद्धमें मोसो भाजे हे सो जो ग्यनही मै धनु
षधारी इकलौत सत भ्राता बहु बोरन सहि
तताको जैसे समय दुर्लभ हे ऐसे ह्वच
वनको अनादर करि भाजते दुर्योधनको
मार्गरो कि जुद्धको तयार अर्जुनको देषि
भीष्मादिक सकल वारर चाको आये त
हासकल के रवनको सामिल देषि हर्षि
त अर्जुन देव दैत्यनको कंपकारी देवर
त संषकी धुनि करि ब्रह्मांड मंडल बिहीर
ण करत सो भासत भयो परवार सहित
हनुमानकी गर्जना तै लोक प्रलय ही मान
त भयो तासमें अर्जुन धनुष टंकार किये
सो सुणि गोधन उच्च पुङ्क करि अर्जुनको
नमुष होइ बिराटपुरको गयो अरु अ
र्जुन दुर्योधनको देषि शोषदी के के सपौ
बके रोसतै अपार बाण धारा वर्षत इंद्र

यमंडलकोंटापिदे इतनेबाएनकोबर्ष्य नि
नबाएनकोसकलकोरववीरकाटिनसके
बहइकलोसकलकोरबनकेबाएनकोका
टिबीरनकेरथ अश्वगजयोधानकेअंगन
मेंअसौकोऊनरहोजाकोअर्जुनकेबाएन
ब्यथानकरी अरुजैसेएकहीकेसरीस्पघ
अपारगजघटानकेमदुकौहरकरे तैसेए
कहीअर्जुनसकलबीरनकोमदहीनकरिनी
अकेमुषकौदेपिदोयबाएचरणमेंदिये पा
चबाएशोणाचार्यकेचरणनमेंदिये तीनबा
एकपाचार्यकेचरणनमेंदिये सोबाएन
हीकरिउनकोडंडोतकरी औरसकलबीर
नकोबाएनकरिब्याकुलकरि गजनकेकुं
भस्थलविदीर्णकरि समरभूमिकोमुक्ताम
यकरी बाएबर्षातेदुःशासनादिकनको
बाएप्रहारतैचित्रलिषेसेकिये जैसेस
र्योदयतैतारामंडलदुतिहीनहोय तैसेस
बहीदारभये जैसेपराजयदेषिजयइ
थआदिसर्वहीवीरसामिलहोइ अर्जुनसो
जुहकरतभये इकलोअर्जुनसकलबीर
नकोअनेकरूपधारियुहकरतहीसतभयो

सबनका मरणमे निश्चैदेषि अर्जुन करुणा
रिसंमोहनास्त्रसौ सबबीरनकों निशबस
किये तातें सकलबीरबाहनतजिअधोमुष
होयप्रथीमिंगिरे तवअर्जुनउत्तराकोबच
नसुमरणकरिउत्तरकुमारसोबोल्योहेए
जपुत्रदुर्योधनकेकदलीरंगकर्णकेसुवर्ण
रंग औरदारुनकेअनेकरंगकीबागहैते
उतारिल्यो औरभीषसोवेनहीहैशोणाचार्य
कृपाचार्यहकोंतैसेहीजाणिनुमस्कारकर
रियो जैसेसुणिउत्तराकुमारथतेंउत्तरिस
नुसेनामेंजापबस्त्रहरणकरिफेरिआपसा
रथीहोयपुरकेसनमुषचल्यो तापीकैस
कलसेनासचेतनई जबभीषबांणचला
ये सोदेषिअर्जुनतिनकेरथकेअश्वमारि
दुर्योधनकेकिरीटकोंअंगुयेउकरिसस्त्रन
कोंफेरिसमीब्रह्ममेंधरिविराटपुरकोंआ
ये॥ इतिश्रीभारथदारचरितकायंविराटपर्व
णिचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥ वैशंपायनउवाच॥
राजाविराटविजयकरिनिजनगरआयेत
हांबृहन्नदाकोसारथीकरिउत्तराकुमार
भीष्मादिकबीरनसोजहकरिनेकोंसोये॥

णिदुष्यतभयो अरुकंककहर्षितभयो तबरा
जाविराटपुत्रकीसहाइकरिवेकौसेनातपा
रकरैहो जितनेहीहलकाराननेशायउत्त
राकुमारकेविजयकोषवरिदीनी तबरा
जाहर्षपायनगरमेंउत्सवकरायककसो
चोपडियेलिबेलगो तहांविराटबोलेहेफं
कसेनाबिनाहीउत्तरकुमारभीष्मादिकन
कोंजीतिगोधनकोल्यायो सकलकोर
वनसोंविजयपायबेवारोउत्तरसमस्त
शोरबीरहैहीनही जैसेसुणिकंकबो
ल्या महाबलपराक्रमीबहनटात्रहांजा
यतहांविजयमेंसंदेहकहा जैसेसुणिवि
राटकंककेलिलारमेंपासाकीदई तहां
तैरुधिरधाराचली तबयुधिष्ठिरविचार
मेरुरुधिरपातकप्रथामेंदेखिनीमवा
अर्जुनयाकेकुलकोनासकरेंगेसोजा
केघरमेंएकबर्षबसेताकेकुलनासन
करणो जैसेबिचारिहायनमेंरुधिर
कोंधास्यो तहांमालनीसीघ्नग्रायसुव
र्णपात्रमेंकंककोरुधिरलीनो ताहिदे
धिराजाविराटक्रोधकरिमालनीसो

बोले हेमालनी कंकको रुधिरसुवर्णपात्र
मैधारिबौजोयनही तबमालनीबोली हे
राजेंद्रब्रथाक्रोधतकरणो यको कारणसु
हणों कंकको रुधिरजादेसमेंगिरे तहादु
र्नित्तअनावृष्टिअकालमरणभयहोइ अ
सैंकहिनिजस्थानगई तापीकिंनगरमें
आवतअर्जुनउत्तरसोकहाहमकौतीनदि
न औरभीप्रगटहोएणोंनही असेंइटसी
जादेयउत्तरकौरथीकरिआपसारपीर
होयराजद्वारआवतभयो तापीकेराज
द्वारपालकेसुषसोंबिजयकरिबृहन्नरा
सहितउत्तरकुमारकौआयोसुणिदोऊ
नकौसीअनिकटबुलाये तबकंककही
मैरेसरारतैरुधिरकाटिवेवारेकौकुंठंब
सहितजमलोकपठावैहै याकारणतै
बृहन्नराकौभलियावैउत्तरकुमारहीकौ
लायो असेंसुणिद्वारपालइकेलेउत्तरकु
मारहीकौसभामेंल्यायो तबकंककेलि
लाहमेंरुधिरदेपिउत्तरकुमारपितातै
पूछी यहकर्मकौणनैकल्या जबराजा
केसुषतैपूर्वअज्ञांतसुणिवेल्या हेराज

इन्द्रस्य एनकौ श्रेष्ठो क्रोधकराय वै जोग्य न हि इन्द्र
नको प्रणाम करि प्रसन्न करो ॥ त्रैलोक्य पुत्रवच
नतै राजा कंक कौ प्रणाम करि प्रसन्न करत
भयो ॥ सकल लोक नको कोप करि भस्म करि
बेसमर्थ त्रैलोक्य कंक हलिलाट में पाटी बांधि
समावां नन में सिरो मेणि भयो ॥ तब राजा कंक
कौ रुधिर गुप्त कियो देखि बह नटा हू कौ बु
लायो ॥ अरु पुत्र सों कही ती न्यो लोक नको र
जीति बेवारे त्रैसे भीष्मादिक वीर नको तुम
एक लेही कै सै जीते ॥ तब उत्तर कुमार कही
हे महाराज को इदिय पुरुष मेरे पुत्र्य के
प्रभावतौ ॥ सहाय करि सकल सन्तान कौ जी
ते ॥ सो दिन तीन पाँके प्रगट होइ गो सो सु
णिराजा प्रसन्न भयो ॥ इति श्री भारथ सार
चंद्रिका यां विराट् पर्वे एवंच मो ध्याया ॥ ५
बैसे पावन उवाचा ॥ तीसरे दिन प्रभात ही
स्नानादिक कर्म करि निर्मल वस्त्र धारि
राजा युधिष्ठिर कौ अग्र करि भामादिक
चारो भ्राता विराट् की सभामें आय सिंघा
सन पेयुधिष्ठिर कौ बैठा य आप आपकी
ठोर सकल भ्राता बैठे यह सुणिराजा कंक

तत्र यो जव उत्रर कुमार के मुख सों संपू
ब्रतांत सुणि सीघ्र आइ महारा जायुधि
रके चर्यन में प्रणाम करि बो ल्यो हे महा
जमेरे स्वामी माता पिता ईस्वर तुम हो मे
ठहासके सकल अपराध क्षमा करोगे त्रै
कहि चर्चान में गि ल्यो ताबिराटको भीमादि
कच्यारो भ्रात उठाय आसन पे बैठायो जब
विए टक ही में देस पुरी परवार सहित आप
के संगतें पवित्र मन्यो अरु अपराध क्षमा
कराय वेको अर्जुन के निमित्त उच्चैतराक
न्या कौ इतहों सो ल्यो तब अर्जुन कही आ
पकी पडाई कौ कुमार कौ पुत्री समान मा
नत है अरु तुमको अति ही आग्रह होय
इतौ यह कन्या मेरे पुत्र अनिमन्य कौ दीजै
त्रैसे सुणि ब्राह्मण तें विवाह लग्न को निश्च
करि अनिमन्य के बुवा पवै कौ इतहारिका
मेन्या सो सी प्रथी कल के द्वार जाय पहचो
तब इतको द्वार पालके मुख तें आयो सुणि
श्री कल सभामें बुलाय सकल ब्रतांत प
रु तनये जब इत प्रणाम करि बो ल्यो म
हारा जयुधि शिर भ्रातान सहित गोप्यता

ससमाप्तकरि गोहरणसमैदुर्योधनको आदि
देसकलकौरवनको जीते जबराजा बिराट उ
त्तराको व्याह अर्जुनसो कसो तब अर्जुन कह
मंपदाई तातैं कन्यासमहै तब अनिमन्यसो
ठहराय तुम्हारे पासमो कौ भेज्यो है मातैं हे
जगदीश्वर सुभद्रासहित अनिमन्यको भे
जिये आपयाके मामाहो तातैं विवाहको नि
मंत्रणपत्रतुम्हको पठायोहै जासो आप
हपरिवारसहितचलो उत्तरके विवाहमें
प्रसन्न अनिमन्यको सो भायमान देख्यो जैसे
सुणि श्रीकृष्णसब अंगीकार करि हलकौ निज
बस्त्र आभूषण उतारिदिने पीकैं विदा कियो
अरु अनिमन्यको उडवतैं नीतिसिद्धादि वाष
निपुण जानि दिव्यारुद्रविद्यापठाय असव्य
अश्वगजरथययादेन सहितसेनासंगदे
य बिराटपुरको पठावत नये सो अनिमन्य
को आगमन सुणि हर्षितहोय बिराट पांडव
सहितसकलसेनासंगलेयकुमारकेसनमु
षगये जब अनिमन्य महाराज युधिष्ठिर
को देखितुरंगतैं उत्तरिसाष्टांगप्रणाम करी
पीकैं भीमादिकनको प्रणाम करि

प्रणामकरतभयो॥ फेरिउत्तरसोंश्राव्यंगनव
रिमिलतभयो॥ फेरियुधिष्टिरकी आज्ञातैतुरे
पेसवारहोय परसहर्षतैउत्सवसहितविरा
कौनगरतामै प्रवेशकरिपांडवसहितराज
दिरमैवासकरतभये तिसैंही हतमुषतेसु
णियपरिवारसहितसिपंडी भ्रष्टघुम्नअरुस
कलसेनासंगलेयराजापुपदहआयो ता
हकोसत्कारकरिआयो॥ तापीकेभाणेजकेवि
वाहमें अपारइव्यगजतुरंगरथवस्त्रअल
कारसामग्रीदेवैको बलदेवउडवसात्व
कीअकुरादिकमंडलीसहितश्रीकृष्णहोआ
ये तिनकेसन्मुखयुधिष्टिरादिकसर्वराजा
जायपरसआहरतैमिलि राजायुधिष्टिरस
वैप्रतांतनिवेदनकरिनगरमैल्यायविवा
कौउत्सकरतभये राजाविराटगणपति
पूजनादिकसकलकर्मकरिसुभमुहूर्तमें
वस्त्रअलकारसोंमंडितकरिउत्तराकैव
एपूजनकरिपाएग्रहणकरवायो तापी
कै राजाविराटवस्त्रअलकारगजअश्व
अधनरत्नदासदासीदेय अरुबरकीसा
यैआयेश्रीकृष्णबलदेवउडसात्वकीइपरा

रिकनकोंपूजा ॥ असंख्यभक्तनोज्यादिकनसो
 तसकरिसुंदरवरकन्याकोसंज्ञोगदेषिरा
 जाबिराटआतसाकोंकतार्थमानतभयो ॥
 तापीकेअभिमनुसकलगुरजननकों
 प्रणामकरि ॥ ब्राह्मणतै ॥ आसीबीदयापनि
 जनवनमें आपसुभशकोंप्रणामकरतभयो
 सुभशहूबधूसहितपुत्रकोंइदयमेंलगा
 यआनंदमान्यो ॥ इपदीहसुदेवाराणीतै
 मनमानपाया ॥ पुपदकेदिये बस्त्रअलका
 रनसोंमंडितहोइपुत्रकोंबधूसहितदेषि
 आनंदसहितहोइयविप्रनकोंअनेकदां
 नदेतभई ॥ अरुनगरीमेंगीतवाद्यउत्सव
 अपारहोतभयो ॥ दोहा ॥ भाषाभारतसार
 यहपर्वविराटप्रमान ॥ रावचांद्रस्यघकेसु
 कमकियेसुकविसुघदान ॥ ४ ॥ इतीजीभार
 तसारचंद्रिकाकां विराटपर्वणिबष्टमोः प
 य ॥ विराटपर्वीणिमा ॥ ॥

॥ अथ उक्तो गणपति विष्णवे ॥ वैशाखाय नमो वाच
असैः अनिमन्यको विवाह करि पांचौ पांडव
सब लदेव दुपद दोपदी मंत्र करि बेंकौ बेंठे
तहो पुष्टि धिर बोले हे कृष्ण तुम ह मारे ना
थहो हम बारह बर सब नवास कियो ए
क बर सबि राट नगर में अग्यात वास करि
प्रतिज्ञा पालन करी ॥ यह चौं दहौं बर सहै
अब कहा करत ब्यहै बांधवन के साथ वि
रोध सों जय परा जय में पहचंड बंस सूरबी
रन सों रहित होइगो अरु उन कौं जीतेंगे तो
अपकीर्ति होयगी जो धतरा एह म कौं पां
च गावधी देतो जुद्ध में कलस काहे कौं करे
अरु यह प्रथमी कौं तो बहुत भोगे है यातेंग
एिका समान है अरु नाग्य हीन पति कौं छे
दिभाग्य बान सों रहत होयहै तातें यामें प्राति
करि पातक कौं करणें वेसो बांधव सुषीर
हो हम पांच दुषी ही रहेंगे असै सुणि दुप
द बोले अलेतन का एह में अति घर सणतें
अग्नि प्रगट होतहै अरु अिसि अपमान पा
पक्षमा करौं तेन कौं नीतिको उपदेस कहा
कहि ये अरु नीतिके जाणि बेवारे तो अप

धराधीगुरुनहकौमारैहै जैसैश्रिहोत्री
घरकौजलावतैश्रिकौबुझावे यातैएक
नीमहीकीगद्यप्रहारकरिवेतैवसिहोय
जैसेबैरानपेतुमसगीसधर्मत्माविनास
माकौणकरै जैसेसुणिश्रीकृष्णकोले
र्मकेसारवचनतौराजायुधिष्ठिरकहे स
रबीरताकेसार जैसेवचनइपकवर्त
अवमैकहाकहोलोहसुणों पराक्रमवि
नातौनीतिरंडाहै अरुनीतिविनापरा
क्रमतिथ्यकहे येदोऊहीवीर्निकपी
नार्याकौप्रगटकरैहै सरनारनासु
हितनीतिसकलगजालकेबसकरि
वैकौकाइएहै तातैयहानीनिदीबुधि
येजोअंधकेपुच्छनीतिहोअलीकाबुध
रेतौ जैसेश्रीकृष्णकेवचनसुणिलेज
लालकपड़ोपदवोली नीतिनुमागैय
रूपपडो बुद्धनपदो मंत्रनुमदगिगाना
अकौजावा अरुसंघनुमागैलापकौ
यावा अरुसोकेसदसुनवोलेअरु
देषिजमावतीनानुनारीइदरुअरु
येइदयकोलईपदो तातैयातै

जाबेरीनसोंसंधिकरौ मंतौ प्राणत्यागक
रिबेको अग्निमेंपरोंगी जैसेबोलताशेष
दीकेनिस्वासपवनतैभीमकोंक्रोधरूपा
अग्निप्रज्वलितभयो तबभीमभकुटीको
चदायहोठनकोडसतबोल्यो बाललीला
मैंमोकोउननेबिसदियो अरुलाजाग्रह
मेंअग्निलगायोसोमेरेद्रुदयकोअबलौद
हैहै अरुदोपदीकेकेसपकडेदेषेपकि
अबलौनिशानीआवेहै जोलौदुःशासन
केद्रुदयकेरुधिरनहीपीवोहौ अरुद्रुय
धनकीजथाकोगदातैचूर्णनहीकरौ
होतौलौमोकोधिक्कारहै अरुसत्रकर्म
करिमंदराजाजितनैसंधिकरैतितने
गदासोंमैंबेरीनकेपंडुपंडकरिप्रस्थीमें
घरकोंगो जैसेकहिप्रस्थीपैहाथनके
परकिभीमगदालेउभौ तबबलदेव
ऊभुजांतैपकरिबोले हेभीमतबलव
दिकरिजगतकोंजीतै तोहूबेकलीबली
सेहैसोजीतेनहीजाय अरुबडेनक
आग्नाहउलंधनकरिबोजोग्पनहीत
युधिष्ठिरकेबचनमोनिबोयोग्पही

अरु वेह तो ही सिरी से गर्बित हौं संधि को
 न मानै हौं ता तेरो सके बस हो पायो गण
 ही रण के निमित्त सेना इकड़ी करणी अ
 रु वेरीन के पास यथार्थ बादी हूत भेजयो
 असे सुणि सब ही विचार करि संधि बानु
 इइ न दोऊ निमित्त दुपद पुरोहित को ध
 तराए पास पठायो अरु सेना से चय करि
 बेकी आग्य दे करि श्री कृष्ण हरिका गये त
 व पांडव हरण निमित्त राजान को बुला
 वत भये तेह पांच पुत्र सहित पांचौ जवा
 इनकी सहाइता करि वेकोरा जा दुपद ए
 क अज्ञोहणी सहित आयो अरु बिराटरा
 जाह्य परिवार सहित एक अज्ञोहणी संग
 ले आयो अरु सात्यकी पादव पहली शेष
 अज्ञोहणी आई ही तिनमें आयकी अज्ञो
 हणी मिलाय त्रिबेणी करी और धृष्ट
 केतसि सुपाल पुत्र जरासिंधु पुत्र सह
 देव एक एक अज्ञोहणी लेके सामिल भ
 ये और माहिष्मती पतिराजानील के क
 य देस के राजा पांचौ भ्राता व मपुत्र
 अरु कुतभोज श्रेणि मानसि वि

दिले और हूँ अनेक देसन के राजा मिलियु
धिष्टिर कौंसम अहो हणी पतिकियो अरु
श्री कृष्ण के ल्याय वै कौरुयो धन अरु अर्जु
न दोऊ एक ही समे में पहोचे तहां अंतःपुर
में श्री कृष्ण कौंसो वत देखि दुर्योधन तो तकि
या पास वैयो अरु अर्जुन यावन के पास
वैयो जब श्री कृष्ण जागि बैठे नये तब प
हले अर्जुन कौ देखि ता सो कुसल पूछि पी
कै त कियो कै कां धोल गार्ये दुर्योधन कौ
देयो तहां दोऊ ही जुद्ध में सहाय करि बो
साग्यो जब श्री कृष्ण दुर्योधन सो बोल
हे कौरवें इतु पहलें आयो पीकै अर्जुन
आयो परंतु पहलें इष्टि में आय अर्जुन स
हायता मागी पीकै तुम मागी सो एक
तरफ तो जुद्ध बिना में अरु एक तरफ मे
री एक १ अहो हणी सेना सो दोऊ न में
एक ल्यो अैसे सुणि कृत बर्मा सहित एक
अहो हणी सेना सो दोऊ न में सो एक ल्ये
अैसे सुणि कृत बर्मा सहित एक अहो
णी सेना ले प दुर्योधन हर्ष युक्त हस्तिना
आयो अरु अक्षय नै सारया पणो कव

कियो तब बैरी नको जीते मां नि अर्जुन पु
 छिर पास आयो ॥ शल्य पांडवन के पास आ
 वे होता कौरव धन सनमान करि आय
 पक्षपाती कियो ॥ यह वृत्तांत कहि बैकौ
 ल्य युधि छिर पास आय समाचार कहे ॥ यु
 छिर बोले ॥ तुम्हारी इच्छा होय तहा ही जावो
 कोरवन को पक्ष करत ह तुम निंदा बचन न
 करि कए को ते जनाश करो ॥ ऐसे अंगी
 करि शल्य दुर्योधन पास आयो ॥ अरु दुर्यो
 न पास और हराजा आयो ॥ जो मासुर को
 पुत्र भगदत्त ॥ सिंधुराज जयधरत ॥ अवंती
 पति बिंद १ ॥ अंबु बिंद २ ॥ दोऊ भ्राता ॥ श
 पति ॥ कृतवर्मा ॥ कोवोजराज सुदक्षणा
 सोमदत्त पुत्र भरही अवा ॥ ये सानौ बा
 संबंधी न सहित सात ॥ ७ ॥ अज्ञोहणी से
 नाले करि आयो ॥ और सब राजा मिलि च्या
 रि ॥ ४ ॥ अज्ञोहणी सेनाले करि आयो ॥ ऐसे
 दुर्योधन के गपारह ॥ ११ ॥ अज्ञोहणी सेना
 करि आयो ॥ ऐसे दुर्योधन के भई तब स
 नामें बैठो धतराष्टता के पास
 ने जो प्रोहित आय बच बो लो ॥

गायधिर्यहकहीहो में दूतकेकरारके
देनबितीतकिये अबप्रथ्वीकोविभागहम
हकोदीजे यहप्रथ्वीमेंदलकोएकसोचारि
१०४ भाइनसहितपालनकियोचाहतहो
प्रथ्वीएकसोभोगीजायनही कुलकेहोते
आएकौनभोगे तातैतुमबांधवनसोपूछि
मनमेंविचारिउत्तरदो जैसेकहिपुरोहित
सबनकीतरफदेघोतहोकोऊबोलेनही
तबभीष्मबोले भुजबलकरिसबविघ्नजी
तिविपतिसमुद्रकोपारपांडवननेपायोयह
आनंदनयो अरुमहादेवकोभुजबलसो
संतुष्टकरिबारे अर्जुनेआयो जैसेमहाप
राक्रमीपांडवहै तोहवेसंधिकहीकोचा
हतहै तातैउनकेक्रोधामिमेंजितनैप्र
थ्वीपतिपतंगकेकेनहीपडैतितनैहीकुस
लहै जैसेभीष्मकेकहतैहीकर्णभकेटीच
हाथबोल्या एणतैडरयेभीष्मभोगेजैसे
भीष्मकेकहतैहिसी पांडवहै तिनतै
भयतुमहमकोक्योकरिकहोहो प्रथ्वीमें
आरह अनंतबीरहैतोहउननिदुकनव
स्तुतिकरतलजानहीपावतहै अथवा

असमर्थपुत्रपिताको वापितामहको प्या
रेहोतहै तातेसमर्थको रवनकी निहाकरि
पांडवनकी स्तुतिकरोहो जैसे सुणिभीष्म
बोले हेराधेयकर्णपांडवनकी स्तुतिसुणि
तूको संतापकरेहै राजा विराटके गोहर
णमें अरुघोसजाश्रममें जुहु अर्जुनसो भ
योतहांतेरो पराक्रम देख्यो तोह तेरी निर्भ
यता धन्यहै जैसे भीष्मके बचने सुणिस
भासद सबहीहैसे ताते कर्णको मुषमलि
नभयो जबधतराष्ट्रबोले भीष्मपिताम
हजी बचनबोलैहै सो बसाग्रिबुजापवे
को जलहै पांडवनको तेजजगतको संघा
रकरिबेको समर्थहै तोह वेत्तमाकरेहै
सोयोम्यहीहै अबयाको उत्तरदेबेको सं
जयजावो उनको प्रसन्नकरो जैसे कर्ण
पुरोहितके संगसंजयको पणयो तबसं
जयउपलब्धनामक पुरमें मंत्रीमित्र
सहितराजापुष्टिदिरताके पासजा
पको नामकहि प्रणामकनो नबुद्ध
दिरकुसलपूकी तबसंजयके
की तुमकुसलचारो तब

नहीं होय अब महाराज धतराष्ट्र संदेसक
याह सो सुणो धूलि मई नमि की इच्छा करि
बांधवन कौ मोरे ता की कीर्तिके सँ रहे ता
ते तुम लक्ष्मी की बाँछा करि कलह मति करो
तुम धर्मात्मा हो जैसे सुणि पुधि धिर बोले
में धतराष्ट्र ते कबह कलह की वार्ता हन ही
करी तोह मासो जैसे को कहै है हाल तो गु
इको प्रसंगे ही नही पहलै बचन कहै है
ता धर्म ते वै ध्यो जैसे मेरो पिता धतरा
ष्ट्र प्रथी देही गो अरु जो पुत्र न के मम
त्व ते पर बस हो पन देय तो या कार्य मै श्री
कृष्ण कहै गो सो होइ गो जैसे सुणि श्री कृ
ष्ण बोले जो धतराष्ट्र जा पुधि धिर को
प्रथी को विभाग देतो शेष दी के के सषे
चिबे आदि और ह अपरा धन को सहै गो
अथवा इ प्रस्य १ यत्र प्रस्य २ माके
३ बार वाण बत ४ एक और को ई ग्राम
पाच द्वा इनको न द्यो तो नाम की गदा
जुन के बाण करै गो सो होय गो जैसे श्री
कृष्ण पांडवन के बचन सुणि संजय ब
करि धतराष्ट्र पास आय सब बुता तव

जबधतराष्ट्रसंजयकेबचनतैपांडवन
कोधर्मविवेकश्वरत्रविचारि चिंतायुक्त
होयविदुरकोबुलायसमाचारकहे सोसु
णिविदुरबोले हेमहाराजचिंताकरिव्याकु
लमतिहो संपत्तिआपत्ति अनित्यहे आ
त्मानित्यहे बेरीकोहरितैआयोदेषि स
न्मुखजूहकोहोयवेहीशूरकहावतहै यह
आत्माकोईकोहैनही भैमेरोयहअज्ञानी
नकोहठहै तातैपांडुपुत्रतुम्हारेपुत्रन
कोसमझिष्टिकरिदेषो जबधतराष्ट्रक
हो जोसमझिज्ञानविना होयनही त
तैज्ञानकोउपदेसकरो जैसेसुणिविदुर
सनत्सुजातमुनिको ध्यानकह्यो तबसत
त्सुजात आयराजाको ज्ञानकोउपदेस
कियो प्रभातसभाकरि दुर्योधनकोबुला
य संजयकोधतराष्ट्रकह्यो पांडवनके
समाचारसबहीकहो तबसंजयदुर्यो
धनसेबोल्पो राजायुधिष्ठिरतुमको
संदेसकह्योहै तुमएष्वीकोभारधास्यो
हमतीर्थनमेंभ्रमे अबइतनेकालतैतुम
कोषेदजयो सोअबवानारकोछोडो हम

मंचलेबेकोंहाजिरहें भीमकसोहै जोतुम
पृथ्वीनदोगेतोमेरीगदाकोभारसहो तु
सारेपरकोडगो अरुअर्जुनकही जोतुम
राज्यभाषनदोवोगेतोमैं कर्णकोमारिते
रेपासआऊंगो अैसेसुणि सिरधुनापभी
अधतराष्ट्रसोकही अतमेंपांडवकोअ
पमानकरिबनवासदियो तोहतोकोल
ज्ञानभई अैसेमर्षादाहीनतेरेपुत्रहैं तो
हपांडवतेरोमानराषिवेकोमर्षादानही
कोडतहैं उनकेतोपांडवसोत अरुतसो
पांडव अैसेआपमेंअरुतुममेंभेदनहीमा
नतहै अबलौनीतिहीमेंरतअैसेपांडव
नहोसंधिहीकरिवोयोग्यहै अरुउन
कोकोनजीतिसके जबभीमतेरेपुत्रनके
मारेंगो तबकर्णदिककेसैराबेंगे अ
सैनीभवचनसुणिकर्णबोल्यो अैसेन
सोमोतैरज्ञानहोयगीतोतुमहीकोरव
नकीरज्ञाकरो तुमअर्जुनकेसरसथा
सोवोगेतबमेंजुद्धकरोंगो अैसेकहि
धीतैधनुषधरिदियो अरुतैभीमारत
दुचोइकायोंहैअर्जुनकेसमयसोअप्या

विशं प्रायज्ञ उवाच ॥ संजय गयेपीठे राजा मु
धिरि कलहन होय जेसे ते संयं प्रीतिप
यानिमित्त दयायुक्त होय श्रीकृष्ण वारध
नके पास प्रार्थना करि पठाये जन्म श्रीकृष्ण
चलतै शोपदी सौं कागो राजामो वीस्य धिये ॥
निमित्त पठावेहें सो जाऊदं ननु प्रापरीत
ली हाथ में केस गहि श्रीकृष्ण देहि प्राय
बोली जव संधि करी ननु श्लोकें प्राय
रिली शो जे देह होय सो गीम रय वि
सेन सहित श्रीकृष्ण ननु दग्ध लपंगें
करति वंछिदं ननु प्राय देहें ननु प्राय
बाहिर राषिदं ननु प्राय देहें ननु प्राय
संदिग्धये विदुषं ननु प्राय देहें ननु प्राय
समुद्र में मारये पठे सो विदुषं देहें ननु प्राय
सपास लके निमित्त देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
बवानपदी जाहे प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
जन्म करेहें ननु प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
नुसने रे गरी प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
दिले जाहे ननु प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
मेरे घर जये ननु प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय
प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय देहें ननु प्राय

घर गोविंद आपैते पितर पिता महत्सभ
ये जैसे बिदुर बीनती करि अर्घ्य देपयां वधो
पचैरै रिकसिरये धास्यो फेरि नगवान
को क्षान कराय चंदन लगाय मिष्टान्न भो
जन कराय तांबूल देय प्रणाम करि बो ल्यो
श्री कृष्ण आपतौ जगत के नाथ को मैं निर
धन हो आपकी प्रसन्नता लायक कहा आ
निष्प करौ साक पत्र स्वाद अस्वाद जो
है सो अंगीकार करि न साकीजे जब श्री कृ
ष्ण बोले है बिदुर भक्ति तै बहुत प्रस
न्न हो साधून के दर्सन तै साधु संतुष्ट हो
तहै साधून के दर्सन महापुनीतहै सा
धु तीर्थ नहै तै अधिकहै तेरे दर्सन तै
मैं कतार्थ भयो जैसे सुणि बिदुर बो ल्यो
हे स्वामी मोको जैसे कहि बोजो गन ही
ब्रह्मादिक देव तुम्हारे ऐसे वैहैं मैं को
रतु ल्य जीव कहा जब श्री कृष्ण बोले हे
बिदुर मैं तेरी भक्ति तै प्रसन्न हो जो चाहै
सो वर मोतै मा गि तब बिदुर बोले हे स्वा
मी मेरो चित्त आपके चर्नन में जैसे अब
है तैसे सदा रहौ कदा चित्त हन्यारो मैं तिहो

आपके चर्णारविंदनमें अचलभक्ति सरारहो
आपकी रूपांतें और बाँझा है ही नहीं जब श्री
कृष्ण प्रसन्न होय तथास्तु जैसे कह्यो तापी
कैं एकरा त्रिबिदुरके घर बास करि प्रजातही
बिदुरसहित श्रीकृष्ण धतराष्ट्रकी सभा कौंग
ये तहां पांडवनके पठाये बिदुरके घर रहि आव
त श्रीकृष्ण कौं जाणि दुर्योधनसन्मुखनही ग
यो और भीष्मशोणादिक सबही सन्मुख आ
पसनमान करि श्रीकृष्ण कौं सभामें ल्याये त
हा श्रीकृष्ण सिंघासन परबैठे बिदुर पासबे
ठौ तब दुर्योधन बो ल्यो हे कृष्ण तुम कहतैं
आये रात्र कौं नके घर रहो अरु काहा काम
आये सो सत्य कहो तब श्रीकृष्ण बोले मैं
बिराटनगरतैं आयो बिदुरके घर रह्यो हा
ही भोजन कियो पांडवनको पठायो यह जा
ना जब दुर्योधन बो ल्यो हे कृष्ण भीष्म दुर्यो
धन कौं छोडि दासीपुत्र बिदुरके घर रहिके
सैं भोजन कियो तब श्रीकृष्ण बोले हे दुर्यो
धन तू भोजन पूरु है सो भोजन तो प्रातिसों
होय है अरु आदर
प्राण त्याग होतौ तलौ

प्राण त्याग वेकौ दुषतौ क्षणमात्र रहे अरुमा
नधंडनकौ दुषजिवैतौ लोरहे आदरतै ल्यापे
साकपत्रतौ अमृतसमानहै अरुअना रतै
ल्यायो अमृतहविषतै अधिकहै औरबिना
बुलाये घरजाय बिनापूकै बोलै बिनादियै
आसनपै बैठै तेपुरुष अधम कहियै तातै
अनादरके भोजन तै मत्पुष्टेष्टहै औरहा
लाहलपानतै प्राणनासहोयसोहष्टेष्टहै प
रंतुकुटिलबिमुषधनादरके घरभोजनष्टे
नहीं भोजनतै ब्राह्मणसंतुष्टहोतहै मय
रमेघगर्जनातै साधुपरकल्याणतै नीच
परबिपत्तितै संतुष्टहोतहै अधमतौकेव
लधनचाहतहै मध्यमपुरुषधनमान
होऊचाहतहै अरुउत्तममान्तौकोचाहत
है तातैउत्तमपुरुषनकेमानहीधनहै
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यसूद्रनमेंबिबेकही
सारहै कुलकरिधनकरिकहा कुलीन
मूर्खहनिदेहीहै अ कुलहीनपंडितहपू
ज्यहै कमलतै पैदाभयो ब्रह्मातपतै उन्न
महै तातैजातिकारणनही विस्वामित्रक्ष
त्रीकेजन्मपापतपतै ब्राह्मणभये रिष्य

श्रंगहिरणीतैजन्मपापतपतैब्राह्मणभयेमांडि
कमुनिमीडकतैजन्मपापतपतैब्राह्मणभये
अगस्तवसिष्टकुंभतैजन्मपापतपतैब्राह्मण
भयेशोर्णचार्यसुवर्णकुंभतैजन्मपापब्राह्मण
भयेतातैजातिकारणनहीब्राह्मणज्ञत्रीवैश्य
इनकोआचारहीप्रथमधर्महैअनाचा
रहैसोईअधर्महैऔरसत्यधर्मपरायण
जेश्रद्धहैतिनकेघरभोजनकरणोनातै
बिदुरबहुश्रुतहैयाकेघरभोजनकोदेस
नहीजोदिनदिनप्रतिपतिकेसंगबिहार
करिअग्निअवेसकरेतास्त्रीकोभीपुन्यया
पकोलेपनहीअरुपतिहयतिब्रताशेष
दीपतिकेसंगबिहारकरिनिप्रतिअ
ग्निस्नानकरेहैऔरपरनिंदानजाणेवि
शुभाक्तिमेंपरायणबितामैशुनपेदाभये
असेपांडुपुत्रहूपाबिन्नहैसत्यवादीज्ञान
वानष्टब्रतसर्वसास्त्रबक्ताअसेबिदुर
कोकोनउलंघनकरेजबदुर्योधनबोस्यो
मानरहितराज्यवाजीवनवाधनआ
बनीर्थकहैघोरवनमैबासनि
भोजनपरग्रहसेवाता

10. वननिंदीत है तब श्रीकृष्ण बोले हेदुर्यो
त राजा के बहुत काल भोगो चाहें तो मे
कह्यो करि पांडव पांच ग्राम मांगें है सो उन
दिये संधि होयगी जो पांच ग्राम हनदे गौत
यम लोक में जायगो जब दुर्योधन बो ल्यो
से बचन सो मैं डरो नही मेरे हभी अशोक
शुल्यदुःशासन आदि महाबली जो धाहें पा
इवन को बल शोपरी के बस्त्र हरण मैं देषि
यो तब श्रीकृष्ण बोले वे धर्म पर बस होयत
मा करी तातै नजियो अब राजा भाग नदेगो
तौ वे पांडव ह मान करैगे असे सुनि दुर्योध
न बो ल्यो इ प्रस्थ गुरु कौ दियो प्रव प्रस्थ
कपाचार्य कौ दियो बारणावत भीष्म कौ
दियो माकंदी कर्ण कौ दियो और हस्त नापु
में मे रह ह तातै पृथ्वी में स्नो ग्राम एक
नहा और तीषा सुई के अश्रु भाग करि जि
नी पृथ्वी विधे तितनी हि जुड़ बिना द्योन
पांचौ पांडव वे एक भार्यारत है सो मने
तुल्य है उनकी बार्ता मो सो मति कहो
श्रीकृष्ण बोले अंधको बेदान अंध
समाप आई मत्त

नके विनास आवैतिन कवि परीति बुद्धि
संही होय है राम चंद्र सुबर्ण को मंगरुपी
राजसजाणिलियो तोह सिकार गये राजा
नाहुष ब्राह्मणन को जाणिलिये तोह पाल
कामें जोये युधिष्ठिर हू लक्ष्मी कामें कुल
को जाणिलियो तोह नाना इनको हास्यो सो वि
पति आवणहार होइत बसस्य पुरुषन हकी
बुद्धि विपरीति होइ है ताते हे दुर्योधन रण
में बाण वर्षा करते अर्जुन को गया भ्रमा
वते भीम को देखे गोत बसव दृष्टी को को दे
जा असे श्री कृष्ण के कठोर बचन सुणि दु
र्योधन कहा या को बाधिल्यो यह अनर्थ को
मूल है असे सुणि श्री कृष्ण के मरिबे को
दुशासनादिक सख लेके उठे तब श्री
कृष्ण विराटरूप दिषायो ता को देखि किते
कमर्चित भये किते कगिरे किते कके
सिर फूटे किते कनके प्राण कूटे जब
अज्ञानादिक दुर्योधन संबोले हे अंध
पुत्र श्री कृष्ण कहै सो सत्य ही है श्री कृ
ष्ण कालात्मा है सो तू न जाणै है सुर अ
ने नराण प्रजे है लक्ष्मी या की

10 पृथ्वीको भारत उतारिबेकौ असुरनको ना
करिबेको साधुनके पालबे निमिति औतार
स्योहै श्री कृष्ण का जन्म प्रायेसी नकरैंगे
सर्वको नास होयगो सर्वनास जाणि विव
की आधो होइतहै आधेमेरा ज्म करै अ
रजावहरहै सर्वनास नयैरा ज्म जाय अ
रुआणहनेहीरहै अैसेनीष्मादिकनको
बचन सुणि बिदुर बोले यह राजा दुयोध
न पीलेनेत्रनकोहै सोकेवलकुलनास
हीनहोकरैगो सर्वत्रानकोनासकरै
गो अैसेकहि बिदुरश्रीभीष्मसंजयहर्ष
करि श्रीकृष्णको दयतनये औरजेबैरना
वराधतहे जेमृत्तितनये देवतापुष्पनकी
प्रथी करी स्तुतिकरि कोपसांत्तिकियो
अरु श्रीकृष्ण उठिचले तबश्रीभीष्मक
याचार्यकणी बिदुरसभाशरताईपहुंचा
बेको प्राये जबश्रीकृष्ण औरनकोसी
रेय कर्णको हाथपकडिरथमें बैठाय
तीके पास प्रायसीषमागिपुरके बाहि
रगसहित डेरानको गये उहाएकांतमें
तीतैजैसे कर्णको जन्म

कहो सो सुणि कर्ण कष्ट युक्त होय बो ल्यो मैं
सहो दरन कौ जाणे बिना दुष्पदियो तातें मो
को धिक्कार हो जे मैं पुत्र बधू तुल्य शेष दी की
दुई सा देखि हर्ष पायो ताहू तें धिक्कार हो ॥ अह
सहो दर बांधवन कौ छोड़ि उन के बेरीन कौ
बांधव करे ॥ याहू तें धिक्कार हो ॥ जैसे कष्ट
सहित कर्ण कौ देखि श्री कृष्ण बोलै हे कर्ण ॥
हालहू आपे का निरामति करे ॥ बांधवन सों
चलि मिलो ॥ युधिष्ठिरादिक तेरी सेवा क
रेंगे ॥ तब दौ भ्राता राज्यासन पैं बैठेंगे तब
तेरी माता कुंती कहू पुत्रन सहित परम आ
नंद पावेंगे ॥ अरू तें पांडवन मों मिलेंगे ॥ तब
दुर्योधन दिक कलहन ही करेंगे ॥ जब स
कल कृत्रि वंस जावेंगे ॥ यह पुन्य लो कौ होय
गो ॥ जैसे सुणि निवासना पि अंगराज क
र्ण बो ल्यो ॥ हे श्री कृष्ण जु इसमें प्राप्त भयें भ्रा
तान सों कैसे मिलो ॥ दुर्योधन एक मेरे नरो
से ही उन बलीन सों बैरे कियो हे ॥ सो वा केर
ण कौ धारी मैं हों ॥ बालक पण कौ मित्र दु
र्योधन हे वा कौ छोड़तें मेरो रुदय फटत हे ॥
और दुर्योधन कौ कोरि सुधिष्ठिर सों मिलें ॥

घोः जब पिता हलके अग्र भाग सों पुत्र को घेंचिये
तके बाहिर नाथोः अर फेरि हलवाहि बेल गि
गयोः यह कठोरता देखिती न्यो अगें चले तहां
सन्मुख भोजन लिये वा पुत्र की स्त्री आवती देखी
जब वा सौती न्यो ही पूछ्यो तूको एह कहा जायगी
तब वह स्त्री बोली मेरो श्वसर अरु भर्ता दोऊ
घेती करै हेंः तिनके लिये भोजन जलेले जाहें
जब श्री कृष्ण बोले तेरे भर्ता कौ तो तर्प कष्टो
सो मरि गयो जा कौ घेत बाहर हल सों उठाय
तेरे श्वसर नै फेंकि दियोः फेरि आप हल जो
ति बेल गि गयोः अैसे वह स्त्री सुणितहां ही
बेहि गईः भरता के बर की सामग्री पाप जल
पान करि बाकी सामग्री ही सो श्वसर कौ देख्य
आप जैसे आई ही तैसे ही गई यह ब्रह्मांत दे
खिती न्यो ही यह महा कठोर भूमि जुहु जो ग्य
हे अैसे बिचारि जुहु करिबो उहां निश्चे कि
योः तापी कुंडे रा आयतहां युधिष्ठिर के संग
सेना में परवार सहित रा जा बिराट सात्वि
की यादव युधामन्यु उज्जमो जा पुत्र पो
आदिक सहित दुपद हिंडंवाके पुत्र
र नौ रायो कचः

राजकी सेनामें मिलिकुरुक्षेत्रमें आयें अथवा
दुर्योधनहसकलसेनासहित आयें तब
हांपुष्टिदिए आपके सबजोहानसौबोले
कौनकौनकहाकहापराक्रमकरोगेसोव
हो जबभीमकहादुर्योधनआदिसो १००
भ्रातानकौतौमेंमारेंगो अथवाःशासनके
इदयविदीरणकरिवाकौरुधिरपीऊंगे त
बअर्जुनबोले जोरुत्रीमेरेसन्मुखलडेंगे
तिनकौमेंनिश्चैहीमारेंगो तबसहदेव
बोले जुहआरंभहोयगोंताकेअठारवेंदि
नदुर्योधनमरेगो यहसुणिगुप्तहलकार
हैसोजायदुर्योधनकौसबसमाचारकहे
सोसुणिदुर्योधनभीमकेपासजायहाथ
जोडिबोले मोकौतुमपाल्योहे अरुपांड
वनकौअबयहसलाहभईहे तासौतुममे
रीरक्षाकरो जबभीमबोले हेराजाइस
दिनतौमेंतेरीरक्षाकरुंगो मोजतनेधनु
षधारोंतितनेकालहनमारिसकेंगो अ
संसुणिदुर्योधनशौणाचार्यकेपासजाय
पांडवभीमबचनबोलेतिनसहितसब
समचारकहे जबशौणाचार्यनवी

रिदिनलों तेरी रक्षा करोगे। जैसे सुणि कर्ण
 के पास जाय शंणाचार्य के बचन आदि पिछले
 सब समं चार कहे। तब कर्ण बोला हे राजन
 मैं भाये यदि तेरी रक्षा करोगे। जैसे सुणि श
 ल्य के पास जाय। कर्ण बचन कहे तिनै आदि
 हे सब समं चार कहे। तब शल्य कहे एके दिन
 मैं हर रक्षा करोगे। जब दुर्योधन अठार है दि
 न को रक्षा करि बने वालो जा एषो भी नही। तब
 मनमें व्याकुल होय आप ही जुड़ करि बौनि
 श्रे कियो। सात अक्षोहणी पति तो राजा युधि
 ष्ठिर भयो। और ग्यारह १० अक्षोहणी पति
 दुर्योधन भयो। जैसे मिलि जुड़ की तयारी क
 रत भये ॥ इति श्री भारत सार चंद्रिका यां उद्देशो ॥
 गणपती कुरुक्षेत्र से न्य समागमनो नाभतती
 यो ध्याय ॥ ३॥ बेशंकाप नव बाचा। दुर्योधन
 हस्तिनापुर तै कुरुक्षेत्र को बला। तब अप
 सगुन भये सो देषि सब नै मनै कियो तो हमा
 नी नही। तब बिदुर कुंती सो कही कुरुक्षेत्र
 मैं युद्ध होय गो। तहां कौरव पांडवन के रुधि
 र को पृथ्वी पांन करैगी। जैसे बिदुर की बांणी
 सुणि गंगा तीर सूर्य के ध्यानमें मग्न हुवो कर्ण

होताकेपासकुंतीगई जबवांकोजपसमाप्त
नांनिकुंतीबोली तूमैरोकन्यासमैकोपुत्रहे
अहयहसूर्यहीतेरोपिताहे जैसेकहतेंहीस
र्यहसाहीभरी तबकर्णआपकीमाताजाणि
प्रणामकरिबोली हेमातातेरोस्तनपांनक
रिमेरोसहोदरराजापुधिष्टिरविश्वविजईत
यो तातेंमैंहधन्यहो जोतस्तननकेइधक
मोकोसीचैहै तबकुंतीनेसेबोलतेकर्णके
रोऊहाथनलोगहिइदेंमेंलगापबोलीहेपु
पुधिष्टिरारिकपांचोतेरेदासहें तातेंतपा
डवनसोमिति तोंकोमित्योजाणिरुयोधन
हेजुइनहीकरेगो तासोंपांचोपांडवसे
ऊ१०० कौरवतेरेअनुग्रहसोंजीवेगे अ
सुणिकर्णबोली हेमातामेरेबिस्वाससे
जुइकोंतयारभयो जोदुर्योधनताकोछ
द्रिपुधिष्टिरसोंमित्योतौसूर्यदेवकली
तहोय औरपांडवनकेभयतेंकर्णदुर्यो
नकोकोडिउततेमित्यो जैसेजगतमेंउ
हाससुण तूबीरजननीहेसोअबाराज
नीमतिहोय नेंपांडवनकोजीतिदुर्यो
नकोछापरागे जैसेप्रतग्याकरि

श्रीप्रसन्नप्रकाशचरित्रवताहिकैसैकोडों औरमहा
श्रुतिमानीकृपाचार्यशोणाचार्यश्रवस्थाम
नीषायेमहावीरजाकीसहायकर्ता औरको
धपुंजदुर्योधनहैहोमोबिनाजुद्धकैसैनही
करेगो औरहमतेरेकहपुत्रहो तैसैहीदुर्यो
धनादिकसोऊ १०० तैरेहीपुत्रहो तातैसो
बांधवनकोकोटिपांचमेंमिले यहकोणवि
बेक जैसेसुणिकुंतीबोली तेरेधैर्यतैकर्म
साक्षीसूर्यदेवसंतुष्टहोवो तसत्यवादी
वीर्यवानमित्रनमेंथिररहो तोहलकनिष्ट
भ्रातानको अभयदानदे मंयहभागोंहो त
वकर्णबोल्या हेसाताब्रधामोकौक्योजाच
नाकरेहो मेरेसहोदरनको अभय हमको
भयपहतोश्रीकृष्णनेपहलेहीदियोहे ह
भारेपुरमेंज्ञानज्ञानमेंमह्यसचकाउतपा
तबहुतहोतहै चंद्रमातापकरेहै सूर्य
सातललगैहै भूकंपहोतहै मंदिरनमें
प्रतिमाचलैहै हंसैहै पसीनाहोतहै
रुधिरबवनकरेहै उल्कापातहोयहै स्त्री
जर्मणीनकेपसुआदिसंतानहोतहै एक
श्रीमेंनदतकन्यापेदाहोय

हगावहनाचह चारोदिसानमैदिग्गह
होतहै औरपाचोंहोटेभ्रातानकोंसुप्रमै
ऊंचेमहलोचढेजयलक्ष्मीसहितदेषे अह
दुर्योधनादिकनकोंऊंटयेचढेदक्षिणदिसा
कोंजाते रक्तपुस्यआनरणसहितसुप्रमैदेषे
युधिष्ठिरकोंपर्वतयेचढोराज्यकरतहै
औरभीमअर्जुनतहोहीधतधीरनोजनक
रतेदेषे अरुनकुलसहदेवकोंस्वतहाप्या
येचढेदेषे औरश्रीकृष्णसात्विकीकोंपाल
कीमैचढेदेषे जैसेतेरासेनामैसातनकों
स्वतमालास्वतवस्त्रस्वतचंदनलगायेद
ेषे अरुदुर्योधनकीसेनामै अश्वस्थामा
ऋषाचार्य ऋतुवर्माएतीन्योतोपांडवनज्यो
हरिषे ताहेंसाततोवेतीनयेदसतोमत्पके
भयतैहीनहोयेंगे औरसबमत्पकेयासहो
ईगे जैसेसुणिकुंतीबोलीहेपुत्रजैसेहैंतौ
हूततौभ्रातानकोंअभयदानदे तबकर्णबो
ल्या अर्जुनकेमारिवेकीमैप्रतगपाकरीहे
तातै अर्जुनबिनाचारोंनकोंअभयदान
मैदियो परंतुअर्जुनहकोमरणभयमति
करे याकोकारणसुणिए पहलैअस्त्रविद्या २

पढ़े तासमयमें अर्जुनकी ईषासों मेंशोणा
चार्यतैं ब्राह्मणमाग्यो तबशोणाचार्य अर्जु
नपक्षकरिमातें बोले ॥ तेरे कुलको निर्णय
नहीतातें नहीदेगे ॥ या अनादरतैं महिंशच
लपर्वतपे परसरामके पासमें गयो ॥ तबमें
बिचारी क्षत्री बंसके बैरी परसरामहे सो
क्षत्रीजाणिमोकों ब्राह्मणनदेगे ॥ याभयतैं
मायारूप ब्राह्मण होय भक्तितैं सपूर्ण अह
विद्यापाई ॥ तापीकें मद्योन्मत्त होय बनेमै भ्र
मतैं मेरे बाणतैं कोई एक ब्राह्मणकी गायम
री ॥ ताकें स्वामी ब्राह्मणमोकें प्रापदियो ॥
जाकें तज्जीतिबेकी इत्ताकरैहे ॥ तासों जुह
में तेरे रथके चक्रनको प्रथी गिलेगी ॥ तबमें
वा ब्राह्मणसों बहुत बिनती करी ॥ तोह वाको
क्रोधमिद्यो नही ॥ एक तो यह कारणहे ॥
सरै मेरी गोदमें सिरधरिगुरू निशकरतहे
तासमें मेरी जंघामें अतिपीडा भई ॥ अरु गु
रुनकी निशमंग भयतैं मैं सरारक पायो
नही ॥ बिषाकें मानी नही ॥ तितनेही बज्रमु
ष अष्टापदकी टलमें मेरी जंघाको बिदीर्ण करि
तिकस्यो ॥ तबही गुरजागि मेरी जंघा रुधिर

मइदाषपूछ्यो॥ जबमेकाटदिषायो तबगुर
नकेदेषतैहीकीटनसहोपरिव्यरेहधारिप्र
णामकरिबोल्यो॥ मैदैसहोन्नगुरिषिकेसा
पतैकीटदेहपाईही॥ सोअबआपकेदर्सन
तैसापमुक्तहोपरिव्यरेहपापमेंजातहो
असैकहिअंतर्धानभयो॥ तबगुरकहीअरे
तूअसैहप्रहारतैकाएगानहीतासोअत्रीहै
अरुतेकपटतैबिह।पटीसोनिस्फलहोयगी
अरुकपटतैब्रह्मास्त्रकोसीष्योसोहतेरेम
सकेरिवसवाकोसत्रुं॥ उनकरैगोहेमा
ताअरहकारणमुणि॥ मरेक॥ कुंडल
सुभावहीसोअनेदरहे॥ अरुइंद्रासणको
रूपधारितिनकीजाचनाकरी॥ तबपितास्
र्यस्वप्नमेंआयमनेकियो॥ तो॥ ताकोमैक
वचकुंडलदिये॥ अबअर्जुनकोकेसैजित
औरजुहूमैरुइकोभीजित्यो॥ अरुमैकव
कादिइंद्रकोदियो॥ जबइंद्रमेरेसत्वतैसंतुष्ट
होयएकवीरघातनीशक्तिदीनी॥ सोहक
सकेमत्रतैनिस्फलहीरीषहै॥ मैस्वप्नबल
तैमेरीजुहूमैमत्युहीजानोही॥ पैवचनअ
न्यथाकैसैकरो॥ औरअबजुहयात्रासमे

मैं हे माता सर्व तीर्थ रूप तेरे दर्शन पाये याते मैं
धन्य हों ॥ अैसे बोलि प्रणाम करिया आकुर क्षेत्र
कों करी ॥ जब चलते ही कर्ण को किसी दृष्टि में
गियो ॥ और हृत्पसुकन अने कनये ॥ तिन्हें हूँ
देवि धीर्ज धरि कर्ण कुर क्षेत्र में दुर्योधन पास
गयो ॥ तहां सकल वीर मंडली सहित दुर्योधन
हों तब जय इथ बो ल्यो ॥ मैं सकल पांडवन कों
जातों गो ॥ अैसे सुणि जय इथ कों ॥ सेनापतिको
अभियेक कियो ॥ जब पांडवन में सात्वकी
जादव सहदेव मगध राज ॥ धृष्ट द्यूम विर
ट सिषंडी ॥ धृष्टकेतु चैदीस्वर ॥ एसा तन कों
पुधिष्टिर हूँ सेनापतिको अभियेक कियो ॥
अैसे जु इरचना देवि मध्यस्थ बल देव पुधि
ष्टिर सौ पूकृती र्थ यात्रा कों गये ॥ तब तहां तु
म मेरे सरक्षण आवों मैं तुम कों विजय हूँ गो ॥
अैसे बोलतौ अज्ञो हणीपति रुक्मी आयो ता
कों पुधिष्टिर ॥ दुर्योधन दोऊ न नें अंगी कर
न क ल्यो ॥ सो आपके पुर कों गयो ॥ जब दुर्योध
न जो हान सों बो ल्यो ॥ ये पांडवन की सात अ
ज्ञो हणी सेना न कों कों ए वीर कितेक दिन में
मारे ॥ तब भाष्म शंणतौ दिन ॥ ३ ॥

पाचार्यदिन ६० साहिकहे अश्वस्थ्यामादिन
१० इसकहे कर्णदिन ५ पांचकहे तबत्रैसै
सुणिरुयोधनभीषसो रथी महारथी अति
रथीनकीसंघ्यापूछी जबभीषापितामहअरन
कौकहतैकहतैकर्णकोअधरथाकह्यो तबव
णसुणिएवप्रतग्यातुमसरसज्यासोवोगेजव
जुइकरौयहइकरी जबअज्ञैत्रैसैसुणि
राजादुर्योधनहपाउवनकौभयभीतकरिवे
कौराजाउलककौइतकर्मकरिवेकौपठायो
सोसभामैबिराजमानराजायुधिष्ठि सोबा
त्या हेराजायुधिष्ठिरतुमकौनकेबलतै कुर
राजातै जुइकस्योचाहतहो यहइतकौषल
नहीहे जाभैहारेपीकै भास्त्रीबांधवनसहि
तजीवतजाय जुइमैतौस केप्राणरहेही
जेनहीगेनही तातैजीवतेजायबिरारभय
कैयर रसोईहारभ्राताभीमकेप्रसादतैसर्व
दामिष्टभोजनकरौ अर्जुनकेधनुषकीप्रत्य
चाकीधुनीहई शेषदीकातिबस्त्रबणवायवि
प्ररूपधारीतौकौपहरावो अैसेहनिश्रित
गादीतकियातौकौहेही मृत्युकीहेतीराजधि
ताहे ताकौकोडोयह सात्यकी कृष्णादिक

नकोंकालकेकलेऊमतिकरो अरुजोरथपाल
कीहाथाघोडाचटिबेकीबाछाहेनो। सेवक
नकोकल्पवृत्तराजादुर्याधनहो। ताकीदासता
अंगीकारकरिरहो। जैसेसुपांडवनकेचोस
कलपोधानकेलालनेत्रहोयभकुटीचटिस्त्र
स्त्रअठिबेलगे। तवपुधिचिरकीभकुटीकीसं
ग्याकरिउल्कप्राणवचायबेकेनिमित्तभयभी
तहोयनागिदुर्याधनकेयासजायसर्वसमाच
रकहे॥ दोहाप्रगटपर्वउद्दोगयहभाथाभार
तसारारावसंभुसुतकेहुकमकीनोसुक
विविचार॥ १॥ इतिश्रीभारतलारचंद्रिकायां
उद्दोगपर्वणिउल्कागमननामचतुर्थोऽध्या
य॥ ४॥ उद्दोगपर्वसमाप्त॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीराजपर्व विषयः ॥ नारायणं नमस्कृत्य न
रं चैव नरोत्तमं ॥ देवी सरस्वती व्यासं ततो जपमु
दायेत् ॥ १ ॥ वेदां प्रायत उवाच ॥ असे कुरुक्षेत्र
में जुहु सुणि भरत षडमैं बालक वृहती तो धरन
में रहे और सर्व वीर दीऊ सेना में पंचपाती वि
णि वणि आये ॥ तव वेद व्यासुनि धतराष्ट्र सो
आप बोले तो कौं मे दिव्य नेत्र ह्यहं सो तू या जु
इको देखे तव धतराष्ट्र बोल्या मैं आजिलो
जन्म पर्यंत कहु देषो नही अब कुलको क्षय
कैसे देखे ॥ तातै संजय कौं दिव्य दृष्टि दीजिये
यह सब देखि जुहु की वार्ता मो सो कहेंगे जब
वेद व्यास संजय कौं दिव्य दृष्टि देखेंगे जब
संजय जुहु देषि राजा के महल नमें हत ही स
व जतांत कहत भयो हे राजा धतराष्ट्र सुणो
जो एणमें सिरावेता कौं मारणो नही असे प्र
तपा करि रोऊ सेना के वीर जुहु कौं तया रो
यच दे माता पिता गुरु ब्राह्मण न कौं प्रणाम क
रितिलक अक्षित पाय वीर कंधा करण धारि
चलिबे कौं तमार भये तहां सुभश अनिमनु
सो बोली हे पुत्र मैं वीरकी पुत्री अरु वीर भा
यी तोहू पैत अब मो कौं वीर जननी हू करि

असै ही ओ रहमाता पुत्रन कौं आसी वा ददे करि
बदा करे तहौं कौरवन की सेना मे अग्र सुरभी
भभये चांदी कौरप स्वैद बसू कवच अश्वति
न करि सो भायमान सुवर्ण मय पांच साधा संजु
क्त ताल ब्रह्म धुज करि प्रकासमान सेनापति भये
तिनके आस पास शोणाचार्य अश्वत्थामा कृ
पाचार्य असै चारितो अतिरथी भये कर्ण
शल्य सकुनि शिव उलूक सोम दत्त भरि
श्रवा कलिंगराज अग्रिकेत भगरत्त विक
र्ण दुःसासना जयश्रथ दुर्योधन और हम
हारथी भये पांडवन की सेना मे श्वेत अश्वस
हित हनुमंत धृजामें जाके ऐसे बडे रथ मे म
हा अतिरथी अर्जुन श्री कृष्ण सारथी सहित अ
सवा होय सबके आगे भयो ताके आस पास
सात्यकी विराट दुषद अत्रिमनु भीमसेन
बर्बरीक घटोत्कच नकुल सहदेव राजा
युधिष्ठिर एतौ अतिरथी और पांचौ शोपदी
के पुत्र इरावान अर्जुनके पुत्र सिंधु डिध
ष्ट द्युमन् शंषश्वेत आदिलेर विराटके पु
त्र ये महारथी भये सबनके सिरोमणि श्री

क्रमीभये औरभीष्मशैलाचार्यके ^{प्रभाव} ~~हृदय~~ तैकौ
नके जोधाचरतीबलीभये तहांश्रीकृष्णब
रीकके हाथमेंतीनबाणदेखिहैसतैहीबोले
भीमहेअर्जुन याबबरीककोपराक्रमदेधो
सैयुद्धमेंतीनबाणलेकरिआयोहै इनकोद
पीछैकोहैतैजुडकरेगो औरसबतोअनैत
बाणधारैहै जैसेसुणिबबरीकबोल्यामें
एकबाणकरिसबनकोघावकरिमृत्युस्था
नमेंचिरुकरेगो द्वितियबाणकरिसबन
केजीवहरणकरेगो एकबाणराषिनिमें
रहेगो जैसेबचुनसुणिश्रीकृष्णबोलेहम
कोपरिज्ञादिषावो तबबबरीकएकबाण
सिंहरंजितकरिधनुषपैधरिकानपर्यंतपेंचि
आकासमेंचलायो सोबाणसप्तलोकनमें
अमिलबनकेमृत्युस्थानमेंसिंहचिरुकरिकस
केचरणमेंप्रहारकियो तातैसबनकेप्रण
कोब्यथाभइहसरो बाणसंधानकरिवे
गयो तबश्रीकृष्णहंसिकरिबोले हेबब
केतरोपराक्रमअनुपमदेखिहमप्रसन्नम
अबबाणसंधानमतिकरै जैसेकहिबब
ककोप्रसन्नकियो तापीछैहसरेदिनसम

नाथतश्रीकृष्णपांडवनसोवर्वरीककेदेष
तबोले यहजुह भूमिश्रतिबलवांनपुरुष
पसुकोबलिदानकरिपूजणीहे औरजोन
पूजेंगेतोयहरणभूमिसबपांडवनकोषाय
गी जैसेसुणिपांडवबोले हमारोहितकर्ता
तोतुमबिनाऔरहेहीनही तातेंजाकोबलि
दानकियेबिजेहोसोयतुमहीबतावो तब
श्रीकृष्णबोले जोबत्तीसलक्षणसहितजो
हानिर्नयहोयसोबलिदानजोग्यहे तवपा
उवबोले यासेनामेंजैसेहोयताकोतुमही
बतावो जैसेसुणिश्रीकृष्णरुदनकरतही
बोले एकतोसे हजोवर्वरीक तीसरोअर्जु
न इनतीनिनमेंजोइच्छाहोयताकेबलिदान
करो एककेमरतैं औरसबजीवेंगे बेरी
मात्रमरेंगे जैसेसुणिवर्वरीकहर्षितहोप
बोल्या श्रीकृष्णअर्जुनबिनातोसबमरेंही
हे तातेंमेरोहीबलिदानकरो मेरेमरतैं
सबकोजीवनहोयतामेंधन्यहो तुमसब
राज्यकरोगेयातेंमेरो अधिकनाग्यकहा
हे जैसेका६५ " "

ॐ
०
हिसरे हाथ लै सिरका टिप्री कससौ बोलै
हे कसहे कस प्रखी के भार हरि करिबे को
पमनुष्य रूप धार्यो हे मैं आयको आग्या
रीदासहो तातै मोको सब जुद्धियापमुक्ति
सकरो जैसे भक्त बरबरीक को बचन सुनि
श्री कसतथास्तु कहि आयके चरणनमै पड
तै बरबरीकके मस्तकको दोज हाथतै उठा
पर्वतके सिपिरपै धरिबोले हे महाबीर बरब
रीक जो जुद्ध होयगो सोत देषि जैसे कहिया
उवनको सो कहि करि जुद्धको आरंभ करा
वत भये मार्गशीर्ष शुक्ल त्रयोदसी भौमवा
रमैको रवपांडवनको जुद्ध आरंभ भयो जुद्ध
समयमै दोजसेनाको तयार देषि अर्जुनश्री
कससौ बचन बोल्या मेरे रथको दोजसेना
के बीचि स्थापन करौ दुर्बुद्धा दुयोधनको हि
त करिबेको जुद्धमै आये तिनको देषुंगो जै
सैं अर्जुनको बचन सुनि अर्जुनके रथको आ
कसमी अशोणादिकनके लनुषस्थापनक
रिबोले हे अर्जुन इनको रवनको देषि तब
अर्जुनसेना देषी तामै पितर व्यपिता मह आ

चार्य मित्र सुहृद् पुत्रपोत्र सघाश्वसुरगुरु
असेरोऊसेनामें सर्वबांधवनकों देषिकृपा
सहित दुष्करत बो ल्यो हे श्राकृष्ण जुद्ध करि
वेकों श्राये स्वजनकों देषिसरी सदुष्पपावन
हो सुषसक्त हो रामांचकंपादिक हो यहो गो
उावधनुष हाथ तें गिरै हे त्वचा जलै है ग
दौरहि सकं नही मन भर मेहे सकुन घोटै
पै है तातें सुजनकों मारि विजय सुषराज्य
चाहें हो जिनके अर्थ राज्य भोग सुष चाहिये
वे प्रोण धन को दिजुद्ध में श्राये आचार्य पि
र पुत्र पित मोह मामा श्वसर साला स्
बंधी एमोंकों मारै लोह में त्रैलोक्य के राज
निमित्त ह इनकों नही मारै यह पृथ्वी को र
ज्य कहा है धतराष्ट्र के बेटांनों मारै तै
कों कहा सुष होय इन श्रातता इनके मा
पात करी होय तातें धतराष्ट्र के पुत्र न
मारणो जोग्य नही स्वजनके मारें कहा
होय यह लोभके मारै पुरुष कुल क्षय
सकों मित्र श्रेहके पातक कौन देखै है
यथा नक कौन करै गे

३० नष्ट यै कुलधर्मनष्टनयै अधर्मबधे अध
र्मकी वृद्धितै कुलस्त्री भए होय तब बर्षास
करसतान होय वह वर्ण संकरसतानपि
रनको पिडदां नदे कै न कनमै पटके जैसे
ए संकरकी वृद्धितै जातिकुलधर्मनष्ट होय
धर्मनष्ट नयै मनुष्यनर्क हीमै पडे सोहम
राज्यके सुषलोभतै महापातक करिबेको
तयार होय सुजनहत्या करिबेको सो अ
बनकरैगे अरु धतराष्ट्रके वेटासस्त्रचला
वैतौ हाथहू आडेनकरैगे अरु सस्त्रह धा
रणनकरैगे जो धतराष्ट्रके वेटारणमें
मारिदारे तौह कुसल होय जैसे कहि अर्जुन
धनषबाण धरिसोकसो ब्याकुलहो परशुमें
बैठिगयो इति श्रीभारथसारचंडिकापांभी
ष्यपर्वणि प्रथमोऽध्याय १ संजय उवाच अ
सै कहणाते रुदनकरत विषादसहित अर्जु
नको देखि हसतेहा श्रीकृष्णवचनबोले
हे अर्जुन जैसे रणमें कायरता तोको कहांतै
आई कायरता तो नीचको धर्महे जैसे कि
येया लोकमें अपकी तिहोय परलोकमें नर्क
प्राप्त होय गहवैदे अर्जुनसि

सूरीरहै। तातैंतो कौतंपुंसकंपणोयोग्यनही
सुदुजीवनकीसीकापरतछोडिउठिकेसख
धारिजुद्धकरि। तवअर्जुनबोले। मैंकायला
तैंजुहसोंनदौनही। जिनहमकौबालकपणै
पाते। बिदरापटोई। जैसेभीषपितामहगुरु
शंणाचार्य। जिनसोंबाणीहूतैंजुहजोग्यन
ही। तिनतैंबाणानसोंकैसेजुद्धकरौ। यतौ
पूजाकरिवेकौजोग्यहै। गुरुनकौपितामह
नकौमारिकरिभोगभोगनौसोंतोरुधिरपा
नहै। इनकौमारेबिनाभिक्षाकरिजीवणोसो
हाश्रएहै। राजसंपतिजिनकेवालेचाहि
यै। सोंतौसर्वहीप्राणधनछोडिजुद्धकरिवे
कौतयारनये। पाधर्मसंकटमेंजुद्धकरेसों
अथवा। भिक्षाकरिजीविसोंधर्महोयसोनि
श्रेकरिश्राग्याकरौ। मेअपकौसरणागत
शिष्यहोंतुमबिनामेरोउधारकरिवेवालोश्री
रहेनही। संजयउवाच। जैसेदोऊसेनाके
बीचिविषादकरतेअर्जुनसोंश्रीकृष्णबो
लेहैअर्जुनसों
श्रीपंडितनही।

गिलत है पंडित तो मरे नकों वाजी वत्ते नकों
सोचत सुधर्म देखिके कायर पणो जो ग्य
तही अरु ज्ञानी को धर्म करि प्राप्त नयो जो ग्य
ताते अधिक कल्याणकों करि बेयातौ इसरोसा
धन है ही ताते ईस्वर को इच्छाते मिल्यो धुल्यो
हुवो सुर्ग को द्वार तो जुह ही है सो अति पुन्य बत
ज्ञ त्रिप पावत है अब धर्म सो प्राप्त हुवो जुहन
करै गौतौ सुधर्म वा कीर्ति छोड़ि न कर्म पड़े गौ
चंद्र सूर्य रहे गौ ल गतेरी अकीर्ति जगत में
रहेगी प्रतिष्ठित की अपकीर्ति मरण ते भी अ
धिक है दया तेरे ए विषुषत नयो यह को इनक
है गौ जेतो को बहुत मानै है बेस नृतो को
बुद्ध जायेंगे घाटे बचन कहेंगे तेरे सामर्थ
ता की निंदा करेंगे याते अधिक दुष्कहा है
जुह सै नरे गौतौ स्वर्ग पावेंगे जीतें गौतौ भू
मि नौ गौ गौ ताते बुद्ध के निमित्त छह सुध
दुष लान अलान जय पराजय बेसब समा
नमानि जुह करि असै किये पाप न लगे गौ य
हमै बुद्धि दई है सो करि मै कियो मै भोग्यो अ
सै दया चित्त हम तक है ज्यो कर्म करे वानो

जनकरे ज्योहोमै ज्योदेवै ज्योतपकरै सोमैरे
 अर्पणकरि कर्मतौ करि परंतुफलकी कामना
 मतिकरे सिद्धि असिद्धिसमांनजाणि फलका
 मनाछोडि इत्रियकौ धर्म यहहीहो ॥ अैसेजा
 णि जुइकरि पापतैलियेगोनहो ॥ अैसेश्रीक
 लकौबचनसुणि अर्जुनमोहछोडि जुइकरि
 बेकौउध्रौ ॥ सस्त्रधारणकिये ॥ तासमयमेंस
 र्ववीरसस्त्रास्त्रप्रहारकरिवेलगे ॥ वीरनकैप
 रस्परकोलाहलनेरी ॥ तुरी उमरू नगारे सं
 घ ॥ बाजाबजे तासमयमेंयुधिष्ठिरसस्त्रछो
 डिरथतैउतरिचल्यो ॥ ताकंदेविकहीराजा
 कहांजायहो ॥ ताकेपीछे नीमादिकभ्राताह
 पयादेसंगभये ॥ तिनसहितराजाभीष्मपा
 सगयो ॥ ताकौदेविसर्वकोरवदुर्योधनादिक
 अैसेविचारतभये यहयुधिष्ठिरभयनीतफै
 केसरणआयो ॥ तापीछे युधिष्ठिरभीष्मके
 चरणनमेंप्रणामकरिबोल्पो ॥ हेपितामह
 मतुमतेजुइकरै विजयकेनिमित्तयहआ
 ग्याह्यो ॥ अैसेसुणिभीष्मबोले ॥ हेयुधिष्ठिर
 तुमजुइकरो ॥ हमकौजीतो ॥ जोआगपालेवे

४३
श्रीमदौ कौन श्रावैतौ तौ तौ कौं शांपदेतौ तातै
यह तौ कौं योग्य हो अव कहा बरदा
पुधिष्टिर बोले जो आप प्रसन्न होतौ
मरिबे कौ उपाय बतावौ तब भाष्य बोले
देव जुद्ध करै तौ हन मरै फेरि कनी श्रावै
बनि जमरण कौ उपाय कहौंगो जैसे भा
मिलि श्रेणं चार्य पास गयो उहां ह भाष्य के
सिष्टाचार कियो जब श्रेणं चार्य श्रीमदौ
नदेय बोले जब राज उन ह कौ उन के मरवे के
पाप पूछ्यो जब श्रेणं बोले मै सस्त्र त्याग कर
तब मरै जब पुधिष्टिर कही सस्त्र त्याग के दे
करो तब श्रेणं बोले तौ सरी से सत्य वादी
मुखसौ अति अग्रिय सुरौ तब सस्त्र त्याग क
रौ तातै अब तुम जावो जुद्ध करि बैरी न कौं ज
तौ जैसे श्रेणं की आग्ना पाय क्रपा चार्य या
स जाय प्रणाम करि होऊन कौ संबाद क
जय कौ श्रावै वाद पाय श्राव पास गयो ता
कौ प्रणाम करि प्रसन्न कियो जब वह बरदा
नदे बेल गयो तब पहली प्रतिग्या कर्ण कौ उ
त्साह भंग बचन की करी ही सोही दृष्ट कर

ई। तपी है श्री कृष्ण चंद्रकरी के पास जाय
 ले भीष्म जीवतै तजु करै गोन ही। ताते ह
 मारे सामिल हो। भीष्म मरे पीछे इनमें कृष्ण
 आय मिलियो। सो बचत कर्ण मान्यो नही त
 ब श्री कृष्ण युधिष्ठिर दोऊ सेना के बीच भुजा
 उठापके बोले जो अब ह हमारे सामिल आवें
 ताको अंगीकार करे। जैसे सुगिहै राजा ध
 तराष्ट्र तेरे सो १०० कुपुत्र न ले जु दो होय युयु
 त्सु पुत्र पांडवन में मिल्यो। ताको संग लेनि
 जसेना में आय राजा युधिष्ठिर रथ में मन्त्रा
 रथयो और ह भीमादिक भ्राता रथन पंचरि
 जुड़के निमित्त तथारथये सबन के रथ न
 कनकेश बद्ध अश्वनके सयगजनके गति
 तशष्ट वीरनके सिंगार संकलवादि अश
 ष्टिनकरि रसोदिसाशायपमान नई न
 हासंग्राम में सवार सवारतें पर्यारंभ्य
 इनतें रथारथीनतें हाथीनके सचार
 हाथीनके सचारनतें पर्यारंभ्य
 करनभये एकधरनोरनके अंधकार
 नदीरात्रिभई पी

रिसुधिर की वर्षीतै रजदबी तापी कैं बारप
 रस्पर घोर इ करत भये तिनमें कितने नके
 शिर मुजा हाथ पांउ कटि कटिर एणमें पड़ेति
 न करि भस्मि क्हाय गई तासमेंमें अनिमनु बा
 ए वर्षी करत शत्रुन के वृहमें प्रवेस करि
 बैरीन को मथन कियो ताके रोकि कौं राजा
 बृह बल कृपा चार्प दोऊ आये तब अनिम
 नु बृह बल सौं घोर जु इ करत भयो चाख्यो जो
 हान कौं सब जो दूषत भये दुर्मुष धतराष्ट्र
 पुत्र बृह बल की सहाता कौं आयो तापी के सा
 रथी कौं सह देव मास्यो बृह बल बाण न करि
 अनिमनु के सारथी कौं औ धुजा कौं के देव
 कस्यो सो देषि को पयुक्तु होय अनिमनु स
 कल सेना कौं मर्दन करि बाण बृष्टि तें दशौं
 दशौं आच्छादित करी सर्व सेना कौं व्या
 कृत करि भगाई सेना भागी देषि भीष्म पि
 नाम ह धनुष टकार करि बाण न की वर्षी
 करत आये तब वर्षी तें पांडवन की सेना व्या
 कृत भई ताकी रत्ता करि बेको एक अनिम
 भीष्म के सनुष आय भीष्म के हृदय में

बाणमारे। प्रयोत्रकेबाण इत्यमेलगेतिन
कौपुष्यवृष्टितुल्यमानि आनंदतैनेत्रमीचेत
कौसंबकौरवननैव्याकुलमानिसहायता
केनिमित्तः कृपाचार्यकृतवर्मा इमुंये। बि।
विंशति शल्य आयत्रमिमत्पुसौ जुहकरत
भये अमिमत्पुहुमहारथीनकेबाणन
कीबथाकौनगिणी। भीष्मकीधुजाकटी इमुं
पकेसारथीकौमास्यो कृपाचार्यकौधनुष
काद्यो धजाकृदतै भीष्मक्रोधकरिजमदं
इतुल्यबाणचलायेतिनकौदेषि पांडवनकी
सेनातैसहायतानिमित्तदशमहारथीहाये
तिनकौदेषिभीष्मत्रैसौ जुहकस्यो सोसब
ननैभीष्मकौमूरतिवंतबीररसहीमान्यो त
हाविराटपुत्रउत्तरभीष्मकेसारथी औत्र
श्वनकौमारे तबशल्यरेषिउत्तरकेमारि
बेकौशक्तिचलाई ताकेप्रहारतैहाथीतै
गिरिकैउत्तरमस्यो जबउत्तरकौभ्रातासं
ष शल्यकेसारथीघोडामारे शल्यव्याकु
लहोयकृतवर्माकेरथपैचद्योताकौसंष
बाणनतैव्याकुलकियो तासंषकेप्रांतम

जपइयथापजुइकरिरोको तबसंपकेमा
रिवेकोआवतेभीष्मकोअर्जुनआपरोके
तबभीष्मअर्जुनकोजुइअनेकबीरनकोसं
घारकियो अरुसंघशल्यकोपयादोकस्यो
तबशल्यगराप्रहारकरिणंषकोरथतोडि
आपहोतैसोहाकियो जबसंघपड्प्रहा
रकरतबैरानकोमारि अर्जुनकेरथपंचदो
जपइयथाअर्जुनविनासबपांडवनकोब्याकु
लकिये भीष्मगजघटानकोषंडषंडकरतभट
समूहकोसंहारकरत रथानकेसमूहको
किन्ननिनकरतसवारनकोमारतभयोसा
हातजमरूपहीदीये बाणनतैआकास
छायगयो तान्अंधकारकोदेषिसूर्यअस्ता
चलकोगयो जबभीष्मजुइकोअवहार
कस्यो तबचंद्रमाकेप्रकासतैसर्वबीरआ
पआपकेस्यानगये इतिप्राभारथसार
चंद्रिकायांभीष्मपबणिप्रथमदिवसजुइव
एननामद्वितीयोधाप वैशंपायनउवाच
अत्रमैराजापुधिदिरभीष्मकोपराक्रमदेषि
ब्याकुलभयो ताकोश्रीकृष्णसमाधानक

रतभये प्रभातसूर्योदयसमैकौ च बृहस्पति
कौरवपांडवजुह्वकरतभये भीष्मबाणनक
रिराजानकेसिरकाटे सोमपृथ्वीमैपडतभये
तिनकौ देवि अर्जुन लखडवेकौ दोडो। तिन
दोऊनकौ दुंदुजुह्वभयो औरवीरपरस्परय
पेहुजुह्वकरतभये भीमसेनकलिंगराजकी
सेनामैजाय हाथीनकेसिरगदासौ बिदीर्ण
करे तिनतैसोली रनकी वर्षा भई हाथीन
कौपकडिपकडिके आकासमैफैके तिनके
रुधिरकी वर्षा तैब्याकुलक्षत्रदेवभानुम
तयेदोऊभये तबइनदोऊनकौ भीममा
रे अैसेंभीमकौ पराक्रम देविसेनाभा
ताकौ समाधानकरतभीष्मभीमसौंजुह्व
आयकियो जबदुर्योधनादिकभीष्मकी
सहायताकौ आये भीमकीसहायताकौ
अनिमनुआयो तिनकेपरस्परअतिघो
रजुह्वभयो तामेंअनेकवीरमरे रणभू
मिमुखकीकीडाभूमिसमानभई सूर्य
कौं अस्तभयो देविजुह्वकौ अवहारभयो
इतिद्वितीयदिनजुह्व केरिप्रभातभीष्मग

10) ४५ - हर्चनाकरा पांडव अर्धचंद्रबृहव
रिजुइकेरिबेलगे परस्परप्रहारनतैहधिर
बृष्टिभरितातेसवरक्तवर्णभये तासमेमैम
मघटोत्कच शेऊकौरवसेनामैप्रबेसकिये
सर्वकौरवदोजनपरबाणवृष्टिकरी जब
भीमसेनदुर्योधनकौबिरथकरिउरमेंबा
णमाख्यो तासौमूर्च्छितहोयगिस्थोतबसा
रथीदुर्योधनकौलैगयो फेरिचेतपापनी
षापेआयदुर्योधनबोख्यो तुमयांडवनतै
निलेहो सोसुद्धमनसो जुइनहीकरतहो
जैसेसुणिभीष्मक्रीधकरिबाणबर्षायपां
डवनकौसेनाश्रुतिव्याकुलकरी सोद
धिश्रीकृष्णअर्जुनकेरथकौभीष्मकेसनु
षल्याये अर्जुनबाणवृष्टिकरिभीष्मके
बाणनकौछेदिअनेकराजानकेसिरका
ठे औरराजानकेसिरकाटिकटिप्रथ्वी
मैंबिक्रायतकरी भीष्मकौभक्तिओसक्ति
दोजदियाई भीष्महबाणधारानकरिश्री
कृष्णअर्जुनकौशरणेजरमैदेयप्रहारकियो
तैनकरिदोजकृष्णरमयभये इनकाइसा

देषि पांडवनकी सेनाभंगी अर्जुननामकेगो
रवतेंसिथलजुहकरतभयो॥ तबश्रीकृष्णबो
ले तयाबूढ़कोंमारेंनहीहै सोमैमारोंगो अ
सैंकहिरथतेंउतरिचक्रलेपभीष्मकेसन्मुख
दौडे॥ तबश्रीकृष्णकोंआवतदेषिभाषबो
ले हेनयआईयैआईयैआपकेप्रसन्नक
रिबेकोंतपव्याहीकरैहै॥ मैअपराधीह
धन्यहौ॥ अबमैरोशिरचक्रतेंकाटियै जैसे
कहिशिरनवायो॥ सोदेषिअर्जुनरथतेंउ
तरिश्रीकृष्णकोंदोऊजुजानवीचिपकडे
अरुबचनबोल्यो॥ हेकृष्णप्रतिग्याभूलि
यहक्रोधकरिवोअसमयमेंजोग्यनहीआ
पकोहीपराक्रममोमैहै सोदेयो॥ अैसेकहि
प्रणामकरिरथपैलेगयो॥ फेरिधनुषधारि
बाणनकीबर्षाकरिअनेकरथामहानकों
मारिरणभूमिकोंरुधिरमईकरी॥ ताकोंदे
षिसर्वावीरप्रलयकालमेंकुपितजोरुता
कीतुल्यहाअर्जुनकोंमानतभये॥ अैसेअर्जु
नकोंविजयदेषिसर्वसेनाव्याकुलभईस
र्यास्तजांगिसबवीरअपनेअपनेस्थान

गये इती तृतीयदिन जुहुं सबहावीररात्रि
बितीत करि प्रभात ही को रवकर्म बूह करि जु
हुको आये पांडव अर्ध चंद्र बूहर चि जुहुको आ
ये भीष्म अग्नि मनुको मुष्प करि दोऊ सेना जु
हु करत भई कितने ककाल ताई भीष्मके अ
ग्नि मनुके समान जुहु भयो धष्ट हुम्न पौरव्य
को पुत्र मदन सायमी इदन जोऊन सौं जुहु
करि दोऊनको मारे भीमसेन मग धेइ कीसे
नाके हाथीनको मारि पयादो गदा गहि वीर
नको असे मारत भयो जैसे तण मंडलमें
बिचरत अग्नि नास करे जब दुर्योधन ना
तान सहित आये भीमके द्रुपदमें बाण मा
ले सो ब्यथा सहि भीम क्रोध करि एक बा
ण दुर्योधनकी छातीमें मारयो तासै नृकि
त भयो ता अन्न कासठै सेना पात सुषेण
जलसंधः सुलोचन भीम उग्ररथ भीम
बाहु अलोलुप सम बिबिसु विकट द्रु
ष दुर्येण दुर्मर्ष इनचौ रहनको भीम यम
लाकप चाप सिंहनाद कियो तासमें मे
गदत हाथी पर चयो आये भीमको बाण

तैव्याकुलहियो तहमटोलुचमद
नकीसेनाकौसारिसल्लहारेतैमग
हाथीसहितछाप अरुबहुतहापत
जावकौमारि घोरअंभकारकावेररहम
रात्रकरी तारात्रमैआपनेपरायेकौआर
घानही वीरबहुतमरेतितकोरेभिभीश
दिनहीमैजुइकौसमाप्तकियो सोसुणैको
खजाजितोनमरे अैसेबिचारतडेरानको
गये अरुपांडवप्रभातमारैगेअैसेनिजा
रतआपकेडेरानकोगये इतीचतुर्थदिना
सजुइ तापीछैदुर्योधनरात्रमैभीषापास
जायपूछी हेपितामहनित्यपांडवहीजाति
है अरुआपनोबिजयनहीतागेमभरण
हाजबभीषवाले हेदुर्योधनदेवताम
काबानतातै नरनागपणअर्जुनश्रीग
सभये सोउनकीमहायनेपुत्रिग्री
तेहे तसेनात्रियोचोदेनेमथिकी
अैसेसुणैदुर्योधनडेगनेअप
तेरात्रिचिनीतकरी अरुअ
हरत्रि पांडवनकीमका

आये भीम भाषा एदोऊरे नानमैप्रबेसकरि
घोरजुहकरतभये तहासात्यकीयाद्वरस
हजाररथीनकौयमलोकपहुंचाये त्रैसोसा
त्यकीकोपराक्रमरेषिभरिश्रवासात्यकीकेद
सपुत्रमारे तापीछेसात्यकीग्रहभरिश्रवा
घोरजुहकरतभये क्रोधसौंदोऊबिरथहोय
केषुजुहकरतमर्हितभये तबभीमसेन
हुयीधन आपआपकेरथनमेंधरिदोऊम
र्हितनकौलेगये चेतपायदोऊहीजीव
नकौमरणतेंअधिकमानतभये तासमें
मेंसात्यकीकेपुत्रनकौमरणसुणिअर्जुन
क्रोधतेंकौरवसेनाकौअग्रिरूपवणिना
सकरतभयो पचीसहजारमहारथीमा
रियमलोकपठाये सर्वसेनाहधिरमईन
हीनमेंरक्तबर्णहोयहोवव्याकुलभई ताके
समाधानकेनिमित्तभीष्मकेऊहकरतैक
रतेंहीसूर्यअस्तभयो तबजुहसमाप्तभयो
इतिश्रीभारतसारचंडिकायांभीष्मपर्वणि
पंचमदिवसजुहनामरतीयोध्याय फेरि
प्रभातहीकौरवतौक्रौंचव्यूहरचि पांडवम

करव्यूहरचिदोऊजुइकरतनये सोभीषवे
बाएनकरिपांडवनकीसेनाब्याकुलभइ
ताकोदेधिभीमधृष्टसुभ्रकोरवनकीसे
कोत्तयकरतनये तहांभीमसोदुर्योधनहुं
जुइकियो तबभीमदुर्योधनकेप्रहारसोहि
रथतेंउतरि सैकउनहाथीतकोपैकडिप
कडिआकासमेंफैके औरधृष्टसुभ्रबाए
नकीबर्षाकरिकोरवनकोब्याकुलकरेध
ष्टसुभ्रकेबाएनतेंदुर्योधनमूर्छितभयो
ताकोकृपाचार्यरथपैधरिलेगये तबपा
उवनकीसेनाकोसिंहनादसुणिभीषबा
एबर्षाकरी तहांशेपदीकेपांचौपुत्रभा
गि निजसेनाकोथांसिकोरवनकीसेना
कोत्तयकस्यो इनकोजुइहोतैहोतैहीस्
र्यअस्तभयो तबजुइसमाप्तभयो इतीष
ष्टमदिशसजुइ नामचतुर्थीध्याय ४
प्रभातहीभीषमंडलव्यूहरचि पांडवनके
वज्रव्यूहकेसन्मुखआये तहांअर्जुनभी
ष्मकेघोरेजुइभयो बिराटकेद्रोणाचार्य
केजुइभयो सोजुइमेंविराटविरथहोपस

धकेरणमैसवारभयो जबपितापुत्रदोऊइ
सोजुद्धकरतभये तवशेणचार्यशंषकोंमा
विरारकोंव्याकलकियो तहांसात्यकीपार
आयविरारकोंहुइयइंणचार्यसोंजुद्ध
यो तहांअलंबुषरात्तस बिंद अनुबिंदउ
जैणिकेराजाआयइंणचार्यकीसहायता
करी तहांअर्जुनकोपुत्रइरावानआय वि
दअनुबिंदकोंभगाये सात्यकीअलंबुषको
अइअस्त्रतैभगायो ताअबकासमेंभगदत्त
घटोत्कचदोऊसेनानमेंप्रवेशकरिअति
जुद्धकरतभये शत्यनकुलसोंजुद्धकरतभ
यो श्रुतायको पुधिशिरकेजुद्धनयो असे
जुद्धमेंअनेकवारमरिभरिजमलोकगये
तहांसर्वोत्तदेविजुद्धसमासकियो इतीश्री
सप्तमदिखसपुद्धनामपंचमोध्याय ५ ता
पीछेप्रभातहीभीष्मसागरबृहरचिपाड
वनकेअंगारकबृहसोजुद्धकरतभये त
हांधृष्टद्युम्नआदिअनेकवारनकोंभगा
ये तहांसर्वसेनामेंएकहीमहीसन्मुखआ
भीष्मकेसारथीकोमास्यो जबरणकेधो

डी इत उत भ मं ल न ये ता अ व का स मै व का
 षी कुंड धार बिशाल अपराजित पंडित क
 महोदर सुना भ एसा त ध त रा श्रु के पुत्र न
 कौ भी म मारे त ब त हां सा त न कौ म रे दे वि
 आ दि ट्य के त नाम भ्रा ता जु रु कौं श्रा यो ता ह
 कौ भी म य म लोक प ठायो त्रै सैं भी म कौ र व ब
 र न कौं मा रि ग र्ज ना क रि स ब न कौं ब ह रे क रे ता
 स म य में उ ल् ल सी कौ पु त्र इ रा वा न ल कु ली के
 सा त ७ पु त्र न कौं मा रि र ण भौं वि ष ज्वा ला न
 की ब र्षा क र ल भ यो त ब द्यु र्धे ध न की श्रा ग्पा
 तै अ लं बु ष मा या म य घो डो पै च टि रा त्त स
 न की से ना स हि त जु रु कौं श्रा यो त ब था के
 अ रु इ रा वा न के जु रु न यो त हां रा त्त स म्प द्धी
 अ लं बु ष के मु ष तै अग्नि ज्वा ला नि क सी इ
 रा वा न के मु ष तै वि ष ज्वा ला नि क सी ती न
 क रि के रा त्त स र्द न कौं अोर ना ग न कौं ब द्ध त
 ह्य भ यो ज व अ लं बु य रा त्त स न कौं ह्य प दे
 वि ध नु ष धा रि व ण न की ब र्षा क री त व इ
 रा वा न रा त्त स न कौं ध नु ष प डू सों का टि अ
 रु वी र न कौं मा रि अ ५

तौ हूराक्षसञ्जलंबुषरोपट्टककैरौ कहोपफे
रिजुइकरतभयो तवइराबोनवाकेमारिवेकौ
सेकडनसर्पनकीवृष्टिकरी जबञ्जलंबुषस
र्षबणिमर्वसर्पनकोभक्षणकरि घडसैंइरा
वानकोशिरकायो तवइरावानकोमरुदेवि
घटोत्कचराक्षसञ्जलंबुषकीसेनाकोमथन
कस्यो अनेकवीरनकोमारिआपकेपरिवार
केराक्षसनकौमासहधिरसैंतप्तिकरो जैसे
घटोत्कचकोपराक्रमदेवि राजाभगदत्तहाथी
परचढ्योहोसोआय। घटोत्कचकेरत्तकचा
रिराक्षसनकौमारिगर्जनाकरी। जबघटो
त्कचहबरकीकेप्रहारकरिअनेकहाथीनको
मारि भगदत्तसैंबुइकरतभयो तहांअर्जुन
हू पुत्रइरावानकोमरणसुणित्रो धतैं राजा
नकेमस्तकनकरिदृष्टवीछापदई औरभीम
सेनहक्रोधतैं अनाधर कुंडली बूदोर
स्वदीर्घलोचन कुंडनेद दीर्घबाहु सुबा
हु कनकध्वज विरज येनवदुर्योधनकेभ्रा
ताहेतिनकोमारि औरराजानकोपांडवनमा
रे जैसेपुइकरतैंस्योसदेविपुत्रावहारभ

हसबाण धारानकरि अनिमन्युकों छापे
कीसहायकरि देकों शेषरीकेपांचापुत्रजाये
तिनलंबुषकेसर्वबाणकेहनकरि नकि
तकिये तापीकेराहसचेतपापतमोमईमा
याकरी ताकेअथकारकोंदेषिसूर्यास्त्रके
प्रभावतैअनिमन्युराहसकोंबाणनतैकि
नमिन्नकरि नगायो तबभीष्मकोंआदिदे
महावीरमिति अनिमन्युकोंचास्यांतर
फलोंधेरिबाणनकीवर्षाकरी जबअनि
मन्युहसबनतैजुद्धकस्यो सबतहाअर्जुन
आपयेबनास्त्रकरिबीरहनकोंउद्यये तब
शोकसे एाचार्यपर्वतास्त्रकरिपवनकोंबं
धकरी अरुपाडवनकीसेनाकोचूर्णक
रतनये जबअर्जुनवज्रास्त्रतैपर्वतनके
पंडपंडकरिबीरनकोंनारिरुधिरकीसे
कडननदीकरी तबभीष्महकोधकरिपा
डवनकीसेनाकेबहुतवीरमारे बाणन
केप्रहारनतैरुसअर्जुनकोबाकलकिये
तबअर्जुनकोमुद्गैमंदोषश्रीकृष्णके
छाडिभीष्मकेसबुषदोडे जबभीष्मश्री

श्रीकृष्णको आदत देखिबोले हेना यह गोवि
र आइये अरु मोकों को रघुते मारिये जैसे
भीष्मकी बोली सुणि अर्जुन रथते उतरि आ
मकरि श्रीकृष्णको रथपेले गयो तापहि अ
र्जुन बहुत बाण करि वीरनको मारि मुहुं मै क
बंधन लक्ष्मण तनयो अरु भीष्म बहुत वी
रनको संघार करत सूर्यास्त देखि युद्धकी स
माप्त बोले इति श्रीमद्वनदिवसयुद्धनाम
सप्तमोऽध्यायः ७ जैसे नवै दिन भीष्मको
घोर युद्ध देखि रात्रिमें युधिष्ठिर श्रीकृष्ण
सो बोले जो तीन लोक सामिल होय युद्ध
रै तो ह भीष्मसो जीतै नही हमनै मर्ष पणतै
युद्धको आरंभ कियो जैसे पतंग चाहै जित
ना ही पराक्रम करे ये अग्निको तो बुझाय
सकै नही जैसे सुणि श्रीकृष्ण बोले हेरा
जन प्रभातमें भीष्मको मारुंगे अर्जुनमें
अरु मोमें नेद कहा है जब युधिष्ठिर बो
ले मैं तुमको मिथ्यावादी नही करोंगो भी
ष्मही पराक्रम युद्धविजयको उपाय पूरैंगे
जैसे निहूके र श्रीकृष्णको घोर ये देखि अ

तानसहितभीष्मकेपासपुधिष्टिरगये तहांजा
पप्रणामकियो जबभीष्महृष्टीकृष्णलोकौआ
येद्विप्रणामकरिप्रार्थनाकरी तुमअसेमो
सेअपराधीकोदर्सनदेकृतार्थकियो तबश्री
कृष्णबोले तुम्हारेतुल्यऔरबीरहेहीनही
तातैपुधिष्टिरकीबिनतीसुनौ जबपुधिष्टि
रबोले हेपितामहतुम्हारेतुल्यऔरपरान्न
माहेनही तुमइह्यामः होहमारासबसे
नामारी अबहमकोरवनसेकैसेजीतेगे
हमबालकपिताहेनही हमारेपिताअस्त
रत्ताकतुमहीहो जोतुम्हेंहमकोभरिणोह
हेप्रो हमसेपहलीहीक्यातंकहो जातेह
वनकैसेजाते जुधकोआरंभनहीकरते
रहमहकोरबहुतुम्हारेबालकहे सोके
रवतोअबलअरुराज्यवंतहे औरतु
हउतहीकीरत्ताकरतहो तातैउनतैआ
कहसरोपाप्रथ्वीमैहेनही अरुहमनि
तहैराज्यभर्यहैतिनकोतुम्हमारोह
तैहमकोआग्यादीजेजोहद्वैकृष्णसक
य अथवाषड्गुतैहमारेसिखनाटये अ

हमको जयको उपाय बनाइयो तब भीषक
हे धर्मराज तेरी समान और बलवान होने
ब्रह्मादिक जाके पाप पूजे सो श्रीकृष्ण तुम्ह
रोपाल कहो। यह श्रीकृष्ण दुष्टनको मरायरा
तो कौदेगो। ब्राह्मणनको धर्मपालन करैगो।
से श्रीकृष्णकी भक्ति तै तुमको कछु नी दुर्लभ
नही है। अरमें जितने धनुषधारि जुद्ध करौं
तितने मोको कोऊही जीतिसके नही। तातै
तुम सिषंडीको सेनापतिक रिमोसो जुद्ध करौ
मेवाके सन्मुख जुद्धनही करौगो। तब तुम्हा
रो जय होयगो। यां सिषंडी तै ही मेरो मृत्यु है।
यह पहलै स्त्री हो सो मैं वाको स्त्रीही जाणिवा
एनही चलाऊंगो। तातै अर्जुन सिषंडीके पी
छे रहि मोको बाणनतै मारि सरसय्यामे सु
वावो। अैसे सुणि पांडव भीषकौ प्रणाम करि
उरानको आये। तापीकै दोऊ सेनाके योद्धा
पहलै युद्ध करै हे तैसे ही जुद्ध करत भये। त
डा पांडव सिषंडीको आगे करि भीषके सन्मुख
आये। तिनको देखि भीषवाण बर्षातै अने

री तासमैभीष्मकोबाणवर्षाकरतैमध्यानके
सूर्यलौकीइहीदेषिसकेनही तबबाणधारा
बर्षतसिषंडाहीसन्मुखआयो ताकोदेषिभी
भबोले हेसिषंडीततेरीइत्तापूर्वकमोपे
महारकरिमेरेबाणतौपेअसैनहीआवेगे जै
मैसुक्रतीकोधनअपारअपैनहीजाय तबसि
डीबोल्या हेभीष्मतुममोपेसखचलावो
प्रथवानहीचलावो परंतुतुमअजिजीव
जावोगेनही अरुजोभाजोगेतोहीजीवो
गो असेकहिअसंघ्यातबाणभीष्मपेचला
जबभीष्महरोमनकेअग्रभागतैसिषंडी
अप्रचंडबाणनकौषंडनकरि आयकीबाण
पातैश्रावणअर्जुनकोआछादनकरि
नेकबीरनकेसिरकाटतभये तासमैयमें
थीरुधिरमईभई असौउतपातदेषि
णाचार्यभयनीतहोयसकलकौरवन
संगलेय भीष्मकीरत्तानिमत्त चारो
रुयोदानकोकोटकरतभये तहाअर्जुन
यबीरमंडलीसहितवाकोटकौषंडनके
असंघ्यातबीरनकोमारत युधिष्ठिरस

हितनीष्मपिताहकौप्रणामकरतभयो॥ तब
भीष्मपुधिष्टिरसौबोले॥ हेपुत्रइतनेवीरनको
मरणदेषिकरुणातैमोकौषेदहोतैहै॥ तातैमो
हकौनिपातनकरौ॥ अैसेंआग्यासुणैराजापु
धिष्टिर॥ आपकेसकलवीरनकोभीष्मकेमा
रिबेकौपठाये॥ तबघोरजुडहोतभयो॥ नहां
रुधिरनदीनमेंअसंख्यातगजनकोआदिलै
वहतभये॥ तहांभीष्मकेदिव्यास्त्रबलतैस
र्ववीरनकोबिसुषदेषि॥ सिषंडीसनुषअ
यबाणवर्षाकरै॥ तहांहंसतेभीष्मकोदेषि
वसुआपबोले॥ हेभीष्मअवतुमकौयासम
यमेंसस्त्रत्यागकरिबौयोग्यहै॥ अैसीह
मारीबाक्छहै॥ अैसेंबसूनकोबचनसुणि
भीष्मजुडतैसिथलभये॥ अरुसिषंडीबाण
नकोप्रहारकरतरयोतिनकोभीष्मपुष्यस
मांतहीमांततभये॥ तबअर्जुनअौरवीरन
कौबाणवर्षातिभजाय॥ भीष्मकोअसंधिब
एनतैमर्मस्थलबेधतभयो॥ तबभीष्महम
र्मछेदतैअर्जुनकेबाणजाणि॥ अर्जुनपैबा
णनजाये॥ सोसबअर्जुनछेदनकरिरोम

रोममेंभीष्मकेबाणप्रवेशकियेभीष्महउन
बाणकोमर्मस्थानमेंप्रवेशदेविहास्यकरि
पासठाडोजोइसासनतासोंबोलेअरेदेवि
सर्पजैसेंबिलमेंसूर्यकेकिरणजैसेंजलमें
तैसेंएवाणमेरेमर्मनमेंप्रवेशकरैहैताते
अर्जुनकेहीहैंसिधुंकीकेनहींअरुअैसेंजा
णियैहैपुत्रकेप्रमतेइंइहीवज्रधारावर्षहै
कहाअथवाकिरातकोरूपधारीरुइतैय
इकियेताहूकेअसेवाणसंभवैअैसेंदुः
सासनसोंबोलीअर्जुनकेप्रहारनतैअ
पकोब्याकुलतानहीदेषिकहीअरेअर्जुन
तरेबाणसिधुलहीहैतातेइटप्रहारका
असीसीचाकरतहीसक्तिचलाईतवज
र्जुनवासक्तिकेतीनषंडकरेतासमयमें
रुइअष्टपीसितीब्रबाणचलावेकीताच
इकरीजबअर्जुनक्रोधकरिअसंषिवा
नकरिनीष्मकेरोमरोमवेधिर्मर्मरुइ
किये तबभीष्मसायंकालमेंसूर्यलोप
मेंपडेपृथगागमेंनिसेअसंषिसरति
कीशय्यामेंसोयेताकोदेविअकलबीर

हाकारकरतभये॥ दुःखसोकभयतैशकलरा
 जानकेनेत्रततैअश्रुपातभये॥ सर्ववीरभूछा
 कंपपुक्तभये॥ अरुनीषकौतोरिव्यग्यानही
 रसो॥ तासमयमेंआकासबाणीभई॥ हेयोगे
 इनीष॥ उत्तरापणकालपर्यंतप्राणनकोश
 शीरमेंधारणकरो॥ औरगंगाकेपहायेहंसह
 पधारिमुनि॥ ननैहअसैंहीकसो॥ सोसुणि
 नीषयोगेइहबोले॥ उत्तरापणपर्यंतअसैं
 हीरहोंगो॥ तापीकैतहांरुदनकरतेकोरव
 पांडवनको॥ नीषसमाधानकरिकेबोलेहे
 पुत्रहोमरोसिरलटकेहे॥ याकैतकिया
 लगायमेरोकष्टहरिकरो॥ तबदुर्योधन
 कोंआदिदेराजाअनेकअनेकतरहकेत
 कियाल्पाये॥ तिनसबनकोअनादरकरि
 अर्जुनसोंबोले॥ हेअर्जुनतूतकियाअगा
 य॥ सोसुणिअर्जुनतीजबाणगुदीमेंमा
 रिसिरजंचोकियो॥ तबनीषअर्जुनकोस
 राहिगांधारीपुत्रनसोंबोले॥ सपत्नीनके
 बैरपतिजीवतरहे॥ तबता
 म्मारोहबैरमेरेमरण

जैसेतु
 तासों

अब बैर छोड़ो तो दुर्गो धनमांजी नही तापी
 के रात्रिमें जल माग्यो जब राजा रणपात्र
 में जल लेके आये तिनको अनादर कियो ता
 हिरेषि अर्जुन दिव्यास्त्र बलतें दिव्य जल धारा
 निकालि तिनको तप्त किये जब भीष्म अर्जु
 नकी बहुत सराह करी तब और राजा नको ग
 येपी कैं कर्ण आग हाथ जो दिभीष्म सों अथ
 राधत्तमा करायो जब भीष्म कर्ण सों बोल
 हे कुंतीके पुत्र पांडव तेरे सहोदर है ताते
 पुत्र तू उन सों बैर त्याग करि तब कर्ण बो ल्यो
 मेरो बैर जिन सों है तिन सों तो है ही और प्रेम
 तो दुर्गो धनमें अथ वा युद्धमें है जैसे बोलि
 रथमें सवार होय गयो तापी के वारात्रिमें
 अर्जुनके बाण भयतें व्याकुल दुर्गो धनकी
 सेना ताको कर्ण वीरके बचन ही समाधा
 न करत भये दोहा भीष्म पर्व भाषाय है भार
 तसार प्रमान रावचंद्रसिंघके हुकमकी नी
 मुकबिसुजान १ इती श्री भारतसार चंडि
 कायां भीष्म पर्वणि नाम अष्टमोऽध्याय ८ ॥

सनमुषत्राये तिनकौणाचार्यवाणनकीब्र
ष्टिकरिव्याकुलकिये अरुअनिमनुकेअरु
कर्णकेघोरपुइभयो अरुभीमसेनसत्य
येरोउरएमैमंडलकरतेगदापुइकरतभ
ये दोउमूर्छापायभूमिमैपरे तबसह कौ
ऋतवमीरथमैंधरिलेगयो तापीकैभी
मसेनउठिगरातैअनेकबीरमंडलकौषंड
नकरतभयो तबकर्णकेपुत्रब्रषसेनपां
चौशेखरीकेपुत्रनकौजुइमैव्याकुलकर
तभयो तहाडौणाचार्यप्रतग्पापालनक
रिबकौयुधिष्ठिरकारसाकरववारे स्पघ
मुषमुगंधर व्याघ्रमुष कौआदिले रा
ज्ञानकौमारे ताजुइमैअनेकबीरनकेरु
धिरकीनदीभई ताकेप्रवाहमैपिसाचाग
जसुइनसौरुधिरभरिभरिपांनकरिमदो
नमत्तभये अरुमांसभक्षणतैत्रप्तहोय
अर्जुनकेधनुसकोटंकारसुनिसुनि
नाचतभये तापीकैअर्जुनकौरवनका
सेनाकेबीरनकौमारिब्रह्मलोकपहाये ये
सैयुइहोतैसूर्यअस्तभयो इतीप्रथम

दिवसयुद्धम् तापीके रात्रिके समे दुषाध
नशैणाचार्यस्युच्छोः अपयुधिष्ठिरको
पकडोनहीताको कारण कहा तबशैण
बोले अर्जुनको निकट रहतै युधिष्ठिरप
कडमें आवेनही जैसे सुणि उगर्तराजसु
सर्मा बो ल्यो हे शैण प्रभातमें अर्जुनको जु
धके निमत बुलाऊंगो तुम युधिष्ठिरको
पकडों जैसे कहिसु सर्मा प्रभात अर्धचंद्र
बुहरचना करिद सहज्जारमहारथीन
को संगलेय अर्जुनको युद्धके निमत बुला
यो तब अर्जुन युधिष्ठिरकी आगपापायरा
जाकी रक्षा करिबेकोसे न्यजितराजाको
राषिसुसर्माकी सेनाके संघार करिबे
को च ल्यो तब आवते अर्जुनको उगर्त
राजसुसर्माके सर्वयो धायेक ही समय
में असंख्यात व्योवाण धारानतैं आछादि
त करत भये तापीके अर्जुन देवदत्त संख
को बजावतो भयो ताके अवणतैं सक
ल जोही संतप्रभये जैसे अश्रिकरिण
होय तापीके अर्जुन त्वाष्ट्र असत्रके प्र

नमुषत्राये तिनकौणाचार्यबाएनकीब्र
ष्टकरिव्याकुलकिये अरुअनिमनुकेअरु
हर्णकेघोरपुइभयो अरुभीमसेनसल्प
पेरोउरणमैमडलकरतेगदा पुइकरतम
मे होउमूर्छापायभूमिमैपरे तबसल्पकौ
ऋतवर्मारथमंधरिलेगयो तापीकैनी
मसेनउठिगरातैअनेकबीरमंडलकौषंड
तकरतभयो तबकर्णकेपुत्रब्रषसेतपां
चांशेपदीकेपुत्रनकौजुइमेव्याकुलकर
तभयो तहाडोणाचार्यप्रतग्यापालनक
रिबेकौयुधिष्ठिरकीरक्षाकरबेवारे अंध
मुष मुगंधर व्याघ्रमुष कौआदिलेरा
जांनकौमारे ताजुइमेंअनेकबीरनके
धिरकीनदीभई ताकेप्रवाहमेंपिसाचा
जसुउनसौरुधिरभरिभरिपांनकरिम
नमत्तभये अरुमांसभक्षणतैत्रप्तहोए
अर्जुनकेधनुसकोटंकारसुनिसुनि
नाचतभये तापीकैअर्जुनकोरवनव
सेनाकेबीरनकौमारिब्रह्मलोकपठाय
सैयुइहातैसूर्यअस्तभयो इतीप्रप

दिवसयुद्धम् तापाक्षैरात्रिकेसमे दुर्घाध
नशैणाचार्यसूच्यो आपयुधिष्ठिरको
पकडोनहीताकोकारणकहा तवशैण
बोले अर्जुनकोनिकटरहतेयुधिष्ठिरप
कडमेंआवेनही जैसेसुणिअर्गतराजसु
सर्माबोलेहैशैणप्रभातमेंअर्जुनकोजु
इकेनिमतबुलाऊंगो तुमयुधिष्ठिरको
पकडों जैसेकहिसुसर्माप्रभातअर्धचंद्र
बुहरचनाकरिदसहज्जारमहारथीन
कोसंगलेयअर्जुनकोयुइकेनिमतबुला
यो तवअर्जुनयुधिष्ठिरकीआग्पापायग
जाकीरत्नाकरिवेकोसेत्यजितराजाके
राधिसुसर्माकीसेनाकेसंघारकरिवे।
कोचलो तवआवतेअर्जुनकोअर्गतर
राजसुसर्माकेसर्वयोधायेकहीसमय
मेंअसंख्यातय्यादाएधनाननंआछादि
करतमये तापाक्षैअर्जुनदेवदत्तसंघ
कोबजावतोमयो तेकेअचणनैसक
अज्ञेहीसंतप्रमये जैसेअणकविअण
द्वय तापाक्षैअर्जुनत्याउ

योगतैज्वाला बरषतबीरनको जैसे सोदा
व्या जैसे मध्यानको सूर्य अरु अर्जुन तो
अगर्तन सो युध करतर हो ताअब सरमे
शोणाचार्य बाणनतै बीरनको संघार कर
ल करत युधिष्ठिरके पकडिबेको आये ति
नको पांचालबीर सत्यजितरोके अरु सस्य
जितके अनेक बाण शोणाचार्य पै पडे तोह
तिनको अनादर करि शोणाचार्य क्रोधतै स
तानीक अरु राठको कनिष्ठभ्राता इट
सेन अरु चन्द्रदेव बसुदेन इनचारु
नकुसेना सहित मारे तब युधिष्ठिर संग्राम
कोडि भागत भयो तापीके पांडवनके यो
धा शोणाचार्यके प्रहारतै व्याकुल होय भ
मके सरण आये तब भीमसेन सरन आ
ये राजानके समाधान करि शोणाचार्यके
सेनाके अनेक बीर मारे तापीके अर्जुन
सुबाहक तबाह दोऊ राजानको सपति
वार मारत भयो तब भीमसेन गजरा
पेंचटि बंगदेसके राजाकुंमारिवाके अ
कबीरनको मारत भयो ताकुं देषि प्रा

जो तिसपुरको राजा भगदत्तहयोजनपादगजे
इपेचदि भीमसौं जुष्करि बैकौ आयो। तौको
देषिसकलवीरचकितभये। जाके मरुकी गं
धतै दिगजहमदहीनभये अरुजाके चंचल
काननकी पवनतै अनेकबीरबाहनसहितउ
उतभये अरुजाके सुडाइंडके प्रहारतै मेघ
घंडघंडभये अरुकलभ्रत्यके समानरूपसे
उनेअनतै वीरनको तेजनष्टकरतपोपुष्कर
हैं असेमंदमंददेपतभयो अरुककुकसुंडके
अस्यबैतैकालज्यो अस्यपि वीरनके आण
हरतभयो एकयोजनप्रमाणप्रस्थीकौ आ
है यावनतैदाविषडोरहै असेगजेइकोदे
षिसकलवीरविज्वारकरतभये यह एक
हीगजअगिपावयेपदंनगवसुंडकागिमा
तौअसौहणीमारबैकौअमपरं नागज
उपरचयेभगदत्तनामप्रैजंगिदिअजापा
सोगजगजदाईसुडाकेकुकुलायावय
वित्तअपेअपेयेया नावैचलनेवनाम
यऊगुडरुपेअपे अरुनाथरुपेअपे
कौअसुअपेअपेअपे

हू करत भयो तए इके दिषियुधिधिरकौ आ
रिष्युधिधिरकौ क्रोधतेसन खत्रापे ति
नकौ दिषिगजराजभीमकौ दिषियुधिधि
रादिकमहार गीनकेसनमुख आवत भ
यो तब भगदत्तबाणनक प्रहार नैदात्व
कीयादबको व्याकुल करि अनेकबीरन
कौ मारत भयो तिनबीरनकौरुधिर
पान करि अनेकपिसा चत्रसहोय गान
नित्र करत भये अरु गजराज तिके कबा
रनकौ सुडतै पकरि आकास नै फैंकत
भयो ताके भयतै भीमादिकबीरनिकट
आयसके नही अरु भगदत्तके बाणनक
रिबीरव्याकुल होय हाहाकार करत भये
ताकौ सुणि अर्जुनत्रगतसेना कूपवना
स्त्रसौ नष्ट करि पवनके बगसमान थ
तै भगदत्तकेसनमुख आयो आवत हीवा
णनतै बीरनकौ मारि प्रथीकौरुधिरम
ईकरी अरु प्रतंचाकेटंकारतै सेनाकौ ब
धिर करि गजराजपे बाणनको प्रहार क
रत भयो अरु भगदत्तहू अर्जुनपेशीक

सर्वे असंख्यातवाणब्रह्मिकरिअर्जुनके
प्राणहरबैकौनारापणोस्त्रचलायो ताकौ
अमोघजाणिश्रीकृष्णवत्तस्थलमेंहारत
स्त्रिधारणकियो सो देषिअर्जुनश्रीकृष्ण
सौकस्यो हे कृष्णयाअस्त्रकौआपवत्तस्थ
लमेंधास्योसोपुइमेंयाअस्त्रकौमैधारिबे
जोग्यनहीकरा तबश्रीकृष्णबोले हेअर्जु
नमेंप्रथीकीप्रार्थनातैपह अस्त्रप्रथी
केपुत्रनरकासुरकौदियोहो अरुतानैअ
पकेपुत्रभगदत्तकौदियो सोअबमैमेरो
अस्त्रलियो यातैहेअर्जुनतूषेदमेंतिक
रो असौकृष्णकोबाकसुणिअर्जुनऊर्ध
मुखअसंखिवाणनकरिभगदत्तकौश्री
गजराजकौबिदीर्णकरिदेवबासीदेवनके
हंब्याकुलकिये श्रीबाणनकरिगजेइकी
घटाकाठिअसंखिवाणनकेप्रहारतैगजे
इकौश्रीभगदत्तकौआसोवारभयो सो
विधेनयेह दोउपांडवनकीसेनाकोमथ
नकरतभये तापीछेअर्जुनगजराजके
कुंभस्थलमेंमास्यो सोबाणललाटकौमै

धिभागहोयनिकस्यो जबगजराजप्रा
हीनहोय पृथ्वीमेंपडबेलग्या ताकौपा
नतैदाविभागदत्तअर्जुनपेअसंघ्यबाण
हारकरे जबअर्जुनहयुद्धकरतही अ
चंद्राकारबाणकरिनेगदत्तकोशिरका
पृथ्वीमेंतापतनयो जैसेकामरूपीरा
जागदत्तकोमारि अर्जुनबाणधारान
करिकौरवनकीसेनाकोब्याकुलकरी सो
अपभीतसेनाकोकोईसरणमित्यो नही
जैसेबोलानकीत्रिचितें मरुस्थलकेपक्ष
नकोबृहत्तादिकह शरणनहीमिले और
गंधारकेवीरबृषक अचल एदेऊयुद्ध
कोअपे तिनकोअर्जुनएकबाणप्रहा
रतेंमारि तबशकुनीभ्रातामरणकेरोष
तैयुद्धकोआयो तौमायामयअनेकदुष्ट
अस्त्रनकेप्रयोगतेंअंधकारकियो ताको
अर्जुनसौरास्त्रबलतेंब्याकुलकरिनजा
यो तबशंणाचार्ययुधिष्ठिरकेपकडबे
कोपांचालराजाकीसेनामेंप्रवेशकरि
वीरनकेसिरनतेंआस्योदिसाक्षुदितक

रि पांडवसेनाको व्याकुल करी तब नीले व
 र्ण रथ सारथी अश्वजाके जैसे माहिष
 तीको पतिराजानील आग्नेय अश्वते शैलसे
 नाको व्याकुल करी तब जैसे देवि अश्वस्था
 मा आपधजा कुत्र धनुष रथ रुदन करिष
 ऊ धरि आवते नीलकों माथो तानीलकों म
 थो जाणिको रव हर्षते सिधनाइ कियो सो सु
 अर्जुन त्रिगर्त संसप्तक नकों मारि फेरि आ
 य शैला चार्पकी सेनाको विधंस कियो त
 ब कर्ण आय आग्नेय रथसो अर्जुनकी सेना
 को दग्ध करी जब अर्जुन मेघालूते अश्विको
 सातिकरि कर्णसो युद्ध करत नयो तब कर्ण
 अर्जुनके घोर युद्धमें वीरनके सरीरते अने
 करुधिर मई नदी बहत नई जब अर्जुन वा
 युद्धमें कर्णके विषाद शत्रुजय वीर इतली
 न्यो भ्रातानको मारे जा युद्धमें निसाचर पि
 साच तप्त होय हर्षते सब करत नयो रुधि
 रकी नदी नमें अनेक वीर बहे तहानीम
 अनेक वीरनके शिर काटि बेरीनकी से
 ना विधंस करि गाजत नयो

द्वितीयतैघायलभयेजे बीर तिनने प्रति
तोलाहलकस्यो तहाताकीधुजामैबैठेजेह
नुमानसोयकोलाहलकोसुणिआपकीपु
कुकेअशितेदग्धहोते लंकावासीननेको
लाहलकस्योहो ताकोस्मरणकरतभयेजे
सेअर्जुनकेपराक्रमतेशकलराजाभयभीत
होयसूर्यकोअस्त्रजाणियुद्धकोसमाप्तक
स्यो इतीश्रीभारतसारचंद्रिकायांशोणपर्व
र्णद्वितीयदिवसपुंड्रनामद्वितीयोध्याय ता
पीठेश्रीमालहीशोणाचार्यसौंदर्योधनबोल्पो
हगुरु तुमपुंथिदिरके एकडेबेकीप्रतिज्ञा
करीहीसोपकडोनाही तातेउनमेंतुम्हा
रोपक्षिपातहे अरुमोंकोमिथ्यासहदृष्टिपा
बोहो तासोंअबसत्यकहो जबशोणाचा
र्यबोल्पो हेराजनहितनेअर्जुनराजाकी
ज्ञाकरे तितनेमोंसोंपकडोनायबही ताते
संसप्तकगणअर्जुनकोहल्लेजावो तापी
मेंजुहकरोंसोतुमहेयो जैसेकहिदुर्योध
नकोअसन्नकरिशोणाचार्यचक्रव्यूहचे
तहांदक्षहजारमहारथानकोसंगदेय

रुपाचार्य कर्ण दुःसासन सहितदुर्योधनको
बूहके मध्यभागमें राष्यो अरुती सदुर्योधनके
भ्राता सहितशोणाचार्य अग्रभागमें रहे अ
रुसकुनी शल्य भरिश्वा इन सहित जयप
थको आपने समीप राष्ये ताबूहमें दुर्योध
नको देषि राजापुषिश्चिर अतिमनुसो बो
ल्यो हे पुत्र सुणिश्री कल अर्जुन प्रद्युम्न अ
रुत्पाचक्रबूहके नेदबेमें समर्थ हो सो अब
श्री कल अर्जुन तो जुद्धको हरिगये अरु छाँतो
तू है तासो यह भारको तही धारेंगे यह क
हिबो योग्य नहीं परंतु समें कहावै है तब अ
तिमनुबो ल्यो हे तातमें माताके गर्भमें हो
तब श्री कलके मुषतें चक्रबूहको नेदनके
रिप्रबेस तो सुण्यो हो अरु निकसिबो सुण्यो
नही तातेयाको नेदप्रबेस तो करोंगे परंतु
निकसिबेकी सामर्थ्य नहीं असें सुणिपुषि
श्चिर बोले हे पुत्र हम ब्रह्महृते रे पाँके लगे
आवेंगे सो तो कोनिका सिल्यावेंगे असें
सुणि अतिमनुबूह नेदन अंगीकार करिक
तापें जाय प्रणाम करे

दपापजुद्धकौचलतैहीसन्मुषठाडाउत्तरकौ
देषि तवउत्तराहस्वामीकौयुद्धनिमित्तजाते
पिनेत्रअशुपुक्तकरे ताकौइष्टिहीतैगर्भ
वतीकरीअरुसमाधानकरिफेरियुधिधि
रकेपासआयो ताकौअप्रर रकरिपांडव
युद्धकौचले पीतअश्वः तरथपैसचारहो
य सुवर्णामयसारंगायुक्ताध्वजासहि
तरथपैकंडलाकारधनुषतैबाणवर्षाक
रिवैरीनकौसंहारकरहीचल्यो जैसेडे
लकेप्रहा तैकाककुलभगै तैसैशत्रुसेना
कौभगांवरणमंडलमैगर्जनाकरतजय
इथशंणाचार्यसौयुद्धकरत हकौमुष
भेदनकरिबेगै प्रवेसकरतनयो ताके
पीछेप्रवेसकरतपां वनकौरुइवेर
प्रभावतैजयइथजुद्धकरिरोके एकलो
अनिमनुहीब्यूहमध्यमैजायबाणवर्षा
अपारकरी अनिमनुब्यूहकेमध्यअने
कराजानकोसंहारकरिगजअश्वनरन
केरुधिरप्रवाहनमैअनेकरुंडमुंडवहाये
जैसेजुद्धमैशाल्यअरुकरणकैरोऊकनिष्ट

आताइनकौमारिकर्णशकुनिदुर्वोधनशरि
 वीरनकौबाणनतैहिननिन्नकरिभजायेत
 हापिसाचनकेबालकहाथीजकेकांननकौ
 पात्रकरिरुधिरपांनकरतभये जैसेविजय
 पायअभिमन्युसंघधुनिकिथोतानादतैरि
 सानकौशशायमानकरिवीरनकौबाकुल
 करे। तहांकर्णपुत्रब्रथसेनबसातिराजस
 त्यश्चवायुइकौआये तिनकौमारिशाल्यके
 पुत्ररुक्मरथकौमास्यो ताकीरसाकरिबे
 कौसत १०० राजपुत्रआये तिनहकौमारे
 जैसेपराक्रमदेविसकलवीरसिरकौकंपा
 यमानकरतभये तवदुर्वोधनकोपुत्रल
 जमायुइकौआयो तवतालोंधोरयुइक
 रिबाहकौमास्यो तापीकेपुत्रकेसोकतैदुर्मे
 धनदुष्यतहोय क्रोधकरिअनेकराजस
 डलीसहितयुइकौआयो तहांअभिमन्यु
 सकलसेनासौपुइकरतब्रह्मरकराजा
 कौमारिवाकेकंठकेरुधिरसौलक्ष्मणकौन
 लांजलीई अरुअयोध्याकेराजाब्रह्म
 लकौसिरकाटिरुर्वोधनकेपुत्रकौ न
 न

ज्ञानकेसिरकाटिरुइकोबलिदानदिया
रुनोजराजकोमारिदुःसासनकेपुत्रको
सिरकाटिशाल्यकोरथतोडिमघबेगविधुके
सुबर्चासत्रुजयइतनेराज्ञानकोमारि
तकुनीकीसेनाहकोमारतनयोतापीकेदु
धीधनकोभगायप्रलयकालकेअग्निकी
नाहीरणमंडलमेंदेदीप्यमानहोतनयो
ताकेदेषिअनेकबीरहाहाकारकरतनये
जबदुर्धीधनस्वासनाथतशोणाचार्य
सोबोलतनयोहेगुरुयहअनिमनुधनु
षमंडलतैबाणबर्षाकरतयुद्धमेंसकल
बीरनकोसंहारकरेहेअरुगजश्वरथ
थीनयेयाकेबाणबज्रसमानपरतहेसो
यहअल्पहीहेअथवायमहीहेवाप्रलय
कालकोअग्निहीहेयाकेसन्मुखगये
पीकेकोऊबचैनहीतातेतुमहारीसेना
मेंपहत्तयरोगरूपहोयआयोहेजासो
अबतोयातोदाकरबोयोग्यनहीअरु
युद्धमेंयाकेजीतिबेकोउपायकरणोंत
बशोणचार्यबोलेहेदुर्धीधनयहकुमार
युद्धमेंश्रीकृष्णअनुनकेसमानहैयाके

बलकेसौवैबादेहकोंअपनीसेनानहीअरु
पारंइपोत्रकौसुरोसुरहजीतिसकैनेहीता
सौयथासक्तिउपायकरैहीगेअसैकहिडो
णाचार्यकणिकोंसंगलेपयुद्धकोंगयेतहांअ
भिमनुहबाएनकीबर्षाकरिदोऊनकौजीति
संग्रामतैविमुषकरतभयोतबकर्णडोण
देऊननैबिचारकियोयहअभिमनुमैसो
पराक्रमीहैजायासौएकएकयुद्धकरैतौस
बनकौमारेतातैसबमिलियासौजुद्धकरै
गेजबयहमरेगोयहबिचारकरिसबसा
मिलहोययुद्धकोंआयेतहांकृतवर्मापत्ते
सन्मुखकौमार्गछोडिपार्श्वभागमेंआवरथ
कौकाटिबाहनमारेअरुकृपाचार्यसार
थीकौमारिचक्ररत्नकमारेकर्णधनुषका
घोतबरवद्वचर्मधारिअभिमनुरणमंड
लमेंबीरनसिरकाटतबिचरतभयोआ
कासमैउकूलतबीरनकेधिरकाटिवेकौप
उतपादप्रहारतैदृष्टीकौकैयावतअने
कगजनकेकुंजस्थलविदारतअसैरण
मैअतिभयंकरअभिमनुकेंदिषिडोणा

पार्यवाणप्रहारतैस्वङ्गकौमंडिषंडनकि
प्रो तवअनिमनुचक्रधारिचक्रपाणि
लौदाववरूपवैरीनकोनासकर... त
बअसैदेविशैणाचार्य अश्वस्थामा कर्ण
कृपाचार्य इन्द्रलौ शकुनि दुःशासनको
पुत्र इनसातो ७ मिलिताकोचक्रकाद्यो
जबअनिमनुगदाधारि गदाधरलौअने
कबीरनकोमारतशकुनिकेकनेष्टभ्रा
ताकालसेनकोमारि असंघातगजघ
टानकोषंडषंडकरि इसराजानकोमा
रिकेकयराजाकोरथतोडो तवदुःशा
सनकोपुत्रगदालेकेआषो जबदोऊन
कैधा ६६ नयो तेदोऊलडतलडतएथी
मैपडे तवतेहांपडेअनिमनुकोदेवि सक
लयेहासामिलहोएकसमयमेंअनेकस
स्त्रः हारनतैमाह्यो जबदुःशासनकोपु
६६ ठिकारिअनिमनुकोधिकारकरि म
स्तकमैगदाप्रहारकियो असैताकोमा
ह्योदेविः कासबासादेवबोले याएक
लेरथहीनअनिमनुकोअनेकमहारथ

मिलिअन्यायकरिमास्यो यहआकासबाणीसु
णिकारवनकेसकलयोहा सिंहनादकरियां
डवनकासेनाकौभजावतभये तबहीसूर्य
अस्तभयो जबदेऊसेनाकेबीरनैयुइसमा
प्रकियो श्लोक मातुलोयस्यगोबिंदरपिताय
स्यधनंजयः सोमिमनुर्हंतोपुद्देकालोहिद्
रतिक्रमः १ तापीके अर्जुनसंसप्तकगणन
कौमारि अपसगुनेदेषिउदासहोपः निजसे
नामैआवतभयो तहासबबांधवनकौसो
कतैआतुरअधोमुषदेषिबोलतभयो हेयो
हाहोओरतौमेरेसन्मुखसर्वहीआयेहै अ
हअमिमनुनहीआबैहै थाकौकारणकहा
अथवानिकसिबौजाणेबिनाचक्रबूहमें
प्रवेसकियो जैसेअमिमनुकौसकलबै
रीननेबलकरिअधर्मतैमास्योकहा जैसे
चिंताकरतपुधिष्टिरकेमुषतैअमिमनुब
धकौबजातसुणिअर्जुनमूर्द्धितभयो तब
ताकौसमाधानकरि श्रीकृष्णबोले हेअर्जु
नबीरशत्रुनकौसंहारकरिदिव्यगतिकौप
हचेताबीरकौनसोचिये जैसेसुणिअर्जुन

तेरे मुषकों में कब देखों गो अरु नीम आदि
अस्त्र धारी न नै हते रीर खान करी तब तू मातु
जको हस्मर्णन कियो ताते सब व्यापा समर्थ
मातु लश्या कृष्ण हतो को न राष्यो असे बोली
दृष्ट्या में पडि फेरि संग्या पाप उद्यो तब अग्नि
मनुके पाके चलते महारथीन को जय इय
रोके असे सुणि अर्जुन क्रोधतें बोली जो
तकाल सूर्यास्त पहिलें रुद्र के राषेह जय
थको न मारो तो महापातकीन के पातव
तैलि सह अग्नि में प्रवेश करु असी
जुनकी प्रतगा रतन के मुषतें सुणि जय
कंपित हो पदुयो धन सों कही हे दुयो धन
तुम मेरी रक्षा करि सकौ तो मैं रहो नाही
तैम जिजाके पुत्र के सोक करि के आतुर
अर्जुन मो को मारे ही गो असे सुणि दुय
जय इय को ले जाय शंणु चार्य सों कही
की रक्षा करो जब शंणु चार्य याको स
करि राष्यो तापाके सुभद्रा पुत्र के सोव
लाप करि बोली हे पुत्र तू इया वत ब्रह्म
तार सत्य बारी सुसील नीति बती अ
विषय तेम ज्ञ करता जागति को प

तिकोंत हजा ॥ १ ॥ ऐसै कहत भई ॥ तापीछै श्रीक
 लकी आगपातै प्र ॥ १ ॥ अर्जुन सपन करत भयो त
 हांसुप्रमै अर्जुन श्रीकल सहित कैलासमें जाय
 शिवकौ प्रणाम करि स्तुति करत भयो ॥ श्लोक
 नमः शिवाय रुद्राय महेशाय कपालने ॥ ज्ञानि
 ने पशुनाथाय भवाय भवसाधिने ॥ १ ॥ कामर
 दायस्त कामाय धर्मदाय मखच्छिदे सुधाक
 रकिरीटाय नीलग्रावाय तेनमः ॥ २ ॥ ऐसी स्तु
 तितै प्रसन्न महादेव धनुषपाशुपतास्त्रविज
 यमंत्र अर्जुन कौ दियो सोपाय कृतकृत होय ॥
 अर्जुन जाग्यो प्रभात ही समुद्र तुल्य प्रतग्पाही
 ताकौ गोपुरजल समान मानियुधि शिखौ
 सुप्रकौ वृत्तांत कहि ॥ आनंदित करत भयो
 इती ततीय दिवस युद्ध ॥ ३ ॥ तापीछै प्रभात
 ही आद्रिक करि सर्वही सस्त्र अस्त्रधारि वा
 रण भूमिमें आये ॥ अरु रात्रिके समै अर्जुन
 केतपतौ निद्राहीन कै रव अरु गुरशौणाचा
 र्यबीरन सहित सक ॥ ४ ॥ ब्यूहरचो ताब्यूह
 के चोतरफ जथा जोग्य बीरन कौ राषि ताके
 बीचि परम ब्यूह करि ताके क्रतवर्मा दिक्वी
 रनकौ आवर्ण कियो ताके बीचि सूची ब्यूह

रिमुषकोमैंकबदेवोंगो अरुनीमन्नादि
प्रस्त्रधारीननेहतेरीरक्षानकरी तबतमातु
नकोहस्मर्णनकियो तातेसबव्यापासमर्थ
मातुलश्राकृष्णहतेकोन ष्यो अैसेबोली
एथ्यामैंपडिफेरिसंगपापउधरो तबअग्नि
मनुकेपाकेचलतमहारथीनकोजपइथ
रोके अैसेसुणिअर्जुनक्रोधतैबोल्पो जोप्रा
तकालसूर्यास्तपहिलैरुद्रकेराषेहजयइ
थकोनमारोतो महापातकीनकेपातकन
तैलिमहं ओअग्निमेंप्रवेशकरूं अैसीअ
र्जुनकीप्रतगाहृतनकेमुषतैसुणि जयइथ
कंपितहोपदुर्योधनसोंकही हेदुर्योधनजो
तुममेरीरक्षाकरिसकोतौमैंरहो नाहीतोघ
तैअजिजाकेपुत्रकेसोककरिकेआतुरअैसे
अर्जुनमोकौमारैहीगो अैसेसुणिदुर्योधन
जयइथकौलेजाय शंणाचार्यसोंरहीआपय
कीरक्षाकरो जबशंणाचार्ययाकौसमाधा
करिराष्यो तापीकैंसुभशपुत्रकेसोकतैबि
लापकरिबोली हेपुत्रतइयावतब्रह्मवेत्ता
तारसत्यबादीसुसीलनीतिवती अश्वमेधा
दिकअनेयज्ञकरता जागतिकौपहुंचेता

तिकों तू हजा ॥ जैसे कहत भरी ॥ तापी छै श्रीक
 लकी आग्या तै प्र ॥ १ ॥ जून सपन करत भयो त
 हां सुप्रमै अर्जुन श्रीकल सहित कैलास मै जाय
 शिव कौ प्रणाम करि स्तुति करत भयो ॥ श्लोक
 नमः शिवाय रुद्राय महेशाय कपालने ॥ ज्ञानि
 ने पशुनाथाय भवाय भवसाधिने ॥ १ ॥ कामर
 दायास कामाय धर्मदाय नखच्छिदे सुधाक
 रकिरीटाय नीलग्रीवाय तेनमः ॥ २ ॥ जैसे लु
 तितै प्रसन्न महादेव धनुषयाश्रुपतास्त्रविज
 यमंत्र अर्जुन कौ दियो सो पाय कृतकृत होय ॥
 अर्जुन जाग्यो प्रभात हील मुश्तुल्य प्रतग्याही
 ता कौ गोपुरजलसमालमां नियुधि शिर कौ
 सुप्रकौ बृजांत कहि ॥ आनंदित करत भयो
 इती त तीय दिवस युद्ध ॥ ३ ॥ तापी छै प्रभात
 ही आद्रिक करि सर्वहोसस्त्र अस्त्रधारि वि
 ररण भूमि मै आये ॥ अरु रात्रिके समै अर्जुन
 के तपतै निद्राहीन कै एव अरु गुरइं पाचा
 र्य वीरन सहित सक ॥ ४ ॥ द्यूह रच्यो ता द्यूह
 के चोतरफ जथा जोग्य वीरन कौ राषि ताके
 बाचि पदम द्यूह करि ताके कृतवर्मा दि
 रन कौ आवर्ण कियो ॥

रचतभयो ताके मध्य अनेक वीरन सहित ज
पश्यको राषिवेरीन के मारिबेको अरु जय
इथकी रक्षा करिबेको आपज्ञाणा चार्य सकर
बूहके अग्रभागमें रहे इहां कपि धुजरत्नम
इरथमें श्री कृष्ण अर्जुन सवार होर जैसे सो
है जैसे सूर्यके अंकमें विराजमान थमराज सो
है तब श्री कृष्ण अर्जुन निज शंखनाद करत
भये तासएकौ सुणि दोऊ सेनाके वीर परस्प
र्युद्ध करत भये तहां युद्ध करतैं एकक्षण मात्र
में सबके सरीर रुधिर मई भइये ताको गंधसं
घत ही सबही वीरन एतैं अंध होय गये तहां
आपणे पराथेको ग्यान रसो नही अति घोर यु
द्ध भयो तामें रुधिर की नदी चली तामें हस्तीन
के सरीर पडे तिरत हैं तिनको रथके चक्रन
की धारासो चूर्ण करत अर्जुनज्ञाणा चार्यके
सन्मुख आयबाणनके प्रहार मई प्रणामक
रिज्ञाणा चार्यको दाहिणो लेय बूहमें प्रवेश
कियो अरु ताके चक्ररक्षिक युद्धामन्पुत्र मो
जाये दोऊ राजा हू प्रवेश करत भये येतीनो
बूहके मध्य जाय अनेक राजानको संहारक
रि अनेक स्त्रीनको मारि रथ अश्वनको ना

सकरि प्रलयके अग्नि ज्योदे दीप्यमान होत नये
 ओर युद्धकों सन्मुख आवें जैसे क्रतुवर्मा आदि
 वीरनकों भजाय पवनका बोजनकी सेना रू
 पीवनको तीनों दग्ध करत नये तहां पीछे तै
 आय डोंणाचार्य ब्रह्मास्त्र चलायो ताको अर्जु
 न ब्रह्मास्त्रसे निवारण करि भोजराजाकी से
 नाके विधुंस करत नयो तब बरुणको पुत्र शु
 त्रायुध श्रीकृष्ण अर्जुनको बाणनतै बधत नयो
 जब अर्जुनहू बाणनतै सस्त्र अस्त्ररथकों काटे
 तब श्रुतायुध गदालेके युद्धकों आयो सो यह
 गदापितावरुणकी दीनीहा तासमें जैसे क
 हो हो जो युद्धन करे तापे चलायें प्रहार करता
 हाको नास करैगी तागदाको धारै श्रुतायुध अ
 र्जुनके सनमुख आयो तब श्रीकृष्ण बोले रे
 मूढ यह मार्ग छोड़ि जैसे कही जब श्रीकृष्ण
 पै क्रोध करि गदा चलावत नयो सो गदा श्रीकृ
 ष्णको अलिगन करि गदा फिरिके श्रुतायुध
 को मारत भई तब अर्जुनहू जय इथपै क्रोध क
 रि आगे चला ताके सनमुख आय कांबोज
 सुदहण अद्भुत युद्ध करत नये तिन दोऊनको
 मारि अर्जुन आगे चलत नयो

बेकों अच्युताय श्रुताय ये दोऊ राजा अपघारय
इकरत नये जब अर्जुन इन दोऊन कौ भ्राता
सेककत सहित मारि आगेंचलि अंग बंगक
लिंग राजांन कौ मारि अरु बीरन के अलंकार
रत्नन करि संयुक्त रुधिररूपी जक करि परि
पूर्ण असे अष्टम समुद्र करत नयो अरु गज
समूह के कुंभ स्थलन कौ बाणन तें बिदीर्णक
रि घेष्ठी कौ मुक्ता नमई करत नयो तहां रा
त्त सह रुधिर पांन करत नये तापी के अर्जुन
मले छु सेना कौ मारि अंबुष्टादिपति कौ म
रकाटि जयश्य के मारि बेकों आगेंच ल्या त
अर्जुन के शिष्य दुर्योधन शंखाचार्य कौ आ
कह्यो हे गुरु तुम्हारे प्यारो सिस्स अर्जुन
सो तुम स्नेह तैं बाकोरो कोनही तातैं तुम
उलंघन करि आगेंचयो अरु रात्रि में भाजि
जयश्य कौ तुम अभयदान देके ब्यूह में
ष्यो अरु अर्जुन कौ ब्यूह में प्रवेश करतैं
कोनही सो यह तुम्हारे बिपरीति चरित्र
सहै तब शंखाचार्य बोले हे दुर्योधन प्र
सन्न अर्जुन के अश्विन कौ बंगवंत करि मो
उलंघि ब्यूह में प्रवेश कियौ अरु जो मैं व

पीछे जातौ तौ भीम कौ आदि देसर्वही बीर प्रवेश
करतै तातै मेरे मंत्र मय बज्र कवच कौ धारि
त अर्जुन सौ युद्ध करि अरु मैं भीम कौ आदि
देवीरन कौ रो कौ हौ ॥ जैसे कहि रुद्र इंद्र कौ दि
यो इंद्र पर सराम कौ दियो पर सराम इन कौ
दियो हौ सो मंत्र मय बज्र कवच दुर्योधन कौ
पहराय युद्ध करि बँकौ पहायो ॥ जब दुर्योध
न सेना लेकै अर्जुन के पीछे चलो ॥ तहां देख
न कैं घोर युद्ध भयो ॥ अरु कौरव पांडवन के यु
द्ध में परम राज आप के परिवार कौ मन बँकित
नो जन करावत भयो ॥ तायुद्ध में हाथी न के से
वारतौ बाण न करी हाथी दातन करि महा व
त अंकुसन करि परस्पर युद्ध करत भये ॥ तहां
कोई एक वीर कौ सिंघ डूतै कटि मार मार
सष्ट करत आकास में गयो ॥ ता कौ अनुशंग
करि अपहरा चुंबन करत भई ॥ ता क बंध के
कंठ पैर डूतै केंद्रोगज कौ सिंघ डूतौ ॥ तब
वह कवच अधिक नष्ट करि बेलगो ॥ सो न
ष्ट करत जैसे दीष्यो ॥ जैसे रुद्र के तांडवन नष्ट
में नष्ट करत गजानन दीष्यो ॥ और युद्ध करते
वीरन के शस्त्रास्त्र क्षीण भये ॥ तब वीर के दि

कहि हस्तीनके दंत उपाडि उपाडिति न सोयुड
करते वीर मुसल युद्ध करते से दीये कितनेक
मुष्टि प्रहारतैं कितनेक दंत नतैं कितनेक न
घ प्रहारतैं लडत नये अरु अर्जुन वीरन कों
मारत मारत च ल्यो ताके रथको मारग सरु
धारी जीवते वैरान सो तौ नरको सो ही रथ
कों मर्ग मरे वैरानके सरीर नने रोक्यो अ
नबाण धारा वर्षत वर्षत अनीक वीरनके
मारत मारत युद्धमें अनेक सन्मुख आयो
वंती पति बिंद अरु बिंद दोऊ भ्रातान कों
गते मारे तहा घोर युद्धमें अनेक वीरन
संहार करि अर्जुन श्री कृष्ण सो बो ल्यो हे
स्यारथके घोडा अन्नके प्रहारनतैं अ
सा करि ब्याकुल हैं सो इनको वेद हरिक
जल पांन करावो जैसे कहि अर्जुन रथ
तरि चारों तरफ युद्ध करत वीरन कों मारि
रुबाणके प्रहारतैं रथ कों बिदीर्ण क
जलको प्रवाह काटत नयो तामें घोडा
कों श्री कृष्ण जल पांन कराय अरो रहा
सपरसतैं सरीरकी विधा हरिक रि
बलति न घोडा नमें करि रथके जो दि

नसहितप्रापसवारभये तापीछे अर्जुनघोर
बाणनकीबर्षाकरत बारनकौकेपावतभयो
तहामंत्रमयकवचकौबांधिदुर्योधनयुद्धमेंआ
पअर्जुनकौरोको तबश्रीकृष्णबोले हेअर्जुन
यहदुर्योधनअनर्थकौमूलहै तौतैयहमारि
बेहीजोग्यहै अैसेश्रीकृष्णकौवचनसुणि
अर्जुन दुर्योधनकेमारिवेकौअनेकसस्त्रअ
स्त्रचलाये तेसर्वहीअैसेब्रथागये जैसेकृ
पणतैजाचिकब्रथाजाय तबसस्त्रालनकौ
ब्रथागयेदेखिश्रीकृष्णअर्जुनसौकहीयहकहा
है अैसेश्रीकृष्णकौवचनसुणिअर्जुनबोले
हेकृष्णमेंनाणोंहोंगुरुशोणाचार्यनैयाकैवधि
अमयकवचबाधोहै सोमेंयाकौकहनहजा
णोंहों अैसेकहिअर्जुनअस्त्रचलावतभयो
ताअस्त्रकौशोणाचार्यआयनिवारणकरतभ
ये अरुदिव्यअस्त्रइसरैचलावणोंनही यह
विचारिअर्जुनबाणनतैदुर्योधनकौधनुष
काटिसारथीकौमारि अश्वनकौमारिकृत्र
काटिगजघटानकौघंडनकरि अरुशोणाचा
र्यकेरथीधुजाकौदेदीप्यमानहीताकौक
नसकाटिएथीमेंनाथि तापीछेंदुर्योधनके

षनकीसंधिनकोमंत्रमईकवचबिनाजोणि
माणनतैमेधनकरतनयो॥ तबदुर्योधनभयमा
रहेनाजा॥ अरुअर्जुनअश्वथामादिकनको
हधिरसो लिप्तकरिसबनकीधुजाकाटिकिन
निन्तकरिआगेचल्यो॥ तबशोणाचार्यहसिंह
नारकरतीअैसीपांडवनकीसेनाकेसन्मुख
आपयुद्धकरतभये॥ तहांअनेकबीरनकोमा
रियुधिष्ठिरकोबिरथकल्यो॥ तबराजाकोप
कडरोपकडोअैसैयोद्धापुकारतभये जबयु
धिष्ठिरहशोणाचार्यपेबरछीचलाई ताको
शोणाचार्यब्रह्मासुरतैकाटी॥ तबयुधिष्ठिर
सहदेवकेरथपेसवारहोयभागे॥ तापीछैसे
नाहस्वामीकीभक्तिअैसंगहीभागी॥ तबपी
डूसौआवतीकोरवनकीसेनाकोदेखि पांड
वनेकीसेनाकेबीरफिरिकेजुद्धकरतभये
तहांबृहत्तेजकेकपराजहैमधूर्तकोमात्या
तगर्तराजबीरधन्वाकंधशकेतुकोमात्या
सात्यकीव्याघ्रदत्तकोमात्या॥ अधलंबुधभी
मपेआपअस्त्रचलायो॥ जबभीमहताअस्त्र
कोत्वष्ट्रसोनिवारणकरियुद्धकल्यो अलं
बुधभीमकोदेवायो सोदेवियहोक्तचअलंबु

षकौरथतैपटकिएथ्वीमैपासिनाष्यो तवअश्व
 स्थामाआयघटोक्तचसौजुह कस्यो तहांदोऊव
 रननैदोऊसेनाकौब्याकुलकरिभगाई अरुयुधि
 षिरभागेहेसोहरिगये तहांअर्जुनकोशरवध्व
 निसुएपोनहीं जबअश्वस्थामासौजुहकरते
 सात्यकीसौयुधिषिरबोल्पो हेअूरतेरोगुरुस
 नुसेनामैप्रबेसकियो ताकीसहायताकौयह
 समैहे जासौतअर्जुनकीसहायताकेनिमित्त
 जा धृष्टद्युम्नभीममेरेरक्षकहैं तातैमोकौंशे
 णाचार्यकोनयहेतहां अैसेसुएसात्यकीशं
 नमैहां आदिमंगलकर्मकरियुधिषिरकौंप्र
 णांभकरिकेचल्पो सोबाणबृष्टिहैं बरिनकौंभ
 डिरुधिरकरिमागकौरंजितकरतही अरि
 ब्रह्ममैंगयो तहांप्रथमहीमागमैशेणाचार्य
 सौअतिपुधनयो अरुबाणजालनतैसूर्यह
 आछुदितनयो तहांअैसेशेणाचार्यको
 अस्रबलदेषिसात्यकीबोल्पो हेगुरुतुम्हा
 रशिष्यकेपासजातेमोकैरोकिबोतुमेजोग
 नहीं जबशेणाचार्यकहीमैतोकौंजायबेदो
 नहीं अैसेबोलतेशेणाचार्यपैबाणबृष्टिक
 रिअंधकारतैकुलकरिरथकौंदोडोय

मी आदि वीरन कौं किन्तु निज करि बूह मै प्रवे
नकस्यो तब पाडव सास्य की कौं गयो जाणि बूह
प्रवेस करि वे कौं चले तिन कौं कृतवर्मा जो
द्वरो के अरु सास्य की बाण नतै आकास कौं
छाप क्रोध तै वीरन कौं मारत नयो ता कौं कोर
व वीरने अनसों देखि सेह के नही अरु सास्य
की गज ध्यान कौं धंडन करि लडते मग धेंद्र
लसंध कौं मारि गजराज तै पटक्यो बाण न कौं
लक्ष वेधन तै लक्ष करत करत अनेक सुदर्शना
दि वीरन के फिर बाण नतै काटि आकास मै फें
के ते मानौं आकास रूपी रुद्र कौं मुंडमाल
चटाई हो तापी छै दुःशासन कौं बाण नतै
बिदीर्ण करि आगे चल्यो तब दुःशासन श्रे
ण चार्य के पास आय आपकी दुई सादिषाय
सोच करत नयो ता कौं दिशि श्रेण चार्य बोले हे
मूट सास्य की सोपुड मै त्रास तै व्याकुल क्यो हो
यो श्रेण की के सषे चित्तै मरुतै साकहा
गयो द्रुत मै पासान कौं पात देखि हास करै
सो अब युद्ध मै बाण रूपी यम पास पात दे
बहु हास कहंगयो जो युद्ध तै भय है तो
बहु संधि करे नही तो परलोकार्थ निःशं

जुद्धकरो ॥ जैसे सुणिनी चौ मुषक ल्या ॥ सो देखा
 वतार दुःशासन पाताल बासी देहन के सरण
 जावे की इच्छा करत सो दीष्यो ॥ तापी के म्लेच्छ
 नको बल संग लेके सात्यकी सो जुद्ध करि वेके
 फेरि गयो ॥ तब इंद्रोणाचार्य ता अरव का समेत को
 धतै देव स्त्रीन सो अनेक वीरन के विवाह
 कराये ॥ ओर वीरके तु ॥ चित्रके तु ॥ चित्ररथ ॥
 सुधन्वा ॥ एचारि पांचौल सेनाके जयस्थंभहे
 तिनको मारे ॥ तब धृष्टदुम्नबाणन करि शो
 णाचार्य चैतन्य पापवैतसिक बाणन ले धृष्ट
 दुम्नको व्याकुल करि भगायो ॥ तापी के इंद्रो
 णाचार्य बाणवृष्टि तै युधिष्ठिरकी सेना समु
 द्रको शुद्ध कियो ॥ अरु दुःशासन सात्यकी
 संपुद्ध म्लेच्छ सेनाको मरवाय जुद्ध करत
 भयो ॥ तब सात्यदुःशासनको कवच आयु
 काटि बिरथ करि भीमके पण भयतै माख्यो
 नही ॥ तब इंद्रोणाचार्य पांडुसेना रूपी नदीमें प्र
 वेस करि अनेक वीरनके सिरकमलनको
 वीरश्री कृष्णपूजाके निमित्त तोडिके
 कपदेसके राजाको जेष्ट
 कौमारि ॥ सिसुपालको पुत्रध

मारि जरासंधुको पुत्र सहदेवताकौ मारि ध
सुभको पुत्र सत्रधर्माताकौ मारि तेजतै
जाज्वल्यमानशोणाचार्य तएनमें अग्निज्यो
पांडुसेनाको दग्ध करत भयो इती सात्यकी
प्रवेश तापीहि युधिष्ठिरस्यको अस्तहोतौ
दक्षिणपनीत होयनीमसो बो ल्यो हे भ्राता अ
बतेरे पराक्रमको समय है तातें सत्रुनकी
सेनाके मध्य अर्जुन है ताके पास जावो अब
श्रीकृष्णके संघकी धुनि तो सुणिये है अरु
अर्जुनके संघकी धुनि नही आरबेरी महा
विषम है जातें तुम जाय अर्जुनकी रक्षा क
रो शोणाचार्य तें उपदयुत्र मेरी रक्षा करेगो
जैसे सुणिभीमसेन राजकी आगपा सिरपे
धरि रथपे सवार होय बाण धारान करि
बेरीन कौ मारि मारग करत मदीन्मत्तग
जराजलोसकटब्यूहमे दिबे कौ च ल्यो त
बताके सन्मुख शोणाचार्य आय बोले हे मी
ममेरे आगे तसकटब्यूहमे दिबेकी इच्छाके
सैंकरे है जैसे कहि नरबाणनतें भीम कौ
परिपूर्ण करत भये तिनबाणन करि इदयते
रुधिर करत भीम जैसे सो दीध्या जैसे कालीके

चकीकेसरितैलिप्रकालदीपैः तवभामसेन
 बोलतभयो हे शंणाचार्य तुममेरे गुरनही मे
 तुम्हारे सिष्यनही ताते अबमें तुमकों जीति
 ब्यूहमें प्रवेश करि अर्जुन पास जाऊहं सो तुम
 देखो जैसे कहि घंटानाद सहित जैसे गदाके
 प्रहार सौरथ कौ तो डिशंणाचार्य कौ पीडित कि
 ये तब हे धतराष्ट्रता समयमें भ्रातान सहित
 दुर्योधन आयो सो भामके बाणन करि जैसे
 दीष्या जैसे सर्पत सहित चंदन कौ बन दीपै
 तापीके बंदारके दीर्घनेत्रः श्रुषेण दुर्विमो
 चन रोइ कर्मा अभय चित्रकांति सुदर्शन
 इनतरे आठपुत्रन कौ मारि नीमतिनके सिर
 नसों कंदुक क्रीडा करी तापीके और वीरन
 कौ मारि यमदूतन कौ तप्त किये जैसे भीमकौ
 देखि शंणाचार्य रथपै सवार होय जुड़ कौ आ
 ये जब भीम रथतें उतरि हाथी कौ पकडिता
 के प्रहारनतें शंणाचार्यके रथ कौ घंडघंड कि
 यो तब शंणकौ विरथ देखि वे गतें नीमब्यू
 हमें प्रवेश करत भये तापीके जमदंड तुल्य
 बाणनतें असंख्यात वीरन कौ मारत गज
 न करि परिपूर्ण

मारि जरासंधुको पुत्र सहदेवताको मारि ध
दुसुम्भको पुत्र हनु धर्मात्ताको मारि तेजते
नाज्वल्यमान्द्रोणाचार्य तएनमें अग्निज्यो
पांडुसेनाको रूधकरत नयो इतीसात्यकी
प्रवेश तापीके युधिष्ठिरस्यको अस्तहोतो
दक्षिणपभीत होय नीमसो बो ल्यो हे भ्राता अ
बतेर एरुक्रमको समय है ताते सत्रुनकी
सेनाके मध्य अर्जुन है ताके पास जावो अब
श्रीकृष्णके संषकी धुनितो सुणिये है अरु
अर्जुनके संषकी धुनि नही आरबेरी महा
विषम है जाते तुम जाय अर्जुनकी रक्षा क
रो इंणाचार्य तें दुपद पुत्र मेरी रक्षा करेगो
असे सुणि भीमसेन राजाकी आगपा सिरपे
धरि रथपे सवार होय बाण धारान करि
बेरीनको मारि मारग करत मरो न्मन्न
जराजलोसकट ब्यूहने दिबेको च ल्यो त
बताके सनुष इंणाचार्य आय बोले है
ममेरे आगे तसकट ब्यूहने दिबेकी इच्छा
सें करे है असे कहि न्नु बाणनते भीमके
परिपूर्ण करत नये तिन बाणन करि इदय
रुधिर करत भीमने सो दीव्या जैसे काली

धकादि अनेकराजानके शिरकाटे तबग
औररथपैसवारहोयभीमसोपुष्करिबेको
फेरिआयो तहांदेऊनकेघोरयुद्धतयोतके
देविबेकोआपेजो देवता सोह आश्रयते
शिरधुनावतभये जबभीमह दुर्जपनामाते
रेपुत्रकोमारिगदाप्रहारतैकर्णकोरथपै
रितौडो अरुतहांआवतेतेरेपुत्रदुपीप
नकोबाणनतैबीधिव्याकुलकरुसा तबघण
औररथपैसवारहोयआपभीमकेऊदयभ
बाणमारै तिनबाणनतैभीमकेक्रोधमपी
अग्निप्रज्वलितभयो जबकर्णआरगजान
सोपुष्करतभयो तबभीमसेनदुर्मर्षण
र्याह जय दुःशल दुःसह इनयांचनेरेपुत्रन
कोमारि रणमेंअगर्जनाकर्तकर्णको रथगा
युधफेरिकाटतभयो अरुनीकेमहापु
रिबेको चित्र उपचित्र चित्रधर्मा चित्र
धर्मा चक्रचित्र विचित्र चित्रगापा येने
गसानपुत्रअजाये तिनकोइनसमारन
भये नापीकिंचारंबारडाप्पाइकरीने
रेपुत्रनकोमारिदेवि अश्रयानकरुसा
विबेदसंप्रतिनेमनेपुत्रन

तवार होय फेरि आयो अरु भीमको बाण बहि
करि रुधिर मय कियो तब भीम हू बाण धारा
न करि कर्णको मूर्च्छित कस्यो ताको रक्षाको
चित्रा पुध चित्रा स्व चित्रसेन विकर्ण सत्रु
सत्रुं जय सत्रुंस येसा तन्नाता फेरि आयेति न
कोह भीम मारे तब कर्ण चतपाय बाण
तैन भीमको बिरथ कियो जव भीम अस्त्र च
लाये तिनहू कर्ण काटत भयो तब अ
स्त्रहीन भीमसेन अने कहा ध्यानको भ्रमाय
भ्रमाय कर्ण पै पैके अरु भीमको बाण नतै
बिदीर्ण करि दृष्या भै पटक धनुषको टितै बा
धत भयो अरु कुंतीके बचन तै मारणो नही
असै जाणि अनार करत ही बोल्पो हे भी
मत अस्त्र बिद्या भै निपुण नही तातै बल
वान नतै पुड करि बेलाय करत है नही अ
रु तेरो सरीर पुष्ट है और बहु नो जन करे
हो तातेर सो इदारको कर्म करि बेही जा
हो असै कहि कर्ण बारं बार धनुषको को
तै प्रहार करत भयो तहां यह दसा भीम व
आकृषक के कहै तै अर्जुन देखि बाण ब
करि कर्णको व्याकुल कियो तब भीम

मूर्छाकोडिसात्यकाकेरथमेंसवारहोय अने
कबीरनकोमारतनयो इतीभीमप्रबेसता
पीछें अर्जुनकर्णपैबाणचलायेतिनकोअश्व
त्यामाबाणनतैकारतनयो तबअर्जुनहवा
णनतैअश्वत्यामाकोभजायअनेकबीरन
कोसंघारकरत जयइथकेमारिबेकोअतिसी
घरथकोचलायपद्मब्यूहसोंपुडकरतनयो
तहंपद्मब्यूहकेबीरनकोमारि तापीछेंअ
नेकमहारथीनकरिरचितजयइथसची
ब्यूहकेएकदेसमेंगुप्तहो ताहूब्यूहमेंअर्जु
नप्रबेसकरिताकेबीरनसोंपुडकरतनयो
तहांभीमहूगदाप्रहारतैअनेकबीरनकोमा
रतनयो अरुसात्यकीहूक्रोधतैकोरवन
कीसेनाकोमारिहाहाकोरसबकणवत
नयो अरुसात्यकीहूक्रोधतैकोरवनकी
सेनाकोमारिहाहाकरि तासात्यकीकोदेषि
अलंबुषपुडकरिबेकोआयो ताहोंपुडक
रिसात्यकीअनेकबीरनकोमारिअलंबु
षकोसिरध्वामेंपटक्यो विलकेचक्र
कद्राराहूकोशिरतैसंअलंबुषकोदेषिरा
जमंडलदुषितनयो

सै ५०० बार और मारे तिनको कोलाहल सुणि
री श्रवायुद्धको प्रायो तब दो ऊही में बसमा
बाण धारा बर्षत दोऊ सेनाको व्याकुल क
न अनेक सख अस्त्र मय युद्ध करत नये ति
के युद्धको सर्व बार परस्पर युद्ध होइ देप
ये तब दोऊनके बाण लक्ष वेध करि करि
बीमें प्रवेश करत नये स्वामीको मनो बांछि
काम कस्यानही ताते कहामुष दिषावें य
न ज्ञातें ही मानों अतर्धान नये अैसे दोऊनके
बाण प्रहारतें सारथी अश्व धनुष ध्वजा
करे तब दोऊ पङ्गु युद्ध करत नये तापीके भू
री श्रवासात्यकी को दृष्टीमें पटकिके सगहि
रुद्धतें सिरकाटिबे लग्ये तब श्रीकृष्ण
अर्जुनसो बोले हे अर्जुन तेरो सिष्य सात्य
की तोहको जीतिबे लायक सो सोमदत्तके पु
त्र भरी श्रवाके बसपडो है यह कालकी म
हिमा देषो अैसे सुणि अर्जुन बाणतें भरी
श्रवाको भुजखड्ग सहित मूलतें काटत नयो
तब भरी श्रवा बोले हे अर्जुन तू धीरनमें सि
रोमणि होय यह कट युद्धको नपतें सो घ्या
शिचंड अग्नि रूप शैल इनमें तो यह बिदरा

हेनही यह श्री कृष्णकी मित्रताको कलह कह
 ऐसे कहि भूरि श्रवा प्राणाया मकरियोगधारणा
 करत भयो ताके शिरते धूम सहित अग्नि निक
 सो सो देखि और राजा अर्जुनकी निदा करत भये
 जिनको अर्जुन बो ल्यो अग्नि मनुको मारतै तोतु
 मधर्म देख्यो नही अब तुम धर्म देखो हो अरु
 मोको प्राण हतै प्यारो सिष्यता की रक्षा करत
 मोहि अधमी जाणि निदा करो हो सोतु मे जो ग
 नही ऐसे अर्जुनके बचन सुणत ही सात्यकी
 चेत पाय पूर्व वृत्तांत जाणे बिना प्रथम ही यो
 ग भासतै गत प्राण ऐसे भूरि श्रवाको खड्ग
 तै सिरकायो ताको देखि कितने कबार निदा
 करत भये कितने कस्तुतिकरत भये सूर्यास्त
 पर्यंत जय इथ की रक्षाको इतने वीर सन्न
 इ भये कर्ण ऋष अश्वत्थामा दुर्योधन श
 ल्य वृषसेन वृषक इतने आयवाणनतै अ
 र्जुनको क्लाय लियो तब अर्जुनको पकरि बाण
 बसितै सबनको भगाये तब केरि आय अर्जु
 नको सबननै च्यास्यो तर्फ सोधे सो
 न वृषकको धनुषकाटि शल्यकी पाघकर
 न करि ऋषाचार्य

करि बृषसेनकोंकानकाटिदुर्योधनकोसुक
टकाटि सबनकेउरमेंबाणमारे तबसकल
राजाअर्जुनकेबाणनतैंब्याकुलहोयबोले
अबसूर्यदेवआकासमेंबिलबकेकरतहे
सीधअस्ताचलकोंकोनजातहेअैसेबोले
रोषसौरक्तनेत्रनकरिसूर्यकोदेषतनयेति
नकेरक्तनेत्रनतैंहीकहामांनोंसूर्यहरक्तन
योहे जगतकोउपकारकरलाहसूर्यताको
अस्तकामीउलूकचोरलोंकोरबचाहतन
ये करिसबनकोबाणनतैंमूर्छितकरि अ
र्जुनजयइयकेमारिवेकोंचल्यो तबदुर्यो
धनचारिसैहागिनकोंबीचिकोंपठायेति
नकोंभीमपकडिउछाले तेषोंनतैंतलउडे
ज्योउडिसंबतवायुचक्रमेंपडेजेभ्रमैंहैं त
बतहांशैणाचार्यआपअर्जुनसोंपुडकर
तभये गुरुशिष्यकोघोरपुडरेषिअिकस
उपायकियो जबसुदर्शनचक्रतैंसूर्यको
आवर्णकरिअस्तदिषायो तबजुडकरते
शैणाचार्यअर्जुनसोंबोले हेअर्जुनतस
त्यवादीहोयसूर्यअस्तभयेतौहपुडकेकोक
रैहे प्रतिष्ठापालनतैंअधिकसूरनकोंआ

रधमहेहीनही ॥ असेसुणि अर्जुनपुढत
जिरथतैउतरीकाएकीरासिकोंअग्नितेप्र
ज्वलितकरितामंप्रवेसकीतपारीकरी
सोसुणिपांडव ॥ हाहाकारकरतभये कौर
वनसोंछलकरतहीश्रीकृष्णअर्जुनसों
बोले हेअर्जुनतेरोंअपराधनही होणह
रमाफिकतेरेमुषतैप्रतग्यानिकसीता
तैअबबिलंबनकरि तोसरीधोमिअमो
कोंफेरिमलैगोनही तातैमोसोंएकबार
आपमिलि असेकौरवनकोंछलिहइन
करतहीअर्जुनसोंमिलिकानमेंकही हेअ
र्जुनत अग्निकीप्रदक्षिणाकरि जबजय
इषदीषेतवहीवाकैसिरकारि संध्या
करतेवाकेपिताकीअंजुलीमेंनाषि वानै
अत्रकोंबरदियौहो जोतेरेशिरकोंदृष्ट
नाषेताकैसिरततकालहीदृष्ट्यामैप
गो ॥ असेसुणि अर्जुनअग्निकीप्रदक्षिणा
करतभयो ताकेदेषिवेकोंकौरवसर्वा
ये यहवृत्तांतसुणिजयइथहदेषिवेकों
सिरनिकास्यो ॥ अ अर्धचंद्र

मामें संधोपासनकरतथाकैपिताबृद्ध
 त्रकीअंजुलीमैनाष्यो नेत्रमीचैहोबृद्धत्र
 चकितहोयवाशिरकौएध्वीमैनाष्यो तव
 तत्कालवाकोहशिरएध्वीमैपद्मो जबशं
 णाचार्यसहितकौरवजयश्यकौदोधजित
 नैकअर्जुनकीनिंदाकरै तितनैहीश्रीकृष्ण
 सुदर्शनकोअंतर्द्वानकरिसूर्यकौदिषायो
 तवसबहीकौरवआश्रययुक्तभये अ
 रुअर्जुनहसातअज्ञोहणसहितजयश
 थकौमारिगर्जनाकरतभयो तागर्जना
 कौसुणिमदोन्मत्तनीमहर्षतैअपारना
 रकस्यो ताकौसुणियुधिष्ठिरकैआनंदहो
 तभयो बृहन्नगतैव्याकुलकौरवनकी
 सेनाद्वानततैव्याकुलगजघटालौचा
 स्योअरभ्रमतनई जबअर्जुनकषाचा
 र्यअश्वत्थामाकौबाणनतैभगायअने
 कबीरनकैसिरकमलनतैसंध्याकौपूज
 तभयो अरुसायकीहूपुढमैकणिकौजी
 तिदारुकसारथीसहितश्रीकृष्णकेरथ
 पंसवारहोयअनेकबीरनकौमारतभ
 यो अरुतवनीमकौअपमानकियो

तत्रैकोपकरि अर्जुनकर्णके आगे बंधसेन
मारिवेकी प्रतिपाकरि। बीरनको भारतसा
त्यकी भीमसहित युधिष्ठिरको आश्रय प्रणाम
कियो। अरु युधिष्ठिरके आगे भीमसात्यकी
अर्जुनकेरणकी प्रसंस्करत नये तब राजा
युधिष्ठिरतो श्रीकृष्ण अर्जुनतै आलिंगन क
रि जयहेतु श्रीकृष्णकी स्तुति करत नयो
इति श्रीभारतसारचंडिकायां शोणपर्वणि
चतुर्थदिवसयुद्धे जयशुभध्वनिनाम
ततियोध्यायः ३ संजय उवाच तापीक्षुर्दुर्यो
धनप्रश्रुपातकरत शोणाचार्य पास जाय
बोले। हेगुरु आपजाको अभयदियो होमो
जयश्यतुम्हारे द्रुपतहामस्यो अब कहा
रोगो। अैसे सुनि शोणाचार्य बोले हेदु
र्यो धनतेरे बैरीनको मारे विना आजिरो।
मैं कब चनूषो लौंगो अैसे शोणाचार्य
बचन सुनि दुर्योधनस्य अस्तनयेया
इसर्वबीरनको तयार करि युद्धको चलो
अर्जुनहू श्रीकृष्णसहितको रवसेना
नमुख आवत नयो तहां शोणाचार्य
निषकीटिकारतैं मांसभोजी

इके उत्सवमें आये हेते अर्जुनके रथकी धु
जामें जो हनुमंतताकी गर्जनातें त्रास पायना
जे हनुमंतके सबकी प्रतिध्वनि ज्यों भीममु
षकंदरातें निकसी जो ध्वनि सो सत्रसेनाकों
कंपायमान करी तब दोऊसेनाके वीरपर
स्पर युद्धकरत रुधिरसोरंजित भये शंण
वार्पबाणनतें सहश्रगज दशहजार रथ
लक्षपथादेन कौमारि राजाशिवको शिरका
टत भये अरु भीमसेन युद्धकरतें कलिगरा
जाके पुत्रको मुष्टीतें मारि अस्तवधरे तैवाके
भोग करि बेलायक मानों पुन्यहे अैसे दीषे वि
राटको रसोईदार जो भीमतानें कलिंगनकों
मारि रणभूमिमें पटकै तैमानौ कालिकाकी
बर्नि निमित्र विंजन वें दीषे तहां कुलिंगकु
लक सो दीषे ध्रुव जयतर आये तिनकों भी
ममुष्टि प्रहारतें मारि अरु कर्णको युद्धमें व्या
कुल करि करि दुस्कर्ण दुर्मद ये तेरे पुत्रन
कों मारि गाजत भयो तापकै सात्यकी याद
व सोमदत्तको पुत्र भूरि श्रवाताको सहोदर
सबजाकों मारि अनेक वीरनकों मारत भ
यो तहां अश्वत्थामा आय सात्यकी कुंशोकि

अनेकबीरनकोनासकियो ताकेसन्मुखघटो
कचघोरशब्दकरत आषु बाणनकीबर्षाक
री तबअश्वत्थामाहघटोत्कचकेबाणाबर्षा
तेंव्याकुलकरि ॥ गर्जनाकरतोघटोत्कचकोपुत्र
अंजनपर्वीकंसास्यो ॥ तापीकेरक्षसनकीसेना
केअश्वत्थामाभगाय ॥ अरुद्रुपदकेआठपुत्रन
कंमारि ॥ पीछेकुंतिभोजकेदसपुत्रनकंमारि
अनेकबीरनकोमारतभयो ॥ तबभीमहबालह
कुराजाकंमारिप्रमाथीविरजा ॥ नागदत्तदृढ
रथ ॥ बीरबाहु ॥ अयोबाहुसुहेससुइटा ॥ ऊर्ण
नाम ॥ कुंडसाईयेतेरेदसपुत्रनकंमारो ॥ त
बताअवकासमेंशंणाचार्ययुधिरकैधोरयु
होतभयो ॥ तबभीमशकुनिकेसातभ्रातानके
सिरकाटि ॥ आकासमेंकैकेतेसप्तशिषिनकेह
स्ततैपडतेकमंडलसेदक्षि ॥ तबपांडवनकोके
पराक्रुतैसकलसेनाव्याकुलदक्षि ॥ दुर्योध
न कर्णपेजाय दीनवचनबोलीबनीतकीक
री ॥ जबबाणबर्षतही कर्णबोल्पो ॥ हेदुर्यो
धनतुमभयेमतिकरो ॥ इनतेरेबेरीनकेपी
सिकेकोभारमोकैहै ॥ आजिअर्जुनकोमा
रितोकौनिस्कटक करोगौ ॥ असैबोलतेक

णसो कृपाचार्य बोले हे हस्तपुत्रगोहरणमें अ
 रुधोषयात्रामें तू ही घोहनही तातै अब य
 यासक्ति युद्धकरो अरु ब्रथागर्जनामतिकरो
 जैसे सुणिकर्णको धकरि खड्गधारि कृपाचा
 र्यसो बोल्यो जो तूमफेरि जैसे बोलोगे तो
 खड्गते जिहाकाटोंगे तब नामके अनाद
 रतैकोपकरि खड्गधारि अश्वत्थामाकर्णके
 सन्मुख अयि बोल्यो रेरे नीचतू कैसे भूसे है
 तब जैसे सुणिकर्णहृषिकेशके आयो ज
 बरो जनके बीचि कृपाचार्यदुर्योधन आयनि
 वारणकरत भयो तापि कर्ण अश्वत्थामा
 दुर्योधनयेतीनों आयया डबनकी सेनाको
 व्याकुलकरि अनेकबीरनको मारत भयो त
 हां बीरनके मुखतै मरे मरे हैं अरु मरेगे अ
 लोसष्ट निकस्यो तब अर्जुन आयबाण वृ
 षिकरी तहांको रवनकी सेनाके सरणो क
 र्णही होत भयो तब कर्ण अर्जुनके बाणन
 ते आयको रथ अरु मनोरथको न भनयो
 देखि कृपाचार्यके सरणगयो अरु अश्वत्
 थामादुपदके पुत्रनको मारि अनेकबीरनको
 मारत भयो तब युधिष्ठिर भीम अर्जुनको

यार्थचक्ररत्नकरिकौरवनकीसेनाकेबीर
 नकोंमारिव्याकुलकरतभयो। सात्यकीयु
 धकरिसोमदत्तकोंमास्यो। अरुअर्जुनशंण
 दौऊनके दिव्यास्त्रप्रकाशतैदे दीप्यमानव
 हरान्निअेसीसोही। जैसेरुइकेनेत्राप्रिका
 सतैदिषीप्यमानकालरात्रिसोहै धीरअंध
 कारमेंबीरदीपिकानकेप्रकाशतैपुइकर
 तभये। दीपिकनिकेप्रकाशतैकहंकहूषंडु
 तअंधकारबीरनकेशस्त्रप्रहारनतैषंडि
 तसोदीष्यो महाबीरनकेमध्त्रप्रहारनतैअ
 नेकदीपिकाकटिकटिपडीतेअंधकारकी
 चपेटनतैमानोंपडीरात्रिअेसीदीषी अरु
 बलिष्टदै त्यावतारदुर्योधनकोंदेवतावता
 रमुधिष्ठिररातिकोंजीत्योयहसबनकोंआ
 श्रयभयो कर्णअनेकबीरनकोंमारतबसी
 नतसहदेवकोंमाताकेबचनतैछोड्यो। युधि
 ष्ठिरइमसेनआदिराजानकेधिरनतैष्टथ्वीछा
 पदीनि तापीछेकर्णशंणाचार्यहयुधिष्ठिर
 कीसेनाकेबीरनकोंमारिप्रथ्वीकोंदापिदई
 धरुअदिबीरनकोंभगाय पांडवनकी

श्री ८
पारबाणधारावर्षतभये सोदेषि श्री कृष्ण
घटोत्कचसोबोले हे घटोत्कच महावीर
तू कन्यालोकै सेठाठो है अथवा युद्धन करि
जाए तातै ही जुद्ध कौ बुद्धि न हो करे हे कहा अ
सै सुणि घटोत्कच बोले हे कस हे कस मै ते
रे दास कौ दास हौ अरु मेरो बल हरानि ही मे
हे तातै मे दिवस मै युद्धन करौ हौ अब तु
महारी आग्या तै कौरव सेना कौ अब ही पारा
जि मे अदिष्ट होय पर्वत न तै चूर्ण करौ गौ
असै वा कौ बचन सुणि श्री कृष्ण युधिष्ठि
र सोबोले हे धर्म राज आप ह कौरव सेना
तै युद्ध करौ असै राजा सो कहि घटोत्क
च कौ उत्साह सहित करि युद्ध कौ पठायो
जब घटोत्कच जंगल गिते अग्नि प्रगट हो
यने न नाशिका कर्ण मुषा द्वारा तै निक
सित प्रज्वालन करि भय करत पीत वरुण
के सडादी मूँह न कौ धारि सिंघर न मै दा
वानल ज्वाल सहित पर्वत लौ दी स्यो ता
कौ देष त ही कित नै क कायर तौ नष्ट भये
अरु सूरवीर न कौ इष्टि तै गर्जना तै भगाय
हर्ण कौ सरजाल तै आकृष्टित कस्यो तब

प्रविचित्रदार्ढ्यधनुषधारैः इंद्रधनुषसहित
जनपर्वतसोदीर्घ्याः तहांकर्णकौंब्याकुल
षिदुर्योधनशूलंबुषकौपठयोः सोकर्णके
शौं आपघटोत्कचसोयुद्धकरतभयोः जब
घटोत्कचचारिसैः ४०० हाथप्रमाणरथमें
सवारहोयजयसुरकेपुत्रसोयुद्धकरतभयो
तहांदोऊपक्षसहितपर्वतलौयुद्धकरतभये
तिनकेतुल्ययुद्धकौंसर्वबीरदेषतभये त
बघटोत्कचवाकेरथकौंआपकेरथतैतो
डिशूलंबुषकौंब्रह्मस्यलधरिभुजानसोनिचो
ओ ताकेसरीरतैरुधिरधारानसहितप्राण
निकसे तबघटोत्कचवाकेसिरकौंतेडिडु
यीधनकौंदिषायबोल्पो ॐसैंहोकर्णकौंशि
रदिषाऊंगोसोतुमदेधोगे ॐसैंकहिरुर्णपे
सध्रआपवाणनतैंआछुदितकियो तबक
र्णहूँसंघिवाणनतैंवाकौमर्ममर्गबिधो
जबभीमपुत्रहूसहस्रारचक्रधरिकर्णकौं
रिबेकौंआयो तबकर्णवाचक्रकौंवाणनतैं
काटे। जबघटोत्कचरथसहितआकास
मेजायमायायुद्धकरिसंघ्याबीरनकौं
मरुको अरुष्टवीअग्निकीज्वालानतैं

जरतभई आकासतैवाणवृष्टिभई अरु।
 दिसानकौअनेकरात्तसनरोकी जब कौरवन
 कीसेनामहासंकरपायो तबकर्णदिव्यास्त्र
 तैमायानिवारणकरिलज्ञावधिरात्तसनकौ
 मारतरामचंइतुल्यहादीष्यो जबघटोत्क
 चरुइकौबणायो अष्टचक्रनसहितवज्र
 ताकौचलायकर्णकौरथनंगकस्यो तब
 कर्णहूबाणनतैवाकौरथतोड्यो जबघटो
 त्कचपंजरहीनपज्ञालौउडिआकासमें
 गयो तहांजायगर्जनाकरतमायाबीअला
 युधकेसन्मुखयुद्धकौंठाटोभयो तबअला
 युधहभूमिमैठाटोजोभीमतासौंनुद्धकरे
 होंसोतजियाकेसन्मुखआयो तबबकरा
 रसकौमित्रअलायुध भीमकौपुत्रघटो
 त्कचइनकेआकासमेंघोरयुद्धनयो तिन
 कौगर्जनातैपर्वतनकेसिधिरहफाटे जैसे
 युद्धकरतेअलायुधकौशिरकाटिघटोत्क
 चभूमिमैनाष्यो सोपर्वतकेसिधिरकीस
 मानकटेशिरकंसर्वबाहदेषिविलिम्पितिन
 ये ताअबकासमेंकर्णपांडुसेनामेंप्रस
 करिबीरनकौमारतहो ताहिदेषिघटोत्क

चवाकेरथकौतोडिआकासमेंफैलिब्रह्मस
र्यासिलाअग्निइतकीकोरवसेनामेंबर्षाकर
तभयो तबकोरवसेना जैसेभाजी जैसेपा
जहरेसरोवरकोजलसुस्कहोतचारौदि
सानमेंजाय तहांकितनेकबीरहाथीघोडा
नकेसरारमेंधसतभये जैसेयुद्धकरतेथ
टोल्कचकेसन्मुखकर्णबाधणचलाये तब
घटोल्कचहकर्णपेबाणचलाये जबरोऊ
नकेबाणसंधेटैअग्निप्रगटहोयकोरवन
कीसेतामेंपडिदग्धकरतभई अरुतहारा
ससनकोराजाघटोल्कचसर्वजातिसस्रवर्ष
तभयो तातैसबबीरबिकूलहोइहाहाकार
करतभये तबघटोल्कचआकासमेंकिलकि
लासष्टकरतहर्षतैनल्पकरतभयो अरुक
दिदिहाथीघोडानकौभक्षणकरतभयो अरु
रुधिरनदीनतै अंजुलीभरिभरिरुधिरपानफ
रतभयो जैसेरात्तसरात्रिकेयुद्धमेंदरसनतै
हाकितनेकनकेप्राणहरे कितनेकनकौसज
अस्त्रनकीवृष्टितैमरे तायुद्धकौदधिकोर
वगजनकीघंटानतैशिरनकीरक्षाकरतभये
अरुयुद्धकरतेकर्णसौदीनहोयबाले हे

यह घटोत्कच रात्रि में हम सब न को मारेगा ता
पी है तू इ इत सक्ति से अर्जुन को मारि कह
करेगा असे सुणि संकर निमित्त राषी निधि
लो इ इकी दीनी एक वीर घातनी सक्ति को क
र्ण घटोत्कच पे फेंकी सो वह साह बीजली स
मान अंधकार को दुरि करत घटोत्कच के
रुदय को बिदीर्ण करि सुर्ग को गई ताके प्रहा
रतें प्राण रहित घटोत्कच पडि एक अज्ञो हण
सेना को चूरी कल्यो तापी छे सब वीर न को रा
जा घटोत्कच ता को मर्यो देषि को रव हर्षते
नृत्य करत नये तब श्री कृष्ण सर्व व्यापक
ता दिषावत नये जब अर्जुन श्री कृष्ण से बो
ल्यो हे श्री कृष्ण या दुष्यके सभे में तुम नृत्य क
रते न ले न ही दीयो हो या नृत्य को कारण क
हा है सो कहो तब श्री कृष्ण बोले हे अर्जुन
यह ते जो मई मूर्ति कर्ण को रवन को परम जी
वन है अरु एक वीर घातनी इ इकी दीनी स
क्ति कर्ण को परम जीव नही सो वह सक्ति घटो
त्कच को मारि कि रिणि न करि हंसत अब
तुमारे अकण मर्यो यह स्यसो कहि वे
को गई ताते हे अर्जुन अब को रवन को मारे

हीजाणों अरु इनके स्वास आवैहै तेपोलेबृह
केयवनलौजाणों अरुयासक्ति तै अर्जुनकोमा
रियो अैसे कौरवनिससिषाचतहो परंतुमेरी
मायाकेप्रभावतैवाकोषादिरहीनही अरुएक
लव्यजरासंधसिसुपाल आदि अरुदुर्जयहे
तिनकोमैमारे तबहूअैसेजुइतदेव्या दुःसाध्य
सत्रुनकोतोमैमारे अरुअशक्तिहीनकर्ण आदि
सकलसत्रुनकोतुममारे अैसेश्रीकृष्णको
बचनसुणिसर्वयुधिष्ठिरभीमअर्जुनकोआ
दिलेबीरक्रुडहोय युद्धकोचले तबबितांक
रतेयुधिष्ठिरकोबेदव्यासमिलिकेबोले हेयु
धिष्ठिरतुमधर्मतैयुद्धकरेदोयेदिनतैरोवि
जयहोयगो अैसेकहिअंतरधानमये ता
पीकैघोरअंधकारमैबीरसबबेधीबाणप्र
हारनतै बीरनकेमुषक्रुदयतिनकोबीधत
मये अरुअंधकारमैअपणोपणयोजाणो
बिनाहीघोरयुद्धकरतमये अरुपर्वतसहि
तदृषीकोउठावतैहतिनकोकेदनहोय अै
सेहबीरयुद्धमैवेदपावतमये अरुअर्जुनको
ककुतीवेदनयोनही तोभीकरुणाकरिबी
रनसोकही एकक्षणमात्रतुमविश्रामकरो

गपतेद्रुपदकेपुत्रतिनकोमारतनयो तत्रवि
 ाद्रुपद्रुहपुत्रमेंधिरअसेद्रोणाचार्यपैवाण
 वधिकरी जबशोणाचार्यनेहदोऊनकेसिर
 काटिएथीमैडारे तवमीमधेएद्रुमकोआ
 दिलेसबवीरयुद्धकोशोणकेसनुषआपे तिन
 कोकर्णसकुनिवाररोके तहांअनेकवीरनके
 समागममेंअतिधोरयुद्धनयो अरुविदीर्णन
 येहस्तीनकेकुलस्थलतेंअलंघ्यातमोतीएथी
 मैपडे अरुअसंघ्यातरुधिरकीनदीबही त
 वशोणाचार्यपांडवनकीसातअज्ञोहणीसेना
 कोमारतनयो जबश्रीकृष्णपांडवनसोबोले
 हेपुधिधिरजबताईसत्त्वधारेंतहेंवताईशो
 णाचार्यकोजीत्योजायनही ताकेतेकल
 करिइनकेहाथतेंअस्त्रसत्त्वहुद्रावो असेसु
 णिअर्जुनकोनमूदिअधोमुखनयो अरुयुधि
 धिरसोकतेंमूकनयो नापीकेमीमसेनमा
 लवरेसकेराजाकोअश्वत्यामानामगजरा
 जकोमारि ऊंचेस्वरसोअश्वत्यामाहतअ
 सेबोत्यो तवलजाकरिनमूनयो असेमीम
 केमुखतेंअतिअप्रयवचनसुणि अरुपुत्र
 अश्वत्यामाकोअजेयजाणिअलस्यमानि

युद्धीकरत रहे तापीके साठि हजार पां । ल
बीरनको मारि इसलक्षबीरनको ब्रह्मास्त्रतें
दग्ध करि । आरिसेवरसको शोणाचार्यतरुण
लोयुद्धमें विचरत भयो तब अति क्रूर कर्म करत
शोणाचार्य नीमके बाकतें संकित होय युधिष्ठिर
सों पूछ्यो हे सत्यवर्त युधिष्ठिर भीम कही सो स
त्यहे कहा । जैसे शोणाचार्यको बचन सुणि आ
कृष्णराजा युधिष्ठिर सों प्रार्थना करी हे राजन जो
तुम सत्यही बोलोगे तो पांडवन सहित जगत
प्रलय होयगो यह श्रीकृष्णकी प्रार्थनातें यु
धिष्ठिर अश्वत्थामाहतः यह तो ऊंचे स्वर सों
नीमलोकहि नरो बाकुंजरो बा यह धारै बो
ले अरु जबही श्रीकृष्णने संघधुनि जो क
री ता तैराजा के हसरें कहे जो अक्षर सो शो
ण सुणे ही नहीं । तब शोणाचार्य पुत्रके सोकतें
ज्ञान मात्र व्याकुल भयो तापीके पहले राजा
युधिष्ठिर के रूपके जे अश्वत्थामाको स्पर्श क
रे बिना ही चलै है तेई अश्वराजाके बचन क
हत ही भूमिमें कष्ट सों चलत भये तब शोणाचा
र्य हृष्ट हृष्टको जीति एक लक्षबीरको मार
मारि जैसे युद्ध करत शोणाचार्य सों भीमजाय

बो ल्यो हे गुरु तुम ब्रह्मण होय राक्षस लो हत्या
 करो हो अरु पुत्र के मरण को दुष्पह भूति गये हो
 या तै तुम को धिक्कर है असे नाम को बचन सुणि
 शंण चार्य सस्त्र अस्त्र त्याग करि सकल जीवन
 को अभयदान देय योगे इशंण चार्य योग अ
 सन करि बैयो तिनके ब्रह्मा उतें ज्वाला निव द्य
 प्राण मुक्त भये तापी छे धरदुग्ध आय पांड
 वनके चरजत और राजानके भुपसो धिक्का
 र सह सुणतहके सपकडि गुरु शंण चार्यके
 धिर छेदनकस्यो तापी छे सकलके गवनको
 भयती तदेवि पूछत नयो जो अश्वत्थामा ना
 सो रुदन करत दुयो धनसकल वनानक
 तनयो सो सुणि पिताके मरणते अ धनुदस
 श्के असुतै प्रगटनयो जो अश्वत्थामा ना

रूपधाम्या हन्तने हन्तये मन्त्रे धरदुग्ध
 ता पिताको मरण सुणतहके सपकडि गुरु शंण चार्यके
 सो रुदन करत दुयो धनसकल वनानक
 तनयो सो सुणि पिताके मरणते अ धनुदस
 श्के असुतै प्रगटनयो जो अश्वत्थामा ना

विश्वास परंतु पिता को दियो नारायण स्रमोपे
है ५ ता करियां चपांडव श्री कृष्ण हीन विश्वक
दोंगों ॥ जैसे कहिय बित्र होय नारायण स्रधा
रि अश्वत्थामा गजत नयो तातें सुर असुर
सब ही कं पित नये तव अर्जुन वा गजनातें से
नाकों व्याकुल देखि यश्चात्ताप युक्त होय रा
जा युधिष्ठिर सों बोले ॥ हे महाराज आजन्म
पर्यंत सत्य वादी तुम हो ॥ यह निश्चै जाणि स
स्त्रा स्रत्याग करि योगाभ्यास में बैठे बिना अ
स्त्र जैसे गुरु कों मार्यो ॥ ताको धतै युद्ध कर
तै याज्ञेण चार्य के पुत्र कों कोण मारै और
एराज भोग वा छोट कों धिक्कार है जो पापि
पबद्ध गुरु अस्त्र हीन योगी कों साक्षात् मा
र्यो जैसे कुडतै अर्जुन को प्रलाप सुणि ॥
क्रोध युक्त होय भीम पृथ्वी कों सशयमा
न करत बोले ॥ हे अर्जुन त ज्ञात्रिय होय मुनि
तुल्य बचन बोलत भलो शिषे नही करवै
री के मारि बमें न्याय को विचार कों एकरे
अरु अब श्रेण पुत्र बिकट धुनि कों कों करे
है ॥ हम तुम श्री कृष्ण ये युद्ध कों तयार ही है
जैसे भीम को बचन सुको पयुक्त धरु

अर्जुनसौबो लो हे महावीर अर्जुन तु मधु
लो यह ब्रह्मबंधु अर्जुन ग्यानहीननको ह ब्र
ह्मास्त्रते मारे पाते यह अधर्मीयो हा सुकुंर चा
रीहो अरु मेरे पिताको बैरी शोणताको मैमा
स्यो अरु बृहपितामह तौ भीष्म हसरो तु म्हा
रे पिताको मित्र भगदत्त इन धर्मयो दानको तु
मके सै मारे अैसे बोलते धृष्टद्युम्नको अर्जु
न धिक्कार करिक दाससो प्रेरणा करि सात्यकी
को बुलायो तब सात्यकी बो ल्यो हमको धि
क्कार है जो गुरुको कपटसो मार्यो तब सा
त्यकी बो ल्यो हमको धिक्कार है जो गुरुको क
पटसो मार्यो तब अैसे सुणि धृष्टद्युम्न बो
ल्यो अनशनव्रतधारि योगाभ्यास करते भू
रि श्रवाको कोण मार्यो तब यह सुणि सा
त्यकी बो ल्यो हे निर्दय दुराचार धृष्टद्युम्न
अैसे फेरि बो ल्यो तौ तौको मै मारोंगो अैसे
बो लि सात्यकी षड्गलियो जब धृष्टद्युम्न ह
षड्गधारि युद्धको आयो तब दोऊनको युद्ध
को सनइ देषि श्रीकृष्णके वाक्यते भीमसे
न आयसके या अरु वकासमें अश्वत्था
मके चलाये नारायणस्त्रकी ज्वालानको

दिसानमें व्याप्त न इदेषि अरुता अश्वत्यामा
हीके अनेक सखन तैसेना कौ व्याकुल देषि अ
र्जुन सौ युधिष्ठिर बोल्यो सत्यजित कौ आदि
लैकै महारथ मारे दुग्धमुष अमिमन्यु कौ
छलतै मास्यो अरु दुर्वाधन कौ अने दरिद्र
कवच दियो तागुरके मरणतै क्रोध कौ रोकि
मध्यस्थ होणो हीजोग्य है सात्यकी धृष्टद्यु
मये आयके घर जावो मैं अग्निमें प्रवेश क
रुगो अरु कालतुल्य कृपापुत्र कौ अब कौ
ण जीतिसके अैसे युधिष्ठिरके बोलतै ही
चतुर्भुज भव गवान ऊर्ध्वभुज करि नारायण
स्त्रकी ज्वालातै व्याकुल जे राजातिन सौ बो
ले जे शस्त्र अस्त्र रथन कौ छोड़ेंगे तिन कौ
यह अस्त्र दग्धन करेगो अैसे सुणि सबरा
जाशस्त्र अस्त्र रथन कौ छोड़ि शिरभूमि में ध
रि प्रणाम करत नयो तब भीम राजान सौ बो
ल्यो हे राजा होतु मभयन करो मैं निर्दय अ
श्वत्यामा कौ गदतै मारौंगो अैसे कहि गर्ज
ना करत भीम गदाले के रोझो तब अश्वत्या
मा यह मर्ष है अैसे है सिके कहि वाणन
सौ पूरत नयो अरु रथ आयु धही न राजान

कोंकेडिनारायणास्त्रकीज्वालामंडलभीमकैं
 क्यलियोः जबअर्जुनभीमकौंज्वालामंडलकैं
 व्याकुलदेषिः बरुणास्त्रचलायौः तोवरुणास्त्र
 नारायणास्त्रकीज्वालानमैदग्धभयोः अरुअ
 स्त्रकेआतापकौंसहियुद्धकरतभीमकौंदेविरे
 वताहबिस्मितभयेः जबश्रीकृष्णअर्जुनयेभी
 मपासआयजोरावरीकरिभीमकौरथतैउता
 रिअस्त्रहभूमिमैनाषेः तद्वयांडवनकेदुःख
 सहितः अश्वत्थामाकेमनीरथसहितसबलो
 ककीतापसहितनारायणास्त्रसांतिभयोः सो
 देषिदुर्योधनअश्वत्थामासोकहीयाहीअस्त्र
 कौप्रयोगफेरिकैरोः तबअश्वत्थामादिव्याल
 हसरैचलैनहीअसैकहिः युद्धकरिबेकौंदो
 ओः तहांसात्यकीधृष्टद्युम्नदोऊनकोसस्त्र
 बर्षतैंजीतिः सुदर्शननामयौरवराजकौंमा
 सोः तबयुधिष्ठिरकीसेनाकौंब्याकुलदेषिः
 अर्जुनअश्वत्थामाकौंबाणबृष्टिकरिरो
 योः तबअश्वत्थामाआयेयास्त्रचलायौ
 ताकज्वालानतैअनेकबीरदग्धनयेधू
 ममंडलकैंसूर्यमंदनयोः नक्षत्रमंडलदिन
 मैहीरीष्योः एकअज्ञोहणीसेनाकौंदग्ध

करिवह अत्र श्री कृष्ण अर्जुन पै दो प्रो ता
 लान करि श्री कृष्ण अर्जुन का यगये त
 र्जुन निज ब्रह्मात्र तै अश्वत्थामा के ब्रह्मा
 कौ शांत करि रण में दे दीप्यमान भयो पृथ
 कौ अपांडव र करे विना ही दिव्यास्त्र कौ प्र
 त देखि अश्वत्थामा दिव्यास्त्र न की निंदा क
 हो तब ता अश्वत्थामा कौ बेद व्यास आय
 दर्शन दियो जब रथ छोडि अश्वत्थामा मु
 नि कौ देखे त करि बोले मेरे दिव्य अस्त्र श्री
 कृष्ण अर्जुन में निष्फल भये या कौ कारण क
 हा है सो कहो तब व्यास बोले हे पुत्र श्री कृष्ण
 अर्जुन नरायण यण है यह जाणो साहि हजा
 र वर्ष तप करि नारायण रुद्र सेवन तै ता की
 तुल्य भये त मूर्ति सेवा तै रुद्रांस ता कौ प्राप्त
 भयो यह श्री कृष्ण रुद्र स्वरूप है त रुद्रांश
 है रुद्र अर्जुन श्री कृष्ण अर्जुन ये एक रूप है इन
 कौ अर्था भाव में संदेह मति करि अैसे बोलि
 पास अंतर्धान भये तब अश्वत्थामा रुद्र कौ
 एण म करि श्री कृष्ण अर्जुन कौ देव रूप जा
 क्रोध कौ शांत करि मुह हस मा प्रकियो त
 तब राजा निज निज डेरान कौ गये जब

हे सत्य अक्षय अर्जुन
श्री कृष्ण तहां विजय
पगी अरु ई इह मेरो प्र
अश्रु पात करेगो
ते कर बो ल्यो हे कर्ण जैसे उन्म
सा ना ही प्रलाप करत मेरे आगे लज्
तेरो अरु अर्जुन को पराक्रम
अरु विराट् के गोहरण में को न
तब कर्ण शल्प संकहा
अज्ञ मेरो प्रभाव देखेगो जैसे बो लि आ
न सो कहत भयो हे घोडा हो इ इ
अर्जुन कहा है सो तु
मरे बाण वा प्रु इ करि वा के रु
लालसा करे है जो मो क अ
दिवा वै ता को सत १० ग्रामहा
स रय व के इ जैसे सुनि
हे कर्ण तो के अर्जुन आप
अरु प्राण हरेगो पर ते वा
सरीर पु इ करि
अर्जुन
सुबर्ण कमल के

नसोवरकेरहिबेवारे अैसेहंसनलैजहि
एभोजनकरिवेवारेकागकैसेसमानहो
ये अरुहेअंगराजकर्णमगकीसोनाहीअंगल
कौजबताईनचापलै तबताईसिंहसमानअ
र्जुननहादीयेहै तबकर्णक्रोधकरिवोल्या में
अर्जुनकौजाणैहो अरुअर्जुनमोकौजाणैहै
हेशल्प तबचनबाणनतैमर्मकेदकरैहै ता
तैतमित्रमुषसत्रुहै अरुतेरेदेसबासीनकौ
यहसुभावहै अगम्यागवन अपेयपान अम
त्तनसपाकरैहै सोतिनकौतराजा अैसेकैसे
नहिबोलै तबशल्पवोल्या हेकर्ण तेरेदेसमें
खीपुत्रनकौबेचैहै अरुमुषतैमैद्युननकरा
वैहै सकलदुष्टकर्मकेकरिवेबालेहै तिनके
राजामैसुबुद्धिकहांतैं आवै तातैंहेमूर्षमोहि
तकीकहांहोतक्रोधकरैहै सोअर्जुनतैंपुछ
कियै तेरेप्राणहीजायगे तातजुद्धमतिकरै
अैसेवोलिशल्पअश्वनकेमनजडकरतहीच
लाये तबकर्णहअनेकबाणवर्षायअनेकबा
रनकौमारिदिव्यगतिकौपहंचाये अैसेबा
णवर्षाकरतहर्षयुक्तकर्णकौदेषिमइनाय
शल्पकरिवोल्या हेसूतपुत्रतदेषिपह

0) मुनि के युद्ध की लीला को ले सप्तो महारथान के
प्राणन को नास करे है अरु अरु मुनि के एक ए
क बाणन करि सात सात आठ आठ दस द
स बीस बीस महारथा देह त्याग करि करि दिव्य
रह धारि इंद्र लोक को जात है सकल संसप्तक
गण मंडल वीमारि एण में गर्जतौ इंद्र पुत्र को
न के साध्य है जैसे सुषिकर्ण बाण वर्षान
करि आकास में बाण मंडल सो सूर्य को छाया
युधिष्ठिर को बिरथ करि दशहजार महार
थान को मारि अरु युधिष्ठिर को व्याकुल कि
यो तब युधिष्ठिर बिरथ सारथी हान सस्त्र न
करि रहित कर्ण के बाणन करि पीडित कं पा
प्रमान भयो जैसे राजा को देवित हामी सत्रा
गदा प्रहारन सो अनेक वीरन को घटा षंड
ड करि नंद उपनंद को ची सुपर्वा पासि
नुराह महाभुज निर्द्व दीर्घात्मक संनि
गी क्रोध जरासंधु एकादश दुर्यो धन के
गतांन को मारि तिन को देविसर्व को रवन
सेना कं पायमान भई करि भीमसेन हा
घोडा सत्र रि सत्र रिह जार मारि व्याघ्र
आदि राजान को मारि एण मंडल में भयं १८८

करपमतुल्यदीर्घो॥ तबकर्णहृपांडवनकेअने
कबीरनकौमारैताकौदेविश्राकृष्णअर्जुनसौ
बोलेहेपार्थबीरनकीभुजानकौहेदनकर
तौसंश्रामसागरमेंतिरतौकर्णसिंह॥ तौशरभ
बिनाकौनकेबसकौहे॥ तातैयुद्धकेनिमित्त
चल्यो॥ अैसेकहिश्राकृष्णरथकौकर्णकेसनु
पलेचले॥ तहांमार्गमेंनामआयधुधिष्ठिरकौ
ब्रतांतकस्यो॥ हेश्राकृष्णअर्जुनराजाधुधि
ष्ठिरकणिकेयुद्धमेंविरथहोयबाणनकेप्र
हारतौबिदीर्णहोयशिवरमेंगयो॥ सोसुनि
श्राकृष्णअर्जुनयुधिष्ठिरकेदर्शनकौग
ये॥ तबमहाराजयुधिष्ठिरश्राकृष्णअर्जु
नकौआयेदेवि॥ कर्णकौमारिआये॥ अैसेजा
णियायलहृहृषसौसय्यातेउद्यो॥ तबनम
स्कारकरिदौऊबैठे॥ राजाकौघावनतैपूर
देव्यो॥ जबराजाश्राकृष्णअर्जुनसौबोल्पो
सनाकौमारिवेवारेपरशुरामकौशि
ष्यअैसेकर्णकौरणमेंकैसेमास्यो॥ तबअ
र्जुनबोल्पो॥ हेमहाराजअश्वत्थामाके
जातिबेमेंबिलंबलग्यो॥ तातैकर्णकौमास्यो
नहीरणभारनीमकौलोपितुमहारौब्रतांत

० सुणिदर्शनकों आये हों अैसे सुणि क्रोधयु
क्त युधिष्ठिर बोले हे अधम त कंता के उदर
में क्यों आये अरु मोकों हृदिकार हे जो तो का
यर में विजय की आसारा घी एक बोध व कौर
ण में छोड़ि कर्ण तै भित होय इहां आये तातें अ
वयह गाडी वधनुष और को ऊवली कों सो पि जो
बैरी न तै हम कों राषे अैसे सुणि अर्जुन क्रो
ध तै षड्भक्त तर्फ देख्यो जब श्री कृष्ण बोले
हे अर्जुन गाडी वधनुष और को देख्यो हम क
हे ता कों मारों यह तेरी प्रतग्पा हे सो षड्भक्तों
बिनाषे चेही बडे न की निंदा करि बोहे सो बि
ना शस्त्र ही बधे ॥ ता तै राजा की निंदा करि
अैसे सुणि अर्जुन युधिष्ठिर सो बो ल्यो हे राज
न भय भीत दृष्ट्यो पति तो ही कों देख्यो अरु
आप सो होय और न कों दुर्वचन कहे सो ह
तो ही कों देख्यो अैसे युधिष्ठिर की निंदा किये
पाके जेष्ट भ्राता समरि अर्जुन आप मरि वे
कों तयार नयो तब श्री कृष्ण फेरि बोले हे अ
र्जुन त तेरी हास्तुति करि सत्पुर्षन कों आ
पकी स्तुति आप करे सो ही न त्य तुल्य हे अ
ैसे सुणि अर्जुन बो ल्यो युद्ध में रुद्र कों मैं संतु २१

कियो इन्द्रिकनसो अबहि ऐसे निबात
वचन वसे सारे ताते कलिकाबके बीर
नमै मेरी तुल्य अस्त्र विद्यामें और है ही नहीं
जब राजा युधिष्ठिर आपकी निंदा अर्जुनकी
स्तुति अर्जुन मुझते सुणि क्रोध भू कनयो ता
सो श्री कृष्ण बोले हे राजे इ क्रोध न करो तु
मारी तो निंदा अरु आपकी स्तुति अर्जुन वि
चारिकै करी है ताको प्रयोजन पीछु जाणो
गे ताते अब प्रणाम करे है सोयाको बिज
यासी वाद द्यो तब अर्जुन को प्रायनमें प्र
णाम करतो देखि राजा युधिष्ठिर निज प्र
को आसी वाद द्यो इत्यसो लगाय विदासि
यो तब अर्जुन उहांते चलतो ही राजानके
सिरनसो पृथ्वीको आछादित करतो ही च
ल्यो अरु भीम गदा करि बैरीनको अरुण
जारथी सारथी हाथी घोडा रथ पयादान
को भारिस बनको एकाकार करे ॥ यह भी
मको पराक्रम देखि सर्वयोद्धानपनासो
पसं ग्रामके मुखको डोडिनागे तब भीम
शासनको सारथी भारि रथको तोडिना
सनको कंठ पकडि आपदाके व

चनतेयाकेअपराधनकोपादिकरिक्को
 धतेयाकोमारिगोदमैधरिअरक्कनेत्र
 नसौचारोतर्फदेपिऊंचेस्वरसौबोत्पो
 हेराजाहोतुमदेषोजोयुहःशासनस
 नामेशोपदीकेकेसबत्रषेचिषेचिहर्ष
 मान्योहोसोअबमैताकेबहस्यलकोवि
 दीर्णकरिरुधिरपानकरोहोअसेकहि
 दुःशासनकेबिसालबहस्यलकोफारि
 अंजुलीनरिनरिवारंवाररुधिरपानकर
 तआसपासकेराजानकोदेषितनयोता
 पीछेधनकोठोकतरुधिरसोरंगेहोठनको
 चाटतलालनेत्रनकोभ्रमावतरोमनको
 नवावतअसेनीमकोदेषिसकलबोरमूर्छि
 तयेवाकोपतैनीमजगतकोकर्णरुपी
 धनकरिकेहीनहीकरतोपैशोपदीकेकेस
 बंधनषोलिबेकोपादिकरतराशरसमेश्र
 गाररसयुक्तनहीहोतौतौताअवकासमे
 कर्णकोपुत्रवृषसेनवीरअर्जुनकेसनु
 षआवतमारगमैअनेकबीरनकोमा
 रिनकुलसहदेवसाथकीइनकोरणतेवि
 मुषकियेतबअर्जुनअसेदेषिबाणबधीक

त्वकर्णपुत्रके हाथकोननाककारिधिरहया
 यो त्वकर्णपुत्रकोमरणसुणिधीर्जपरिस्थ
 नसौपुद्कोतयारनयो ताकोदेधिथाकृष्ण
 अर्जुनसौबोले हेअर्जुनकर्णकोदेधिअनेक
 रत्नपुक्तरथमेंसवारहै अनेकशस्त्रनरत्न
 नकरिसोमितहै सोतोसौपुद्करिवेकौअत्र
 तहैअरुशल्यकर्णसौबोले हैकर्णअर्जुनके
 रथकोदेधि श्रीकृष्णतोसारथीहै हनुमंतधु
 जमेंहै अरुइंद्रकोपुत्रअतिबलवानमहार
 थीहैसंअर्जुनसौतपुद्केसैकरगो त्वकर्ण
 बोले हैशशय्याकीधुजामेंरुशचतारह
 तुमंतअरुसाक्षातनारायणजाकोसारथी
 अरुअकारविभुतुल्यअर्जुनसंग्राममेंअने
 प्रहाराअरुअज्ञेइशल्यअर्जुनकेसन्मुख
 मोरथकोलेचलि अरुमैरौपुद्देधि असें
 अर्जुनकेरथको अर्जुनकेसन्मुख
 कल्पे त्वकर्णअर्जुनकेआजन्मपर्यंत
 जेजन्ममेंतुमनेरथकेविचारमाफिक
 रिकुछके अरुइंद्रकेदेधिवेकौदेचतागं
 धर्तकरके दोदेधिआये अरुदेवता
 केनपुत्रकेअरुअकारतब्रह्मासौ

श्री ०
१२

महादेवसौंपूजे। इनमेंसे ऊनमें कौनको बि
जय होयगो। तब ब्रह्माशिव बोले। जहां श्री
कृष्ण है तहां सदा ही जय है। तापके दोऊ ब
रसन्मुख आयसंघनादकस्ये। ताकौ सुणि
बीरनके इह दयकंपायमान भये। अरु ब्रं
सादे त्पनके मारिवे कौ इइ कौ दियो। इइ राज
नके मारिवे कौ परसराम कौ दियो। अरु परस
राम कर्ण कौ दियो। सो बिजय नाम धनुष कौ
कर्णके चिटंकार करि बाण बृष्टि करत भयो
अरु अर्जुनह गाडा बधनुष कौ धै चिटंका
र करि बाण बृष्टि करी। सो ऊनकी बाण ब
र्षाते समायके अनेक बीरतौ मरे। अरु अ
नेक बीर भागे। तापके कर्णके बाण अर्जु
नके सरीरमें प्रवेश कियो। अरु अर्जुनके बा
ण कर्णके सरीर कौ भेदि। दृष्टी कौ बिदीए
करिया ताल कौ गये। अरु कर्णह लाघव
ता करि अर्जुन कौ हाथमें बाण लेत ही काटे
तिन बाणन कौ कटे देषि। नीमसेन श्रीकृ
ष्ण अर्जुनसो बोली। हे बीर अर्जुन पांडव
बनदाह कालके परानवनसंयुह किरा
तरु पाशिवके युद्धह तै इहां अधिक साव

धांनहोयमुहकरि। त्रैसैसुणि अर्जुनबाणभार।
नतैश्राकासकौंछायदियो। अरुकर्णकेरथको
बाणप्रहारनकरिएकजोजनलौंपीछैधका
यो। तबकर्णहफिरिआयभार्गवास्त्रकेप्रभाव
तौ। सकलबाणमंडलकाटिश्रीकृष्णहनुमंत
सहित। अर्जुनकेरथकोतीनपैडपीछैधकायो।
तबदेवताआकासतैकर्णपैफूलनकीब्रष्टि
करी। ताकौंदेविअर्जुनश्रीकृष्णसौंबोलेयो। हे
श्रीकृष्णमेकर्णकेरथकोएकजोजनधकायो।
अरुकर्णमेरेरथकोतीनपैडधकायोसोदेव
ताकर्णपैफूलनकीब्रष्टिकरीयाकौंकारणक
हा। जबश्रीकृष्णबोले। हेअर्जुनकर्णतौसौं
भारीपराक्रमकस्यो। जोतैरैसंदेहहोयतौमे
रेमुषकौंदेवि। तबअर्जुनश्रीकृष्णकेमुषमें
सप्तदीपसमुद्रपर्वतब्रह्मनसहितचराच
रविश्वदेष्यो। तबताकेदेयतैहीअर्जुनमू
र्छीपाई। जबश्रीकृष्णबोले। हेअर्जुनयहक
र्णसाधारणसस्त्रनतैजीत्योजायनही। ताते
इहहोयमुहकरो। त्रैसैसुणि अर्जुनक्रोध
करिअसधिबाणनतैकर्णकोरथआछा
दितकियो। तबकर्णहआग्नेयअस्त्रतैअर्जुन

10
2

के बाणनको दग्ध करि पाउवनकी सेनाको
 दग्ध करत नयो अरु अग्निह प्रचंड ज्वालान
 करि पाउवनके यो धानके रथसस्त्रबस्त्रके
 सङ्घनचवरधुजापताकांनको जलावत नयो
 अरु सर्वसेना अग्निमई नई जब अर्जुन आ
 पकी सेनाको व्याकुल देखि वारुणास्त्रते
 अग्निको सांत करि कोरवनकी सेनाको ज
 लसमूहमें डबोई तब कर्णह बापव्यास्त्र
 तैमेघनको उडा धबीरनको आकासमें च
 टावत नयो सो देखि अर्जुन वाके रोकि बिको
 पर्वतस्त्र चलायो तातैपवनतो सांत भयो
 अरु कोरवनका सेनामें पर्वतपडिबेलगे
 तिनको देखि कर्णवज्रास्त्र चलायो तब अ
 र्जुन वज्रास्त्रको रुद्रास्त्रते षडन करि अने
 कबीरनको मारि कर्णको छत्रमुकटपता
 को कारत भयो जब कर्ण क्रोधतै अर्जु
 नपै अर्धचंद्राकार बाण चलायो तब अ
 र्जुन वा बाणको बचिहीमें काट्यो तब
 कर्ण अर्जुनके रुद्रयमें पांचबाण मार
 जब अर्जुनह तरणमात्रमूर्च्छा पाय तापीके
 चारि बाणनतै कर्णके घोडामारि रथको

तोडिसारथीकेइद्रयमेंएकबाणमारि
अरुएकबाणकर्णकेइद्रयमेंमारिगर्जनाक
री॥असैकर्णअर्जुनकोबुद्धदेविलबबीरअ
श्रयसंयुक्तभयो॥तबश्रीकृष्णकीआग्पातें
एष्वीकर्णकेरथकेचक्रकौंगिल्यो॥जबक
र्णरथतैउतरिजितनैरथकौउकासेहित
नैहीअर्जुनश्रीकृष्णकीआग्पातेंबाणप्रहा
रकरतभयो॥तबकर्णबोल्पो॥हेपार्थहेम
हाबाहुजितनैमेंएष्वीतैचक्रनिकासोति
तनैक्षणमात्रक्षमाकरि सोसुणिअर्जुन
क्षमाकरीजबश्रीकृष्णबोलेहेअर्जुनति
तनैयाकौचक्रनही॥निकसेअरुइष्टि
हनीचैहैतितनैतुनिस्संकप्रहारकरिअ
रुत्तिइद्रेधिप्रहारकरैहैतेईजीतेहैं॥अ
सैश्रीकृष्णकौबचनसुणिअर्जुनअसं
धिबाणनकौप्रहारकस्योअरुकर्णहच
रुनिकासतनीचौमुखकियैयहजाणी
श्रीकृष्णकीआग्पातेंमेरेमारिबैनिमित्त
अर्जुनप्रहारकरैहै॥तबहीश्रीकृष्णसोबो
ल्यो॥हेकृष्णमेंमत्स्यसोडरोनही॥यहसरी
रक्षणविध्वंसीहै॥तातैरणमेंमेरेतोडिजा

सुर्गभोगमिले अरु जीवैतौ लक्ष्मी पृथ्वी
भोगमिले जातै मरेतैं चिंता कहा तोह
जितनै मैं चक्र कौनिका सौं तितनै त्तमा क
रो अरु मैं तो पृथ्वी नि स्थिति अर्जुन रथ में स्थ
ति तासौ यह अधर्म युद्ध सो विचारो जैसे
सुणि श्री कृष्ण क्रोध करि बोले हे कर्ण यह
तेरो वाक सुणि बडो आनंद भयो भीम कौ
विष मोदक देतै लाजा ग्रह को दाह करतैं
अरु शोपदी के केस पं डि बें चतैं अनिम
नु के मारतैं काहनै धर्म देष्या नही अब
तो कौ धर्म यादि आयो जैसे श्री कृष्ण क
र्ण सौं कहि कटाक्ष श्रुतैं अर्जुन कौ प्रेर
णा करी अब अर्जुन वाण वर्षा करत न
थो तासमय मैं कर्ण कौ मित्र यो धन के
घर मैं छोडा सो सर्प आय बोल्यो हे कर्ण
तेरे तुल्य और वार नही अरु मैं तेरी सहा
य करिबे कौ आयो ही सो तमो कौ बाण
जिम धुस मैं संधान करि चलाय मैं मेरे प
रिवार सहित जाय श्री कृष्ण अर्जुन कौ बा
धोगो तब कर्ण धनुष मैं संधान करि चला
यो सो जाय श्री कृष्ण अर्जुन के अंगन कौ वा

धिमर्ममैडसतभये॥ सो सुणियुधिधि
रः प्रायदोऊनकीदसादेपिरुदनकरतन
यो॥ तबतहानारदः प्राययुधिधिरसौबो
ले॥ हेराजनत्रपारुदनकोकरहो॥ यह
श्रीकृष्णअर्जुननरनारायणहीहो॥ ताते
मकोमत्यहैहीनही॥ सोअबश्रीकृष्णको
बाहनगरुडहैताकोस्पर्णकरि॥ तबरि
षिकेबाकतैराजायुधिधिरगरुडकोस्पर्
णकियो॥ जबगरुडआयेताकेपापनकी
पानतैकोरवपांडवनकीसेनाकेबीर
उडिउडि॥ प्राकासमैगये॥ तैबीरकोला
हलसहकरतअधोमुखहोय॥ प्राकास
तैहाथीघोडापयादेनपैयडतनये॥ ज
बगरुडश्रीकृष्णअर्जुनपासजायराहो
भयोतितनैहीवाकेगंधहीतैसर्वसर्पछो
डिभागिपालालकौंगये॥ अरुकितने
कनागतेसर्पनकौगरुडनक्षणकियो
जबसर्पकेबंधनतैछूटिश्रीकृष्णअ
र्जुनउठे॥ तबगरुडबोले॥ हेश्रीकृष्णगो
कौआग्याकरोतौकोरवनकीसेनाकौ
भक्षणकरो॥ अथवाकहोतौपक्षनकी

सुर्गभोगमिले अरुजीवैतौ लक्ष्मी पृथ्वी
भोगमिले जातै मरे तैं चिंता कहा तोह
जितलै मैं चक्र कौनिकासौ तितनै त्तमाक
रो अरुमैतौ पृथ्वी स्थिति अर्जुन रथमौ स्थि
ति तासौ यह अधर्म युद्ध सो विचारो जैसे
सुणि श्री कृष्ण क्रोध करि बोले हे कर्ण यह
तेरो वाक्य सुणि बडौ आनंद भयो भीम कौ
विष मोदक देतै लाजाग्रह कौ दाह करतै
अरु शोपदी के केस पंदि बैचतै अमिम
नु के मारतै काहनै धर्म देष्या नही अब
तौ कौ धर्म यादि आयो जैसे श्री कृष्ण क
र्ण सौ कहिक दास श्रुति तैं अर्जुन कौ प्रेर
णा करी अब अर्जुन बाण वर्षा करत न
यो तासमय तैं कर्ण कौ मित्र दुयो धनके
घरमैं छोडो सो सर्प आय बोले हे कर्ण
तेरे तुल्य और बार नही अरुमै तेरी सहा
य करिबे कौ आयो ही सो तमो कौ बाण
जिम धनुसमैं संधान करि चलाय मैमरे प
रिवार सहित जाय श्री कृष्ण अर्जुन कौ बा
धोगो तब कर्ण धनुसमैं संधान करि चला
यो सो जाय श्री कृष्ण अर्जुन के अंगन कौ बा

धिमर्ममैडसतभयो॥ सो सुणियुधिष्ठि
रप्रायदोजनकादसादेपिरुत्तकरतन
यो॥ तबतहानारदप्रायपुधिष्ठिरसौबो
ले॥ हेराजनब्रथारुदनकोकरहे॥ यह
श्रीकृष्णअर्जुनरनारायणहै॥ ताते
जमकोमृत्यहैहानही॥ सोअबश्रीकृष्णको
बाहनगरुडहैताकोस्पर्णकरि॥ तबरे
धिकेबाकातेराजापुधिष्ठिरगरुडकोस्पर्
णकियो॥ जबगरुडआपेताकेपाषनकी
पानतैकोरवपांडवनकीसेनाकेबीर
उडिउडि॥ आकासमैगये॥ तेवीरकोला
हलसहकरतअधोमुखहोय॥ आकास
तैहाथीघोडापयादेनपैपडतनपे॥ ज
बगरुडश्रीकृष्णअर्जुनपासजायटाटो
भयोतितनैहीवाकेगंधहातैसर्वसर्पको
डिभागिपालालकौंगये॥ अरुकितने
फनागतेसर्पनकौगरुडनक्षत्राकियो
जबसर्पकेबंधनतैछूटिश्रीकृष्णअ
र्जुनउठे॥ तबगरुडबोले॥ श्रीकृष्णमो
कोआग्याकरोतौकोरवनकीसेनाको
भक्षणकरो॥ अथवाकहोतौपक्षनकी

पौनतै उडाय समुद्र में परकौ जैसे सुणि
श्री कृष्ण बोले हे गरुड को रव पाड बन
की सेना में मेरी पुछन ही करो तो तू मेरी
बाहन के सें पुछ करेगो ताते मेरी आग्ना
तै त जा जैसे श्री कृष्ण की आग्ना तै गरु
ड जात नयो तापी के श्री कृष्ण अर्जुन तथा
रहो यजित नै पुछ को आवें तित नै कर्ण वा
रु चक्र निका सिलियो अरु रथ पे सवार
हो पे सब राजान के सुणतै अर्जुन सों बो
ल्यो हे अर्जुन तेरो बल श्री कृष्ण ही है अरु
देखि तुम नाग पास बड नये तब मे अधर्म
जाणि एक हवा एन चलायो और तुम मे
रे रथ को चक्रे गडो तब एक क्षण मात्र
इत्त मान करी ताते तेरो पुरुषार्थ कहा
जैसे सुणि मोन मुक्त अर्जुन क्रोध तै बा
ण ही चलावत नयो तिन बाण नकों के द
त ही कर्ण पुछ करत नयो तास में पाड
ब बन सह में अर्जुन नै नासर्प की पूछ
काटी हासो बाण बणि कर्ण के तरकस
में आय बो ल्यो हे कर्ण अर्जुन के मेरे ब
रहे मो को बाण करि चलायो सो सु

शिकर्णधनुषमैधरिचलायो॥ सो अर्जुनको
 किरीटकाटि पृथ्वीमें गयो॥ ता सर्पको अर्जुन
 घंडघंड करि माख्यो॥ तब कर्णको धते अर्जुन
 कंठके रवेके निमित्त अर्धचंद्राकार बाण
 लायो॥ ता बाणको अर्जुनके कंठ पास आपो
 दधि श्रीकृष्ण जोर करि एक तालरथको पृ
 थ्वीमें दाख्यो॥ तब कर्णको बाण अर्जुनके मु
 क्तको काटि गयो॥ जैसे पुष्करते कर्णके रथ
 चक्रको फेरि पृथ्वी गिल्यो॥ अरु श्रीकृष्ण
 आपाते अर्जुन प्रहार कर रह करत नयो॥ त
 ब कर्ण अर्जुनसों कही॥ तूणमात्र तूमा करि
 सो अर्जुन तूमान करी॥ जब कर्ण नू मिहामें
 तैरथपे अर्जुनहोतासों पुष्क कियो॥ नव
 अर्जुन आरुप अस्त्र करि कर्णको रणमं
 डलमें पटक्यो॥ परंतु इतने कारण नयेत
 बपरो सो जनमेजय सुणि॥ पृथ्वीचक्र
 गिल्यो॥ माता बाण हरे॥ इंड्र ब्रह्मप्राण
 प्रकवच हस्यो॥ गुर परशुराम पाप दियो
 तामें अस्त्र फुरे नही॥ श्रीकृष्ण कृष्ण कियो
 अर्जुनमावीरसत्तु नयो॥ इन घट्टकारण
 तैरुत्तौ कर्ण कहा करे॥ तोह मया जेताप

करत करत कर्ण एष्य मैं पद्मो तव मरे पुत्र
कौं ही मैं नौ सूर्य पश्चिम सा सुइ जला जली
देव कौं गयो तव कितने कबीर तो प्रसन्न
धे अरु कितने कबीर मलिन मुख भये जब
कोरवन का सेन भय भाल होय भाजी ताको
दुर्घ धतल सा धान करत वीर श्री कौं धा
रत नयो अरु पांडवन के वीर हर्ष सो गर्ज
ना करत नये जब अर्जुन श्री कृष्ण सो बो
ल्यो हे श्री कृष्ण मैं महा वीर कर्ण कौं मारि
धन्य नयो असे गर्व सहित वचन अर्जुन
को सुणि श्री कृष्ण सिर्फें पाय हें सिद्धे
बोले हे अर्जुन असे गर्व के वाक्य कहि बैठे
में तो कौं पर्य ही जायों हों कर्ण के नासके
कह कारण है प्रथमतो मैं अरु तुम के
तो एष्य इंद्र पर सु राम इन कह कारण
ते कर्ण घत मैं पद्मो हे इंद्र अर्जुन
पूर्व जन्म में यह कर्ण बालि हो तब ह
ता को मैं अधर्म ते मारि अरु या जन्
में हा वीर को हन तुम अधर्म ते म
ताते आप को पर कौं गुण दोष ते ने
तो सो पुरुष अधर्म हो असे श्री कृष्ण

नसोबातकरतैरुयोधनकर्णपेजायसेत्त
रलहीबोयो॥हेमहावीरतेरेपतनतैमै
मस्यो॥तातैत्तक्योस्तोहे॥उठियुइकरिमे
रेपालनकीप्रतग्पाछेडोकहा॥तोबिना
पांडवमोकौमारैगे॥तातैहोमपूतउठिमो
सरनागतकौपालनकरि॥हेकर्णजैसेबंद
हीनविप्र॥मदहीनगज॥जलहीननदीतै
सैकर्णहीनसेनाहे॥अरुजैसेलेपनिहीन
नारी॥चंद्रहीनरात्री॥सूर्यहीनदिनातैसै
हेकर्णतोहीनयहसेनाहे॥अरुजैसेचं
द्रहीनतारामंडल॥वर्णहीनकुल॥प्राणही
नदेहा॥नहीसोने॥तैसैकर्णहीनसेनाहन
सोने॥असैरुयोधपडेकर्णघालबिलोप
करिदेरानकौंगयो॥अरुतहांजायप्रभात
सेनापतिकौणहोयोगे॥यहचिंताकरतमये
तापीकैश्रीकृष्णएकलेकर्णकौपद्रोदेधि
अर्जुनसौबोलेहेअर्जुनकर्णकेधीर्जक
रीत्ताकरिवेकौमेंतोब्रह्मब्राह्मणबणै
अरुतबाएलकलिस्यबणि॥वहांचलि
कौधीर्जदेधिमैधरदोगे॥यहमहान
मावीर॥सत्यशौचतत्पर॥जितेंद्रिय

सुष्ठु असेवाह कर्णमोको अतिरिपहो अ
संकहि श्रीकृष्ण ब्रह्म ब्राह्मण रूपधारि सि
म्पुष्ट अर्जुनके को धैराय रि पावनतै गि
रतपडत कर्ण पास जाय बोलै हे कर्ण म
हाबाहु तू एषी तल में सदा दाता बिष्णुके
प्रसाद तै तै अनेक बर पाये अरु तेरो स
रीर व्याधिरहित आदिरहित जाचिक
नके मनोरथ पूरण कर तसेक डन ब
रस जीवो तेरो कल्याण हो लक्ष्मी स्थिर
रहो आयुष्य दीर्घ हो बल हो आरोग्य हो
बांछित अर्थनकी सिद्धि हो तुम्हारे व
में सदा ई हरि नक्ति हो लक्ष्मी गोविंद
जायगी शुद्धी युधिष्ठिर ये जायगी अ
हे कर्ण तोको सुगमये पीछे ये जाचिक व
एषास जायगे ततै वनपर्वत वासी
नको तो जन्म नलो अरु पुत्रहीन मात
ली परंतु जाचिकके कुलमें जन्म न
अरु हे कर्ण सब तै लघु तोत्रण है अ
घुतू लहो अरु लबह तै लघु जाचिक
सलघु जाचिकको जाचिकके नपते
ह अंगीकार नही करे हे अरु सर

कृता। दीनस्वर। प्रस्वेदगलग्रहायेजेतेमरण
 केचिद्रहें। तेजाचिकमेंनित्यरहतहो। हेक
 णमहादेवकामकौदग्धकियो। अरुदिव्यव्रत
 नसहितअर्जुनपांडववनकौदग्धकियो। रा
 वणकरिरक्षितलंकापुरीकौहनूमानदग्ध
 करा। इनसबनतेयेअजोग्यकामहीकियो
 अरुजगतकोसंतापकाशी। जैसेदरिद्रको
 काहूहीनैदग्धकियोनहीं। तातैहेकर्णमे
 रेंकन्याविवाहजोग्यहै। अरुमेरेधनकछ
 हहैनहीं। तातैमेंतोपैबहुसुवर्णभागौहो।
 असेंसुणिकर्णबोल्यो। हेविप्रमेंयहअव
 स्थापापपृथ्वीमेंसतौहो। पासकछहवित
 हनहीं। तातैतुमकृपाकरिमेरीस्त्रीपास
 जाचनाकरो। मैंपतोबताऊहंसो
 कहेंतुमकौबहुतधनदेगी। जैसे
 णब्राह्मणबोल्यो। हेकर्णमेघसमेंपा
 अक्षसमेंमेंफलेहो। अठपृथ्वी
 लदेतहो। गायहसमेंही
 धरेतहो। येतौसर्वहीसमेंहीपायफ
 हे। अरुहेकर्णतसदा
 यहतेरीकीतिसुणितोपैअ

सर्वदा सर्वदा तहै अरु सर्वदा ही तेरो समय
है हमारे कर्म ही नहै ताते तहै हरे ली मैं पड्यो
है तब कर्ण बो ल्यो हे ब्राह्मण मेरे ही गम पर
तना प्रमाण सुवर्ण सो बंधे है सो ये दंत उ
पाडि ही अरु सुवर्ण ल्यो तब ब्राह्मण बो
ल्यो हे कर्ण मैं ब्रह्म ही तेरे दंत उपाडि बेका सा
मर्थ नही जब कर्ण बो ल्यो मो कौ पाषाण ल्यो
पर तब ब्राह्मण कही पाषाण ल्यो यबे की ह
मेरी सामर्थ नही जब कर्ण आप ही सर कि
पाषाण ले प दंत उपाडि सुवर्ण ही रा देवल
ज्यो तब श्री कृष्ण चतुर्भुज रूप धारिक कर्ण के
हाथ पकडि बो ल्यो हे कर्ण हे महा ब्रह्म तो
माने रथ मैं दान बर के ऊहे नही अरु
रे पा कर्म ते मैं प्रसन्न भयो हे महा बुद्धि
न अरु वत्सन बोडि तवर मागि तब क
बो ल्यो हे श्री कृष्ण जो तुम प्रसन्न भये
तो यह वरदान हूँ ब्राह्मण के अर्थ ध
य आपकी स्त्री के अर्थ जो चल दय स्व
काम में प्राण दय यह हूँ अरु प्रास
न्न सो संकीर्ण मंदिर विप्रन करि सं
हृदय साख करि संकीर्ण अरु विप्र

ने जन सुन ह स्वते

आरुति जने प्रलदान सुमिस

आतुर कौ प्रनयदान यह द्यो और

इने बुद्धि न होय पर निदा कौ

सम द्यो च दया दान दुष्ट म

साधुपालन यह द्यो और जो मोपे प्रसन्न

नये होतौ व्यादिरहित देहा आदिरहित मन स्थि

त्मी अरु हे श्री कृष्ण तुहारी नित्य भक्ति

और सर्व मनो रथ सिद्धि धन धा

बस्त्र सस्त्र सास्त्र दान सक्ति योग स

भोजन साक्ति यह द्यो अरु हे श्री कृष्ण

पे प्रसन्न नये होतौ अदग्ध भूमि मे मेरो

जब श्री कृष्ण प्रसन्न होय वा कौ म

न बांछित सब ही बरदान दियो अरु जैसे व

रदान देय श्री कृष्ण उहां ते चले तिलने ही क

ण उनके चरणन कौ मस्तक तै स्पर्स करि प्र

णत जे तब श्री कृष्ण ह कर्ण कौ बहुत सर

हत भये देवता पुस्पनकी ब्रष्टिकरी जब

श्री कृष्ण अर्जुन कर्ण के दाह जोग्य अदग्ध

भूमि दिषिबे कौ सरवत्र पिरे ये करे भा देया

नी तब एक स्थान में पवित्र भूमि दिषि

श्रीसोपूछो हेदृष्यीयहांकोऊअरहद
अभयौहे जबदृष्यीवैनी हेअरिहसत
मसुणो श्लोक अत्रनीयसतदग्धशोण
नोचशतत्रयं दुर्याधनसहस्रं चकर्णसध्या
नबिद्यते अतदृष्यीकोवचनसुणिश्रीक
सुअपनेदृत्तणहस्तकोंबलिकेदानलेवे
सादग्धजांणि कर्णकेसरीकोवामहल
मेदग्धकियो ॥ दोहा ॥ कर्णपर्वकीबचनिक
नापाभारतसार रावचांदस्यंघकेहुकम
कीनीसुकविविचार ॥ इतीश्रीभारत
सारचंद्रिकायांकर्णपर्वसमाप्तम् ॥ ७ ॥

एशायनम ॥ अथ शल्पपर्वकी बचनि
कालिष्यते श्लोक ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं
चैव नरोत्तमं ॥ देवी सरस्वती व्यासं

॥ १ ॥ हते भीष्म हते शोणकर्णे च नि
धनंगते ॥ आशा बलवती राजन् शल्पो नय
त्रिपांडवान् ॥ २ ॥ वैशंपायन उवाच ॥

हे राजा दुर्पो धन प्रातः काले अश्वत्थामा
कृपाचार्यके कहे सौ शल्पकौ सेनापतिकि
यो ॥ जब शल्प हरथ पै सबार होय युद्धकौ
आयो ॥ ताकौ शेष आकृष्य

ले ॥ हे राजन यह शल्पजी शोणकर्ण हतें
अधिक हो ॥ अरु अर्जुन युद्धतें अमित हो
तौ यातें तुम युद्ध करौ ॥ सै सुणि राजायु
धिर शल्पके मारिबे की प्रतप्पा करी ॥

सात्यकी धृष्टद्युम्नसिषंडी ॥ इन सहित रा
जायुधिधिर युद्धकौ चलो ॥ तब श
असै राजाकौ सन्मुख आवतौ शेषि
तौ भद्रव्यूह रचि युद्ध करिबे

तहां परस्पर घोर युद्ध हो
रुद्रके पोद्दानकौ मारे ॥ तब श
के पोद्दानकौ सात्यकी धृष्टद्युम्न

मारतनये॥ अरु भीमसेनह गदाप्रहारतैअ
नेकहाथानिकोंमारि बारनकोंमारि एणभीम
रुधिरमईकरा॥ अरुसंतसेन सुसेन क
र्णसेन इनतीन्यो कर्णके पुत्रनकोंनकुलमारि
गर्जनाकरतभयो॥ असोपांडवनको पराक्रम
देषि शल्यबाणधारानकरि पृथ्वीआकास
कोंबाणमई एकाकारकस्यो॥ असोशल्यको
प्रभावदेषिदुर्योधनबो ल्योमें भीषशंणक
र्णदिबारनकोंब्रथाही मराये॥ प्रथमहीश
ल्यकोसेनापतिकरतौतौनिश्रेही विजैहो
तौ॥ असंसुगुणिशल्यगर्वतैभीमपेअनेक
बाणप्रहारकियो॥ जबभीमक्रोधतैसन्मुख
आपगदाप्रहारतैशल्यकेरथकोंचूर्णक
रि॥ शल्यकोंविरथकरिदोऊगदायुद्धक
रतभयो॥ जबयुद्धकरतकरतदोऊमहक
तहोय॥ पृथ्वीमेंपडे॥ तबदोऊनकीसेनाके
वीरअनेकजलसोसचेतकरि रथनपे
धरि आपनीआपनी सेनामेंलेगयो॥ जब
फेरिशल्यसावधानहोययुद्धकोंआयो॥ ता
कोंदेषि राजायुधिष्ठिरसन्मुखआपको
धतैअनेकबाणप्रहारकियो॥ तबतहांदोऊ

रिघोरपुङ्गवयो॥ जबपुधिष्टिरशाल्यकै
 विरथकियो॥ प्ररुशाल्यहपुधिष्टिरकौविर
 कियो॥ जबदोऊविरथहघोरपुङ्गकरतन
 तबपुधिष्टिरसक्तिलक्षीसोवहसतप्रास
 क्तिविश्वकर्मावणायमहादेवकौदेअर्पण
 सोमहादेवमयकौदीनीही॥ मयसोह
 पुधिष्टिरकौदीनी॥ तासतघ्नीसक्तिकौराज
 यमेंप्रहारकियो॥ लीतेंशाल्यवि
 णइहयहोयष्टथ्वीमेंपडोएताकौंदेविश्व
 विचित्रकबचआयोता
 पुधिष्टिरबाणप्रहारनतेंयसलो
 यो॥ तापीहैंमीमक्षेनगदाप्रहारन
 रिअबसेसबीरनकौसंधारकियो॥ तापीहैं
 मीकपाचार्यहारदिकपञ्चश्रुत्यामा॥ ये
 लिआजियुद्धसमाप्तकर्णो॥ त्रैसैवि
 रिघोरपुङ्गकरतनयो॥ तहारजोंधकार
 काकारनयो॥ आपणेपराये
 ग्यानरह्यो नही॥ सोत्रैसैकहतनयेक
 कृतकर्मा॥ कहोअश्रुत्यामा॥ कहाडुमो
 कुनि॥ त्रैसैबोलतपांडवअने
 मरो॥ आरजैसेनामहाबाहु

घोर दुर्विषय सह विविंशति दंडधार
 मंसहा सुवर्चो सुजात श्रुतवान् वातवे
 न्निबल ऐसेत्रयोदशतरे पुत्रनको भीम
 रिधिरश्नानदिपो अरुसुसर्षाजाको
 पुत्रभ्रातासहित अर्जुनमास्यो और भीम
 तरे सुदसननामा पुत्रको मास्यो सकुनिप
 ठिकी नरफसो प्रहार करे होता हि सहदेवमो
 ल्यो अरु शकुनिको पुत्र उल्कसेनासहित
 होता हको सहदेवमास्यो और हवीरजय
 लैवको उपाय करे हो तहां सात्यकी मोको
 पकडिबो ल्यो संजय मेरे हाथ लग्यो हो जब
 अष्टद्रुम्भकही पाहको मारो तब सात्यकी
 मारिबेलग्यो तहां वेदव्यास आय प्रतत्तद
 इनि देय मोको बुडायो तब मैं एकादश अ
 शौहणापतिदुर्योधनको सहाय करता वि
 नापयादौरेष्यो और तारणमें अश्वत्थामा
 कृपाचार्य कृतवर्मा और एकादस अत्ते
 हेणा सकल वीरनसहित समाप्त भई
 आडवह विंति भये इती श्रीभारतसारचं
 रकायोशत्यपर्व समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ गदापर्वतचानिक
 लिख्यते ॥ त्रिसं पायन बुवा च ॥ तापी छैर्यो
 धनसंग्राममैमरे शाल्यको रुदन करि ॥ अथ
 त्यामा कृपाचार्य कृतवर्माको भाजे जाणि
 धतराष्ट्रपासजायप्रणाम करि बोलतत
 यो हे पिता इन पांडवनसों मेरे प्राण बचे सो
 उपाय कहो ॥ प्रभात पांडवनसों मोको पुद्क
 रणो पडेगो ॥ जब धतराष्ट्र रुदन करते दुयो
 धनको दीन बचन सुणि कहि ॥ हे पुत्र मै उपा
 य जाणो नही ॥ तै तेरी मातासो पूछि ॥ तब दु
 यो धनमातापै जायप्रणाम करि बोल्यो ॥ हे मा
 ता तू प्रतिब्रतानमै मुष्यहो ॥ सो मो पुत्रको
 पालण करि ॥ प्रभातमै पांडवनसों पुद्क
 रोगो ॥ तामै मेरो प्राण नासन होय सो उपा
 य बतवा ॥ अरु अगपान ॥ सठ मर्षी दरिद्री बं
 सनासका पापिष्टा ॥ हिंसक ॥ त्रैसे पुत्रहकी
 मत्तारत्ताकरै है ॥ त्रैसे पुत्रको बचन सुणि
 गाधारी बोली ॥ हे पुत्र मेरे बचन तैतु पुछि
 क्षियासजाय ॥ वाके चरणसों सिरलगा
 य ॥ त्रैसे कहि मै सरणागतहो ॥ तजेष्टभा
 ताहें तातै मेरी रत्ताकरि ॥ अरु वह तेरे हित

को उपदेश कहुन कहै तब ताई वाके पावनमें
 तै शिरमति उठावै अरु वाके कहै कौ अन्या
 मति मानै ॥ जैसे माताको बचन सुणि दुर्योध
 न पुधि पिर पास जाय अणाम करै बो ल्यो हे
 धर्मराज धर्म तमा में सरणागत हौ मेरी रत्ताके
 शि अरु दीन पल मूर्ख इनको साधुहा पाल
 न करै हौ जैसे दुर्योधनको बचन सुणि रा
 जा पुधि पिर बो ल्यो हे दुर्योधन महावीर
 तू मानी सरको रवनको राजा बांधवनको
 पालक जैसे तू होय इक लोही कै सें आयो अ
 रुराजा एक लोरणो मै विचरेत हौ ताते तू महा
 राज होय पद लोही कै सें आयो अब तू ते
 र धरजा जैसे पुधि पिरको बचन सुणि दु
 र्योधन बो ल्यो हे राजन अब तौ मेरे माता
 पिता बंधुहित कारी तू ही हौ अरु मर्मको
 छेदन करै जैसे वाक्य अब तौ तुमको बोलि
 बोयो गपन हौ तुम धर्ममात्मा हौ सत्रु मित्र
 नको समान जानत हौ अरु तू अजातस
 त्रु हौ वाके बचन अन्यायान ही ता भयतै
 तुमको रक्तक जाणि में सरण आयो हौ मा
 ता हू कही ही तेरे जेष्ट भ्राता पास जाता सो मे

रामरण होय ॥ जैसे उपाय बतावो ॥ जैसे सु
लियुधिष्ठिर इत उत देवि अश्वपट कत बो ल्यो
हनाता जो मेरो कसो करै गो तो तेरो मरण न
होय गो ॥ जासो अबत नग्र होय बालक को सी
नाही माता के सन मुषनि संकष्ट हो रहि स
र्व अंग दिषाय ॥ वाकी इष्टि में जाते रो अंग अ
वे गो सो सर्व ही बज्र तुल्य होय गो ॥ ताते हे दु
र्योधन त अब सीधु जा मेरो कसो करि कान
में बिलंब मत करि ॥ जैसे ही करै गो तो तेरो ना
सकदाचित नही होय गो ॥ जैसे सुनि दुर्योध
न युधिष्ठिर की परि क्रमा करि हर्ष सहित होय ॥
वस्त्र सों सिरटां कि उहातें च ल्यो ॥ जब मार्ग में
विश्वात्मा सर्व गप श्री कृष्ण सन्मुख आयो ॥ सि
रटा के मोन करि जाते दुर्योधन को हेराजे
जैसे कहि वाकी बुद्धि नष्ट करत ही हे सिव
श्री कृष्ण बोले ॥ हे दुर्योधन महावीर ॥ युधि
ष्ठिर सौ तैं कहा हित पूछ्यो ॥ उन तो सौ क
करो ॥ अरु अवरण में आय वीर न को द
युधिष्ठिर बिकल भयो हो ॥ अश्वत्थामां हत
जैसे असत्य च न बो लि गुरू डों एा चा
केशव पट काये तव वाही समे

चार्यसापदि यो ॥ इदुश्यात्ता मेर प्राण लेबे को
वृक्ष परते अ सख बो ल्यो ॥ ताते हे पापिष्ट अ
बत विकल हो ॥ असे शाप दिये पो हे युधिष्ठि
र मिथ्या ही बोले हे ॥ असे जाणत ह वा के सर
एत को गयो ॥ ता ह वाने तो को निदित कर्म
ही वता ये हो यगो ॥ सोत हम सो कहि उचि
त अनुचित विचारि के हम तो सो कहेंगे
असे नाना प्रकार के ॥ बचन ते दुर्योधन
की बुद्धि को भ्रमापुष्टि र कपाय दातन
वीचि अंगुली रा विकरुणा सहित श्री कृ
ष्ण बचन क हो सो सुणि दुर्योधन बो ल्यो
हे श्री कृष्ण युधिष्ठिर को बचन मेरे मन में
अच्छो लगन ही ॥ ताते क ह वान करु यह
संदेह ही हे ॥ अरु वे वाक्य और को कहतौ
नी मेल जित होत हो ॥ तुम को बाध वर दया
ले जाणि कहौ हो ॥ तुम हमे रो युधिष्ठिर को
संबाद और सो कहि यो मति ॥ असे बो लि
इत उत दोषि दुर्योधन युधिष्ठिर को बाक्य
श्री कृष्ण के को न मे क ह्यो ॥ सो सुणि श्री कृ
ष्ण सहसत ही बोले ॥ हे वीर शिरोमणि तो को
वा विकल को बचन करण ही नही हे ॥ अ

से कहि कही हाय युधिष्ठिर तेरी बुद्धि कैसे भए
 भई ॥ जैसे पश्चात्ताप करते श्री कृष्ण सो दुर्यो
 धन बो ल्यो ॥ हे महाबाहु श्री कृष्ण अब कहा
 करणो ताते मेरो हि तहो इ सो तुम ही कहो मे
 मेरी बुझाते युधिष्ठिर पे नही गयो ॥ माता के प
 ठा पे तै गयो यह मेरो अपराध है नही ॥ जब
 गंधारी को पठा यो युधिष्ठिर पास गयो सुणि
 वा के पास ब्रत तै सै कि तहो य श्री कृष्ण बोलि
 हे महाराज दुर्यो धन माता के बचन तै जो त
 युधिष्ठिर पास गयो ॥ तो युधिष्ठिर को कसो
 ह करि ॥ पर तुमालाकार के घर जाय युष्म
 न की ककुना बणा यबो सो ॥ गोप्य अंगन को
 टा कि माता के पास जा ॥ अरु मेरो वाक्य मा
 ता से नही कहणो ॥ जात जैसे मैं कहितै सै
 करेगो तो माता को वा युधिष्ठिर को बच
 यगो ॥ अरु तह कृति कृत्य
 न करेगो तो निर्लज्ज
 कहावेगो ॥ जैसे श्री कृष्ण के बचन तै गुप्त
 अंगन को टा कि माता के आगे ठा टो होय
 बो ल्यो ॥ हे माता युधिष्ठिर के बचन तै सै त
 रे निकट आयो हो ॥ जैसे तो कह्यो अरु मा

गमै श्री कृष्ण सौं संवाद् भयो सो न हो कयो
 ब्रह्मसुणि माता बोला हे पुत्र तै पुधा
 रको कयो सर्व ही कयो हे तब दुर्यो धन
 कही मै सब ही कयो हे अब तू माको देखि
 असे पुत्रको बचन सुणि गंधारी नती को च
 रण सुमरण करि बस्त्र सो बध जेने तिन
 को कष्ट तै को लि दुर्यो धन के अगन को देखि
 तनई तब अंग मै पुस्पन की कछुनी को दे
 षिने तमी चि दुर्यो धन सौं बोली हे मती हा
 न पुत्र मार्गी में कयरी श्री कृष्ण मिलि तेरा
 मति हरी कह ता तब दुर्यो धन बो ल्यो हे मा
 ता तू सत्य ही कह हे मार्गी में श्री कृष्ण मिलि
 मेरी बुद्धि को हरि लीनी जब माता बोली हे
 महामूढ तै श्री कृष्ण के कह तै मरण कनि
 मित्य तै गुह्य अगन को टके ता तै पामे मेरा
 कहा बस न बतव्य हे सो हा हो यह अब अ
 रतो तैरे सब अंग मै देखि वे तै बत्र मई न
 ये अरु जो फलन की कछुनी तै टके सो हा
 को मल रहे ता तै अब तू अंत काल में बी
 र्धर्म मति पावो पा मर्म ल्या न को बचा
 पायु करि असे माता को बचन सुणि ३

रासहोपरणमें आयविचारकरतनयो॥ अब
मेरो जीवन उपायपातालवासी देखनेतें जल
स्यंजनविद्या सीषी ही सोही हो॥ नापी कैं जैसे
विचारि जलस्यंजन करि रह मैं प्रवेशकीयो॥
अरु तापी कैं अश्वत्यामां कृतबर्मा॥ कृपा
चार्य॥ येतीन्यो महारथी महाराज दुर्योधनक
हाहो॥ जैसे विचारितलासकरे तो फेरें होति
ने देखिसंजय दुर्योधनके समाचार कहत
बवेहवनमें जाय विश्रामकरत भये॥ जबपु
पुत्र ह दुर्योधन दिक्कनकी स्त्री नको युधि
शिरकी आगपातें हस्तनापुरलेगयो॥ अरु
राजा युधिश्चिंतातें आतुर होय कहीवे
रको मूल दुर्योधन कहागयो॥ जैसे कहह
तनको तलासकरि बैकौनेजे॥ अरु अश्व
त्यामां कृतबर्मा॥ कृपाचार्य येतीन्यो महा
रथी रात्रवाकीरहीतामें रहके लरजायवे
ले॥ हे बीर दुर्योधन तनिक सि॥ अरु हमा
रे संग होय अर्जुनादिक बेरीनको जीति
जैसे सुणि दुर्योधन तिनको सराहिवोत्यो॥
हे महारथी हो मैं श्रमि तहों तातें तुम हज
पयेकांत मैं विश्रामकरो॥ अभावही बेरी
को मारैगो॥ जैसे सुणि तीन्यो हीगयो॥

इन्कोसंबादनयोसोयेकभीलवनमेंछिप
सुणतहो॥सोभीनसोंजायकहीदुर्योधन
लस्यंनकरिदहमेंछिप्योहो॥जबयहवार्ता
भीममुखसोंसुणिराजायुधिष्ठिरहर्षितभयो
तबसबपरिवारश्रीकृष्णसहितराजायु
धिष्ठिरदहकोंच्यारोतरफसोंघेरि॥श्रीकृ
ष्णकेकहतैयुधिष्ठिरबोल्या॥हेदुर्योधनतूद
हमेंप्रवेशकरिजसकोकोथावैहैअरु
अनिमानहसदातरेइदमैरहहोसोहदह
केप्रवेशतैतोकोकोडिदियेकहा॥तातैहेरा
जनअबरहतैनिकसिकानिरुपादर्पनको
॥संग्रामरूपारेणुतैमांजिकेउज्जलकरि
अरुज्ञानीनकोसंग्रामहीचिंतामणिहै॥अ
थवाचिंतामणिहतैअधिकहै॥ज्ञानीतो
येकदृष्टीकीबाँझाकरियुद्धकरैहो॥सोर
एकैतोदृष्टीदेयाअथवासुर्गदेयाअैसे
सुणिभीमबोल्या॥अरुदुर्योधनतूरणमें
आसपायजबमेंप्रवेशकोंकियो॥अरुभी
मशोणकर्णशल्ययेकोनसतएएभ्राता
नकोमरायअनेकवीरनकोनासकरा
॥अबजीवैकीकोतक्षारापैहै॥तसो
वंसीज्ञानीनकेबसमेंजन्मपायअैसे

बैठिरहो। अरुत्त

धनहो। तातें अबनिकसिजु

शि। अ

णिदुर्योधनबोल्पो हेराजा

असेदुर्वचननतें कहाफलहो मेरी

उक्तिष्टृष्वीकौ भोगि। अबयुधिष्ठिरबोले

अबष्टृष्वीदानकरिबैतें प्रयोजनही कहाहो।

सूचीकी अणीतें बिधै इतनीहृष्टृष्वीपांडव

नकौ द्रोणहो। असेबोले अबसकलष्टृष्वी

दानकरिबोकेह तहो सोप्रतग्पाभंगतें तुमहो

जकोनहो आवेहो। तातें निकसिके जुद्धकरो

जुद्धतेंष्टृष्वीतेरीहो अथचा मेरीहो। अरुतो

कौमोको जीवतेरहै दोऊनहीके मनमें बिज

यकोसंदेहरहै गोसोसंदेहमेंतिरहो। असे

सुणिदुर्योधनक्रोधकरिबोल्पो हेराजायु

धिष्ठिरमेंयेकएकसौगदाजुद्धकरितुम

सबनकोमारोगो। असेवचनसुणिधुधि

ष्ठिरप्रसन्नहोयबोले। हेदुर्योधनहममेंसे

एकहूकोतेरेबांकि तशस्त्रतें जुद्धमेंजेजी

तैतौसकलष्टृष्वीकोतराज्यकरि। असे

सुणिगदाधारें दुर्योधनरहमेंतेंनिकस्ये

युधिष्ठिरबोल्पो हेराजाअनि

मनुको तु म बहु तन मिलि मा ल्या तै से ह म
 कौ न ही मारे गे ॥ असे कहि शिर ख्राण के व
 दुयो धन कौ दिये ॥ अरु कहा हे दुयो धन ह
 म पांचौ नये जा सो तो कौ जु इ रु चै ता ही सो
 युद्ध करि ॥ तब श्री कृष्ण कौ ध करि युधिष्ठ
 र सो बोले ॥ हे मूढ फेरि यह द्यूत क्यो करे हे
 यह तो सो बुद्ध करे तो कहा गति होय ॥ यह
 त्रयोदस वर्ष लौ बल देव जी तै गदा युद्ध
 सीष्यो हो ताते भी म ह याते जिते अथ वान ही
 जिते ॥ असे बोल तै ही भी म उठि बो ल्यो हे
 श्री कृष्ण असे मति कहो ॥ मैं एक क्षण मे ग
 दा करि पाके प्राण हरो गे ॥ जब दुयो धन
 ग जाना करत भी म सो बो ल्यो ॥ हे भी म से न
 त ज रा संध भगदत्त की चक मेघ नाद
 हि ड ब ब क कि मी र ये मे मि त्र तै मारे ॥ अ
 र दुःसासन आदि नातान कौ तै मारे ताते
 अब सब न सो अनणी यहो वे कौ मैं तो को
 मारौ गे ॥ अरु मेरो एक ह गदा प्रहार सहै गे
 ब तो कौ सर बार जाणौ गे ॥ असे बो लि सि
 नाद करि दो ऊ बरि परस्पर गदा युद्ध करत
 ये ता ही समेत हासर स्वती ती र ती र्थ पात्रा

करतेबलदेवनारदवाक्येंदोऊसिष्यनके
आये॥तिनकोदेविश्र

रुसपांडवउ कियो॥शिमंतपं
चकसिद्धक्षेत्रमेंभामदुर्योधनकोपुह
सरश्वतीकेदक्षणातीरबलदे

वकोवाचिलेयसबबैठे जबभीमदुर्यो
धनदोऊगर्जनाकरतपुहकरतभयोत
नकीबज्रमर्द देहमेंपडतीगदान

स्फुलिंगउकूलतभयो॥जबदुर्योधनगदा
फिरायभीमकेबक्षस्यतमेंप्रहारकियोत
बभीममूर्च्छितभयो॥फिरिक्षणमात्रमेंभी

मसंगपापायदुर्योधनकेउरमेंगदामारी
तबराजाहक्रोधतैभीमपैगदाप्रहारके
यो॥जैसेप्रहारकरतैकरतैदुर्योधनकी

सो॥१०० गदानग्रभृषीजबफेरिदुर्यो
धनभीमकोगदाप्रहारकरिदृष्ट्वामेंप
दकिसधिरमर्दकियो॥तबभीमहूरुधि

रकोपूच्छिफेरियुहकरतभयो॥जबफे
रिदुर्योधनगदाफिरायभीमकेउरमेंमा
री॥ताप्रहारतैभीमदृष्ट्वामेंपडिमूर्च्छि

भयो॥ताकीदसादेविदुर्योधनगर्व
मेंजीतोशैनेयोतोयो तब

कौंमृतकजाणि रुदनकरतपांडवश्रीकृ
ष्णसौहममरे जैसेबोले तबसोककरि
प्राडितपांडवनकोदेविश्रीकृष्णहंसतेही
बोलेहेपांडवहोनिरोबाकसुणो॥ यहभी
मजीवैहो॥ उठिकैगदाप्रहारकरिवैरके
प्राणहरैगो॥ जैसेश्रीकृष्णकेबोलतही
भीमउठिगर्जनाकरतदुर्योधनसौबोले
हेवीरमोकौंएथीमैनाषिकहांजायहे
एकगदाप्रहारमेरोहंतोसहि॥ जैसेसुणि
दुर्योधनसनुपुत्रायबोलेहेभीमतूमो
पेगदाप्रहारकरि॥ तबसबबलसौभीमग
दाभमायदुर्योधनकेकाधेमेप्रहारकियो
ताप्रहारकौंदुर्योधनपुष्पप्रहारसमान
मानिकोप्योहन्ही॥ अरुभीमकेउरमेग
दाप्रहारमात्वे॥ ताप्रहारतैभीमधूमत
नयो॥ तबजैसेयुद्धदेविपुधिश्चिरश्रीकृ
ष्णसौपूकी॥ इनदोऊनमेकौनबली॥ जब
श्रीकृष्णबोलेहेराजनभीमहीबलीहे
दुर्योधनतौसिजातैअधिकहो॥ तातैसि
तामेअधिकहोपसोहीपुइमेजीतैअ
रुक्कलतैयुद्धकरियाकेऊरसंगकरि
वैतैभीमजीतैगो॥ जैसेश्रीकृष्णयुधि

धरकोंसंबादकरतैहीभीमकोचेतनस
हतरुषि।जबश्राकृष्णभीमकोआपकी
जंघादिघायताडनकरा।तबभीमहतास
आपकोजाणिएआपकीप्रतग्पास्मरणकरि
दुर्योधनकीउरुभंगकेनिमित्तनानाप्रका
रसोयुद्धकरतनयो॥तोहजंघाप्रहारको
अवकासपायोनही॥जबदुर्योधनहीम
केप्रहारनतैआपकीदेहकोबचायाभीम
केरुद्रयमेंगदाप्रहारकरा।ताप्रहारसोभी
मकोमूर्च्छितजाणिएदुर्योधनफेरिप्रहारन
करयो॥अरुजोप्रहारकरेतोभीमजीवैही
नही॥परंतुगदाप्रहारकरिवेकेंदुर्योध
नठाटो॥जबमूर्च्छाकेअंतमेंउच्चलिभीम
दुर्योधनकेऊरुमेंगदाप्रहारकरिजंघा
भंगकरा।तबऊरुभंगहोतैहीदुर्योधन
हाहाकारकरिएध्वीमेंपड्यो।जबपडत
हीबोली।मैंश्रीकृष्णकोआस्थाएध्वीमें
पड्योहो॥असंबोलतैदुर्योधनकेमुक
रमेंभीमचरणप्रहारकरिबोली॥हम
कोरुलकरिश्रुतमेंजीतिजिनश्रेयदीको
गऊकहीही।सौधर्मयुद्धतैहममारिउ

नकों गऊ गऊ कहें हैं। जैसे बोलते भीमके।
पुधि शिर निवारण कले। तो हनी मरुया ध
नके शिर पे चरण धरयो। जब पुधि शिर रु
न कर लो हीरुया धन सों बोल्यो। हे बांधव
देव बलवाने हे। पांडु धतरा इदो ऊआत
नके पुत्र नको बैर कुलको नां स करी नयो।
जब पुधि शिरको बचन सुणि बल देव बोले
अरे भीम तू कुलते राजा कों पृथ्वी में पर कि
अब चरण ते क्यो स्पर्स करे हे। जैसे कहि व
ली बल देव क्रोध ते भीम पै दौडे। तहां श्री कृ
ष्ण आडे आय बोले। हे तात गदा युद्ध में करिके
नीचे प्रहार न करणो। पै भीम प्रतग्णा याको
पालके सभामें करी ही हेरुया धन तू दोप
दी कों जंघा दिवाय वेठि वेको कहें हे सोया
ही जंघामें गदा मारिते रे प्राण हरो गोता प्र
तग्णा ऊरु नंग कियो हे। और याके ऊरु
नंगमें मैत्रेय मुनिको सापह कारण हे। अ
से बोलि बल देवको कोप सांते कियो। अरु
रु भीम सों श्री कृष्ण बोलें। हे भीम तू अनीति
युद्ध न करि। एकादस अक्षोहणीके पतिको
शिर चरण सों स्पर्स करणो योग्य नहां। अ

सैमीमकौबरजिफेरिबलभइसौबोलेहेतात
 तुमबडेवारहो॥तुम्हारेआगेपांडवमेंएव
 तलवासीसर्वनरदेवा॥लोकनकेइंद्रादिक
 देवा॥पातालकेशेषादिकनाग॥विष्णुशंकर
 ब्रह्मा॥इनकोआदिदेमहाबलीतुमसौरणमें
 स्थिरहोवेकौकोऊसमर्थनहीं॥एकनीम
 कहाप्रदार्थहै॥असैबोलीपांडवसहितश्री
 कृष्णबलदेवकेचरणनमेंपडतभये॥जबबल
 देवहश्रीकृष्णकौजगदीश्वरउत्पत्तिस्थि
 तिप्रलयकर्त्ताजाणितिनकौप्रणामकर्तेदे
 षिलजितभये॥तबबलदेवकौलजितजा
 णिमानीदुर्योधनबोलेयो॥हेगुरुबलदेववृ
 थाबादनकरो॥काकादिकनेसैपांवतोंशि
 रस्पर्शकरैहैतैसैभीमहचरणतैशिरस्पर्
 शकस्योपाकीमेरेगिणतनिहीं॥तबअसैदु
 र्योधनकौवचनसुणिवलदेवकही॥हेश्री
 कृष्णतुमअरुपांडवबडेधर्मयोधाहोअसै
 कहिहारिकाकौंगये॥तबपांडवहर्षितहोय
 श्रीकृष्णकेचरणनमेंप्रणामकरिस्तुतिकर

अमृत्युजये॥

मकों प्राप्ति है। जब धृष्टद्युम्न शिवं दीया
दि सब ही भासों बोले। हे नाम प्राजिव डीव
धाई है। तुम या दृष्ट केशि रपे चर्ण धर्यो। अ
सैं कहि नीम का बहूत स्तुति करी। जब श्री
कृष्ण बोले। यह अपने पाप न तैं ही मरि सोता
कौ बचन न तैं कों मारो हो। त बंदुर्यो धन नि
त बटे के भुजा न तैं पृथ्वी कौ। आश्रय लेय मु
षं चो करि लब्धाद में भ कुरी चटाय क्रोध
तैं श्री कृष्ण सो बोले। रे कंय के रास ह म अ
पके अधर्म न सो मरे। अरु तेरे बतये अध
र्म न तैं धर्म यो। पांडवन मरे कहा। नीम
भूरि श्रवा। शोण। कर्ण। अरु मे। इन सब न
कौ तुम पापी न तैं अधर्म तैं ही मारे। अरु ह
म तौ बैरी न के सि रपे पाव धरि प्रातहि
राज्य भोग्यो। अब पांडव ह म बिना उक्लिष्ट
राज्य भोग्यो। अैं सैं बोले तैं दुर्यो धन पै देव त
न तैं पुस्कन की ब्रष्टि करी। तापी कैं अर्जुन
हरथ तैं उत सो। तब ही हनुमान तौ अंतर्
न मनये। अरु अर्जुन कौ रथ अश्व शस्त्र। अश्व
न की रासि इन सहित सब रथ मनयो। अैं सैं
श्रि अर्जुन श्री कृष्ण सो बोले। यह कह भ

यो जब श्री कृष्ण बोले हे अर्जुन भीष्म शौणक
 इनके अस्त्र ज्वालानतै तै रथ पहलै ही
 दग्ध होतौ ॥ पै इतने काल पर्यंत तो मेरा ब्योह
 सो अब यह दग्ध नयो ॥ अैसे सुणि श्री कृष्ण
 की सब हासुति करत डेरान में प्रबेसा कियो
 जब श्री कृष्ण बोले हे राजन अब सरस्व
 ती नदी का तीर जयंती देवी है ताको पूजन
 करिबे कौचलो ॥ अैसे कहि डेरान तै श्री कृष्ण
 सायकी सहित पांडवन कौले गये ॥ लायी कैं
 रथ तराष्ट्र तैरो पुत्र दुर्योधन परम पीठि
 तहोपमो सो बो ल्यो ॥ हे संजय तू देषि पांड
 व मेरे शिर पे पाव दै य मानषंडा कियो ॥ अरु

नगनी दुःख लाये
 अैसे क

धन रुदन करत नयो ॥ ताको देषि
 जब और जीवन

तापी कैं दुर्योधन कौ रुदन
 कैं लवर्मा कृपा चा

कौ देषि अ

अथवा नरो य बो ल्यो ॥

ननु एकादशस्य सोहिणीतौ। सकल पृथ्वी
मंडलको व्याकुल करिं असीदसाको कैसै प्रा
प्त भयो। अरु तेरे कृत्र चामर कहां गये। गजपै
चरे जाको स्त्री जन हर्षतै देषत ही। ताको अज
मै पडे को भोजन करि बेके अर्थ हर्षसौ शिव
देषत ही। जो एक क्षण मात्र संगीति गांन बिना
न रहत हो। सो अब अमंगल सिवाधुनि
सुणो हो। अरु जाको इत उततै आय वीरज
टजी वीजीव कहत हो। ताको अब मास भोगी
मारि मरि असे कहत है। जब असे सुणि दु
र्घ धन बो ल्यो। हे अश्वत्थामा। मै चक्रवर्ती
पद भोग्यो। अरु अर्थी। ओ बेरी नतै विमुष
न भयो। गो ब्राह्मणन को पूजन कियो। सज
न दुर्जनन को यथा योग्य सत्कार अपकार
कियो। अरु श्रीमके सनुष कुर से दे देह
साग कियो। तासो मेरो राज्य करवो। ओ मर
ण ये दोऊ ही उज्वल नये। मुद्गरूपी महा प्र
लय मै ब्रह्मा विष्णु रुद्र तुल्य तुल्य तीनों
को ही जीवते देवे। तातै उत्साहना सकसो
कन करो। असे बो लि दुर्घ धन मो नग ही
ताको देषि अश्वत्थामा लालने करि हा
थ पीसत बो ल्यो। हे राजे इमेरे पिताको मरण

अब पंचपांचाला पंचशोपदी

पत्र पंचपांडव इन सब नको पंचत्व प्राप्त क
रोगों ताते मोको आग्पादो और से ससे
नाको नांस करोगो असे सुणि दुयी धन प्रस
न नयो अब कृपाचार्यको आग्पादेय सरस्व
ताजलसो अश्वत्थामाको सेनापत्या निघे
क कियो अब सूर्यास्त समै राजाको आसीर्वा
देय अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा
सहित पत्नी न्यो सिचरि समीपरहत भये इ
ति श्रीभारत सार चंद्रिकायां गद्यपद्य समाप्त

शुद्धी ॥ अथ श्राद्धतन्त्रः ॥ अथ श्राद्धतन्त्रः ॥ अथ श्राद्धतन्त्रः ॥

असै संजयतं ब्रह्मांत सुणि धतराष्ट्रमूर्ति
तनयो ॥ तव तहा वेद व्यास आय धतराष्ट्र
को समाधान कियो ॥ तापी के धतराष्ट्र संज
पको रात्रिको ब्राह्मांत मूर्कत नयो ॥ तव सं
जय बो ल्यो ॥ हे राजन अश्वत्थामा सेनाप
त्या निषेक पाप ॥ तापी के कृपाचार्य ॥ कृतव
र्मा ॥ अश्वत्थामा येतान्यो विसाल वटनी चे
गये ॥ तहां अश्वत्थामा को बैरीन के मारिबे
की चिंता तै निश आई नही ॥ वेदो ऊ सो वत
नये ॥ तहां येक उलक आयसूते कागलान
को मारे ॥ जब तिनको कोलाहल सुणि अ
श्वत्थामा बिचार कियो जैसे उलक ने सूते
बैरी का कनको मारे ॥ तैसे ही सूते बैरीन
को मारणो ॥ असे निश्च करि ॥ सूते कृतवर्मा
कृपाचार्यको जगाय कही ॥ अबही उलक आ
यसूते कागनको जैसे मारे ॥ तैसे ही सू
ते बैरीनको मैं ह मारैंगो ॥ तब कृपाचार्य
बोले ॥ शास्त्र कवच रहित सूते बैरीनको
मारिबे चारो नर्कगामी होय है ॥ तातै अमर
रि करिबेको अबतौ निश ही करे ॥ प्रभात ध

मदयेगो अरु मेरे पिता को युद्ध में युधिष्ठिर
जुठ बोले मासो ताको अवन करतें मोको
तुम्हारी नाई निशकै सें आबे अरु वीरन
काँतौ जो अतपा करी ताको पालन ही करि
बोधर्म है जिनके मारि बेकी में प्रतपा करी
ताप्रतपाके पालन करि बेसै में तुसको नह
पूछौगो तातें अब मैतौ सते ही बेदीत को
मारौगो सो को धर्म अधर्म तें कहहो अथै
बो लिख्यपै सवार होय अथव त्या मा चलो
ताके पीछे कृपा चोर्यो कृतबर्मा ह चले
तहां नाय अथव त्या मा पांडवनके शिव
रक्षारपै एक बिसाल मूर्ति पुरुष देस्यो रुधि
रतें रंजित अनेक हस्तनमें अनेक शस्त्र
धारै जाके नेत्र नतें सुषतें अथिज्वाला
निकसै मुंडमाला गज चर्म धारै मणिमु
क्त अनेक सर्पनके आभरण धारै सैकड़ों स्य

चंद्रसमानतेजजाको॥ ताके हरिकरिबेको अ
श्वत्यामा अनेकशस्त्रप्रहारकिये॥ तेसर्वनि
स्फलगये तब अश्वत्यामा विचारतये॥ बृह
कृपाचार्य कृतवर्माको बचनमांन्यातही
तातें यह आपत्प्राप्त अथम हा रुद्रको अ
श्रय करूँ असे विचार करि॥ कुंडमें अग्नि
प्रचलित करि॥ शिवको ध्यानस्तुतिकरि अ
ग्नि कुंडमें पड़िबेका तयारी करी॥ जबही म
हारुद्रहंसिके बोले॥ हे अश्वत्यामा श्रीकृ
ष्णकी आग्नाते युधिष्ठिरकी सेनाकी रक्षा
करिबेको मैं असे रूपदिषायो अब तेरी म
क्ति ते प्रसन्न भयो॥ तातें वर देत हो अरु यह
षड्रदे तहों सो तू बेरी नको जीति असे कहि
षड्रदे के शिष अतर्शन भये॥ जब अश्वत्या
मा॥ पाहुँ सो अये कृपाचार्य कृतवर्माति
नसो बोले॥ तुमया द्वार पेर हो जाको रु
निकसे ताको तुम माये॥ असे कहि अश्व
त्यामा अमार्गहाय शिवरिमें प्रवेश कियो
तहां जाय शिवरिमें सुप्त सो सतोजे
धृष्टसुम्ना॥ ताको चणप्रहार करि जगाय उ
ठतेके केशपकडि मारि बैल गयो तब धृष्ट

दुःखबोला हि श्वत्यामा तमो कौशखनैमा
 रि जब अश्वत्यामा कही मरे शस्त्रगुरु श
 कौस्पसनहा करे असे कहि अश्वत्यामा
 ए दुःखकौ यज्ञके पसूके सातरह मात्यो
 तैसे ही उतमौ जा कौ मात्यो तापी के रथमे
 सवार होया और जागे जे बीरतिन कौ अने
 क शस्त्रनतै मारि युधामन्यकौ और स
 ते बीरन कौ एक ही महर्तमें मारत नयो
 तापी के रथ तै उतरि बड़े तै यो चौ शेषदीके
 पुत्रन कौ मारि शिषंडी कौ मारि दुपदके पुत्र
 पोत्र सुदमत्य इन कौ मारत नयो अरु
 धारपै ठाटे जे कृपाचार्य कृतवर्मी ते अग्ने
 पशुत्रकी ज्वाला करि निकसते भाग
 ते जे बीरतिन कौ दग्ध करत नयो तापी के
 अश्वत्यामा कृपाचार्य कृतवर्मी इनके
 मारे जे सेनाके जोड़ा ते असे पुकारत नयो
 हम कौ कौन मारे है तवर कृबलपहरे
 रक्त अगाराग लगाये रक्तमाला पहरे
 रक्ततै रंगी या सहस्तमें तापासतै अनेक
 बीरन कौ नासकती कालरात्री समान
 काली के अश्वत्यामा के

मको सुप्रमं देया ही ता ही को अंत समे म
वीर प्रत त्तर म त नये जैसे सकल वी
र न को ना सक शि अ धर अ पा कैं तीने
मिलि कथा करत प्रोपदी के पांचों पुत्र न
के सिर लेया रण म मि मे प्र डो जो दुषी
धन ताके पास गये तहां ताको रक्त में
लिप्त संग्या ही न जैसे देपिती नौ सोच
तरु दन करत बोले हे दुर्योधन श्री कृ
ष्ण पांडव सात्यकी ये तो बचे और सब
तेरे बैरी मारे गये ये उनके सिर हों सोत
में संग्या होय तो सुणे अरु देखे तब दुर्यो
धन हर्षतें उ छिडन सो बो ल्यो भीष श्रेण
कर्ण इन जो पराक्रम न कियो सो पराक्रम
तुम कियो ताते में प्रसन्न नयो फेरि वा
लकन के सिर देपि कह्यो एना लकन के हे
पांडवन के नहीं ताते पर लोक में ज जांज
बीभी मिलैगी नहीं यह सो कनयो ताते
अब मैं प्रसन्न ना सो पांण छोडत हों तु
म्हारे हारो मिला पु अब फेरि स्वर्ग में
होयगो जैसे बोलि दुर्योधन प्राण छोडे
सो देपि अर्जुन के मय तेंती नो ही चले सो

कृपाचार्य तो हस्तिनापुर गयो। कृतवर्मा द्वारिका
गयो। अश्वत्थामा व्यासाश्रम जावे की इत्ना क
री। यह संपूर्ण कथा कहि। तापी कै संजय धतरा
इसों दुर्योधन को देह त्याग कस्यो। वैशंपायन उ
लाच। तापी कै पांडव जयंती देवी को पूजन
करि मार्ग में आवत हे। तिन के सन्मुख धष्ट
दुम्न को सारथा। देवजोगतै कृतवर्मा के अश्व
बच्यो हो सौ। जापयुधिष्ठिर क शत्रिको चरि
असब कस्यो। ताको सुणि राजायुधिष्ठिर म
की पायष्ट्र्य में पडो। ताको नाम को आदि
भ्राता श्री कृष्ण सात्यकी। इन सब मिलि
चेत करायो। जब राजा अश्वनाषत बोले
हे श्री कृष्ण हमारे विजय हू। हमारे नासको
कारण भयो। अरु शोष दीह भ्राता। पुत्र इन
के सोक में मग्न भई ही। ताको समाधान क
बै कौन कुल कौ आग्ना देया। आपयुधिष्ठिर
वरि सोधन कौंगये। तहारा जान कौ बाध
वन कौ मरे देधि राजा मूर्च्छित भयो। तब प
शि। श्री कृष्ण युधिष्ठिर को समाधान क
त भयो। अरु तहा ही मरे पुत्र भ्राता तिन
सोक तै बिलाप करती। शोष दी कौ देधि
तब दोपदी

ली अश्वत्थामाको मारिचाको सिरोमणिदि
षावो जब जो जन करे ॥ जैसे कहि शोपदी अतस
न ब्रत लियो ॥ तापी के भीमसेन शोपदी की प्र
तग्या सुणि ॥ नकुलकों सारथी करि अश्वत्थामा
माके सम्मुख चला ॥ ताको देखि श्रीकृष्ण ॥ अ
नसो बोले ॥ हे अर्जुन में शोणाचार्यके पुत्रको
कर जाणि ब्रह्मास्त्र दियो नही ॥ तुम बनबास
कौ गये ॥ जब अश्वत्थामा दारिका ॥ आय
मोसो चक्रमांगणे ॥ तब मैवाको चक्र देवलगे
सो चक्र अश्वत्थामा दोऊ हाथनते ऊहाय
बेलगो जब उद्यो नही ॥ तब वह मोसो बोले
हे श्रीकृष्ण चक्रधारि बेकी मेरी सामर्थ्य न
अरु जो चक्रधारि बेकी मेरी सामर्थ्य होती
तो मैं तुमही सो जुद्ध करतो ॥ सो चक्र जु
मै तो मैं असमर्थ हों ॥ ताते ब्रह्मास्त्र ही दे
जब मैवाको ब्रह्मास्त्र दियो ॥ अरु सुभावा
कायर को धीयह अश्वत्थामा है ॥ सो म
ध्यनमें नही अस्त्र जाणै तापै यह ब्रह्मास्त्र
लावो जोग नही ॥ तो हयह अश्वत्थाम
मपै अस्त्र चलाय मारे ॥ ताते याकी
निमित्त चले ॥ जैसे सुणि युधिष्ठिर श्री
अर्जुन नीमके पीके गये ॥ तापी के भीम

अश्वत्थामाकौ व्यासके आश्रममें व्यासके पा
नाशाले बस्त्र धारें जलकी तीरठाटो देषि भी
मबो ल्यो ॥ रे क्रूर ब्रह्मबंधु ठाटोरहि ॥ त्रैसेंसुणि
अश्वत्थामारथसस्त्रहीणह वामहस्ततैड
सीकालेय ब्रह्मास्त्रतैमंत्रियह विस्वअपांड
वहो ॥ त्रैसोंसंकलयकरिचलाई ॥ जबश्रीकृ
ष्णअर्जुनसोंबोले ॥ हेअर्जुन यहअश्वत्थाम
तुमारोनासकरिबेकौ ब्रह्मास्त्रचलायौहो
तातैतह ब्रह्मास्त्रचलाया ॥ दोऊअस्त्रनकौ
संघारकरि ॥ तबत्रैसेंसुणिअर्जुनह ब्रह्मा
स्त्रचलायो ॥ सोदोऊअस्त्रनकीज्वालाकरि
एध्वीआकासकायो देषि प्रजाप्रलयमा
नतभई ॥ जबअर्जुनश्रीकृष्णकी आग्यातै
अस्त्रदोऊसमेटो ॥ अश्वत्थामाकौपकडिरो
पदीपैल्योये ॥ तबवाकेसिरकीमणिकाटि
सीपदीनी ॥ जबश्रीकृष्णबो ॥ याअश्वत्थाम
केअस्त्रतौ ॥ उत्तराकौगर्भदग्धनयो ॥ ताकौ
मेरेतपकरिकैजिवायौहो ॥ तातैयहअश्व
त्थामापातकीमलिनहो ॥ तातैराधिलोही
केदुरगंधसहितनमतरहैगो ॥ कहंसतक
रपावैगोनही ॥ एध्वीमेंयहसुणिआयेबे

लकी गति बडी गहन है ॥ अरु पांडव ह तुम्हारे पु
त्र ही है ॥ अरु मैं ह सकल यादवन सहित तुम्हा
रो आगपाकारी है ॥ ताते तुम सोच मत करो ॥
असं श्री कृष्ण को वचन सुणि गांधारी बोली हे
कृष्ण तरे कपट तै मेरे पुत्रन को अरु कटु बके
नास नयो ॥ ताते त ह कृती सब रस ॥ रूपी ह तैरे
सर्व कटु बको नास देवैगो ॥ असै सापदे यम
हित होय ॥ गांधारी एध्वी मै पडी ॥ ताको समा
धान करि श्री कृष्ण बोले ॥ हे गांधारी तुम उठो
अरु युधिष्ठिर को पुत्र की नाही पालना करे ॥
शुभरि मै चलि भोजन करे ॥ तो कौ भोजन कि
यै बिना पांडव भोजन कन करेगो ॥ तब गांध
री बोली हे कृष्ण मेरे पुत्र मेरे ताते मै भोज
न करौ नही ॥ अरु सब ही को संग्रह ह्यो डिबा
युभक्षण करौगो ॥ असै कहि गांधारी जडी नू
त नई ॥ ताहि देखि श्री कृष्ण को तु कनिमित्त
चुधा कौ आगपा करी ॥ तू गांधारी के सरीर
मै प्रवेश करि ॥ जब चुधाते गांधारी विबल
होय ॥ इत उत देषत नई ॥ तहां एक आम्र को
वृत्तरेष्यो ताके फल पके हूँ ॥ अरु बिना प
के हूँ ॥ तब गांधारी फल भक्षण काइ ह्यो
करी ॥ तब

फलहाय आयो नही जब पुत्र दुर्पो धन की क्वा
 तीये पावदे यतो दिबे लग्नी ॥ तो ह दोय आगु
 लफल ऊ चोर हो ॥ तब सब पुत्र नको भेले
 करि उनकी सीटी बनाय ऊंची होय फल ले
 वेको उद्योग कस्यो ॥ जब ही आभ्रको ब्रह्म
 तर्हान भयो ॥ तब श्री कृष्ण आयगांधारी
 सांबोले ॥ हे गांधारी तू ऊंची को भई ॥ जैसे
 सुणिगांधारी लज्जित नई ॥ तासो श्री कृष्ण
 बोले ॥ कहं हि पुत्र मरण कष्टा त कष्ट तरं तु
 धा इति अर्थ ॥ सब कष्ट नतें अधिक कष्ट तो
 पुत्र मरण ता कष्ट हतें अधिक तु धा ॥ तासो
 हे गांधारी सुणि सत्य युगमें तो प्राण अस्थि
 में रहे हे ॥ त्रेता में मांस में रहे हे ॥ द्वापर में मज्जा
 में रहे हे ॥ अरु कलियुग में केवल अन्न ही
 में रहे हे ॥ तातें अन्न ब्रह्मकी नित्य ही सेवा
 करणी ॥ अन्न हीके अर्थ सर्व प्राणी पराई से
 वाकरे हे ॥ अरु कृष्णके इक पट शोह घात
 पात आदि अनेक अनर्थ प्राणी अन्नके अर्थ
 करे हे ॥ जैसे श्री कृष्णके बचन सुणिगांधारी
 मानो ॥ डिधतरा इसहित युधिष्ठिर
 के पास से वारि में आई ॥ जब राजा युधिष्ठिर
 रहरण में मरे ॥ श्री गालादिक न करि नहि

असे
धारी
हे

तासौ अब
धतराष्ट्र

भवत व्यहो सो भयो।
रिअना

असे ग्रां ग्या पाप
वरणन मै प्रणाम

करि श्री कृष्णसायको और भ्रातान केहना
मले लै प्रणाम निवेदन करो अरु धतराष्ट्र
अपके पुत्रन कौ मारि बेवारो असे भीमसे
न कौ मन मै कपट राधि बुलायो। जब श्री कृ
ष्णके मन कौ कपट जाणि पहलै ही लोहम
ई भीम बणाय राघ्यो हो ता कौसन मुष कियो
तब धतराष्ट्र कौ इदय तै लगाय भीमके अ
मते बा लोहमे ई कौ चूण कियो तापी छै
धतराष्ट्र रुधिर बमन करे तटथी मै पदि

कपटलैरुदनकरतबो ल्यो मोहलै व्याकल
होय मध्यम पाइवनी मसेनको भारि चूणकि
यो सोपाको मरणको दुष्पमेरै पुत्र मरणतै
हे अधिक भयो अैसे बिलाप करते धतरा
इसो श्रीकृष्ण बोले हे महाराज नीमतो मस्या
नही तातै तुम चिता मतिकरो अरु तुम्हारे क
परं जाणि प्रथम ही लोह मई नीम बणा परा
यो हो सो तुम नै बाको चूणकस्या अरु त
म्हारे बल अथमा ए जाणि अयुत गज
नीमको मिलायो नही अैसे सुणि राज
परसो हर्षित भयो ज ब श्रीकृष्ण बोले
जन इष्ट मित्र नको बचन मान्यो नही
तुम्हारे पुत्र नको तुम ही मारे हो भीमप
कां करो हो अैसे श्रीकृष्णके बचन सो रा
निज अथय थसो पुत्र नको मरे जाणि हे
सिके श्रीकृष्णसो बो ल्यो हे श्रीकृष्ण पुत्र न
के सो कस मुई नै उते मोतै नीमको बचा
य तुम मेरो उद्धार कियो अैसे कहि धतरा
इयुधिष्ठिरको आसीर्वा दियो तब फेरि
राजा युधिष्ठिर नीम आदि मातान सहि
तगांधारीको प्रणाम कियो ज व गांधा

शिवोली हे युधिष्ठिर मेरे पुत्र आपका ही अ
न्यापते मरो। पै भी मसे नने दुर्गा धन दुःसा
नको कु मस्यते मारो। यह मोको महा दुष्यहे
तब भी बो लो हे माता मैं अकत के यो सो
मा करी। माता हो ये सो अपरा धन रे पुत्र नह
मारें नही। अरु अत सना मैं दुर्गा धन शो पदी
को जघादि पाय वै ठि बे को कह। जब मैं यह
प्रतणा करा ही ता सो जघा के रन करी। अरु
दुःसासन के रुधिर की धारा मेरे होठ पार
नही नही। असे सुणि गांधारी बोली। धर्मात्मा
धर्म पुत्र कहा हो। तब युधिष्ठिर बोले हे माता
तेरे पुत्र नको मारि बे वारो यह पाप मैं ह
सो तमो को अवसाप देय सुद्ध करि। असे सु
णि गांधारी बोली नही। अरु अपने कुल
को सुत्य जाणि युधिष्ठिर को सापहन ही दि
यो। असे गांधारी को समाधान करि। शो प
दी सहित पांडव कुंती को प्रणाम करत नये
जब कुंती पुत्र नको वा शो पदी को पायन मे
प्रणाम करत दे वि समाधान करत नही ता
पी कुंती शो पदी सहित गांधारी को प्रण
म करी। तिन को दे वि गांधारी बोली हे कुंती
हे शो पदी तम अप्रधान को जगे

शोपदी को मरौ बंधु पुत्र ही न नयें को ही समा
गम विधाता लिप्या सो नयें ॥ गंगा के तरण मे
रण के मरण में सो चन करणों ॥ तातें युद्ध में
मरेन की सक्ति विचारि सो चन करिये ॥ अ
सैं कुंती शोपदी को समाधान करि ॥ गांधारी वे
द व्यास तै दिव्य प्रधि पायरण मंडल देषत न
ई ॥ अरु तै सैं ही वेद व्यास की आगपतैं ध
तराष्ट्र युधिष्ठिरादिक हू देषत नये ॥ तहां अने
क मांस भोजन करि पूर्ण ॥ विलाप करती का
मिनीन के कोलाहल युद्ध ॥ असे रण मंड
ल को देखि गांधारी श्री कृष्ण सो बोली ॥ हे श्री
कृष्ण रण भूमि नै रुधिर के सरोवर नरै ॥
तिन में बीरन के मुख कर चरण तिर तहै ॥
सो मानौ यम राज के पान निमित्त अरुण म
दिरा के कमल युक्त पात्र ही भरै है ॥ बीरन के
सिरन पै दंड हीन कृत्र पडे है ॥ ते मानौ निज
मिन्न के मिलिबे को ॥ अनेक पूरण चंद ही
सो चैत आलिंगन करत है ॥ अरु रुधिर स
मुझन में बीरन के सिर तिर तहै ॥ ते मानौ
यम किं करन के बालकन के तिरण सिषा
यबे के को ॥ सजे नये तुं वफल ही है ॥ ऊंचे मु
ष करै रथ पडे ॥ असे दीषि है ॥ मानौ प्रवर्ग

येरपीनकेसंगजाबेकौउतकठितहा।।
मांसमत्तणतैतापतनिसाचरनषनताव
रितमृतकनकेनचरूपीज।।धारापानक
रात्तसनकीम्नीनत्तोनक,पहिलाय - तनव
हारधारिरुधिरकोअंगरागंक।।
त्तणतैतसिहोयानाचतामुंडववागं।।
क्रीडाकरता।।अर्जुनकेप०,क्रमकोगं
हो।।रोमरोममेंबाणनमा।।धधजेव
अंगनत्तणकोआयेजेजंबुकंजंबाणन
रिघ्राणकरिकरिन्दि,सहोयगभनध
कितनेकप्रहारनतैसतष३नयवीरनकास
गालवाटिचाटिकुटंब।।हितनोजनकरना
अरुहेश्रीकृष्णकितनीकना।।चिननने
निजभर्तानकौपाह।।निचैसेव,लतह
स्वामीतुममौतैबिरक्तनये।।मौकोद
षिकैहरणश्राकेकुचनुस्य०।।ननन
रहरिनकरतहो।।अैसेबोलतः।।भमिम
पडेदुयोधनकौदेविगाधारा।।न
केचिचेतपायश्राकृष्णसोबोला।।हेश्राक
समैरौतेरौवचननमाना।।तातेहुं
यारसाकौप्राप्तनयो।।अत्ररगमेंपडे
धनकेरुजलिप्रसरीरहा।।याक्री

मतीनेत्रजलसौधोवतहो औरहमेरेपुत्रन
 स्त्रीपतिनकेअंगकोअलिंगनकेरिविलाप
 करैहै औरयहविराटकीपुत्राउत्तरास्वा
 अनिमन्युकेसरीरकोगोदमेंधरि तेरेमुषके
 दृषि जैसेबोलैहै हेश्रीकृष्णतुम्हारीभग्न
 कापुत्ररूपमेंबिनयमेंनयमेंजयमेंतुम्हा
 रतुल्यसोयहतुमसर्वव्यापीकेदेषत अनेक
 वीरनलेकलसौइकलेकैकैसैमास्या अ
 सैकहिस्वामीकेमुषकोचुवनकारिफेरि
 बोलैहै हेप्रियतुमपुइमेंजातसमैहमोकौ
 पूछ्यानहो तातैअपराधवतीजाणिअबह
 बोलतनहीहो जातैमैंजानतहो तुमवत्त
 स्थलदेवांगनानकोदीनो तोहविलाप
 करतीमोकौजोकोतैनिवारणकरोतौअ
 नरहोय अथचामोसोमधुरवचनबोलतहो
 ताअभ्यासतौ क्रोधकोभूलैतातैयहदसाप
 ई अरुजोक्रोधकोलेसहरापतेतौबैराके
 सैमारिसकते जैसेविलापकरतीउत्तराकी
 विराटकीराणी सुदेखा हाथपकड़िविरा
 टपासआपरुदनकरि अचेतनब्रह्मादि
 कनहकोरुदनकरावतभई जैसेहीइप
 दकीस्त्रीइपदकेपासविलापकरैहै अह

शोणाचार्यका चिन्तामें कृपीपट्टिवैकौतयार
ताकौपैचिब्राह्मणयुधिष्ठिरदोअपज
गावतशोणाचार्यकौससकरकरिगंभवे
गमनकरतहो। अरुशाल्यजिकतैकण...
जोबधकरैहो। तापातकमिटावबकां मा...
नोजीपत्नीजहराग्निमेंताजिकाकौहामकर
है अरुमेरीपुत्रीदुःसलापतिकेसिरकौइ...
यमेलगायबोलहो। होप्रययहभूमिमेंआलय
है तातैधरकौचलो। औरभराअनकीपंच
भार्यारणमेंसूतेपतिसौइर्षाकौदितुल्यधी
लैहो। हेस्वामीतेरोयहहाथवहहै जोअंधा
नकौयगपनमेंसहश्रावाधगोदानादध अरु
संग्राममेंबैरानकौमार अरुबिहार...
नकेनामिउरअधनस्परसकरे संअव
णमेंपहदसापायकित्तिन्निलपद्रोह औ
अपसेनकीजननीर... भूमिमेंआपके...
कर्णकौआलिंगनकरिबिजायकरतहै
सकुनिषद्रोहै जाकेकुसुमत्रतैमेंरे १००
पुत्रनकौयुधिष्ठिरइइपइलान...
नामकेकौधा। ग्रमेंहोमे असेपुत्रन
वतैव्याकुलगाधारीश्रीकृष्णसा...
श्रीकृष्णअसेहाकृती... १५

महतुम्हारे कुलकाइसा देयोगे ॥ तब श्री कृष्ण
हरे सतही बोले ॥ हे गंधारी सर्व जगत जाके
निवारण नहीं करि सके ॥ प्रैसी त्रधा तो कौ बा
धा करत है तो गंगा कौ चलि ॥ त पुत्रन कौ ज
ला जलितौ ॥ अश्रु पातन तै ही देत है ॥ पते रात्र
षा गंगा बिना मिटेगी नहीं ॥ प्रैसै बोलतै ही
श्री कृष्ण की इच्छा तै तषा गंधारी कौ बाधा क
री ॥ तब गंधारी लज्जित होय बोली ॥ पुत्र से
कतै हंत पादुः सह ॥ तातै कहा करों ॥ धतरा
इको पुत्र युयुत्सु सबनके सुणतै मरे वीर
नकी सप्या पूछी ॥ जब दिव्य दृष्टी युधिष्ठिर
बोली ॥ अरु साटि कोटि ॥ एक लाख बीसह
जार ॥ एतै तो अति दुः सह वीर मरे ॥ औ सात
हजार पांचसै राजन के राजा इइह कौ जी
ति बवा पैदोः र ॥ और चौदा लाख चौदाहजार
एतै बिकर सुभद मरे ॥ और जिन रणमै गहो
मते इइतुल्य नये अरु मरणे ही यह निश्वे बि
चारि मुहुं मरे ते गंधर्व नये ॥ भाजते मरे ते गु
ह्यक नये ॥ श्यामिभक्ति कीति जप ॥ श्वर्ग ॥ इन
कौ बा ॥ बिना वीर धर्म तै मरे ते बृहस्पद गण
और वीर तै गर्जना करत युहुं मै घायल हो
य रुधिर समुहुं मै पडि पडि मरे ते उत्तर कुर

योऽपहतीर्थपात्रामैलोमसके अनु
तिनकी यह गति

हियुधिष्ठिरविदुरसंजपाइसेनाइ
मतकसंस्कारका आगपादीनतवश्या
अगर इनतैचितारचिदग्धकरोतापीकेर

धिष्ठिरधतराष्ट्रजायसवनकोजलाज
लिदानीयात्तेत्रमैजेत्तत्रामरेति नकोपह
जलअक्षयतधिकारीहोत्रैसैकहनजलाज

विदेतनये जबकुंतीपुधिष्ठिरकोसूर्यतैक
पत्यकहिजलाजलिदिवाइतवत्र
पकौजेष्टभ्राताजातिपुधिष्ठिरअतिपश्रवाता

नयौइतिश्रीभारतमात्रचिद्विज्ञाया
श्रीपर्वसंज्ञानाम् ॥

... ॥ ५ ॥ तहंगगाती
रनारदादिकमुनिज्राये। जलांजलिदेयसंतापय
कराजायुधिष्ठिरहोतासोबोले। हेराजायुधिष्ठि
रयुद्धमेंकष्टतैवैरीनकोमारि। राज्यलाभनयो
अवचिंताकोकरौहो। जबयुधिष्ठिरबोले। जिन
केसुषकेअर्थराज्यचाहिये। तेसर्वबांधवमरे
माताकेबचनतैयुद्धमेंमारिवेयोग्यभीहमति
नकोबानैमारेनही। जैसेत्रिलोकविजईसहो
रभ्राताकराकोमैमारा। लोभचांडालकेयो
गते। मैहचांडालवतकेनहीस्पर्शकरिवेजोग
नयो। तालेअर्जुनादिकराज्यकरोमेंकरूहचि
तवननकरौगो। वनमेंजायजीएपणनेहए
करिएकाकीबसंगो। जैसेसुणिअर्जुनबोले।
जगतजोवस्तुमिलेनहीतामैप्रीतिराधैहो। स
बवस्तुसमर्थहोयतबतौवैराग्यचाहो। सी
तमैतापचाहो। शीषममैसीतचाहो। जैसेहीहम
हाराजतुमहेवनमैरहेहे। जबतौराज्यचाह
तहो। अबराज्यमिल्योतबवनचाहतहो। औ
सैंकियेतैतुमकोजगतउन्नतमानिहैसैगो।
औसैंसुणिभीमहबोले। हेमहाराज। जाचन
करैनही। जलहीकोआहारकरै। जटाबलव

लधारोसीततापलहैं जैसे ब्रह्मके नर
नयोंबिना कृतार्थहोतहेकहा जारनाहम
मेंसर्वहीगुणहै एकतेरकाने श्रुता
तासोसर्वगुणगये जब जैसे सु
लसहदेबबोलहेमहाराजसुणा ब्रह्म
रीबाणप्रस्थ सन्यासी एखबग्रह
वेहो श्रुएतीन्योहीबिभुकी
करहे सोबिसुहग्रहस्थते या
बांकोकरताहोतातहेराजइ
पालनकरि प्रजापतेकर कृत
मोगो तव जैसे सुष्टोप
कोमारितुमहारा प्रसन्नता
तानकोदुष्पदियेतैतु
गोश्रुवत्र लपपालकने
पवित्रहोय पैकृतध्रीक सु
तैतुमारेराज्यक श्रानदतै
श्रमसफलहोय श्रानदपाव
इनसवनकेबचनतैह
दुष्तापसातनहीनयो यहजा
सश्रापबाले हेराजइ
सैनावीहोयसोतसैहा
नराजहअपतरकीतै

रिस्के ताते में मेरे कुल के नकों मा रे यह सं
तापन करिये विश्व जई नी प्रादि क नको उन
के कर्म बिना कों न मा रिस्के और सुणो मा
जमें पाके स्थान में पंच ल बेवा लेन को जैसे
क्षण मात्र समाप्त होय तैसे ही कुटंबी नके
समाप्त हो उनको वियोग नये कहा सोक
करणों यह काल तो इइ जाल वाले की नाह
सर्व पदार्थ नको क्षण क्षण में और और ही
दिखावै ताते को एक को एक हर्ष सोक
रिये ताते हेर जायु धिष्टि काल के पाये
बांधवन को ब्रथा को सोच करे और
पितलो की कार चना करि बवार नको न
काल बली निगलै हो ताते त सोच नके
करि अब तो यह समें प्रजापालन क
ही को हो राजान को प्रजापालन करि
में अधिक धर्म बन में नंही हो जीवते व
वन को राज्य के विभाग तै पालन करि
नको ब्राह्मण भोजन तै तस करि अरु
जन तै र दृष्य तै इ न दुषी नको अधिक
को करे हो जैसे बैद व्यास के बचन
पीछे श्री कृष्ण बोले हेर जायु धिष्टि
बेकी पुर सहोय सो जो सो परिवार

तहाय त्रैलोक्ये च कर नही और सो च करे
मरोमि लै नही अरु मर पाके उनके निमित्त सो
क करे सो वै जाऐ नही हरगो वै बाधव नवो अ
श्वर्य सुणे ते ग्रान दहो यह सै हरे व भाग
नोग ते तेरे बाधव नीषादिक नदी कपोल च
करै है अरु रेषिय ह मत्पु ताग नव अमीतर
ह या सरूपी जीवन कौ वर सै धार ल्या व है
जवरु चि होय तव ही भक्षण करै ताले म
नको सो च कोण करै और न गो जस न के
तिपाल क श्री राम भरता दिव आता न
नही परतु मरे नको अलो ल देह इतु मका
ल करे वै है ताते यह जी धन है सो द ल्य
नौ चतुर्वर्ग को रात है जो को काय रमा
ल करै है ताते है दृष्टी नाथ
दिराज्य का अथर्याद के बिल सक
क वचन सुगिमा व
मुधि शिर बो ल्यो है श्री कृष्ण महम्
मरी के होय वग नौ ह
तक के समिटे त्रै मना
नातुर बिला प करत राजा सब व
तो है राजन यह मेश पहा
गोहन मा सो च

प्रष्ट होत है ॥ जो सचुष शस्त्र प्रहार करते बैरी
नको मारे ॥ अथवा मरे वाको देवताह पुष्पव
र्धन तें पूजे ॥ याते है महाराज तनि स्याप है
ताते प्रजापालन करी ॥ जो मिथ्या संका है ति
नको अश्वमेध यज्ञ तें शर करि ॥ नीति सां
राज अंगीकार करि प्रजानको संग्रह करि
पुनि एक्ष करवै को शर शय्या शार्ङ्ग तीक्ष्ण गुस
हेति नको पृच्छि ॥ जैसे कृष्ण दे पायन मुनि जे
श्री कृष्ण इनको उपदे सुणि ॥ धृतराष्ट्रको अ
ंग करि ॥ हस्तिनापुरमें परवार सहित प्रवेश
कियो ॥ जहां बड़े उत्सव करि सभामंडप सो
भित कियो ॥ तहां अये सोम्पादि ग्रसंधि ब्राह्म
णानको युधिष्ठिर पूजत नयो ॥ जहां दुर्योध
नको मित्र त्रिदंड मुनि वैषधारी राजसंचार
क आषवो ल्यो ॥ हे पापमंदिर ॥ हे वंसकी
शि युधिष्ठिर तोकें धिक्कारे ॥ जैसे वाक्
मुणियाको चार्वाक जोगि ॥ सभके ब्राह्मण
नंकारन करि दग्ध कल्यो ॥ जब श्री कृष्ण
जायुधिष्ठिरको ब्रह्महत्याको भय जाणि
सो बोले ॥ हे युधिष्ठिर यह राजसचार्वाक
सकोष विना महाकृष्णको मार्यो नम
नेय मात्र तें ब्राह्मण है ॥ ताते याकी ह

सत्तापनकरो॥ त्रैलोक्यसुणिराजायुधिष्ठिरप्र
ननयो॥ तापीकैं सर्वही ब्राह्मणमिलिराजा
प्राचीनराजाकेविराजबेकेसिंघासनधें शो
दीसहितयुधिष्ठिरकौविराजमानकरि च्या
रोबदनकेमंत्रनकरि॥ सर्वतार्थनकेजलन
करि॥ राज्याभिषेककरतभये तबयुधिष्ठिर
हजैसैशक्तियुधिष्ठिर तैसैहीगांधारीसहि
तधतराष्ट्रकौविराजमानकरि पूजननयो॥ ता
पीकैंभीमकौभीमकेजोगणराज्याभिषेककरायो
बिदुरकौमंत्रकर्ममैराष्यो॥ अर्जुनकौजयके
सहागमैराष्यो॥ संजयकौलाभयश्चमैराष्यो
कुलकौसेनाकीरत्नामै॥ धौम्य॥ द्रोहितकौ
सनकीपूजामै॥ सहदेवकौसमानमित्रनके
समानकेअधिकारमैराष्यो औरअत्रि
नयाजोगपस्थापनकरि राज्यश्रीकृष्ण
नेबेदनकियो तापीकैंभीमकौदुर्योधन
हलदियो॥ अर्जुनकौदुःसासनकौमह
श्रीरकोरवनकेस्थानसर्वबांधव
तनयो॥ अरुश्रीकृष्णकीआग्पातैय
राज्यपालनकरतनयो त्रैलोक्ययुधिष्ठि
रकरतौदेधि॥ सर्वप्रजामैआनंदनयो
भीमकौआदिदेसर्वभ्राता

पराक्रमको गर्वकरतमये तामें आपसम
बधा कोऊ कहै मेरे पराक्रमसों पुधिधि
राज्यमित्यो और सबगुठी गर्जनाकरतहै
सैनीम अर्जुननकुल सहरेव येसबही परे
परबालिबैतै ईर्ष्याबधि युद्धकरिबेकोसस्त्रधा
एकरे जब तिनको गर्वकरिबेको श्रीकृ
सहंसतही बोले हेनामादिकबीरहोतुमसब
धरणमें धोर पराक्रमकियो तामें अब गर्व
तैकलहमैतिकरो अरु जोतुमको पराक्रम
जो एिबैकी इकाहैतो सत्यबारीपुइसाही
बर्वरीकको शिरपर्वतके सिधिरपैहै बापेच
लौ जाको वह कहै सोही अधिकपराक्रमी अ
रु आपके मनतैतौ गबैसबही जीवनकेहो
तहै परंत औरकोऊसाही होयसोसत्यहै
असै सुणिनामसेबसबभ्राता अरु श्रीकृ
सहितबर्वरीकके शिरपासगये तह्य
कसबोले हे बर्वरीक हेमहाबीर हेपांडे
नको जयदेनवारे तेरे देह त्यागनकरिबैतै
इवनराज्यपायो तातैहम तोसों पूछैहै त
चाहे सोसत्यकहो अरु जोसाही होयमि
बोले तो श्रीजोमहीनाकेमहीनारुधिर
हैसों वाके पितरनको पांनकरिबेकोमि

सप्राकृतकोविचनसुणि बर्बरीकवाला
हेश्रीकृतदृष्टनासनमैतौयुद्धमेंएककृता
देषी। अरुकेतुमहारेहाथतैचलताएकसु
ईसनचक्रदेष्यो सोचक्रनैतौसबनकेसि
रकाटे अरुकृत्यानैसबनकोरुधिरपांन
कियो तातैमैतौदोऊसेनामेंअैसोहा
देष्यो अरुइतहीकोपराक्रमदेष्यो ओरनी
मादिकडोणादिकबीरननैतोअथाहीगर्ज
नाकराहै अैसैसुणितामनैवाअबर्बरी
ककेसिरकोसमुद्रमेंनासिबेव. स्तेचरण
सोठोकरदानी। ताठोकरसौवहसिरकिया
मात्रहहल्योनही। जबअैसैइतहैभलेहीव
रीककेसिरकोउठावै। तबतातैचचना
मानतेजनिकसि श्रीकृतकेसुननका
ले यहसिरथीमहादेवजीकेंडुमाना
सुमेरहो। अैसैकंठनहीनक गणआप
परकोलेगयो। सोजावैकैकालिवेदन
जेवकइहनेवाकोहंडुमाना
कियो। यहचैदिवेदकोसंबंधहि
भ्राता गर्वनजिदुकेहोदिहान
नेजस्थानकोआयेअ
वहीदमसावा असर

अर्जुनके मंदिरले विराजमान जो श्री कृष्ण
तिनके पास राजा युधिष्ठिर गयो। तहा श्री कृष्ण
को ध्यान युक्त दे विराजा युधिष्ठिर बोले
हे श्री कृष्ण सर्व योगीजन तो तुमको ध्यावै
हे अरु तुमको एको ध्यावै हो सो कहो
जब श्री कृष्ण बोले हे युधिष्ठिर जो मेको
ध्यावै हो तो को मेह ध्यावै हो अरु अवार
तो शर स्यावै भीष्म मेरो ध्यान करे हो तो
के दरसन की लालसा मेको लगि रही
हो जैसे सुणियुधिष्ठिर बोले हे श्री कृष्ण
अपह मन मेह तो परिवार सहित चलि
भीष्मको दरसन दीजे जैसे सुणियुधिष्ठिर
लपांडुवन सहित वेद व्यास नारदारि
मुनि मंडली युक्त सवारी करि भीष्म पा
सगये तब भीष्म ह परवार सहित श्री कृष्ण
को आयि देवि मन सो पूजन करत भय
हे श्री कृष्ण तुम हारी भक्ति तै संसार मे मग्न
जीव हे सो ह भक्ति होत है जैसे तुमको
मे प्रणाम करत हों जैसे भीष्मको बच
न सुणियुधिष्ठिर श्री कृष्ण साय की युधिष्ठिर भी
म अर्जुन आदि दे रपन सो उतरि भीष्म
को प्रणाम करि आगे बैठे तब श्री कृष्ण

व्यथा तैश्चातुरभीष्मकोदंबिबाले हेमा
ब्रह्मगणतमयतेरोशारहै सोबाणन
नतौतनयोहै तबभीष्मबाले हेश्री
स्वरूपजोतुमहोरोध्यानतामेंलानजोचिन
नाकौत्रतिकठोरबज्रमईबागनका
शयवाश्रितिकोमलहसनकेपहामईमृग
पदोऊहीताकैसमानहै जैसेसुणि
सबोले हेभीष्मलसरीकेब्रह्मबला
धारणकरतापहएध्वीइइकलोकहकाह
सहै जैसेकाहेश्रीकृष्णनाभीको
मईइष्टिकरिविधारहिताके तहांइ
श्रीकृष्णभीष्मपेपुष्पनका ब्रह्मिकरी
श्रीकृष्णबाले हेभीष्मजोतुसाहस्य
विधानहीहैतो प्रभातमेपुधिष्टि
पीपदेसकरौगे जैसेसुणिभीष्म
श्रीकृष्णतुम्हार अनुग्रहते जोपुधिष्टि
गौसोहीकहोगा जैसेसुणि
लेहेभीष्मतुमथन्यहा जैसेकाइश्रीकृ
पांडवनलहितहस्तनागुरआये फल
तहीपांडवनसहितश्रीकृष्ण
वतभीष्मपासगथे तबभीष्म

हे श्री कृष्ण तुम्हारा क्रपाते मैं समर्थ हूँ जो धर्म
युधिष्ठिर पूछे गो सो ही कहेंगे ये यह राजा
युधिष्ठिर रत्नी के करिबे जो गप कर्म ते कौल
जित होत है प्रसन्न चित्त होय पूछे जब रा
जा युधिष्ठिर श्री कृष्ण की आगाते श्री कृष्ण के च
रण नमें प्रणाम करि राज धर्म पूछत नयो जब
श्री कृष्ण श्री कृष्ण को धर्म को ब्राह्मण को प्रणाम
करि राज धर्म कहत नयो हे राजा युधिष्ठिर
राजा जो हे सो पुन्यन की पूजाते दयाते नी
तितें सो भापावत है और कंकणहार बा
जू इन तें नट बिर सो भापावत है राजा नही
अरु राजा को सीव हास्य में अधिकरत
होय जाके सिर को सेवक चरण सो सर्वक
रें हैं जो राजा आपके शरीर को त्याग करि
के नी गो ब्राह्मणन को पालन करे सो सर्व
धर्म जीते है और राजा तेज ते सूर्य तुल्य
कात्तितें चंद्रमा तुल्य क्रोध ते काल तुल्य क
हसात कहें क्रोधी कहें नय कर इन ल
ए युक्त राजा होय ताको कौण जीति सके
अरु यज्ञ नमें ब्राह्मण श्री पतिको अग्नि
को सेवें हैं तिनको क्रोध युरुन करे श्री

ज्ञानमणिसन्तहोपतौ लक्ष्मीकोटभरे कार
 करतौ बंसको दग्ध करे है ॥ १ ॥
 अष्टशैलै एकहूपूरधपक्षेमानम ॥ २ ॥
 पुरसको पापलबजगममें लोप ॥ ३ ॥
 चाह्यो बर्णजाराजकी ॥ ४ ॥
 दानही छोड़ै सो राजा ॥ ५ ॥
 जायगामंत करि देबनका लहा ॥ ६ ॥
 षेदेवदेवनामै अमृतका ॥ ७ ॥
 जो राजा सत्सवादी ॥ ८ ॥
 रेतौ उन दुषीनकी स्वाहा ॥ ९ ॥
 केनागप्रापुष्यदग्ध होत ॥ १० ॥
 जा अपरा अचारमें ॥ ११ ॥
 रहसदा अचारमें ॥ १२ ॥
 बसंपदासे वैह ॥ १३ ॥
 जाणिबेचालौ होय मत्रीनातिमान ॥ १४ ॥
 होय जो दास्वामिधर्मी होय ॥ १५ ॥
 दी होय लोराजा सूर्यसमानराज ॥ १६ ॥
 जाकौ मंत्रगुप्त होय ॥ १७ ॥
 थायबेसमारिबेसै समर्थह ॥ १८ ॥
 खासीराजाके लक्ष्मी नही ॥ १९ ॥
 नाकौ सुष नही नावै अतिविष्णु ॥ २० ॥

संकाराजानही राघो। और उद्धतनको दंडाहीन
नको पालना ब्राह्मणनको पूजैदानदेविष्णुको
सेवनएचारि राजानको। राजलक्ष्मीके बहि
कारणहो। कोपको कारण होयतौह प्रगटको
पनकरो। दिपतिहमें निकी भरहे हर्षहमेंति
विकाररहो। ताराजाको लक्ष्मीकदाचितह
होडेनहीहो। और नीतिवती राजाप्रजान
को पालनकरो। नाराजाको प्रजानके कटेव
दको धर्म प्राप्तहोतहै। इति श्री श्रुतिपर्वणि रा
जधर्मप्रकरणम्॥ असें राजा युधिष्ठिर राजध
र्मसुणि। आपतिसाक्षीए अहेरा जानके ध
र्मपूको जबभीषबोले हेयुधिष्ठिर आप
तिसाक्षीए राजा होय। तब बैरीनमें प्रवे
ल करि कलाकलासे अधिके निजलक्ष्मी
फेरि पावे। आपको मित्रबल अस्तहोय स
नुको उदय होय। जब आपको प्रजा
काच करि दुर्गको आश्रय करि। कालसे
करे और मित्रबल दुर्गबल
लवान सत्रुसोहं नुई करे।
स्वीभोगे मरे तौ इलोक जाय।
नराजा ज्योत्यो करि देवब्राह्मणइनको धन

बैतही॥ नीतियोंको सही कौं संचित करे॥ वा
तैं सर्व विपत्ति डले॥ अरु संपति चान कौं आ
पत्ति में भी सेवक छोड़े नहो॥ निरुद्ब्य कौं स
हजह में सेवक छोड़ि देतहें॥ तातैं सर्व जगत
आसो की फासि सो बैधो है॥ सो जातैं आ
साट्टे ता कौं छोड़े॥ और राजा विपत्ति में
देसा स्थान॥ स्त्री॥ पुत्र॥ लक्ष्मी॥ इन सबनको
छोड़ि आपके प्राण राषे॥ प्राण रहै तो येको
इक समै में फेरि सर्व ही होय॥ और जो बहु
तबेरी आपको घेरतों बुद्धि वान होय सो स
र्वतैं अधिक बली एक कौं॥ आश्रयक
रि सबनको मारो॥ जो आपको दोषी होय
प्रिय वचनह बोलै तो हवाको विश्वास न
करियो जैसे सिकारी नको गान॥ मृगनको
प्राणहारी है तैसे ही दोषी नको प्रिय वचन
जाणो॥ और प्रबल सत्रु होय ता सो बैर
गुप्त करि बसे॥ जब समय पावै तब बैर प्रग
ट्करि प्रहार करे॥ और राजा मै वामंत्री में इ
तने गुण चाहिये॥ बुगला सरीसो कपटी
सर्प सो कटिले॥ सिंघ समान पराक्रमी का
गला बतै॥ अतिसंकित॥ अरु कैसी तरै
रीर्षदसी सदारहो॥ निर्लज्ज॥ गुणी॥ मूर्ख

रनकेगुणकोग्रहणकरै॥ उज्वलरहै
 सोराजाबामंत्रीहोयतौआपत्तिनपावै
 ॥ इतिश्रुतिपुर्वणिआपतिधर्म॥ अैसेसु
 णिराजायुधिष्ठिरकोसोचधर्मपूछो॥ ज
 बभीषबोलेहेयुधिष्ठिरअग्यानोजीव
 हैतेनशहोतेधनकोसोचकरतहैसोब्र
 या॥ अरुआपुष्पसीणहोतहैताकोनही
 सोचतहै॥ यहआपुष्पकेसीकहैत्रैलो
 ककोअश्वर्यदियैहजाकोएकलवपावै
 नही॥ अरुअहंताममताहीदुःषकोमू
 लहै॥ इनकोकोडेसोसदाआनंदहीमें
 होआपकीबोधवनकीआपुष्पघटे
 तासालिग्रहकोउत्सवकरिआनंदपाव
 है॥ अरुजोआपुष्पपदार्थनहीतौआयु
 षसमाप्तभयैसोचकरैसोमर्षहीहै॥ अ
 रजोबंधुकेदेहहीमेंलैहहोयतौमरेको
 दग्धकरै॥ जोआत्मानेंलैहहैतौबहसदा
 हैही॥ तातैश्वआपुष्पहकोश्वर्गमोक्षको
 उपायकरैसोहीफलहै॥ ताउपायकोमूषहै
 सोनहीककरैहै॥ अरुतक्षारूपीकनोत
 करिआत्माकोआनंदरककोहै॥ ज्योज्योतक्षा
 मिटै॥ त्योत्योआनंदबधै॥ औरजेजोगरूपी

दीपकसोमोहरूपी अंधकाकौ हरि करै ह
ते आत्मतत्व देखै है ॥ तेही कृतार्थ मुक्त होय
हैं ॥ इति श्री भारत सार चंद्रिकायां शान्तिपर्व
समाप्तम् ॥ १३ ॥ ॥ श्री कृष्णसहायः ॥

श्रीगणेशायनमः॥ अथभाषाभारथसारवच
निकाश्रुतुदासनपवलिप्यते॥ ॐ नारायणं
मस्कृत्यनरं चैवनरोत्तममादेवीसरस्वती
व्यासंततो जयमुदीरयेत् ॥ विशंपायनरुवाच ॥
ॐ सैसुणिराजायुधिष्ठिरकेरिवो ल्यो हेपिता
महराजके अंतमें नर्क होयहो ॐ सैजाणतह
मैं कुलघातकस्यो तातैमोकौं धिक्कारहै तिन
मोकौं आभरणपहरायसो तितकारिगोध
में राष्यो मैंताकौं बाणनतैमास्यो औरवै
रीनकोनासकरिवेकौं जिनमोकौं सस्त्रवि
द्यापढाई मैंवासस्त्रविद्यातैउनहीकोम
रे औरतांबूलरसलेवेकौं नमते जाकडि
टाप कडिउद्धिष्टतांबूलघाते ॥ तापिता
हकौं हमनिर्दइननैमास्यो तिनकीसप्त
तिकैसैहोयगी ॐ सैचिंतकरतेराजा
धिष्ठिरसौभीष्यबोले हेपुत्र ॐ सैवैष्यासो
प्रितें विवेकबलीकौं दग्धनकरि अरुहम
कौं तू मत्सु कालइननैनहीमारे हमह
मारेकर्मनकरिहीमारेहै अरुतैतोतेरे
त्रधर्महीतैपुत्रकस्यो तातैनिर्दोषहै
तूधर्मसेवनकरितैरोकृतार्थहोयंगे ॥

यनकों जीति। पथोक्तदानश्राद्धकरि। रितुक
 लमें स्त्रीसेवनकरि। औरश्रीकृष्णकोसेवन
 करि। यहसाक्षात्परब्रह्महै। अरुश्वगमि
 देवता मनुष्यलोकमें मनुष्य पातालमें रा
 त्सदैत्य दानव। सर्वही पाश्रीकृष्णकोसेवे
 है अरुब्रह्म विष्णु रुद्ररूप। श्रष्टि स्थिति प्र
 लयकर्ता यहश्रीकृष्णहीहै। यातें याहीको भ
 जो। कार्तिक। माघस्नानकरो। एकादसीशुक
 पत्तकीमें जागणकरो। द्वादसीमें विष्णुपूजन
 ब्राह्मणनको भोजनकरावो। औरहरिकी कथा
 सदाश्रवणकरो। वेदपाठ। पुराणपाठ गी
 तासहस्रनामपाठ सदाकरेणो। औरकार्त्तिक
 कशुक एकादसीसौपूर्णमासीपर्यंतश्री
 कृष्णकोउत्सवकरेणो। औरश्रीकृष्णराज्य
 दाता। मुक्तिदाता। जयदाता। भक्तिप्रतिपा
 लक। यातें येही मेरोतुम्हारे उद्धारकरेंगे
 मैंबोलतही सूर्यउतरायणआयो। सो
 जंभीषानेत्रनको फेरियुधिष्ठिरसों कही

३०

तिकरियो। और

ध्यानकरि। प्राणायाम

धारणाकरि। वाणनसों वि

०
१
इसरीरको त्याग कस्यो ॥ ताही समे भीष्मको
ब्रह्मांड फोडिते जनिक सिश्री कक्षमें लीन भये
तब दिव्य सिव का वणाप ॥ युधिष्ठिर कृत्रधा
रि ॥ भीम अर्जुन चामर धारि ॥ चंदन की चिता
में प्राप्त करि दाह कियो ॥ भीष्मको सररीर दग्ध ज
णि युधिष्ठिर परिवार सहित गंगामें स्नान
करि जलाजलि दीनी ॥ जब गंगा द्विजापक
रत भई हे पुत्रय सकतुल्य सिषंडी ॥ पूर्व स्त्री
हो सो तो कौकैसै मास्यो हाहा यह मो कौबडो
पेदहो ॥ जैसे रुदन करती गंगा सो श्री कृष्ण बो
ले हे गंगे तेरो पुत्र इंद्रादिक कौ मास्यो हन मरे
साखे ताही सो मास्यो है ॥ जैसे सुणि गंगा प्रव
ह बंध करि निश्चल भई तापी छे युधिष्ठिर गं
गा कौ प्रणाम करि परिवार सहित हस्तना
पुर आये ॥ जहां आय प्रजा कौ पुत्र वतपाल
न करत भयो ॥ अरु श्री कृष्ण ह अथा दश अ
ज्ञोहणीन कौ संघार कराय युधिष्ठिर कौ नि
स्कंद कराय देयके प्रसन्न भये ॥ जनमेजय
उवाच ॥ हे मुनि ॥ जैसे वार भीष्मादिक आ
पको मृत्यु वताप वतापके लै मरे ॥ अरु दुर्यो
धन एका दश अज्ञोहणीपति समु अज्ञोहणी

पतिनको नही जीत्यो ॥ अरु कैसे मर्यो ॥ जो दीन
 में सो बैनही ॥ सदा बारनके संग रहे ॥ रात्रि में द
 धि भोजन करे नही ॥ अरु गर्भणी स्त्री संसभो
 ग करे नही ॥ नित्य त्रिकाल संध्यो पास न करे ॥
 रजुखलाको स्पर्स करे नही ॥ जैसे हृदयो धन
 भीमते अनादर पाप कैसे मर्यो ॥ जैसे पापन
 उवाच ॥ हे जनमेजय ॥ धर्मते जय होय है अध
 र्मते पराजय होय है ॥ यह वेद सास्त्र कहै है ॥
 अरु युधिष्ठिर कुरक्षेत्रमें युद्धयज्ञिकियो ॥ ता
 में आपदीक्षतयजमान भयो ॥ युद्धभूमिको वै
 दीमांती ॥ भीमको अग्निदेव्यारोत्रातनको रु
 त्विजमाने ॥ अरु श्री कृष्णको कर्मको उप
 देसकर्ता आचार्यमाने ॥ अरु कौरव नको
 पशुमाने ॥ राजानके रुधिरको धृतमान्यो
 अरु शोपदीको दुष्पशांतिताको फलमान्यो
 अरु दुर्योधनको पूर्णाहुतिको श्रीफलमा
 निताको होमिसकलयग्नको फल ॥ श्रीक
 र्णको अर्पण कियो ॥ जैसे जो कर्म कियो ता
 को धर्मही मान्यो ॥ अरु कौरवलो भते युद्ध कि
 योते अधर्मी भयो ॥ ताते विजय पायो नही
 ॥ श्लोक ॥ धर्मो जयति नाधर्म ॥ सत्यं जयति न

नतमः क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जय
 सुरः ॥२॥ धर्म एव स्थितं राज्ञं धर्म एव
 ते कुलम् ॥ अधर्म निरतो ये च ते नृपति चि
 रात् नृपाणां बालेषु च ये शूराः स्वोपुवा
 लेषु गोघ्नश्च कलातिवृत्ततो यद्धत्त तद्धत्ते हि
 पतंति च ३ पापशब्देन पुत्रानि वाहनाम्
 पुत्रानि च पुद्गकाले विशीर्यन्ति वायुना च
 घनं पथा ४ न विषं विषमित्याहुर्ब्रह्मस्व
 विषमुच्यते विषमेकाकिनहंति ब्रह्मस्व
 पुत्रपौत्रकं कुर्वन्निजे कृतमपेयजलसु
 मुद्दे नायणोपि निहतः सकलत्रपुत्रः उच्यते
 लितं सुरवरस्परहस्यलिंगको ब्रह्मशापति
 हतो निधनं नयाति याते अधर्मी ब्रह्मशोह
 कौरवनष्ट नये ॥ इति श्रीभारतसारे चरित्रे
 काव्ये अनुशासनपर्वे लक्ष्मणसंह्ये ॥ १४ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ अश्वमेधयज्ञ
चनिका ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव न
तमं देवी सरस्वती व्यासं ततो जयमुद
रयेत् ॥ १ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ राजा युधि
राज्यपायमैभीष्मादिकं न कश्चिदधर्मते
मरायेत् ॥ त्रैसैविचारिशोकसमुद्भूतमग्र
मयो ॥ तव श्रीकृष्णधतराष्ट्रवेदव्यास
नानाप्रकारकीयुक्तिनकरिसोकशरिक
रायो ॥ तव युधिष्ठिरपूकी हे पूज्य मेराजो
त्रहत्याकेसैमिटो ॥ तव श्रीकृष्णवेदव्यास
बोले हेराजा अश्वमेधयज्ञतैतेराहत्या
मिटो ॥ त्रैसैसुणिधुधिष्ठिरबोल्या मेरे
धनहनही ॥ श्रीसहायहनही अश्वमेध
यज्ञकेसैहोय ॥ तव श्रीकृष्णबोले हेरा
जा रुतराजाकेयज्ञकोशेषधनहिमाच
वकाभूमीमेंगद्रोहो ॥ अरुजाधनसंब्रा
सणतसहोयकोडिगयेहैं सोवोधन
भूमिमेंहै ॥ अरभूमिकेधनकोधणीराजा
होहै सोवहधनल्यो ॥ तव युधिष्ठिरबो
लीहै श्रीकृष्णराजामरुतधन्यहो ॥ जाके
यज्ञमेंब्रासणतसहोयइतनोसुवर्णको

वठे डिगये अब ब्राह्मण स्वमे कैं सै मगाव जा
धनते दोऊ लोक नमें दूष होय और बं
धूहत्याते ये कल जातो मोके हे ही अरु
इस मगाय ब्राह्मण न कू देते जी लज
आर रे ए जैसे सुणि च ग सबोले हे राजा
ब्राह्मण जब धन छोडो तब ही उनको
स्वामित्व गयो जैसे परशुराम पृथ्वी क
पुपुत्र पि क दीनी का पुपुते देत्यन नली
नी उनके जीती तत्री लेत नये ताते राजा व
धनमें ब्राह्मणको स्वामित्व नही ताते हेयु
धिष्टिर वाह धनते रोही ही तब राजा बोले
हे गुरु या यज्ञमें ब्राह्मण कितने अरु दक्षि
णा कितनी अरु अश्वके सो चाहिये सो क
हो तब वेद व्यास बोले हे राजा ब्राह्मण
तो बीस हजार अरु दक्षिणा येक येक ब्रा
ह्मणके हाथी १ रथ येक १ अरु सुवर्णके अ
रु नरणयुक्त अश्व येक १ गऊ येक हजार
अरु येक प्रस्य प्रमाण रत्न येक नार सुवर्ण
जैसी दक्षिणा चाहिये और सर्व दोष रहि
त चंद्रमा समान जाके वर्ण अरु येक
कण जाके स्याम जैसी अश्व चाहिये श्री

रचेत्रकीपूर्णमासीकंवाकंकोडणों॥अरु
वर्षपर्यंतसर्ववीरजाकीरक्षाकरें।यजमा
नकोपुत्रवाभ्राताजाकीरक्षाकंजाय अरु
यजमानभार्यासहितअसिपत्रव्रतकरे अ
रुअश्वजहांमलमूत्रकरे तहांब्राह्मणहव
नकरे सहश्रगोदानकरे अरुअश्वके
लिलारमेंसुवर्णकोपत्रबांधें।तामेंजजमान
कोनामलिये।मैंअश्वमेधकेनिमित्तयहअ
श्वछोड्योहै।जोबलवानहोय सोयाकंप
करो मेरोभ्रातावापुत्रयाकेछुडावेगोअ
सेछोडेअश्वकेजाग्रहणकरे।तातेछुडा
वणं।याविधिअश्वपृथिवीप्रदक्षणा
करि आवे।तातेअश्वमेधहोय।अरुहेरा
जातेरसहायश्रीकृष्णमीमञ्जुनादिक
हो।तातेयहयज्ञतोसहीबणें।अैसेसुणि
राजापुधिष्टिरसकलयज्ञसामग्रीसिद्धि
कराय।सुनदिनसुभमुहूर्तमें ब्राह्मण
तकेसाथ अश्वकोपूजनकरि अश्व
केलिलारमेंसुवर्णकोपत्रबांधिअरु
जाकीरक्षाकंबीरनकंलारदेय अश्व
छोड्यो।सोवहअश्वगमनकरतराजा।

शुभ्वत्
३२

योवनाश्वकीपूरीमैगयो सोदस अत्तोए
सेनाकोरवामी राजायोवनाश्व वाश्व
पकरियत्नसंपालनाकरी तवयहषव
राजापुधिष्टिरसुणिभीमसेनस आजाद
ई तवभीमबोल्यामेवाश्वकंल्यावगो
अरुयोवनाश्वकजीतगो अरुजोनेर
वासदेवकोचितनकारकमुकरेहे सो
सिद्धिहोतहे यामेसदेरनही अरुजोम
नुष्यवासुदेवकेध्यानकहीनकर्मकरेसो
निष्फलहोतहे तातेमेहीश्वकंल्याव
गो अरुजोनेही ल्यावंगोतोघोरदुर्गा
कप्राप्तिह असेभीमकीप्रतिज्ञासुणियु
धिष्टिरबोल्या हेभीमइकलोत्तनशव
तीपुराकोकैसेजायगो अरुयोवनाश्व
हसहावतीहे ताकेसेवकहतेसहीहो
तिनकंजीतेव नाश्वककैसेल्यावंगो
असेसुणिवेदव्यासबोले हेराज न्वासुदे
वकेबचनते सर्वकार्यहोयगो असेक
हि व्यासतोगये अरुपुधिष्टिरश्रीकृष्ण
सेबोल्या हेष्टसमेगोअहत्यारुपासु
अनमगइ तातेमेरोउधारकरो तवश्री

रुसबोले॥ हेराजन तेरो कापिक बाचिक
मानस॥ पातकहो सो सकल करि मेरे हर
मैं धरि मैं वाकोनां सकरुंगे॥ तुम प्रहृ हो वि
गे जैसे सुणिराजा पुधिष्टिर बोले॥ हे प्री
रुस तुमारे हस्तमें ककु खल्य हृदे हे सो अ
क्षय होत है ताते मैं अश्वमेध यज्ञ करि वा
को फल दियो चाहूं ह॥ ताते अश्व आवे तो
अश्वमेध यज्ञ संपूर्ण होय जैसे सुणिया
रुस भीमको अश्व ल्यावे की आग्या दीनी
तब बृषकेतु मेघवर्ण भीमसेन ये तीनों
आरुसकी आग्या तेयोचनाश्वकी नग
री भ्रमवती को गये॥ तहां नगरी के वा
हर पर्वत पर बैठे॥ जब भीमसेन बाल्या
आपुनती नोया सरोवरमें जब लोयोचना
श्वको अश्व जल यान करि वेको आवे न
बलोयासि परे रहे॥ जैसे निश्वे करि
तीनों ही पर्वत के सिधारे परे रहे॥ नाही म
ममें अनेक बार न सोरचित अश्व जल प
न करि वेको न हो आयो॥ नाको देखि म
बुन बोला हे भीममें माया करि या अश्व
को हहा ल्याऊइ॥ तुमसे नानो पुइ चर
जैसे करि मेघवन सायास्य करि धर

श्रवण
३३

रकरि अश्वकौपकडि पर्वतपैत्यायो अ
वा अश्वकार शाकरि बेवाले वीरनयो के
हलसुणि बृषकेतती ससेन युद्धको आ
जवतिनको देखि कितनेक तो युद्धको तया
रभयो कितनेक नाजियो वनाश्वपे आय
ले हेरा जेइ को ऊ वीर अश्वकार करि अ
श्वकौपर्वतपैले गयो और दोय अश्वकौ
युद्धको आये हे असे सेनाके वीरनको
बचनसुणि यो वनाश्वसेना सहित युद्धक
रिबो निश्वकरि युद्धको आयो ताको देखि
बृषकेतसन्मुख आयबो ल्या हेरा जनत
दहे ताते ब्याप्राणमतिकोडे यो दानसहि
तनगरको जा असे सुणि राजानमानी
तब बृषकेत बाणनते वीधततयो जवरा
जाह बृषकेतपे सेनासहित मिलि बाणन
की वर्षा करी तब बृषकेत हतिन बाणनको
कारि और अनेक बाणन करि राजाके
थ अश्वगजसहित वीरनको मारत मयो
अरु बृषकेत भयते सर्वसेनाहीनयो व
नाश्वबो ल्या हे बृषकेततथ न्यहे पहले
तसो पो प्रहार करि अरुत बालकहेता
तेमै पहले प्रहार करी नही जब बृषकेत

कहाराजात् वृद्ध है मेरो प्रहार सहै गौ नहं
तातैत् प्रहार करि। तब राजा बृषकेतके
इदयमें दसबाण मारो। जब बृषकेत हति
नबाण नको बीचिहामें काटि। राजाके इ
दयमें दसबाण मारत भयो। तेबाण राजा
के इदयको बीदीर्ण करि पातालमें गयो।
तापीके अर्धचंद्रबाण सौ राजाको धनुष
काटो। जब राजा और धनुषले बृषकेत
के साहिबाण मारो। तेबाण वाके शरीरको
बेधिरुधिर पान करत भयो। तब बृषके
तको धकरि एक बाण राजाके इदयमें
मारो। तातै मूर्च्छित भयो। तहाराजाको पु
त्र सुबेग अरु नीमये दोऊ गदा बुद्ध कर
तह। तिनके गदा प्रहारनको सब सुणि
राजा मूर्च्छाको टु उठो। जब राजा बृषके
तसौ बोस्यो हे बृषकेत त मेरो प्राण दाता
है। तातै मेरो यह राज्य तले। तेमो मूर्च्छ
तपे प्रहारक सो नहं। तातै यह राज्य तेरो है
है। अरु तेरे अनुग्रह तैमै श्री कृष्णको
देयो। अब नीमको तोष हली दिषा
व। नैसै कहि दोऊ चले। तहां जाय देयो।

मि० तो सुवेग अरु नीमयेरो ऊगदाके परस्पर प्र
हार नते मर्छित है ॥ तबही नीममकी छोडि
उद्यो ॥ जबराजा ताको प्रणाम करि बो ल्यो ॥
हे नीमसेन यह मेरो राज तेरो ही है ॥ ताते तु
समे धवर्ण वृषके त सहित मेरी पुरी में प्रवे
स करो ॥ अैसे कहि राजा तिन सहित पुरी
में आयो ॥ परम सतकार करि ॥ कितने कदिन
राषि ॥ पीके पुत्रसेना सहित तिनके सा
योवनाश्व हस्तनापुर आयो ॥ जबराजा
युधिष्ठिर अश्व सहित तिनको आये सुणि
सनासमे तसन्मुख आययोवनाश्वको स
तकार करि पुरी में प्रवेस कियो ॥ तहोयो
वनाश्व श्रीकृष्णको दर्शन करि परम हर्ष
सहित युधिष्ठिर सो बो ल्यो ॥ हे युधिष्ठि
र हममतेरे सेवक हौं ॥ अैसे कहि तहार
हे ॥ इति श्रीभारतसार चरित्रकाया अश्वमेध
पर्वणि प्रथमो अध्यायः ॥ वैशंपायन उवाच ॥
तापीके श्रीकृष्ण युधिष्ठिर सो बो ल्यो ॥ हे
राजे इचे त्रीयोणमासी गई ॥ अबज्ञके प्रा
रभसमवहरि है ॥ ताते मैद्वारिका जाऊं
ह ॥ तुम योवनाश्व सहित अश्वकी रक्षा

प्ररुयज्ञसामग्रीसंचयकरो॥ तुम्हारे
 निमंत्रणतैयज्ञकेआरंभसमयमेंआवो
 जेसेसुणिश्रीकृष्णकोराजाआग्पादीनी
 जबश्रीकृष्णविदाहोपरथपैसवारनयेता
 समयमेंउत्तराअश्वस्थामाकेब्रह्मास्त्रकी
 ज्वालानतैदग्धभई॥ विलापकरतआइत
 बतकेगर्भमेंश्रीकृष्णप्रवेशकरिब्रह्मास्त्र
 कीज्वालाशांतकरी॥ जबबालककोजन्म
 भयो॥ ताकोमृतकदेधिकुंतीसुनशबिला
 पकस्यो॥ तबतिनकीकरुणातेश्रीकृष्णअ
 मतबधिकरिबालकजिवायो॥ जैसेमेघवृ
 षितैनेककोजिवावे॥ अरुहीणकुरुबस
 लियो॥ तातेश्रीकृष्णयाकोपरीच
 रिकाकोगयो॥ जबहर्षयुक्त
 धिष्टिरवाकोजन्मोत्सवकियोअ
 ग्पातै॥ यज्ञसामग्रीश्रधा
 तहासुवर्णमयकुंड
 चनाकरी॥ औरसर्वसामग्री
 व्यासयुधिष्टिरसौबोले
 अबश्रीकृष्णकोबुलावो॥ अ
 धिष्टिरभीमसौबोलेहेभीम
 मदि

श्व
३५

लावो सो सुणि भीमहारिकागयो तबनी
कों आयो सुणि श्रिक सभोजन करत हे
हां भोजन करत ही भीमको बुलाय अने
विधिके को तुक करत वाको ह भोजन कर
यो तापी कृता बुल देय आसन पै बैठा य
सल पूकी तैव भीमक सरल निवेदन कर
बो ल्यो हे श्री कृष्ण पुधिष्टिरके पत्तमै आ
प परिवार सहित चलो अैसे सुणि श्रिक
सब सुदेव बल देवको द्वारिका की रत्ताको
राषि आय देवनी बज वाय सकल पुरवा
सीनको हातिना पुर चलिबेकी आग्य
य प्रस्थान करवायो अरु आय ह सोल
हजार एक सो आठ पटराणी सहित अ
र पुत्र बांधव सेना सहित तहां तै चलत
चलत गंगा तीर आय डेरा किये अरु राजा
पुधिष्टिरको धरि कराइ जब सुणत ही
राजा सर्व वीर मडली सहित अश्वको
आगे करि सन्मुख मिलिबेको आयो तहां
या देव पांडव सब ही पथा जोग मिले तब
सत्यनामा देवकी सहित उत्साहतै श्री कृ
ष्णसौ बोली या यगपके अश्वको हम सब
स्त्री जन पूजेगी सो सत्यनामाको बचन

श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसौकस्यो॥जबयुधिष्ठि
रबोले॥हेसर्ववीरहोतुमतयारहोपञ्च
केचोतरफरहो॥यादवनकीस्त्रीअश्वको
पूजनकरैगी॥अरुधोममुनिपूजाकरावे
जेतवराजाकीआपानैसर्ववीरतैसहीर
चाकरतभयो॥तहांसत्यभामाकोआदिदे
सर्वस्त्रीजनअश्वकोपूजनकरतभई॥
तापीकेउच्चस्थानमेंबैठिनत्यकरतेअ
श्वकीसोनादेष्टतई॥ताहीसमयमेंअनु
साल्वायाकिलेवीरकोयादिकहि॥मायाम
यअंधकारकरिअश्वकोहरिलेगयो॥त
बश्रीकृष्णपांडवनकोचिंतातुरहेषियुधि
ष्ठिरसोबोले॥हेधर्मराजयाअनुसाल्व
कोमरायतुम्हारेअश्वकोमगावोगोचि
ताप्रतिको॥असैकहिश्रीकृष्णहस्तमेंता
बूलकेबोले॥हेवीरहोतुममेंजोकोई
अनुसाल्वकोमारिअश्वकोल्यावैसोप
इताबूल्यो॥तबअसैसुणिप्रदुम्नउठि
श्रीकृष्णकेहस्ततैताबूललेयबोले॥हे
मधुराजमैंअनुसाल्वकोमारिअश्व
कोल्यावोगोमेरोपरा॥क्रमदेवो॥फेरि

श्रीकृष्णतांबूलहाथमैलेबोले जबजोको
ऊप्रद्युम्नकीसहायकरिवेकौसमर्थहोप
सोयहतांबूलयो। जैसेसुणिबृषकेतश्रीकृ
ष्णकेहस्ततैतांबूललेपबोयो। हेश्रीकृष्ण
जोमअनुसाल्वकोपकडिनही ल्यावौतोस
इब्राह्मणीगवनकरिजागतिकोपावेताग
तिकोमैपावौ। जैसेकहिबृषकेतप्रद्युम्न
केसाथयुद्धकरिवेकौअनुसाल्वकासना
मैप्रवेशकियो। जबअनुसाल्वप्रद्युम्नके
रेषिबोयो। अरुअनुसाल्वतपस्वीनमै जिते
द्वीपुरषनमै पतिव्रतास्त्रीनमै। तेरोपुष्पा
र्थचलेनही। अरुअश्विनेकीपुरषनमैते
रोपुष्पार्थचलेहै। जैसेसुणिप्रद्युम्नपांच
बाणचलाये तबअनुसाल्वतिनबाणनके
छेदि। अरुएकबाणतैप्रद्युम्नकोइहयवि
दीनेकियो। जबप्रद्युम्नबाणवेगतैअस
तश्रीकृष्णकेसमीपपडि मूर्छितनयो त
कौपउादेषिश्रीकृष्णतज्जितेनयो तब
श्रीकृष्णप्रद्युम्नकोचरणतैताडणाक
रिबोले रे। इउठियहठारिकापुरीनही
है। यहमहादोहणहै। नहै। यामैनिशक

रणो जोग्य न हो ॥ जैसे सुणि प्रहृन् चेतन पुक्त
नयो ॥ जब भीमसेन प्रहृन् सहित अनुसा
ल्वसौ युक्त करिबे कौंगयो ॥ तहो भीमसेन
गदा प्रहार नतें अनुसाल्वकी सेना कौमारि
रणमें गर्जना करत नयो ॥ तब अनुसाल्व ए
क बाण प्रहारतें भीम कौश्री कृष्णके पास प
टकत नयो ॥ जब श्री कृष्ण भीमके पडबेतें
क्रोध युक्त होय पुछ कौंगयो ॥ तहा जायती
नबाण अनुसाल्व पै चलाये ॥ तब अनुसा
ल्वतीन्यो बाणके दिहसिके श्री कृष्णसौ
बोले ॥ हे कृष्ण मेरो एक बाण हूके दि
बोकी तेरी सामर्थ्य नहो ॥ अरु जो सरहे तो
मेरो एक ही प्रहार सहि ॥ जैसे कहिए कहो
बाण प्रहारतें श्री कृष्ण कौमूर्कित किये
जब दारुक सारथी श्री कृष्णके रथ देडा
पयुधि रियासले गयो ॥ तब श्री कृष्ण
कौमूर्कित देखि पाडवनकी सेना हाहाक
र करि नजिबेलगी ॥ अरु कृक मणी कौ
अरि देखि बिलाप करत नई ॥ जब सत्य
नाम क्रोधतें श्री कृष्णसौ बोली ॥ हे नाथ
तुम प्रहृन्के चरण प्रहारदे ॥ अनुसाल्वके

प्रहारतैके संव्याकुलभयो अरुतुमको जे
 सैरेषिसबबोरनजेहो जातैमें चंडीहोय
 अनुसाल्वकेमारिवेको जाऊहो ॥ इति
 भारतसारचंद्रिकायां अश्वमेधपर्वणि
 त्रियोध्याया २ ॥ अश्वमेधपर्वणि
 सत्यनामाकेवचनसुणिश्रीकृष्णमूर्ख
 कोडिक्रोधकरि अनुसाल्वसोयुद्धकरि
 वेकोफेरिगये ॥ तबदृषकेतअनेकप्र
 कारकोरुद्धकरिकेसपकडिअनुसाल्व
 कोश्रीकृष्णकेचरणनमैपटक्यो ॥ जबश्री
 कृष्णप्रसन्नहोयवृषकेनसोबोलेहे
 कर्णपुत्रतूधन्यहे ॥ तौबिनाअनुसाल्व
 कोअसैकोएल्यावे ॥ असैकहिश्रीकृ
 ष्णसंगगत अनुसाल्वकोअनयरा
 नदेय पांडवनकोसेवककहाय ॥ गीतब
 दित्रधुनिसहितहस्तिनापुरमेंप्रसक्ति
 यो तापीकेयज्ञसामग्रीसिद्धदेविचेत्र
 पोर्णमासिनिकटजाणिराजानकोयथा
 जोगअधिकारदियो ॥ अरुयुधिष्ठिर
 पदीसहितपोर्णमासीकेदेनयगपदी
 चालीनी ॥ तापीकेयुधिष्ठिरपदीस

हितकोईभीकोईदिन
धातिब्रासएतकोब
दिनबेदबासकीआमा
लकृतकरिराजाबोले
रतैयानिबिघ्नहोहेअर्जुन
नबालकनकोबहनको
को।नहीमारणो।असैसु
सकोअरुपुधिष्टिरादि
करिले।जबबहअश्व
रिपालितअसोमाहि
होनर्मदामैजलपान
धजपकरो।तबअर्जुन
इकरिपुत्रपौत्रसहित
केजानताअग्नितास
असैसुअर्जुनमेजप
जकेकोएकनाभई।अ
ताभयोतबवैरापाय
नीलधजकेजालाना
मकलाभईताकोनी
तोकोकोनवरुचैहो
तासोकोअग्निहास्वामी

० हिकन्याअग्निस्वामीप्राप्तिनिमित्ततपकरत
नई॥ तबअग्निसंतुष्टहोयविप्ररूपधारिनी
लध्वजपैआयो॥ तबताकौपूजनीलध्वज
पूज॥ हेविप्रतकौणकामनानिमित्तआप
जबविप्रबोले॥ हेराजामेंशांडिलगोत्रकौ
ब्राह्मणकन्यापीहो॥ तातैतैरैसुंदरीकन्या
हेसोगकौस्यो॥ तबराजाबोले॥ हेविप्र
यहकन्याअग्निकौबरबसोहै॥ जबविप्र
बोले॥ हेराजननमोकौ॥ विप्रबेषधो
अग्निहोआएँ॥ तबमंत्रीबोले॥ यहकन्या
केलोभतैब्राह्मणआपकौअग्निकहेहै॥
असैसुणितहीब्राह्मणकेमुखतैज्वाला
निकसो॥ सोमंत्रीनकौदग्धकरे तहा
तनेकनागिवचे॥ कितनेकमूर्छितप्रय
असैतासमयमेंमहाविनोदभयो॥ ज
कन्याकीसीराजासौबोली॥ हेमहार
जयाब्राह्मणकौकन्यानहीदेणी॥ य
कौब्राह्मणकौबेषधारेइइजातीहै
बराजाबोले॥ हेकल्याणीयाब्राह्मण
नूतरेघरलेजायतहायाकीपरिचाव
तबब्राह्मणकौसगलेआपकेघरग

ब्रह्मणसो बोली ॥ हे ब्राह्मण तुम्हारी
तामो कों दिखावो ॥ जब अग्नि क्रोध करि
दिरग्य यो ॥ अरुता

जासौक
॥ जब

ही ॥
राजा
गि

हिदीनी ॥

अ

अरुता दिन तै ही नीलध्वज राजा की
सहाय करत नयो ॥ जैसे नीलध्वज को सेनावा
सहायकर्ता अग्नि सहित अर्जुन जीस्यो ॥ ता
पीछे नीलध्वज की त्र्यम्बुजा ज्वालानामही ॥ सो
अर्जुन ये क्रोध करि गगतीर जाय दग्ध हो
या बाण को रूप धारि बभ्रु बाहन कतक
समै रही ॥ सो ही ज्वाला गंगा के शाप तै अर्जु
न के नास को कारण नदी ॥ इति श्री नारद
सारवदिकाय अश्वमेध पर्व श्रुत तीर्थोध्य
याशा वैश्याय नउ वाच ॥ ता पीछे नीलध्व
ज के पुरतै अश्व आगे चलता ॥ एक जो न
न प्रमाण महासिला देखि ॥ तासो सरिर को
घसण करत नयो ॥ ता सिला के सरसत
वह अश्व जड़ी भूत नयो ॥
रवा

०
॥

अर्जुनसोवह ब्रजांतकस्यो ॥ सोमुनि अर्जुनचि
 ताकरतनयो ॥ तायाके अर्जुनसोवह ब्रजांत
 कस्यो ॥ सोमुनि अर्जुनचिंताकरतनयो ता
 याके अर्जुनचारोंतरकदेषत एकआश्र
 ममैविराजमानसोभरिमुनिकोदेषित
 पासजायप्रणामकर ॥ अश्वकोजडीन
 होबेकोकारणपृच्छो ॥ तबसोभरिमुनि
 बोले ॥ हे अर्जुन उदालिमुनिके चंडीनाम
 यात्र ॥ सोवाकेपति आग्याकरतो ॥
 कोतजिविपरीतिचलती ॥
 मुनिकेपिताकोआइहो ॥ तादिनही
 जात्राकरते ॥ हेकोदिन्यनामामुनि
 नसहित अतिथ आये ॥ तबउदा
 उनकोपूजनकरिवाआपकीरती
 ब्रजांतकस्यो ॥ जबको
 लसौकानमैकही ॥ हेमुनितुमको
 मकरणोहोयसोयात्रकोविपरी
 जबतुम्हारेसकलकामसिद्धिहो
 रुमैगोतममुनि सौमिलिप्रभा
 रपासआऊंगो ॥ असेकहिको
 गये ॥ जबउदालकमुनिचंडीसो

८ श्राद्धसामग्रीसिद्धिकराशीचाप
 करिप्रसन्ननये॥ तापाकैकोडिन्यमुनि
 लिनार्यासोबोले॥ हेचंडीइलपिंड
 नकौंगंगामेंप्रवेशकरावो॥ तबचंडीउनपि
 उनकौमलमूत्रस्थानमैनाषे॥ जबउदालि
 कक्रोधकरिचंडीसोबोले॥ हेदृष्टचंडीतेसि
 लाहो॥ अरुअर्जुनआपस्यसेकरैगोतबते
 रीमुक्तिहोयगी॥ तातैहेअर्जुनथतयाको
 स्पर्शकरियहचंडीतौउदालककेसापतेमु
 क्तिहोयगी॥ अरुतेरोअश्वचलेगो॥ असे
 सुणिअर्जुनवासिलाकोउधारकियो॥ तब
 अश्वउहातेंचलिहसध्वजकीचपकपुरी
 मैंगयो॥ तहाराजाहंसध्वजके॥ सुरथसु
 बलसुमतिसुदरी॥ सुधंवा॥ येपांचपुत्रदे
 तिनसहितराजाअश्वकोपकरिजुद्धको
 तपारनयो॥ अरुएककडाहकोतेलमोन
 रि॥ ताकोअग्नितेंतप्तकरिराजापहचु
 ग्पाकरी॥ जोजुद्धमेंविलंबकरिआविगा
 ताकोयामैनाषेगो॥ असेसुणिलेवदोह
 प्रहीआये॥ तिनमेंसुधंवाविलंबकरि
 यो॥ ताकोजुद्धमेंचलतेवाकितियाद

हेपतिमैरतिस्नाताहो॥ तातेमोकोरितुदान
केजावो॥ अरुजो रितुदानबिनाजावोगतोब्र
सहत्याकोपापहोयगो॥ असेसुणि रितुदा
नदेपके जुहकोअयो॥ तबहसध्वजबिल
वकरिआयेपुत्रकोबुलाय संघ लिषितपे
दोऊधर्मसास्त्राहेतिनकोबुलायराजाब्रत
तकहो॥ तबवेदोऊसुधन्वाकोतप्तकडा
हमेंनाषिकोलेगये॥ जबसुजतिनाममंत्रो
राजपुत्रसोबोल्पो॥ हेराजपुत्रमैराजाकीअ
ग्पाकेआधीनहो॥ तातेमेरोदोसहेनही
असेसुणिसुधन्वास्नानकरि दिव्यवस्त्र
धारणकरि॥ तुलसीदलकीमालापरिह
रिनामसकीर्तनकरतेको॥ वाकडाहमेंनाषो
जबवहतैलवाकेपडतहीसीतलजयो॥ सो
सुणिराजाहसध्वजआयपुत्रकोहरिनाम
सकीर्तनकरत॥ कडाहमेतिरतदेषिसंघ
सास्त्राकोबुलायकहीयहकहाहे॥ तबस
पबोल्पो॥ हेराजनयहतेलअतितप्तनही
जयो॥ अथवातेरेपुत्रयेमनिमंत्रमोषधि
हे॥ तातेतैलपरित्तालेबेको॥ यामैनारेलना
यो॥ असेसुणिनारिकेलकडाहमेंनाषो॥ त

ववाके दोपटक नये ॥ सोये कटक तो संघ
 सास्त्राके लिलोटमै लग्यो ॥ अरु दुतियटक लि
 पित सास्त्राके लिलारमै लग्यो ॥ तातै दोऊ
 ही मूर्च्छित होय पृथ्वीमै पडो ॥ इति श्रीभारत
 सारचंडिकायां अश्वमेधपर्वणि चतुर्थोध्या
 वेशपापनउवाच ॥ तापीकै सुधन्वास्नानक
 रिनुहमै आया ॥ अर्जुनकी सेना बाणनतै वि
 दीर्णकेरा ॥ जब दोऊ सेनाके घोर युद्धनये
 तब अर्जुन सुधन्वाकी बहत सेना मारि
 धनुषमैसो बाणसंधानकेरो ॥ तिनै सुध
 न्वाहै सतही काटि अर्जुनके द्रुपदमै दस
 बाणमारो ॥ अरु सत सहस्रा ॥ अयुता प्रयुत
 बाणबर्षा करि ॥ अर्जुनको आछादनकस्यो ॥
 जब अर्जुन क्रोध करि आग्नेय अस्त्र चलायो
 तसुधन्वामे धारात्रा करिसांतकस्यो ॥ फेरि अ
 र्जुन स्वनास्त्र चलायो ॥ ताको सुधन्वाकको
 पीकौ स्त्रसो निवारण कियो ॥ तब अर्जुन
 इस्त्र चलायो ॥ जब सुधन्वाको तीन व
 णनसो छदनकस्यो ॥ तवता संकटमै अर्जु
 नधीरुसको स्मरण कियो ॥ जब श्रीकृष्ण
 रथमै आपस्थित भयो ॥ तब सुधन्वा बोझो

१०) हे अर्जुन त श्ची कृष्णके आगे प्रतिष्ठा करि
सा सुणि अर्जुन बो ल्ये ॥ हे सुधन्वा ती
वें ते रसि र कौ न ही पर
कमें पडो ॥ अह त् इ प्रतिष्ठा क
न्वा बो ॥ ल्ये ॥ हे अर्जुन ते रे ती न बा ए न कौ
न का टो तो घोर गति को पावो ॥ जब आ कृष्ण
बोले ॥ हे अर्जुन ते बी र सुधन्वा को पुण्यार्थ देष
विन प्रतिष्ठा प्रसा दते ही करी ॥ अरु ती न ही
बा ए न ते यह के से मरे गो ॥ ता ते यह सा ह स हा
कियो ॥ असे सुणि अर्जुन धनुष पे को ला मित
त्य बा ए ध ल्यो ॥ ता को देषि श्री कृष्ण निज प
न्य बा ए मे धर त बोले ॥ गो व र्द्ध न धर ण ते मे
गा य न की र चा करी ता ए न्य ते यह बा ए अ
र्जुन को मनो रथ सिद्धि करे ॥ अरु ती न को
पु र दे षि वे को आ का स मे दे व द्या ॥ अये
ता स मे मे अर्जुन धनुष को पै चि बा ए च
ला यो ॥ स ॥ ता हि सु ध न्वा एक बा ए हा
करि का बो ॥ त ब द्द ती य बा ए च ला यो ॥ सो
ह का यो ॥ ता हि दे षि अर्जुन की से ना मे हा ह
को र हो त न यो ॥ जब अर्जुन त्रि ती य बा ए सा
धो ॥ ता बा ए के पश्चिम भाग मे ब्रह्मा ॥ अरु

भाग्यगमैरुद्रकौस्थायनकस्तो॥जब
 बाणमैरामावतारमैजोपुत्र
 तबताबाणकोलाघतोरे
 बोल्पो॥हेरोलिदतेरेचरणप्र
 अरुजन्मजन्ममैदास्पनाचते
 करौ॥सैकहिन्त्रइचंद्रमाणते
 तासरोहवाणकादो॥ताकोलि
 रसर्वराजाअरुश्रीकृष्णहृताकारक
 रतमयो॥तबताकिन्तुअरुजन्मकोलाएनेसु
 धनकोसिरकादो॥जबवहसिरउडतह
 अरुजन्मकेइदयमैप्रहारकरिश्रीकृष्णकेच
 एनमैपयो॥तबश्रीकृष्णहृतासिरकोहस्त
 तेउपगुरुडकोदियो॥अरुगुरुडहृता
 सिरकोप्रयागमैडारिवेकोलेचलो॥जब
 शिवमामैआयुगुरुडसोबोले॥महशि
 रकाएलेजायहे॥तबगुरुडबोल्पो॥हेशि
 वसुरथकेशिरकोप्रयागमैडारिवेको
 लेजाउहेसोमुणिशिवमस्तकलेवेकोग
 एकोसपपादीनी॥जबमामैगुरुडसो
 शोषिकेगणनसो
 नामेतबनिनकोदियो॥नेदी

३०
२
रसों गरुड कों उड़ायो ॥ तब उड़त हरु गरुड
प्रयाग कों पह चिता शिर कों तहाने षो ॥ ज
ब पड़ते शिर कों नदी गण ग्रहण करि ॥ शिव
कों आपस नर्पण करयो ॥ तब ता कों शिव ह
मुंड माल में मथनाय क कस्यो ॥ जैसे दो
ऊ पुत्र न कों युद्ध में मरे जाणि ॥ क्रोधते
युद्ध करिबे कों हंस ध्वज आयो ॥ तब श्री
कृष्ण राजा प जाप बोले ॥ हे हंस ध्वज जो भ
वत ब्यहो सो नयो ॥ ताते अब अश्व देके अर्जु
न सो मित्रता करे ॥ जैसे श्री कृष्ण के ॥ क
ते हंस ध्वज अश्व कों अर्जुन के निवेदन क
रि ॥ तापी हे अर्जुन कों पांच दिन निज नग
र में राषि अश्व की रक्षा करिबे कों आप ह
तिन के संग चल्या ॥ जैसे अश्व अनेक वि
चरत एक सरोवर में जल पान करिबे क
गयो ॥ जहा जल पान करत ही घोड़ी नयो ॥ त
हाते दुतिय तडाग में स्नान करत ही व्याघ्र
ते अश्व हानयो ॥ जैसे भ्रम तस्त्री रात्र में ग
यो ॥ तहा प्रसीला नाम स्त्री लक्ष्मि नारी सहि
त अर्जुन सो युद्ध करिबे कों आई ॥ तहा घो
र युद्ध नयो ॥ जब आकास बाणा नई हे अ

जुनपुत्रमेंस्त्रीहत्यारूपसाहसमतिहरे
रुजोजीवनकीइच्छाहैतोयाकौबो
सुणिअर्जुनतासौबिबाहकरिलसब
तवकौहस्तिनापुरपठार्थतहोतै
नमैभ्रमतभीषणनामराक्षसकेपुराण
तहाघोरपुष्करिराक्षसनकोजाति
अश्वधनरथा॥लेकेचलतप्रारजे
पुरकोगयो॥तबतहाहूकराजावज्र
मानदिनमेंजासो॥तहतैअश्वसिंधु
समैगयो॥जहादुःशालामरेपुत्रकौ
वाकेबालककौलेकेआपअर्जुनसो
हेभातामेरोपुत्रतेरोनामसुएन
यहतेरेनाराजकेपुत्रहैतातैअवपा
राज्यप्राप्तिकरि॥तबअर्जुनदुःशालाके
मुषतेनाएजेकामरुपासुणिआपका
करि॥वाबालककौराज्यदेयदुःसलाके
समाधानकरि॥मणिपूरनगरपहुंचे
हाबनुबाहनराजकरतहो॥जहांसर्व
जनसेत्यवादा॥स्त्रीपतिब्रताअरुप्रजा
अकिसनके॥असौमणिपूरनगरदति
यवैकुण्ठसमदक्षिअर्जुनहंस

पूछी हेराज यह नगर कौण कौ है सो कहो ॥ त
वह सध्वज बाल्यो ॥ हे अर्जुन यह नगर कौ रा
जा बन्धु बाहन है ॥ ता कौ मे सुवर्ण रत्न नकेत
रे जैसे हे जो रसकट प्रति बर्स कर द्यो हो ॥ अरु
सब गुण युक्त यह राजा नारायण तुल्य है ॥ अ
रु सुमति नामा धर्मात्मा मंत्री है ॥ ता तैया से
उदकरि जाति बो कठिन है ॥ जैसे बाती कर
तही अर्जुन के किरीट पर मत्स्य सूचक गाथ
आय वेद्यो ॥ ता कौ देखि सब ही त्रास पायो ॥
अरु ताही अश्वकास मे वन्धु बाहन के सेव
क अश्वको पकडि ले गयो ॥ त हो जाय सभामे
सिधासन पे बैठे वन्धु बाहन कौ दियायो ॥ त
व वन्धु बाहवा अश्वक पत्न कौ वाचि युधि
ष्ठिर के अश्वमेध कौ अश्व अर्जुन जा कौ र
क्षिक जाणि सुमति मंत्री सो पछ्यो ॥ हे सुम
ति मेरी माता अपने पिता के मंदिर में नृत्य
करत ही ॥ तब तात मे चूकी जाणि पा कौ शा
प दियो ॥ हे पुत्री त जल मे मकरी होय रहेगी ॥
अरु जब अर्जुन कौ चरण स्पर्स होय गो ॥ त
व तनि जरूपा वोगी ॥ अरु अर्जुन ही तेरो न
तो होय गो ॥ सो ब्रह्मा तै से ही भयो ॥ तामे अर्जुन

तैमें पुत्र नयौ॥ जब अर्जुन मोको अरु मेरी माता
 को कोशि। युधिष्ठिर के पास गयो॥ तापी छै मैं मे
 र माता मह को बडो राज्य पायो॥ पै पुत्र अर्जुन
 को है॥ सो अब हे सुमति मेरे पिता को अश्वप
 जो शबिना बिचारे ही ल्याये॥ ताते अश्व कहा कि
 ये कुसल होय सा कहै॥ जब सुमति वालो हेर
 जन यह को र्ज बिना बिचारे ही नयौ॥ ताते अ
 श्व बहु बितराज सहित अश्वको अर्जुन को
 अर्पण करि प्रसन्न करे॥ अरु जैसे अर्जुन र
 ता करै है तै सही वर्ष पर्यंत तुम को या अश्व क
 रता करिबौ जोगे हे॥ इति श्री भारत खार चरि
 काय अश्वमेधयावलि पंचमो अध्याय॥ ५॥ वेश
 पायन उवाच॥ ऐसे सुमतिके बचन सुणिव
 न्नुबाहन सेना सहित अश्वको आगे करि
 अनैक प्रकारकी अर्जुन सामग्री लिय अर्जु
 न पै जाय प्रणाम करि सन्मुख ठाठो होय हा
 थ जोडि बाल्यो॥ हे तात मैं तुम्हारे पुत्र हो
 चित्रांगद मेरी जननी है॥ अरु उल्पीनै मे
 को पाल्यो है॥ वन्नुबाहन मेरो नाम है॥ अरु
 मेरो आपकी यह ब्रजात जाणे बिना मे धरये
 धानै अश्वको ग्रहण कियौ॥ ताते आपया

10
8

अश्वकोग्रहणकरो ॥ अरुयह राजपुत्र
 रकरिनीको आगाकरियो ॥ असे सुणि प्रस
 न्नको आदिदे सबही बीर अर्जुनसो बोले
 पार्थवयह प्रणामकरतहितकारी पुत्रको
 द्रुपदसो लगायके मिलो ॥ यह अतितेजश्व
 बुद्धिमानहो ॥ असे सुणि भवत व्यताके वस
 हाप अर्जुनताके सिरमैलानमारिक्रोधते
 बोले ॥ हेमदृष्टले जयनीततमरो पुत्रन
 ही ॥ चित्रांगदामैवैस्पतेत नयोहो ॥ अरुप
 उववीर्यतनहो ॥ प्रथमअश्वकोनबलते
 ग्रहणकियो ॥ अबमेरे बाणप्रहारलागे वि
 नाही यह कापरताकेसे आइ ॥ अरुदेषिप
 नमेरो प्रतिमनुहो ॥ जोनुहमें शोणादिकबी
 रनको विमुषकरिचक्रव्यूहनेदियुधिष्ठिरकी
 रक्षाकरी ॥ अरुतेरे बाणप्रहारद्रुपदमैलागे वि
 नाही हेरुदुबुद्धिनयनीतकेसे नयो ॥ अरुगंध
 बराजकी पुत्रीतेरी जननी धर धरन त्यकरो
 ताके संगतगानकरि ॥ असे सुणि बभ्रुवाह
 नक्रोधते नकुटी चटाय ॥ ल्पाई वस्तुमात्रस
 बपाछीपहाय ॥ बुद्धकरिबेकोरथपेसवार
 होप पितासो बोले ॥ हेतात बुद्धको तपारह

बाणनतै तुमको मारोगो ॥ तैरौ कौण एतक रहे
प्रसै कहियुद्धमें आये सजो अनुसाल्वता को
बाणप्रहारनतै मूर्च्छित करि पृथ्वीसे पटको
ताको मूर्च्छित देषि प्रदूम्युद्ध करिबेको आ
यो ॥ तबताहूको एक बाणतै मूर्च्छित कियो
तापीकै बृषकेतानीलध्वजा ॥ अरु पुत्रसहित
योचनाश्व ॥ सपुत्रहंसध्वजा ॥ इनहूको एक
एक बाणतै मूर्च्छित कियो ॥ और अनिक बी
रनको बाणनतै छिन्नभिन्न करि नजायो त
हाको ऊबीरभाजते कटेहुवे गजकेसरीरमें
प्रवेश कियो ॥ तबहीताकोको ईपिसाच आ
षषैचिवाकी आशिनिका सिद्धदयभक्षण कि
यो ॥ अरु काहूबीरको कट्यो सिरनेत्रनसो
आपके कबंधको नाचते देषत भयो ॥ अैसे
बनुवाहन अर्जुनकी सेनाको छिन्नभिन्न
करि रथहाथा ॥ अश्व ॥ धन ॥ रत्न ॥ दासी
दास ॥ ये सब आपके नगरमें पडुचाये ॥ इति
अनिरतसार चंडिकाया अश्वमेधपर्वणिष्ठा
ष्टोधाया ॥ ६॥ वैशंपायन उवाच ॥ बनुवाहन
के अरु अर्जुनके अैसे जुड भयो ॥ जैसे राम
चंद्रके अरु कुसके भयो ॥ जब जनमेजय

अश्वको प्रहण करो ॥ अरु यह राज अंगीकार
 करि मोकौ आणा करियो ॥ जैसे सुणि प्रस
 न्नको आदि दे सबही वीर अर्जुनसौ बोलै हे
 पार्थव यह प्रणाम करत हितकारी पुत्रको
 द्रुपसौ लगायके मिलौ ॥ यह अतितेजश्व
 बुद्धिमानहै ॥ जैसे सुणि जबत ब्यताके वस
 हाय ॥ अर्जुनताके सिरमै लात मारिको धतै
 बोल्यो ॥ हे मरु जैसे जयनीत तमरो पुत्रन
 ही ॥ चित्रांगदामै वैस्यतै नयोहो ॥ अरु यह
 उव बीर्यत नहो ॥ प्रथम अश्वको न बलतै
 प्रहण कियो ॥ अ ॥ मेरे बाण प्रहार लागे वि
 नाही यह कापरताके लं ॥ अरु देखिपु
 त्रमेरो अति मनुहो ॥ जोनु इमै द्राणादि कवी
 रनको बिमुष करि चक्र अह नै दियुधिष्टकी
 रत्ता करी ॥ अरु नरे बाण प्रहार द्रुपसै लागे वि
 नाही ॥ हे दुबुद्धिनय भीतके सैनयो ॥ अरु गंध
 बर राजकी पुत्री तेरी जननी धर धर न त्यकरो
 ताके संगत गान करि ॥ जैसे सुणि बभ्रुवाह
 न क्रोधतै न कुटी चटाया ॥ ल्याई बल मात्रसे
 बपाछी पहाय ॥ युद्ध करिबेको रथपे सवार
 होप पिलासौ बोल्यो ॥ हे नातयुद्धको तपारह

ऐसे कहियुद्धमें आयेस जो अनुसाल्वता को
 बाणप्रहारनेतै मूर्च्छित करि एध्वीमें पटको
 ताको मूर्च्छित देषि प्रदुग्धपुद्गकरिबेको आ
 यो॥ तबताहूको एक बाणतै मूर्च्छित कियो
 तापीकै बृषकेतानील ध्वज॥ अरु पुत्रसहित
 योवनाश्व॥ सपुत्रहंसध्वज॥ इनहूको एक
 एक बाणतै मूर्च्छित कियो॥ और अनिक बी
 रनको बाणनेतै छिन्ननिःशुन करि नजायो त
 हाको ऊबैरनाजतेकटे हुवेगजकेसरीरमें
 प्रवेसकियो॥ तबही ताकोकोईपिसाच आ
 यषैचिवाकी अश्विनिका सिद्धदयभक्षण कि
 यो॥ अरु काहू बीरको कयो सिरनेत्रनसो
 आपके कबंधको नाचते देषतभयो॥ ऐसे
 बभ्रुवाहन अर्जुनकी सेनाको छिन्ननिःशुन
 करि॥ रणहाथा अश्व॥ धन॥ रत्न॥ दासी
 दास॥ ये सब आपके नगरमें पहुचाये॥ इति
 श्रीनारतसारचंडिकायां अश्वमेधपर्वशिष्य
 द्योषाय॥ ६॥ वैशंपायन उवाच॥ बभ्रुवाहन
 को अरु अर्जुनके जैसे जुहभयो जैसे राम
 चंद्रके अरु कुसके भयो॥ जब जनमेजय

अश्वको ग्रहण करो ॥ अरु यह राज्य अंगीक
 र करि मोको आग्या करिये ॥ जैसे सुणि प्रद
 न्नको आदि दे सबही वीर अर्जुन सो बाले हे
 पार्थ वयह प्रणाम करत हितकारी पुत्रको
 हृदय सो लगायके मिलो ॥ यह अतिते जश्व
 बुद्धि मानहे ॥ जैसे सुणि नवत व्यताके वस
 हाप अर्जुनताके सिरमें लात मारिको धते
 बो ल्यो हे मरुट जैसे जयनीत त मेरो पुत्र न
 ही चित्रांगदामै वैस्यते त नयो हे ॥ अरु प
 उव वीर्य त लहा ॥ प्रथम अश्वको न बलते
 ग्रहण कियो ॥ अब मेरे बाण प्रहार लागे बि
 नाही यह कापरताके से आइ ॥ अरु देषि प
 न मेरो अनिमनु हो ॥ जो नुहमें शोणादि कवा
 रनको विमुष करि चक्र व्यहने दि युधिष्ठिर
 रत्ता करी ॥ अरु तरे बाण प्रहार हृदयमें लागे बि
 नाही हे हृदु बुद्धि नप भीतके से नयो ॥ अरु गंध
 बर राजकी पुत्री तेरी जननी धर धरन त्यकरो
 ताके संगत गान करि ॥ जैसे सुणि बभ्रुवाह
 न क्रोधते न कुटी चटाप ॥ ल्पाई वस्तु मात्र स
 ब पाछी पहाय ॥ बुद्ध करि बेकोर यपे सवार
 होप पिता सो बो ल्यो हे तात पुद्धको तपारो

बाणनतैतुमकोमारागा॥तराकाण॥रत्तकह
असैकहियुद्धमेंआयेसजोग्रनुसाल्वताके
बाणप्रहारनतैमूर्च्छितकरिएध्वीमैपटके
ताकेमूर्च्छितदेषिप्रहृमनपुडुकरिवेकोग्रा
यो॥तबताहूकोएकबाणतैमूर्च्छितकियो
तापीकैबृषकेतानीलध्वज॥अरुपुत्रसहित
योवनाश्व॥सपुत्रहसध्वज॥इनहूकोएक
एकबाणतैमूर्च्छितकियो॥औरअनिकबी
रनकोबाणनतैछिन्नमिन्नकरिनजापैत
हाकोऊबीरभाजतैकटेहुवेगजकेसरीरमें
प्रवेशकियो॥तबहीताकेकोईपिसाचग्रा
मषैचिवाकीअधिनिकासिद्धदयभक्षणाकि
यो॥अरुकाहबीरकोकद्योसिरनेत्रनसो
आपकेकबंधकोनाचतेदेषतभयो॥असै
बभ्रुबाहनअर्जुनकीसेनाकोछिन्नमिन्न
करिरण॥हाथा॥अश्व॥धन॥रत्न॥दासी
दास॥येसबआपकेनगरमेंपहुचाये॥अनि
अनिारतसारचंडिकायोअष्टद्वेधपद॥अ
ष्टोध्याय॥६॥बेशपायनडुवाचा॥बचदाअन
केअरुअर्जुनकेअसौजुद्धभयो॥जैसेअम
चंद्रकेअरुकुसकेभयो॥जबजन्मजप

बोले ॥ हे मुनि रामचंद्र के अरु कसके कोण
कारण तेके से जुद्ध नयो सो कहो ॥ तब वेश
पायन बोले ॥ हे राजन रामचंद्र रावण कुन
करणा इंद्र जीतल का बासी राक्षसन को म
रि ॥ सीता सहित अजोध्या में राज करत हे त
हा सीता को जन्म वती दोष बोले ॥ हे सीता तु
म्हारा बांछा कहा हे ॥ तब सीता बोली ॥ हे न
थ मेरे बांछा यह हे ॥ वन में जय मुनिन की स्त्र
न को बस्त्र अलंकार देख उन की सेवा करो
यह मुनि रामचंद्र तथा सुकहि बाहिर आय
त हा इतके मुख तैरज क की करी सीता की
निदालुणिके बोले ॥ हे लक्ष्मण या सीता को
बालमीक के आश्रम निकट छोडो ॥ जब ल
क्ष्मण रथ में बैठा य सीता को बालमीक के
आश्रम निकट छोडि रामचंद्र पे आये ॥ त
हा रुदन करती सीता को दोष बालमीक नि
ज आश्रम में लेगये ॥ जहा सीता के दोष प
नये जिनको जातिकर्म नाम कर्ण बाल
हिकरि कुसल व दोऊनके नाम धरो ॥ ता
के रामचंद्र ब्रह्महत्याके तपते ॥ अश्व
पत्तको प्रार्थन कियो ॥ तायगपके अश्व

पात्राकरतवाल्मीकमुनिकेश्याश्रमगयाज
अश्वकौलवकुसवांधि। रामचंद्रकीसेनाको
मारिभजाई। तवरामचंद्रसेनासहितआये
तिनहकोकसछिणमात्रहीमेंजीते तैसेही
हेराजोत्तमजयबभ्रुवाहनहअर्जुनकोजी
त्यो। अबओरहवभ्रुवाहनकोपराक्रमसु
णो। तापीकेपुइकरतेहसध्वजकेपुत्रसु
बेगकोएकबाणप्रहारतैमूर्कितकरिओ
रबीरनकेसिरपकुफललो। पृथ्वीमेंनाषोत
सेनामेंकर्णकोपुत्रअरुअर्जुनयेदोयहीब
कीरहो। ओरमेरेबीरनकोउल्पीअसधि
बलतैराषतभई। जबअर्जुनबृषकेततैबो
ल्यो। हेबृषकेततमेरेपासहैगातोमेरेग
तातैनीमकेपासजायमेरोमेरेएकहो। अ
रुयगपदीसतपुधिधिरयगसमाप्तनहीक
ल्यो। सोमेरेहियमेंसालैहै। तबबृषकेत
बोल्या। हेअर्जुनमेंमतिकेनयतैतोकोछि
डिजाऊतही। अरुजोजाऊतौमेरोपिताम
हसर्पलज्जितहोय। अैसेबोलीपांचबाण
बभ्रुवाहनकोदिये। तबवभ्रुवाहनबृषके
तकोसिरकाटिअर्जुनकेपावनमेंपटक्या।

जब भगवन् ज्ञान की रत्न करत। जैसे बृषके
को सिर अर्जुन उठा महत्तमैले बिलाप करत
नयो। हे पुत्र मैं तो बिना युधिष्ठिर पै जाय क
हाक होगी। मैं तेरे पिता को मारि अरु नो को
हरा ज्यलो न तै मरायो। जैसे कहि ऊचै सुर
सै रुदन करत नयो। हे श्री कृष्ण तुम कहा
गये या कष्ट मैं मेरो। रियाग के लौकियो। अ
सै बोलि बृषके त को सिर इदय मैं धरि मूर्छि
होय पडा। जब वन्तु बाहन अर्जुन के इदय
मैं धनुष को टिको प्रहार करि बो ल्यो। हे प
र्यह न बेशप है सो तो को अरु बृषके त को तो
लिबे को। अयेह जे नून अधिक होय सो रे
षे जैसे सुणि अर्जुन बृषके त को सिर भूमि
मैं धरि धनुष धारि बो ल्यो। तैं मेरे सर्व वीर
मारै तातैं अब पूर्व त नदी मेरे बाण को प्रह
र सहो। जैसे बो लि बाण प्रहार कियो। तब व
न्तु बाहन ता। एको काटि अर्जुन को म
र्छित करि बो ल्यो। हे पाथ। शोणा चार्य तैं पा
ई धनुष विद्या तैं कैरो भूल्यो। अरु पति वृता
मेरी जननी को ब्रथा हरित करी ताके पातक
सो बिद्याह भूल्यो। अरु तेरे स्मरण तैं श्री कृ

एक
अपने हाथों से सुनिश्चिन्त उठाएक
बाण बनुवाहनके रूपमें मारो ॥ जब
बनुवाहन ज्वालारूप अर्धचंद्रकार बा
णों से अर्जुनको सिरके दन कियो ॥ तब सब
बीरहाहाकार करत नयो ॥ तहां चित्रांगदा
आपुत्रके मारे पतिको मर्यादेषि विलाप
करत नई ॥ हाका तइहा आयसेवक जन
सांसेना सुणबिना ॥ पुत्रके अतिथ्यतै सु
षित होय सो वैह कह ॥ जैसे विलाप करि
सपत्नी उलपी सां अलिंगन करि ॥ पृथ्वीमें
लुठत नई ॥ जब बनुवाहन माताकी यह दसा
देषि ॥ दुःखतै मरिबे कौ तयार नयो ॥ तब उल्
पीसं जीवणि मणिके स्मरण कियो ॥ जब पाता
ललेक सां मणि आई ॥ तामणिकों लेय सिरक
बंध सां लगायो ॥ अर्जुनके रूपमें मणि धरि
जिवायो ॥ और हमरे बीरनको मरि तै जिवाये
जब अर्जुन लजित होय पृथ्वीको देयत न
यो ॥ तब उलपी हाथ जोडि बोली ॥ हे नाथ तु
म भय हो ॥ पुत्रतै पराजय पुत्र्य पुरुष ही पा
वेहो ॥ जब तुम भीष्मको मारो ॥ तब बसुन
को शाप नयोहो ॥ भीष्मको मारिबे वालो नि

जब भगवन्नामकीर्तनकरता असो वषको
कोसिर अर्जुन उठा महरत मैलो बिलाप करत
भयो हे पुत्र मै तो बिना युधिष्ठिर पे जाय क
हाक होगो मै तेरे पिता को मारि अरु लोको
हरा ज्यलो न ते मरायो असै कहि ऊचे सुर
सा रुदन करत भयो हे श्री कृष्ण तुम कहा
गये या कष्ट मे मरो परित्याग के लो कियो अ
से बोलि वषकेतको शिर इ द्य मे धारि मूर्च्छ
हाप पयो जब बनु बाहन अर्जुन के इ द्य
मे धनुषको टिको प्रहार करि बो लो हे प
थह न बंधु पहे सो तो को अरु वषकेतको तो
लिबेको अये हे जो नून अधिक होय सो र
षे असै सुणि अर्जुन वषकेतको सिर भूमि
मे धारि धनुष धारि बो लो ते मेरे सर्व वीर
मारे ताते अब पुर्वे त नदी मेरे बाणको प्रह
र सहो असै बो लि बाण प्रहार कियो तब ब
नु बाहन ता बाणको काटि अर्जुनको म्
र्च्छित करि बो लो हे पाथ सोणा चार्य ते पा
इ धनुष विद्या त के सो भूल्यो अरु पति चृता
मरी जननीको ब्रथा करि ताक पास क
सो बंधु हन ल्यो अरु तेरे स्मरण त श्री कृ

सहजयेनहो। प्रैसैसुणिअर्जुनउठिएक
बाणबनुबाहनकेइदपमैमह्ये॥ जब
बनुबहनज्वालारूपअर्धवंशकारवा
एतौअर्जुनकोसिरकेदनकिये। तबसब
बीरहाहाकारकरतये। तहांचित्रांगदा
आपपुत्रकेमारेपतिकोमह्यो। देषिविलाप
करतगई। हाकातइहांआपसेबकजन
सोसंजासुणविना। पुत्रकेअतिथतैसु
षितहोषसोवहैकइ। जैसेविलापकरि
सपत्नीउत्सपीसो। अलिंगनकरि। एध्वीमें
लुहतगई। जबबनुबाहनमहतकीयहइसा
देषि। इअरेमरिबेकोतयारनमो। तबउल्
पीसिअवणिमणिकेस्मरणकिये। जबपाता
ललेसोमणिअर्ध। तमणिकोलेषसिरक
बंधसोलागाया। अर्जुनकेइदपमैमणिधरि
जिवायो। औरहमरेबीरनकोमथितैजिवाये
जबअर्जुनलजितहोयएध्वीकोदेयतन
मै। तबउल्पीहाकजोडिबोली। हेनाथतु
मभन्यहो। पुत्रतैपराजपपुत्रपुरषहोया
वैहो। जबतुमभयिकोमारे। तबवसुन
कोशापनयोहो। जीषकोमारिबेबलोनि

जपुत्रतैमरेगौ॥ अरुतेसैंहीगंगाकोह
 भयोहो॥ तातैपहदसामई औरअन्यथाहेरु
 इबिजईतोकोकोणजितै॥ अरुमेरोपितामेरो
 प्रार्थनातै तुम्हारीकरुणाकरिसंजीवकमणि
 पठाई तातैतुमसहित सर्ववीरजिये जैसेसु
 णिअर्जुनदोजनापीसैंपुत्रसैंमिति प्रसन
 होय पुत्रकोसंगलेयअश्वसहित॥ आगेचलि
 वेमैसंकितहोयश्रीकृष्णकोसरणकियो॥
 तहांश्रीकृष्णसहितभीमआयो॥ जबश्रीकृष्ण
 अनेकइतिहासकरिअर्जुनकोसमा
 धानकरुणा तबवन्नुबाहनश्रीकृष्णकेभीम
 केचरणनमैप्रणामकरिअनेकरत्नमणि
 माणिक्यनेटकरे जबश्रीकृष्णकीआग्पातै
 भीमसेनचित्रांगदाउत्पतिकोधत॥ अद्भुतगत
 अश्वरत्नादिसामग्रीसहितहस्तनापुरप
 हुंचाय॥ युधिष्ठिरपासजायसर्वब्रह्मांतक
 सो॥ अरुकुंतीहे आपकेचरणनमैप्रणामक
 रती॥ चित्रांगदाउत्पतिकोआसीबीदद्रेय
 निजभवनमेंदायी॥ इतिश्रीभारतवाल्मीकि
 कायोसप्तमोऽध्यायः॥ ७३॥ वैशंपायनरथाज्ञे
 तापीकैश्रीकृष्णसहितअर्जुनबन्नुबाह

नकोंसंगलेय आगेचले॥ तहोसागमिताम
ध्वजपितामपूरध्वजकेअश्वमेधकेअश्वकी
रक्षाकरत मार्गमेंअर्जुनकेअश्वकोआपकेअ
श्वतैमिलतदेखिबहुलध्वजमेंत्रीसौबोली
यहअश्वकोणकोहै॥ जबमन्त्रीपत्रवाचिति
बेदनकरो॥ तबताम्रध्वजअश्वकोग्रहण
करि॥ पुढकोतयारहोयबोली॥ हेबहुलध्वज
महाराजमपूरध्वजसप्तमअश्वमेधकरै
हो॥ सोयाअश्वतैअष्टमअश्वमेधहोय
गो॥ असैबोलिअश्वकोरत्नपुरपठायो
तापीछेआपआयअर्जुनकेसर्ववीरन
कोमूर्च्छितकरो॥ तबअर्जुनश्रीकृष्णसो
बोली॥ हेश्रीकृष्णयहकोणराजाहेजाके
पुत्रनैसर्वसेनाजीती॥ जबश्रीकृष्णबोले
हेअर्जुनपहरत्नपुरपतिमपूरध्वजताको
पुत्रताम्रध्वजहै॥ अबयाकोसाहसमें
तोकोदिषाऊंगो॥ तातैमेंतोबृहद्रथप्रण
बणोहो॥ अहतवालकबणिमेरिसंगच
लि॥ असैकहिश्रीकृष्णअर्जुनसहितयज्ञ
मंडपमेंआप॥ तहांस्त्रीसहितदीक्षतराजा
सौबोले॥ हेराजेंइतरेस्वस्तिहो॥ मैसिष्य

ध
५

पत्रको वैसैं हाषो नि चंद्रहास के इद्रय पै ध
रि घर आई जब चंद्रहास जागि मदन पै जा
प पत्र सो प्यो ॥ तब मदन पत्र मै विषया से
प्रदात व्या जैसे बोचि प्रसन्न होय ब्राह्मण
को बुलाय विषया चंद्रहास के विवाह को
लग्न पूछ्ये ॥ जब ब्राह्मण बोले अब ही सुन
लग्न हो ॥ तब मदन परम उत्सव ले महामा
ल विवाह कियो ॥ अरु कन्यादान के समय
में चंद्रहास सो गोत्र पूछ्यो ॥ तब चंद्रहास क
ही मेरो हरि गोत्र ॥ हरि पिता ॥ हरि पिता मह
हरि ही प्रपिता मह है ॥ जैसे सुणि मदन ह
रि प्रीति र्थ कन्यादान करि ॥ अग्नि में होम करि
समपदी करवाय ॥ तापी है अष्टा योता
में ॥ धन गज अश्व रथ ॥ ल गज उष्ट्र म
हिषा ॥ दास रासी रत्न ॥ माणिक्य मोक्ति
कहार ॥ और अनेक आभरण ॥ वस्त्र ये सर्व
विषया सहित चंद्रहास को देय के बो ल्यो ॥
हे चंद्रहास मेरो सिर्पय तसर्व स्वतरो ही
है ॥ जैसे बोलि फेरि जाच कनह को बहुत
दान दियो ॥ इति श्री भारत सार चंद्रिका या
अश्वमेध पर्वे एतदसमाप्तम् ॥ १० ॥ नारद उवाच

तापीकै धष्ट बुद्धि चंदनावती पुरी में जाय कें
लिंदकौ निगड बंधन करि प्रजांत कौ बहुत
पीडा करी अरु कें लिंदकौ अनेक प्रकार
ताडना करि बो ल्यो हे कुं लिंद तेरो पुत्र दा
न। पुन्या जल स्यांत महा देव मंदिर आ
दि करवा हमरो बहोत धन ना सक स्या। अ
सै कहि कुं लिंदकौ इर बंधन तै बोधि उहोत कु
तल पुर कौ आयो तहां मार्ग में जी ए सप अ
य बो ल्यो हे धष्ट बुद्धि तेरे पिता के कोस में
में बहोत काल ताई र हो। अरु तै ह वाप जा
ना कौ अधिक ही बधायो। ता तै में आजिलो
तौ बहुत प्रसन्न र हो। अब तेरो पुत्र सर्व को
स चंद्रहास कौ देय सुन्य करि मो कौ निकास्यो
जब देखे पुत्र स्व कौ धष्ट बुद्धि असे सप
के बाप सुणि। क्रोध करि निज मंदन आयो
तब मदन पित कौ क्रोध वंत जाणि बचन बो
ल्यो। हे पिता में आप के लिषे माफिक विषया
कौ व्याह करि। धन रत्ना गजा अश्व आदि
सर्व स्व देय कछु हराष्यो बही। असे सुणि
पुत्र मगाप बान्छि। धष्ट बुद्धि बहुत दुषी
भयो। अरु तापीकै चंद्रहास कौ कपट सो

श्वर
१६

समाधान करि। प्राप्यैसे चिता करत भये
जो यह चंडहास जीवत रहे गो तो मेरे कुल
को नास करे गो। मैया के पिता को पीडा कर
प्रजा को दंड देय नगर को लूटि धन ल्यायो।
सो यह वृत्तांत सुणि चंडहास मो सो बर लो
लियो चाहे गो। या कारण ते चंडहास को मा
रणो कन्या विधवा होय तो नलै हो हो। अह
मो को मुनीन को बचन ह पिप्पा करणो हो।
अैसे विचारि चांडालन को एकत मै बुला
यउन सो बो ल्यो। हे चांडाल हो तुम को पहल
मै वा बालक के मारि बको कहा हो। सो तुम
मो सो बंचक ता ही करी। वह बालक अब
तरुण होय सबष्ट्यी बस करी। ताते अ
सो ह अपराध तुमहारे क्षमा करि मै कह
ह सो करो। नगर के बाहर चंडिका के मंदि
र मै जाय पङ्गु धारि सावधान रहे। उहा रा
त्र मै जो नर आवै तो को मारो। अैसे धष्ट बु
द्धि को बचन सुणि चांडाल स्याम बस्त्र धार
ण करि अभ्यामाफिक चंडिका के मंदिर मै
रहो। तापी छे धष्ट बुद्धि चंडहास सो बो ल्यो
हे चंडहास हमारी कुल देवी चंडिका बन मै

हो। तहां तुम रात्रि में इक लेही जाय पूजन क
रि आवो। तहां वाही दिन कुतल राजगाल
च पुरोहित को बुलाय। आपके सरीर की
चेष्टा कहो। हे गुरु में सकल पृथ्वी को रा
ज्य करौ हो तो हमो को सुषन ही। अरु मेरे
सरीर की क्वाया सिर ही नदी सै हो। सो या उ
तपात को फल कहो। जब गाल बबोले।
हे राजा जैसे सरीर की क्वाया सिर ही नदी
सै तो सी प्रहाम त्य होय। जैसे सुणिरा जा
निकर बैठा मंत्री को पुत्र मदन ता सो बो
ल्यो। हे मदन त घर जाय चंद्रहास को सी
प्रत्यावो। मेवा को कन्या देयरा ज्य द्योगो।
जैसे सुणि मदन प्रसन्न ता सो घर आव
तहो। ताको मार्ग में चंद्रहास पूजा साम
ग्री लिये चंडिका के मंदिर जात मिल्यो। ता
सो मदन बो ल्यो। हे चंद्रहास तुम को राजा
बुलावै हो। तहां तुम जावो। अरु में तुमहा
राय वज्र देवी को पूजन करौगो। जैसे क
हि हाथ तै पूजन की साम ग्री लिये। मदन तो
चंडिका के मंदिर गयो। तहां जात ही चांडा
लया को सिर का द्यो। तब मरते समय मर

नअसैंबोले॥ यहमेरोसिरचंड
जो॥ जबमेंसखबक्ताहोऊंगो॥
कोपूजासामग्रिदेपचंडहासराजापा
योहो॥ ताकोराजाकन्यादानदेपरा
तिककरिआपवनमेंगयो॥ जबपुरबा
आपधष्टबुद्धिसोंकहा॥ हेमंत्रीतुम्हारे
जामाताचंडहास॥ राजपायराजपुत्री
सहितगजराजपंचयोआवेहो॥ ताको
तुमदेवो॥ असैंसुणिमंत्रीक्रोधतैबोले
हेपापिष्टहोतुममिथ्याबोले॥ तातैतुम्हारे
राजिद्राकोकारोगो॥ असैंकहिब्याकुल
नयो॥ तापाछैनगरकेमध्यगजराजपंच
यो॥ अनेकदीपकानकेप्रकाससहित
आवत॥ अहगीतबादरुक्त्रचामराआ
दिराजचिरुजुक्तचंडहासकौंदेवि॥ अरु
चंडिकाकेमंदिरपुत्रकोगयोजाणिब्या
कुलहोय॥ आपहअर्धरात्रसमेंचंडिका
केमंदिरगयो॥ तहोमंदिरकेनिकटपुत्र
कोभस्योदेविबिजापकरि॥ आपहसत्र
तैउदरविहीणकरिमस्यो॥ तापाछैप्रभा
तहीचंडहासमदनवाधष्टबुद्धिकोमरेस

चंडिकाकेमंदिरजायकुंडरचिहोमक
निजसरीरैमोसकादिहोमितापीके
रकाटिवेलगो जबचंडिकाप्रसन्नहो
बोलीहेराजाचंद्रहासतमोतैमनबा
इतवरमागि तबचंद्रहासबोल्पोहे
मातात्प्रसन्नहैतोयेदोज्जीवोअरु
मोकैराज्यसुषुअषंडअचलहरिमक्तिहो
मैतुमकौनमस्कारकरोहो तबदेवीत
यासुकहिअंतरध्यानमें तापीकेअह
नधष्टबुहिसजोबहोयसुह बुद्धिपायच
इहाससहितनगरमेंआये जबधष्टबु
द्धिकुलिरकेवघनकरायकुतलपुरमेंबु
लायसर्वहर्षितहोयवसतत्रये तापीके
चंद्रहासप्रतिदिनपुरवालिनसहितहो
सेवापरापण तीनलेवर्षपर्यंतराज्यकर
तभयो ताचंद्रहासकेविषयास्त्रीमैमकर
ध्वजनामपुत्रभयो अरुराजपुत्रीचंपक
मालिनीकेपद्माक्षनामपुत्रभयो यहप्र
तापसबचंद्रहासकोसालिश्रामसेवनत
भयो अरुसबसंकटहताहोतैकठेअरु
आरुहरप्रतिदिनशा

वचन पूजन ते सर्व सिद्धि पावो ॥ ता
कलिकाल में शालिग्राम प्रस

है ॥ जैसे कहिना रसु निगये ॥ इति श्री

रत्नसार चंद्रिका या अश्वमेध पर्वे चि चंद्रहा
सो पापान् नृणां कायस्य मोक्षाय ॥ १ ॥ जन्म

उत्पन्न ॥ हे मुनि नगर में गये जे दोऊ अ
श्व अर्जुन को ॥ तिन को चंद्र

करे कै नही ॥ जब बैश पापन बोले
जन्मे जय चंद्रहास अश्वग्रहण करे

तब अर्जुन सहित श्री कृष्ण को प्राये
दक्षि चरण में प्रणाम करि मिल्यो ॥

छे चंद्रहास पुत्र को राजदेपतीन
श्री कृष्ण को सनमा पूर्व करायो ॥

आपहंसे वानि मित्त संग भयो ॥ जिन
नदे सने में अश्व गये ॥ तिन तिन दे

राजा भयभीत होय होय धन अर्पण करि
करि संग भयो ॥ जैसे चलत

उत्तर ससु इपहे चि अगा
सकरत भयो ॥ तब अर्जुन श्री कृष्ण

बोले ॥ हे श्री कृष्ण ये जल में गये अश्व
अब कैसे मिलेंगे ॥ जब श्री कृष्ण बोले

अर्जुन मेरे तेरे हंस ध्वज के। मयूर ध्वज के
 बभ्रुवाहन के। अश्वन की सरवर्तगति
 है। तातें जलमें चले। जैसे सुणिपंच
 महारथी जलमें प्रवेश कियो। तहां ही पद्म
 ध्यसिरपे बटपत्र धारे तपकरत। जीर्ण
 सुस्कसरीर। नेत्रमीचै। जैसे बकदा
 मुनिकों दीषपांचोही स्तुतिकरत भयो। त
 वमुनिनेत्रयो लिश्री कृष्ण आरिपांचो
 को दीषिबोले। हे श्री कृष्ण तुम मेरी स्तुति
 मतिकरो। तुम्हारी स्तुति तें मोको गव
 होय है। मैं आगे गव कस्यो है। तब आश्र
 य देष्यो। या अंड अंड में। चर्मुषा। अष्टमु
 षा। षोडशसमुषा। द्वादशसतमुषा। चतुःष
 ष्टमुषा। १४। आदिले ब्रह्मा देषे। तापीके
 सहस्रमुषको ब्रह्मा आयमोको इहां बसा
 यो। अरु मेरे आगे बीस ब्रह्मा तो चले गये
 तातें मैं आयुष्पको अल्पजाणि। सिरपे
 बटपत्र हीरोष्यो है। अरु कैस जाणि हू।
 मग्रह हने ही कस्यो। कुटंबयो मरणार्थ अ
 हाय ह करे। तातें धर्म नष्ट होय। पाप होय
 तातें नर्क होय। विचार होय सके नही। वि
 वार बिना मो चरोय नही। तस्माव ध्ये। त

स्वर्ग
१५

तैमैग्रसैजापियदणसात्ताहनहीका
असैसुणिसकल अरु यैयुक्तनयो
तवअर्जुनतुविसेंप्रार्थनाकरि शिव
कामैबैठाय अश्वनकौसंगलेयाअने
कदेसनकेराजातकौजीतिजीतिसा
लेयहस्तनापुरआये जबअक्रिससे
नाकौलकामबाहरकरायबोले हेअ
र्जुनमैयुधिष्ठिरसौसकलव्रत्तातकरि
बैकौपहलीजाऊह अलेकहियुधिष्ठि
रएजाएसर्वव्रत्तातकस्यो तवराजायु
धिष्ठिरअतिप्रसन्नहोय यजार्थअपेय
निनकौराजातकौसंगलेयसेतासरे
तअर्जुनकेमिलिबैकौआयो तहोराज
प्रथमवकदअपमुनिकौप्रणामकरि
तापीछैसवनसौजयाजोगपामिलिसक
कौसंगलेयअर्जुनसहितनगरै प्रवेस
कस्यो तापीछैराजाशोपदीतहितदीक्षा
सु - एतद्विष्णुणाय देवता भूदेव नरदे
व इनसवनकौपूज्यमंत्रपाठकराय ब्रा
ह्मणसौविधिवतहोमकरावतनयो त
होदेवमूर्तिब्रह्मवेत्तारिषि व्यासवाम

देव। बसिष्ठ। गौतम। अत्र। परासरा। भरद्वाज।
 परशुराम। कहे। उ। भागुरिरे। न्य। सुम
 ता। कोटिन्या। जातु। कएप। गालवा। इत्यादि
 शिषियथायोग्यकर्मकरतभयो। प्रो। देव
 रिषिगंधर्वसिद्धिकिन्नरसंगलगावक
 रतभयो। तहां। अथराणाचतभदी। अग्नि
 तसभयो। तहां। तापी। द्वैयुधिष्ठिरसब
 नको। विधिवंतपूजनकरतभयो। अ
 रुयज्ञसमाप्तमौ। च्यास्यो। समुद्रनकेमध्य
 कमलनीलुत्पएध्वाराजापुधिष्ठिरवे
 दव्यासकौदत्तणामैदीनी। अरुवेदव्यास
 केवाक्यतैकोटिकोटिसुवर्णमुद्राब्राह्म
 णनकोदीनी। जबब्राह्मणधनतैतसहोय
 अनेकआशीर्वाददेतभयो। चतुःषष्टि ६४
 दपतिगंगाजललेवैकोजावौ। तिनमैमुष्ण
 इतने। अनुसयासहितअत्रि। अरुंधती।
 सहितबसिष्ठ। रुक्मिणीसहितश्रीकृष्ण
 सुनशसहितअर्जुन। मायावतीसहितप्र
 अनिरुद्ध। हिडवासहे
 सत्यवती

प्रश्न
२६७

इन्द्रसनको आदिले चौसठिसपत्नी
कसुवर्णकुंजनमें गंगाजल ल्या
युधिष्ठिरको प्रतिषेक करावो॥
द्व्यासको आगासुणि सुवर्णकुंजन
गंगाजल ल्या यो राजा युधिष्ठिरको
बेक करावत भये॥ तहावेद्व्यास
ध्वनि॥ सकल राजासे वामैठाटो
पिश्रोकृष्णविचार किये॥
कौभागवत होय॥ ताते प्रतिषेक ज
रत एक नकुलको दिषायो॥ तबतान
लको देषि राजा युधिष्ठिर बो ल्यो॥
सयानकुलको देषो अरु याको ए
श्व सुवर्णवर्णके से नयो॥ जब यह सु
श्रीकृष्णनकुलसो पूछत भये
न बो ल्यो॥ हे श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र
वृत्तिसक्त प्रस्यनामा ब्राह्मण भयो॥ सो
रकसाहे तपा एपासिक वृत्त करि पारणो
करि बैल गयो॥ तास मयमे एक अति
यो॥ जाको देषि ब्राह्मण प्रसन्न होय आप
को भाग भोजनको दियो॥ तासो तस्म
तवस्त्री आपको हुनाग दियो॥ जब स्त्री

भागसोहं वहतसनभयो॥ जबपुत्रव
 ह्प्रापकौ भागसमर्पणकियो॥ तबति
 नेसबनकेअन्नकोअतिथभो
 तसहोयबोव्यो॥ हेब्राह्मणतु
 सिद्धनयो॥ अबमैप्रसन्नहं॥
 कितंसिद्धहोवो॥ ऐसेकहि वहअ
 रूपीधर्मआपकेनिजरूपदिषायअंत
 हीनभयो॥ तबवहसक्तुप्रस्थब्राह्मण
 सदेहसपरिवारविमानमै
 यो॥ तहावाअतिथकेहस्तप्रक्षालन
 जलमैमैमेरोअंगप्रक्षालनकस्यो॥ वा
 लकेप्रभावतैमेरोदेहअर्धसुवर्णको
 नयो॥ तातैयहयज्ञसु
 होबेकौपुधिष्टिकेपासआयोहं॥
 अनेकब्राह्मणनकेहस्तप्रक्षालनके
 लमैहस्नानकियो॥ अरुपुधिष्टिकेअ
 षकजेलहमैस्नानकस्यो॥ तौहमेरोएक
 रामहसुवर्णकोनभयो॥ तातैयहयज्ञस
 क्तुप्रस्थब्राह्मणकेपुन्यतुल्यनहं॥ ऐसे
 बोलिनकुलगयो॥
 यज्ञनिंदसुणिराजापुधिष्टिकेकुलन

जब वेद व्यास बोले ॥ हे राजा युधिष्ठिर तै
 यज्ञ सब यज्ञ नमै सुद्ध हो ॥ सुर असुर नर
 सब हाया का स्तुति करे हो ॥ अरु यह न
 ल असे बोले आपकी नीचता कह हो ॥
 रु आगे यह क्रोध हो सो जमदाग्नि मुनि
 के अक्रोध पण की परिचा करि वे को उन
 के आहमें धसि पितर न के अर्घ पात्र मे धो
 दुग्ध को श्वान हो यज्ञिका तै चाटत नयो ॥
 ता को देखि मुनि विचार कियो ॥ यह कृष्ण
 न को धर्म हो ॥ यह दोष रत्न क को हो पाते
 शाप न दियो ॥ जब मुनि के पितर कही ह
 मारे दुग्ध को श्वान वणि उक्ति कियो ॥
 ता सो यह न कुल होय ॥ ए र्वी मे भ्रमो ॥ अ
 से शाप देत नयो ॥ अरु यह जब युधिष्ठिर
 के यज्ञ की निंदा करे गो ॥ तब मुक्त होय गो ॥
 से अनुग्रह कियो ॥ यह क्रोध न कुल वणि
 तेरे यज्ञ की निंदा तै ॥ अब शाप तै मुक्त नयो
 हो ॥ असे सुणि सर्व सभा विस्मित भई ॥ अरु
 राजा युधिष्ठिर ह यज्ञ समस्त मे ॥ नर देव न
 देवन को बल अलंकार देप विदा कियो ॥ त
 मार्ग मे यज्ञ की प्रशंसा करत गये ॥ ता पीछे

नापुधिष्टपन्नमंडपमेंश्रीकृष्णसहित
यो॥तापुधिष्टतहांबिबादकरतदोयब्रा
णआये॥तिनकोराजापूछ्योतुमकोए
हारणबिबादकरोहो॥तबएकब्राह्मण
बाल्या॥हेमहाराजमैयाकेषेत्रमेंकर्षण
कस्यो॥तामेंइब्यनिकस्योसोमेंइब्यया
कोदेतहोसोलेतनही॥अरुयाकेषेत्रमें
इब्यनिकस्योसोमेंहकेसैराथो॥ताते
आपनिधारकरिकहोयहइब्यकोनको
हो॥असैउनब्राह्मणनेकोबिबादसुणि
श्रीकृष्णवाधनकोमगायराजाकेनि
जस्थानमेंराष्यो॥जबवेदोऊब्राह्मणनि
जनिजस्थानमेंगये॥तबराजापुधिष्ट
रबोले॥हेसर्वज्ञश्रीकृष्णइनकेबिबादके
अबहीनिरधारकोनकियो॥जबश्रीकृष्ण
बोले॥हेराजापुधिष्टसुणोदोपमास
पाकेकलिपुगआवेगो॥तबयेहीदोउ
ब्राह्मणयाधनकेलेबकोऊगडतआवे
जबइनदोऊनकोअईअईकरिबांति
यो॥असैकहिश्रीकृष्णराजाकोसंदे
रायो॥जबराजाकहीकलि
पुगे॥तबश्रीकृष्णबोले॥

श्व०
२

रकलिपुगमैः मर्नष्टहोयगो॥ तप सत्यन
 ष्टहोयगो॥ पृथ्वीमंदफल॥ राजाकपटी ब्रा
 ह्मणलोत्री॥ पुरुषस्त्रीबस॥ स्त्रीपुंश्वलो॥
 पुत्रपितासोशहरायो॥ साधुदुषा॥ दुर्जन
 सुषाहोयगो॥ असेसुणिराजाचकितभयो
 तवकितकैदिलपीके श्रीकृष्णराजातेस
 षमांगिद्वारिकागयो॥ तापीके बुधिष्टिरा
 तराष्ट्रगाधारी॥ विदुरा॥ इनको पूजनको
 अरुनिशुटकराज्यपायधर्मतेराजाप्रज
 कोपालनकरतभयो॥ अरुश्रीकृष्णके
 भावतेअश्वमेधहसर्वांगपूर्णभयो॥
 अश्वमेधयहपेर्वहेनाषोभा तस
 र रावचांदसिंधके हुकमवरणपोक
 बिसुषसार॥ ॥ ॥ इतिश्रीनारदकर
 ॥ अश्वमेधयज्ञविधिद्वारा
 ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ नारायणं नमस्कृत्य
नरं चैव नरात्तमं ॥ देवीं सरस्वतीं व्यासं त
तो जपमुदीरयेत् ॥ अथ आश्रमवासपत्र
अचनिकाश्रावणं चारुं तैलं लिख्यते ॥ वैशं
पायनं उवाच ॥ तापीकैराजायुधिष्ठिरध
तराष्ट्रकौप्रणामकरिः अधिकारीनको
राज्ययोग्यसर्वभोगदेतरह्यो ॥ जैसें निस्क
पटसब अधिकारीनको आग्यादेपराज
करतनयो ॥ अहयुधिष्ठिरके स्नेहते ध
तराष्ट्रभाषासहितराज्यमेरह्यो ॥ परंतु न
मिसपनब्रह्मचर्यफलाहारकरतरह
सोयुधिष्ठिरजानेनही ॥ जैसे रहतधतरा
ष्ट्रकौपंड्यहर्षवित्तितनयो ॥ तबनीमसेन
कोरवनकी अनीतिकहतनयो ॥ ताके
मुण्डितराष्ट्रक्रोधकरोकिवनवास
कावांछाकरियुधिष्ठिरसौबोल्या ॥ हेपुत्र
कछुदेतौमंग ॥ जबयुधिष्ठिरहाथजाडि
रवोअंगीकारकेस्यो ॥ तबधतराष्ट्रकही
बहनकोयोग्यवनवासहेयहमाग्योदे
जैसेमुण्डिसुयुक्तहोयचरणमेंप्रणा
मकरिराजाबोल्या ॥ हेतातएकाकीमोके
त्यागकरिबोतुम्हयोग्यनही ॥

श्री ०
६३

पुधिष्टिरदीनभयो ॥ तबतासो वेदव्या
सप्रापबाले हे पुधिष्टिरत् जाणतह
मूटको होपहे ॥ सतकृत्यमेशीघ्रताह
करिबो योग्यह ॥ यह देह रूपी दीपक हे
ताको तेलरूपी प्रापुष्य जेण जेण मैती
णहोतहे ॥ अरु मरु रूपी दावानलके नि
कटवती देहरूपवृक्षको धर्मरूपी फ
ललेते धतराष्ट्रको विघ्नको करेहे ॥ अ
सवेदव्यास ॥ वाको तेरा जापुधिष्टिरध
तराष्ट्रको बनवास अगीकार कल्या ॥ जब
धतराष्ट्रभीष्मादिकनेको आह करिजल
जलि अत्यंत दीनतासो देतभयो ॥ अरु दु
याधनादिकनेको आह मै बहुत धनदेते
भिनाम कुपितभयो ॥ तबताको अर्जुन
शांतक रूपी तापी हे धतराष्ट्र राजापु
धिष्टिरसो वापुर्वासीनसो आग्या मागि
का नाकनिष्ट भ्रातासहित श्रीरामचंद्र
लो बनको गयो ॥ अरु पुधिष्टिरादि वरज
तोह कुती उनके संग गयो ॥ अरु संजयह
तिनेके संग गयो ॥ असे इनसहित धतरा
ष्ट्रव्यासाश्रमको प्राप्त होय ॥ परिवारसहि
ततपकरतभयो ॥ तापी हे पुधिष्टिर हस्त्री

नसहितारथनपरसवारहोयवनकोगये
तहाधतराष्ट्रआदिगुरजननकोनमस्कार
कियो॥अरुतिनकोस्यामसुक्कमुषदेवियु
धिष्टिरअशुपातकरतनयो॥जबवेहरा
जाकोअसीबादेतनयो॥तबयुधिष्टिर
ओतातविदुरकहाहे॥जबधतराष्ट्रबोले
हेयुधिष्टिरस्वच्छाचारीपवनाहारकरतवि
दुराविवरतहे॥सोकबहुराषेहेकबहनहा
दोषहे॥असेबोलतअकस्मातविदुरअ
या॥बनमेमनुष्यनकोसमुदायदेविमगले
नाजतनयो॥जबराजायुधिष्टिरहअशु
कताकेपाकेदोडतनयो॥तबविदुरराज
असेहरिहरिजै॥तैसेअभागीतेबन
रिनजतहे॥जबनजतनजतकोईक
वृत्तकेनीचैबेठविदुरकोदेविबोले
दुरमेंयुधिष्टिरहो॥असेकहिप्रणाम
राजाजाणा॥विदुरमोकैककह
इच्छाकरतनयो॥तबविदुरयुधिष्टि
कोदेवियोगाभासतेदेहकोत्याग
निजरूपकोप्राप्तहोतनयो॥जब
नेरकोदोहकरिवोवि

श्रु ०
४

हकौ दग्ध करेगी ॥ जैसे राजा के सुएत हीरे
तै अग्रि प्रगट होय देह कौ दग्ध कियो ॥ नापी
कै मुधि शिर धतरा ॥ इपै आय विदुर कौ सब
वृत्तांत कहि कुंतो पास आयो ॥ तहारा जाफ
जाहार भूमि सपन करत एकरा त्रिकुती के
निकट बसि ॥ प्रभात अनेक इव्यदांतरा जा
करत भयो ॥ नापी कै धतरा ॥ इपै आय प्रण
म करि बैठत भयो ॥ तब तहां वेद व्यास अ
य विदुर गतिकी स्तुतिकारि धतरा ॥ इमो
बोले ॥ हे पुत्र तौ कौ कोई बाधा तौ नहीं है ॥
सै सुणि धतरा ॥ इबो ल्यो ॥ दान भोग करत
आस्यो इंदियन के सुष भोगे ॥ अरु अब आ
यकी कृपा तै बैराग्य पाय यह सिद्धि स्यात व
न पायो ॥ कुटुंब देख्यो नहीं यह दुःख रस्यो ॥
रु पुत्र वधू प्रभात ही रुदन करै यह महा दुष
हो ॥ जब जैसे सुणि वेद व्यास धतरा ॥ इ कौ दि
व्य इष्टि दीना ॥ तब जन्मा धतरा ॥ इ कौ जैसे अ
नंद भयो ॥ तैसे दरिद्र कौ चिंता मणि पायै अन
द होय ॥ अरु मुधि शिरा दिकन कौ बैन वदो
सुषी भयो ॥ नापी कै वेद व्यास धतरा ॥ इ कौ पु
वधून सो कह्यो ॥ तुम गंगामें स्नान करि पतिन
कौ जल जली द्यो ॥ जब जैसे सुणि गंगामें ज

पस्मानकरतहीवेदव्यासकीऋपातेपु
तिनकोपायनिजनिजपतिकेसंगपरलो
ककौंगईतबधतराइहृदियगंगामेंबि
हारकरतअनिमनुदुषोधनादिकनको
स्नानसहितदेधिरागइसरहितहोतभ
योअहृदियइष्टिकोध्यानविघ्नका
रणीजाणिबेदव्याससौबीनतीकरि।फे
रितेसैहीइष्टिरहितहोतभयो॥तापीछैयु
धिष्टिरहएकमासतहारहि॥धतराइकी
आग्यातेहस्तनापुरआयो॥तहाधर्मसेव
नप्रजापालनकरत॥जसविस्तारतभयो
तापीछैएकसमैराजायासनारदमुनि
आयो॥तवराजातिनकोपूजनकरि
वनवासीकुलबहुनकोवृत्तांतपूछत
भयो॥जबनारैबोलेहेयुधिष्टिरधतरा
इएकवर्षलौपवनहारकरत॥एकवर्ष
लौभोजनकरतअसैतपतैराजरिषिहोयु
योगाभ्यासकरत॥योगश्रितैदेहदग्धकि
योतवपर्णकुदिकोजलतदेविकुतागाधा
राह॥अग्निप्रवेशकरतभईतापीछैतिन
फारसादेधिसंजयहिमालयगयो॥असै
कहिनारदमुनिगये॥जबयुधिष्टिरअसैयु

श्रीश्रुति
६५

एतौ च सौ व्याकुल होय ॥ तिन कौ ज
लौ जली देत भयो ॥ अरु जिन की दिव्य
तिनिमित्त प्राणन कौ अनेक दान दे
त भयो ॥ और उत पन्न भयो सो क कौ ग
नतै सात्य करि ॥ शिव विष्णु पूजन क
रत का लक्ष्मण करत भयो ॥ इति श्रीम
रतसारचंद्रिकायां श्रीश्रीमद्व्यासपुराणस्य समाप्तः

श्रीमद्व्यासपुराणस्य समाप्तः

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री लक्ष्मण च
नारायणन
मस्कृत्य नर चैव नरोत्तम ॥ देवी सरस्व
ती व्यासं ततो जपमुदायेत् ॥ वैशंपाय
न उवाच ॥ तापी के राजायुधिष्ठिर संसा
रको मुखं नित्यं जोगि ॥ धर्मसेवन क
रत पृथ्वीको अजाचक करी ॥ असे
प्रजापालन करत कृती सब वर्ष वितती त
अये ॥ ता समय में काल के प्रेरे ॥ देवी सा ॥
भृगु ॥ अंगिरादि मुनि रिषि ॥ द्वारका के नि
कर पिंडार कती र्थ में ॥ स्नान करि जप
कप करत भये ॥ तब ही तहा पादवन के
बालक ॥ जामवती पुत्र सांब कौ गर्भव
ती स्त्री भेष करि ॥ मुनि नको प्रणाम क
रवाय बालक पूरुत भये ॥ हे मुनि होय
ह गर्भवती स्त्री पुत्र की कामना करि ॥ ह
मारे मुख होय पूरु है ॥ मैं कह जाणौगी
सो तुम कहो ॥ जब मुनि को धतै बोले ॥ हे
बालक हो तुम्हारे कुल को नास करती ॥ अ
सो मूसल जणो ॥ असे मुनि भयभीत
बालक सांब के बस्त्र हरि करत एक लोह
मय मूसल देषो ॥ तब सभामें जाप उग्रसे

नराजासौसकलत्रतातकस्य॥जबवा
मुसलकौरेषिसर्वयादवविचारकरिता
कौरितायचूर्णकरिसमुद्रमेंनाष्यो॥अ
वशसलोहरसोताहकोतहाहीनाष्यो
सोबहुलोहचूर्णतरंगनतैवाहवहिस
मुद्रकेतीरमेंअरानकोबननयो॥अ
वशेषलोहहोताकोमत्स्यनिगलगये
तामत्स्यकोधीवरजालतैपकडिउद
रचीस्यो॥जबलोहनिकस्यो॥तालोहको
जरानामलुब्धकवाणमेंभालिकरी
अरुश्रीकृष्णहताप्रतातकोसुणिवि
चारमात्रहीकियो॥तदिनतैहोहारिका
मेंअनेकउत्पातमत्स्यसूचकेरेषिश्री
कृष्णसभामेंब्याकुलयादवनसोबोल
हयादवहोबालकनकीकुबुहितैमुनि
सापभयो॥जादिनतैउत्पातअपारहोतहै
पातैसर्वयादवप्रभासतीर्थचलो॥उहाका
नारांनविप्रभूजनकरेगे॥तातैअरिष्टन
सनकोउपाययहहीहो॥श्रीबालकबुद्ध
हइरहो॥श्रीश्रीकृष्णकीआपातैसब
यादवरथाअश्वगजसेनासहितप्रभ
सतीर्थकोगये॥जबउडवएकातमेंश्रीक

ससौ बानती करा ॥ हे नाथ मो कों कहा अ
पा हो ॥ तब श्री कृष्ण दिव्य गान उ पदे सक
रि उध्व कों ॥ बद्रिका श्रम पठा यो ॥ तापी के
बल देव सहित श्री कृष्ण प्रभास तीर्थ मे
गयो ॥ तहा सर्व पाद व श्री कृष्ण की आगपा
तौ ॥ ज्ञान दान ब्राह्मण भोजनादिक कर्म करि
तापी के हर्ष ते उ न्त होय मद्य पान कर
त भयो ॥ तामद्य पान ते बुद्धि नष्ट होय कित
ने का ॥ भारत मे सख त्यागन करि जोगा
भ्यासी भरि श्रवा कौ लिर के दन करि बेवा
ले सात्यकी की निंदा करत भयो ॥ अरु कि
तनेक महा भारत मे सखे न कों मारि बेवा
ले कृतवर्मी की निंदा करत भयो ॥ तहा कित
नेक सात्यकी के पति पाती भयो ॥ कितनेक
कृतवर्मी के पति पाती होय परस्पर जुद्ध
करत भयो ॥ जहा प्रथम ही जुद्ध करत सख
न कों तीण जाणि ॥ अरु राज के सख करि जुद्ध
करत भयो ॥ जब अरु रामु सला कार होय स्य
स मात्र ते सबन के प्राण हरत भयो ॥ तब सक
न भूमि मा सरु धिर मई नई ॥ अरु
साब ॥ सात्यकी ॥ कृतवर्मी दिबीर

तत्तीणभये॥ तिनकों जुड़ करतै दे॥ बल
 देव श्री कृष्णनिवारणकरे॥ जब पादव
 नहको मारिबे श्राये॥ तब श्री कृष्णबलदे
 वह श्रेणलेके तिनकों मारतभये॥ जैसे
 सर्वथाद नको संघार करि भूमिभार
 तारतभये॥ तापि हे बलदेवह समुद्रके
 तीरबैहि जागा भासतै देहव्याग करिसे
 सरूपधारि समुद्रमें प्रवेश करतभये॥ ति
 ने बासुकीकों आदिले सर्वनाग श्रायप
 तालमें लगेये॥ जैसे श्री कृष्णह बलदेव
 को गवन देषि चतुर्भुज रूप धारि एक
 तमें पिप्पल ब्रह्मको श्राश्रय लेय॥ रत्ति
 ए चर्ण पै वाम चर्ण धरिबैठे॥ तापि हे
 ज रना मलुध कसिकारको श्रायोहो॥
 सो श्री कृष्णके चरणोंको प्रहार कस्यो॥ त
 वनिकर श्राय चतुर्भुज रूप श्री कृष्णके
 देषि॥ चरणमें प्रणाम करि बोले॥ हे श्री कृ
 ष्णमें बिना जाणे अपराध कस्यो सोत्तमा
 करियो॥ अरु मोपाप हकों मारो॥ जब श्री
 कृष्णबोले॥ हे जरा लुब्ध कत उदै मैतितै
 यह वाणसास्यो सो मरी इत्ता ही तैहो॥ अ

वैठिस्वर्गगयो

तापीकैदारुकसारपीश्रीकृष्णकौहेरल
हरताश्रीकृष्णपासआपारथतेउतरि
प्रणामकरतनयो॥तवरथतत्कालअप्र
सहितआकासकौंगयो॥सोदेधिदारुक
विस्मितनयो॥तासोश्रीकृष्णवोलाहेदा
रुकहारिकामेजाया॥पदुकुलसहारबल
देवगवनमेरीइसावसुदेवादिकनसोक
हो॥अरअसैकहियो॥तुमहारिकामे
मतिरहो॥समुद्रहारिकाकोडवोवैगो॥जा
तैस्त्रीबालकदृइअर्जुनसहिनवअना
नकौलिया॥इइप्रस्थजावे॥असैकहि
दारुककौहारिकामेज्यो॥तापीकैप्रसा
दिकदेवविमाणनमेवेदिश्रीकृष्णकेह
रसनकोआये॥जवश्रीकृष्णनिजाबिन
तिदेकहि॥गिधिगंधर्वअप्रगानकोइप
नेअमीचियोगामामकरि॥निजमपथा
रिवेकुम्भेप्रवेसकियो॥जैसेमेधसुंड
लतैमिअमीजानी॥वीजुलीदगमिन

णाजाय तैसैही श्रीकृष्णकी गति ब्रह्मा
 कनह नही जाणी तापीकै ब्रह्मादि कहा
 निजस्थान गये तबदारु
 का आय बसुदेवादि कनको सर्व ब्रह्मा
 कस्यो जब बसुदेव तैसै सुणि
 देषत बिलाप करत देखी मै पओ
 नह हाराम हा कृष्ण
 की तुममोको
 पकरत अर्जुन
 करत भये जहागीत न त्पवादि त्रु
 अषड होतहे तहा श्रीकृष्णके म
 स्त्रीजनको बिलाप सुणि अर्जुन रात्रि वि
 तीत करी अरु प्रभातही पुत्रको वियोग
 तैमरे तैसे बसुदेवके संग देवकीको अ
 दिदे स्त्रीसहगमन करत नई अरु रुकि
 णी सत्यनामाको आदिले स्त्रीजन दुःषित
 होय श्रीकृष्णको स्मरण करि अग्नि प्रवेस क
 रत नई तापीकै अर्जुन मरेनको जला जलि
 दान करि बज्रनाभको स्त्रीजन सहित सम
 लेके द्वारिका तैच ल्यो तबही समुद्र द्वारिका
 का डबै तहां तैसै प्रस्थको चलत बिक

है कहे तै धनुष स ज्ये कस्यो ॥ जब बाण त
कोल नष्ट नये ॥ अरु प्रत्यं चाहि चीन ही
नव अर्जुन विचारी यह स्वप्न है ॥ अथवा
में और ही नये ॥ अैसे चिंता करत ही ताके
प्रत्यक्ष बन चर चोर ॥ जो पत्नी न को लूट
त नये ॥ तो हृदीप्य मान स्त्री जन को चो
र नहीं हरि सके ॥ जैसे देवर चित सिद्ध अ
षधी को नाग ही नही हरि सके ॥ तहो अ
र्जुन निज जन्म को तुच्छ मानि कही हे एष्व
त बिबर दे तो मैं प्रबे संकरो ॥ अैसे बाँझ
करत अधो मुष नये ॥ तहा स्त्री न के वस्त्र
आभरण हरि चोर न को गये पीछे लोक
बोले ॥ विश्व विजई बीर को चोर न जीयो
अैसे विधाता की रचना ह को धिक्कार है ॥ अ
से लोक बचन सुणत ॥ प्रधान ॥ साद्वस्त्री
जन बज्र नाम ॥ दारुका ॥ इन सहित अर्जुन
इंद्र प्रस्थ आय ॥ तहां को राज्या
नाम को देया ॥ आपहस्तिना ॥

सो
ए

तव श्री कृष्णको अंतर्धान गोप
व। यह चिंतन करत व्याकुल जात
तता कौ॥ हस्तिनापुरके मार्गमें वेद व्या
मिलिबोले॥ हे पुत्र काल कहान करो॥
सर्व देव जाके अनुग्रह कौ चाहे है॥
इमा कौ प्रकास छु तै ही सर्व कौ हरत है
तै काल पश्यतो हर है॥ अरु संसारके स
पदार्थ परिणाम मै बिना स न होया तो
पराई तप कौ कौण करो॥ असे क
र स अंतर्धान नये॥ ता पाछे अर्जुन वेद व्या
के वचना मत तै यदु कुल संहार॥ बन चर
न तै निज परा भव॥ ताके आताप कौ कौ
हस्तिनापुर पहुँचो॥ इति श्री नारद तार
इका कौ मोक्ष लप लेखन सप्त ५

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ महाप्रस्थानपर्ववच
नकाभाषाभारतसारलिख्यते ॥ नारायणं नम
स्य नरं चैव नरोत्तमं ॥ देवीं सरस्वतीं
व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ त्रैलोक्यपायतज्ज
त्रायुधिष्ठिरं अर्जुनं केमुषतैयदुकुल
कौसंधारसुणि ॥ कालवसतैत्रासपाय
समस्तत्यागबुद्धिधारतमयो ॥ तायीकै
रत्तगण्डके पुत्रनके नागकीभूमितोयु
पुत्सकौदीना ॥ अरुआपकोराज्यपरा
तकौदेयताकीरज्ञानिमिलसुनश
षा ॥ मंत्रीनकोसमाधानकरि ॥ बांधव
नको आर्द्धकरि ॥ नेष्टिकी इष्टिकरि ॥
अग्निहोत्रके अग्निं कौं जलमें बिसर्जन
ततमयो ॥ तायीकै इधितपुरवासीनको
समाधानकरि ॥ भ्रातानसहितयुधिष्ठि
रसर्वसत्यासधारिबल्कलधारिशोपद
सहितचलतमयो ॥ तबतिनकेसगएक
स्वानहचल्यो ॥ अत्रैसंतहांतेंचल
साकीपात्रामें लोहित्यनदके
ततुल्यदेदीप्यमान अग्निज्वालानकरि
व्यापत्तैसैरूपसों पावनके

प्र०
६७

अर्जुननें पूर्व दिशे धनुष तणी रलेत नये॥
उहां तें दक्षिण यात्रा करि॥ पश्चिम या
रिका जल में बूडी जाणि मरुत होत नये॥
हां तें शनै शनै धैर्य धारि एध्वी प्रद
रत उत्तर को आये॥ जहां हिमाचल को
लघन करि॥ बालुका समुद्र को उत
पर्वत को देखि॥ तहां तें निरा
लत नये॥ जहां शीपदी अचेत होय परा
बनी मधुधिष्ठिर सो बोले॥ हे तात सर्व
रनिर्मल अद्भुत जाको तप॥ योग
शीपदी र्घ स्वासकें से लेत रहे॥
वाकी तर्फ देखे बिना ही मधुधिष्ठिर बोले॥
मइ इ पुत्र मैं अधिक पक्ष पात होता
फल भयो॥ आगे न कुल को पाति त देखि फे
रि नीम बोले॥ तब रा जाते से ही फेरि
यह रूप दर्पतें कं दर्पतें हे आत्मा को अधिक
मान्यो॥ ताको यह फल भयो॥ आगे चलत
ह देखके पतन मैं नीम फेरि प्रसन्न कियो॥ ता
ते रा जावे से ही मुषरा वि बोले॥
के अनिमान तें जगत को जइ
ताको यह फल भयो॥ तहां तें आगे चलत

पतनरेषिभीमपूछ्यो॥ तबराजाक
॥ हेनीमयहश्रूपणेकेअभिमानतौर
भूमिमेंगर्वसहितसिपुलचलतनेयो
ताकोपहफलहोफेरिआगेंचलतनीमक
हीहेमहाराजमैंहंपड्यो॥ जैसेसु
ल्यो॥ हेनीमबहुनीजीतोकेनुजबल
दुर्पअधिकहो॥ ताकोपहफलेनयो॥
बोलिपरलोककोचलत॥ धर्मबीर
पुधिष्टिर॥ पडतेबांधवनकीतरफदेखा
नहो॥ अरुवहस्वानहंसंगहोसौरा
पीकेअषडगतिचलतनेयो॥ ता
केद्वाररथपेचदिइंशराजाकेसन्मुखआ
पबोल्या॥ हेमहाराजपुधिष्टिरतुमस
देस्वर्गमेंचलो॥
पेतोदेहसागकरिष्वर्ग ॥ तिनको
जेसोसुणिपुधिष्टिरबोल्या॥ हेइंश्यास्व
नबिनाश्वर्गमेंनहीआऊं॥ जोविपत्तिमें
संगरहेजैसेसतेसेवककोसंपत्तिकीआ
प्तिमेंसागकरेताकोधिकारहे॥ औरब
जमेंपुस्पनकेसंगमलिन
वेपुस्पदेवनकेसीसचदें

अर्जुनतैपुर्वीरियेधनुषतणारलेत
उहांतैदक्षिणयात्राकरि॥पश्चिमया
रिकाजलमेंबूडीजाणिमरुतहोतनये
हांतैशनैशनैधैर्यधारिएध्वीप्रद
रंतउत्तरकोआये॥जहांहिमाचलको
लघनकरि॥बालुकासमुद्रकोउत्त
पर्वतकोदेषि॥तहांतैनिरा
लतनये॥जहांशोपदीअचेतहोयपरी
बनीमयुधिष्ठिरसौबोल्पो॥हेतातसर्व
रनिर्मल॥अद्भुतजाकोतप॥योग
सीशोपदीर्घस्वासकेसेलेतहो॥
वाकीतफदेषेबिनाहीयुधिष्ठिरबाले
मइंद्रपुत्रमेंअधिकपत्तपातहोता
फलभयो॥आगैनकुलकोपातितदेषिफे
रिनीमबोल्पो॥तबराजातैसेहीफेरि
बहुरूपदर्पतैकदर्पतैहंआत्माकोअधिक
मान्यो॥ताकोयहफलभयो॥आगैचलत
हदेवकेपतनमेंनीमफेरिप्रक्षकियो॥ता
तेराजाबैसेहीमुषराधिबोल्पो
केअनिमानतैजगतकोजइ
ताकोयहफलभयो॥तहांतैआगैचलत॥

कोपतनरेषिभीमपू...
॥हेभीमयहशूरपणेकेअभिमानतैर
भूमिमेंगर्वसहितसिथलचलतनयो
कोयहफलहो॥फेरिआगेंचलतभीमक
हेमहाराजमैंहंपडो॥असैंसुणिराजाब
यो॥हेभीमबहुभोजीतोकंभुजबलको
र्यअधिकहो॥ताकोयहफलनयो॥असैं
बालिपरलोककोचलत॥धर्मबीरराज
मुधिष्टिरपडतेबांधवनकीतरफदेखाह
नहो॥अरुवहस्वानहंसंगहोसौराजके
पाकेअषडगतिचलतनयो॥ताषाकेपुर
केहाररथपैचरिइंराजाकेसत्सुवैआ
यबोल्या॥हेमहाराजमुधिष्टिरतुमसह
देस्वर्गमेंचलो॥अरुतुम्हारेभ्राताशेफदी
यतोदेहसागकरिष्वर्गगये॥तिनकोदेखा
गेसोसुणियुधिष्टिरबोल्या॥हेइंयाम्ब
नबिनाश्वर्गमेंनहोआऊं॥जोबिपलिते
संगरहैअसैंसतसेक्ककोमंप्रतिअ
भिमेंसागकरेताकोधिष्टिरहैचैल्ल
नमैंपुस्पनकेसंगमलितनननहैइं
वेपुस्पदेवनकेसीमचरे

नको त्याग करे ॥ ताते याके त्यागते मेरो धर्म
 कहा ॥ अरु धर्म बिना श्वर्ग कहा ॥ ताते हे
 इश्रैसी सिखाते तुम्हारे हे धर्म नष्ट होय
 हे ॥ असे राजाको बचन सुणि इड बोले
 हे राजन यह पुन्य हीन स्वान तुम्हारे पु
 का जावो ॥ जब राजा बोले ॥ हे इड जो यह
 स्वान पुन्य हीन हे तो ॥ मेरे पुन्य ते सह दे श्व
 र्ग में बसो ॥ असे सुणि सर्व देव राजाकी
 सराह करत नये ॥ ताही समे धर्म वह स्वा
 न देह त्याग करि निजरूप धारि धर्म पुत्र
 सो ॥ आलिगन करि बोले ॥ हे पुत्र मे स्वान
 देह धरि तेरे कृत्य देषि में प्रसन्न नयो ॥ अ
 बतर थपे चरितोको सनातन श्वर्ग ही ॥
 असे पिताका आगाते राजा युधिष्ठिर
 थपे चरित देह श्वर्गको प्राप्त नयो ॥ तहा
 सर्व देवन सहित नारद बोले ॥ और राज
 अने कही श्वर्ग गये ॥ परतु युधिष्ठिर सर्व
 राजानकी कीर्तिको आछादित करित न
 त्रनमें सूर्य तुल्य सो नित हो ॥ तापी हे राज
 युधिष्ठिर इड सो बोले ॥ हे इड मेरे नाता
 पतिनी हे ॥ तहाही सोको ले चलो ॥ तब इड

युधिष्ठिर तुम्हारे निज
सिंभयोजो दिव्यस्थानता में बसो
ज्ञाता नार्थान में न

तहां ही जो कुंजो ॥ वैशंपायन उवाच ॥ अत्रै
धृष्टिरश्वर्गमिंदुर्यो धनको
यं युक्तदृष्टि ॥ इंदुसो बोल्यो ॥ हे इंदु
जहां पापी

जगतकों संताप देवे वालो ॥ अत्रै सो दुय्यो
धनमहासिंघासन घे बठि ॥ पूजा पावत
अत्रै विचार ही लख्खो ॥ कहो काज हो ॥
रुहे इंदु जा स्थान में मेरे ज्ञाता नार्थो हे
हाको श्वर्ग मानत हे ॥ अत्रै से कहिरा जच
तब इंदु देवतको आग्यादीनी ॥ जब व
तराजको बाधवनके दिषाय ॥ वेको ले

दुर्गति ॥ दुःख ॥ हिंसा ॥ बंधन ॥ अ
कटुकहाहाक

द्वियुधिष्ठिर हम नीमको आदि देतरे

प्रश्न

परीसहित अतिपीडितहो

कीपवनतै अतिसुषीभयैहो

एमात्रघांहीरहो असेसु

बोल्या हेदेवरतमैबाध

घांहीरहोगो अरु यह नर्कहीमरे स्वर्गस

मानहो औरबैतणी नदीह गंगासमान

हो यहदुःखहै सोसुषसमानहो तातैहो

देवरततौकोकसलहो अबतजा अस

स्वर्गबोसीनकोवास्वर्गकोनमस्कारहो जा

स्वर्गमें अजनतौपूजापावै अरुसुसी

लदुःखवै तहांतहो जाऊं असेंसुणिदे

वहतगमनकरतनयो तापीछेराजाप

धिष्टिरदेवतांसहितइइकोसन्मुखदे

ष्यो अरुनर्कदिक्ककुहनहीदीषो

रूपवित्रपवनतैसुषीहोपेविचारनल

ग्यो यहकहानयो जबराजाकोचकितदे

षिइइसमाधानकरतबोल्या हेयुधिष्टि

रात्तगुरकोमारिबेनिमित्तलेसमात्रअ

सस्तिबोल्या ताकोयहफलहैमैतोकोइ

गतिदिषाई अबत आनंदसमुद्रमैबिहारक

रतबाधवनको अरुस्वर्गश्रीतुल्यशोपदीके

शकनीमें स्नान करिके देवो॥ तांपी कैं रा
वाक्य सुणिनि ॥

बंकोदिदि

नसुनतन

अनेक बाह्य बजावत गंधर्वसं
अद्रुतनक्षत्रों देवत नयो
राजा पुषिष्टिरको
अरु दिव्यसेवक नको दे
छाकरी॥ सोनिजह

हामें देवत नयो॥ ताको दानह करत न
गो॥ अरु राजसयादि जग्नते जपे सिद्धि
धर्वनको गानसुनत॥ इंडके दिषाये मार्ग
होय देवसनाको प्राप्त नयो॥ तहां अस्तर
नके दिव्यबिनोद देवत॥ अग्नि तेजको
करत असे सरीरकी कांति सो सो नित
जस हो दरनको देवत नयो॥ अरु इंडके
कपतै कणको सूर्यरूप॥ अग्निमनुको
मारूप॥ श्रीरुद्रको चतुर्भुजरूप॥ अ
धतराष्ट्रको गंधर्वराजरूप॥ इणके

स्पतिरूप॥भी श्रकौ॥प्रष्टमवसुरूप॥भी
 मकौ॥यवनरूप॥अर्जुनकौ॥इंद्ररूपानकु
 लसहदेवकौ॥अश्वनीकुमार पदेषते
 भयो॥अरुओरसवष्टथ्वी
 बेकौ॥आये तिनबीरनकौदेव
 भयो॥अरुआपराजायुधिष्ठिर
 सगरभगीरथआदिइनरा
 वित॥सुतंत्र श्वर्गभोगभोगीराजाहरि
 श्वइपदबीकौभोगतभयो॥असैवेदबा
 भारतसारजनमेजयकौकहि॥भारत
 सावित्रीकहतभये॥श्लोक॥मातृपितृस
 हस्त्राणिभयस्यानशतानिच॥संसारेषु
 नुभूतानियांति यास्पतिचापरे॥१॥हर्ष
 स्यात्सहस्त्राणिभयस्यानशतानिच
 दिवसेदिवसेमूढमाविशंतिनपंडितम
 ऊर्ध्वबाहुर्विशेषेयनचकश्चिच्छुणोति
 मे॥धर्मादर्थश्चकामश्चसकिमर्थनसेय
 ते॥३॥नजातुकामान्नयान्नलोनाह
 र्मेजयाजीवितस्यापिहेतोःनित्योधर्म
 सुखदुःखेत्यनित्येजीवानित्योहेतुरस्य
 त्वनित्यः॥४॥इमंभारतसावित्रीप्रातरु

र

प
से

अधिऽकृति॥५॥ यथा समुद्रो भगवान्
हिमवान् गिरिः ॥ व्याता बुनोर
ननिधी तथा भारतमुच्यते ॥ ६ ॥ इमां
पठेत्सुसमाहितः ॥
सगच्छेत्परमां सिद्धिमिति मेनास्ति संश
यः ॥ हे पुत्र या जीवकैसंसारकहियै जा
मणमरणतामै ॥ माता पिता हजारां नये
रे अरु होइहे ॥ और आगे होयेंगे अरु
तसैं ही खी पुत्रसैं कडा नये होयहे ॥ आ
गें होइगे ॥ १ ॥ और दिन दिन प्रति बाको ह
र्षके स्थान हं हजारा हो अरु नयके स्थान
हसैं कडा हो सो मर जीवकौ लो व्यापै हे
और पंडित कौ नही व्यापै है ॥ २ ॥ अरु धर्म
कौ साधन कौ नही करै है ॥ जा धर्मसों अ
सिद्धि होय वाचित सिद्धि होय है ॥ यहमें ज
चे हाथ करि ऊंचे सुरसों पुकारिके कहै
हो ॥ सो को ऊह न हो सुणत हो ॥ ३ ॥ और क
सो भयसों लोभसों कदाचित् ह धर्मको
त्याग नही करौ ॥ अरु धर्मको त्याग करे
वजातौ ह बचेतौ ह धर्म छोडे नह ॥ सो

धर्मतो नित्य है ॥ और सुषट्कः अन्त
है ॥ श्री यह जीव है सो ह नित्य है ॥ अ
या जीव को कारण माया है सो अन्त
है ॥ ४ ॥ तातै है पुत्र जो नर या भारत सां
त्री को प्रातः काल उठिये है ॥ ताको स
पूर्ण भारत को फल होय है ॥ अरु अंत में
मोक्ष को जाय है ॥ ६ ॥ सवत सतद
स अरु वर्ष पचासी तापर ॥ माधव मास
सुमास शुक्ल तिथि तीज उजागरा ॥ ला
नमहरत जो ग सुदिन गुरुवार जा नि
य ॥ भारय भाषा सार चंडिका तव प्र
कास किय ॥ सुत संतुरा व श्री चार सि
घ गो गा वत कलर बिउदित ॥ ताहु कम
पायक बिचैन यह करी बचनिका ज
विदित ॥ १ ॥ इति श्री गो गा वत कुलावत
स संभ्रस्यं घात्स जरा व चारस्यं घात्स या क वि
चैन राम कृत भारत सार चंडिका संपूर्ण
सुभ्रयात ॥ ॥ ॥ ॥

